छिन्नमस्ता

हिन्दी उपन्यास

हिन्दी से मैथिलि अनुवाद

सुशीला झा

‘छिन्नमस्ता’

हिन्दी क सुपरिचित कथाकार प्रभा खेतानक एहि उपन्यास में प्रिया नामक एकटा नारी क एहन व्यथा-कथा अछिजे निरन्तर शोषित होइत रहलीह अछि। समाजक सड़ल-गलल मान्यता सॅ आ पुरूषक अहंके भूख पौरूष सँ हद पार कऽ गेलै शोषण। मुदा प्रिया हारि नि□ा मानलैन्हि बल्कि शोषक-शक्ति'क लेल चुनौती स्वीकारि एकटा नव-बाट धऽ बढ़ैत रहलैन्हि। आ शुरू भेल-हुनक आन्तरिक आ वाह्य यात्रा। संघर्षक अनवरत सिलसिला। एहि बीच मेणे कौखन शिथिलताक अनुभव होइत छलैन्हि तथादि अपन लक्ष्य मोन पड़िते दुगूना वेग सँ बढ़ैत छलीह। आब देखौ समाज जाहि रीति-नीतिक दुहाई दऽ ओ उत्पीड़ित करैत छल आ हम बकरीक मेमना जकॉ मिमिआइत छलहुँ से आब निरीह अबला नहि सक्षम सबल छी। अपन विस्मृत अस्मिता कें प्राप्त कऽ आत्मविश्वासक उपस्थिति दर्ज करा रहल छी। संक्षेप मे कहल जा सकै'छ जे लेखिका नारी स्वातंत्र्य'क भावना कें- वास्तविक रूप कें उद्घाटित कएलैन्हि अछि।

राजकमल प्रकाशन

प्रथम संस्करण 1997

तेसर आवृति 2004

'प्लेन मे बैसल बैसल डॉर अकड़ि गेल, माथक दर्द सँ मन व्याकुल लगै'छ। वड्ड गलती कयलहुँ। एतेक दूरीक □लाइट नि□ा लेबऽ चाही।' प्रिया दूनू हाथे माथ दबैत सोचलनि। बगल मे बैसल व्यक्ति शायद पूर्वी यूरोपियन वा हंगेरियन-हेतै' हंगेरियन गोलाश सूप'क गंध महसूस होइछ। हूँ, किछु लोक कतहु कतेक आराम सँ सुति रहै'छ मुँह खोलि केहन ढररऽ पाड़ि रहल अछि। एहि खर्राटाक घर-घर सॅ आयल निन्नो उचटि गेल। हमहूँ कखनौकऽ भसिया जाइत छी नि□ा तऽ अइ एयरलाइन सँ नि□ा अबितहुँ। आब ई विमान बेलग्रेड मे उतरतै'। फेर घंटा डेढ़ घंटाक ट्रांजिट .... तकरबाद सोझे कलकत्ता। सोझे-कलकत्ता पहुँचैइ ए मे मजा छै...... नि□ा तऽ भरि दिन दिल्ली या बम्बई मे बर्बाद करू। नि□ा जानि कियेक हमरे देश मे अधरतिया मे लगभग बारह बजे से दू अढ़ाई के बीच सब □लाइट्स उतरै'छ। अइ अधरतिया मे या तऽ एयरपोर्ट पर बैसू या एयरपोर्टक होटल मे चारि-पाँच घंटाक लेल पन्द्रह सौ टाका फेकू। एक्सपोर्टक काज मे एतेक रईसी असंभव। ओहूना दिनोदिन यात्रा महंगे भेल जाइछ। .... कोनो मित्र कें अधरतिया मे जगायब प्रिया कँ नीक नि□ा लगैत-छैन्हि, मुदा मोन बड्ड खराब बुझाइत छैन्हि। जी हौड़ैंत छैन्हि होइत छैन्हि अब रद्द भऽ जाएत। प्रिया एयरहोस्टेसक बत्ती जरौलनि मोने मोन बजलीह- 'एहि यात्राक कहियो अन्त' हेतै?''

.... 'यस मैडम।' विहुँसैत एयरहोस्टेस बजलीह।

.... ''क्या आप मुझे कोका कोला दे सकती हैं?''

'जरूर'

हदमद मोन मे कोका कोलाक स्वादो अजीब लगलैन्हि। बुझाइछ कलकत्ता पहुँचलापर दू दिन धरि बिछाओन पर पड़ले रहब। दू बेर डिस्प्रिन खेलैन्हि तइओ मथबथ्थी कम नि□ा भैलेनिह । विमान धीरे-धीरे नीचाँ उतरि रहल छल। प्रियाक ऑखि खिड़की सॅ बाहर भोरका इजोत मे बेलग्रेडक विमानपत्तन पर गड़ल छलैन्हि। पश्चिमी यूरोप टपिते गरीबीक झलक भेँटऽ लगै'छ बरू बीच मे दुबई आ कुवैतक एयरपोर्ट भनहिं चमकैत देखाइछ। न्यूयार्क, लन्दन या- फ्रैकफर्ट क एयरपोर्टक मुकाबला तऽ नहिएँ कऽ सकै'छ। .... 'ट्रांजिट के पैसेंजर- पहले

उतर जाएँ, अपना-अपना समान प्लेन में ही छोड़ सकते हैं। हां, पासपोर्ट लेना न भूलें।' एयरहोस्टेस की आवाज थी। प्रिया अपना हाथ मे अटैची उठौलनि। ट्रांजिट मे घंटा भरि समय लगतै। भऽ सकै'छ हाथ मुँह धोला सॅ मन हल्लुक होमए। नि□ा जानि कियेक दिनोदिन स्वास्थ्य खसल जा रहल अछि? ट्रांजिट लाउंच मे बामा दिस जयबाक छलनि। एकबेर पैर लड़खड़ा- गेलैन्हि। फेर हिम्मत कऽ साँस धऽ देवारक सहारा लऽ पीठ ओंगठा कऽ ढाढ़ि भलीह। दू डेग बढ़लैन्हि कि चक्कर आबि गेलैन्हि। जाबत किछु सोच विचार करितथि तइँस पहिने आँखिक आगू अन्हार पसरि गेलैन्हि ठामहि अचेत भऽ खसि पड़लीह। होश भेला पर ऑखि फोलिचारूभर देखलनि हम कतऽ छी? तखनहिं अंग्रेजी मे युगोस्लावियन डाक्टर पूछलकैन्हि- 'आब मोन केहन अछि?' प्रिया उतारा देबऽ चाहैत छलथिन मुदा से असंभव बुझना गेलैन्हि अगल-बगल कर देवार ऊपर नीचाँ होइत बुझेलैन्हि। लगलैन्हि जेना फेरू ऑखिकऽ आगू अन्हार पसरि गेल होए, बेहोश भऽ गेलीह। डाक्टर एयरपोर्ट स्टाफ सॅ कहलथिन-इमरजैंसी। एंबुलेंस एलै आधा घंटा मे अस्पताल पहुँचलीह।

अइबेर होश होइते देखलनि उजर देवार, उजर पोशाक पहिरने नर्स अस्पताल मे छी से बुझि गेलीह। हाथ अँकरल सन बुझेलैन्हि सोझ करऽ चाहलैन्हि। तखनहिं स्नेह सँ नर्स कहलकैन्हि- 'अहाँ बेलग्रेडक सरकारी अस्पताल मे छी। हाथ के एहिना रहऽ दिऔ ग्लूकोज चढ़ाओल जाइछ।'

-'हमरा की भेल अछि?'

'चिन्ता जुनि करू। एखनहिं डाक्टर अबैत छथि बता देता।'

'हम अपना घर कलकत्ता संवाद पठाबऽ चाहैत छी।'

'मैडम, अहांक पासपोर्ट देखि ओतऽ फोन कयल गेल अछि।'

- ओह, ओइमेतऽ हमर सासुर क पता छला की अहाँ हमरा एहि नम्बर पर फोन करबा सकैत छी?' प्रिया एतबा कहि' हालैंऽ मे रहनिहार मित्र फिलिपक' नम्बर देलथिन।

- फिलिप मात्र सात घंटा मे बेलग्रेड पहुँचलाह। फिलिप के देखिते प्रियाक सूखल ठोर पर खुशी क हँसी छिहुलल। लग आबि प्रियाक माथ चुमैत फिलिप- बजलाह-'प्रिया आब चिन्ताक कोनो बात नहि हम डाक्टर से बतिएलहुँ कहलनि आब एकदम स्वस्थ छथि। आब हम आबि गेलहुँ सब ठीक भऽ जेतै।'

'फिलिप! धन्यवाद। मुदा हम बुझि ने पबैत छी-हमरा की भेल अछि?'

- 'अहाँ के किछु नि□ा भेल अछि... मात्र काजक ठेही। अहाँ कँ आराम

चाही। शियर एक्जॉशन। प्रिया अहाँ काजक पाछू अपना शरीर पर कनिको ध्याने नि□ा दैत छी। क्षमता से वेशी खटैत रहैत छी तै इ हाल भेल।'

– 'फिलिप, साफ–साफ कहू कहीं हार्टक प्राब्लम तऽ नहि ....?'

– 'नि□ा, नि□ा जैट लैग मे ....(हवाई यात्रा मे बैसल बैसल पैर अँकड़ि जायब स्वभाविके) दोसर गप्प ई जे बिना किछु खयने–पीने हवा मे उड़ैत रहने कतेक बेर तऽ 'वैसो बैगल एटैक' भऽ जाइत छैक। सच–सच कहू अहाँ खाना खयने छलहुँ कखन?

– 'शिकागो मे।'

'मतलब, दू दिन भऽ गेल भोजन कयला आ प्लेन मे अहाँ कोका कोलाक अलावा आर किछु पीने नि□ा हेवै'। हम अहाँ के खूब नीक जकाँ चिन्हऽ गेलहुँ अछि। पन्द्रह वर्ष सँ देख रहल छी' काजक पाछू अहाँ पागल भऽ गेलहुँ अछि।'

– 'फिलिप! प्लीज।'

'नि□ा प्रिया! अहि प्लीजक असर हमरा पर नि□ा होएत। एखन मोन होइछ अहाँ के खूब कसिकऽ क्लास ली जेना इलोना कें क्लास लैत छिऐन्हि कोनो गलती कयला पर।'

'इलोना नीकें छथि ने? हुनकर पढ़ाई केहन चलि रहल छैन्हि? आ जूडीक कुशल क्षेम कहू।'

'जुडी नीकें छथि अहाँक समाचार सुनिचिन्तित भऽ गेलीह। इलोना स्वस्थ छथि नीक जकाँ पढ़ाई चलि रहल छैन्हि।'

–फिलिप! अहाँ नीना सँ गप्प कऽ लेब कहि देबैन्हि एतुका समाचार ठीक छैक। अन्यथा ओ हड़बड़ा कऽ एतऽ आब जेतीह।'

'अहाँ चिन्ता जुनि करू। एहि सभक जिम्मा हम जुडी कें दऽ आयल छी– भऽ सकै'छ ओ आइ सांझि मे अहाँ से बात करतीह। अहाँक खबरि सुनि हम सभ स्तब्ध भऽ गेल छलहुँ ओ हमरा संगहि आबऽ चाहैत छलीह। कहुना हुनका कहि सुनि हम अयलहुँ।' फिलिप फेरू सांझि मे अस्पताल औता। हम कतबो सुतऽके प्रयास करैत छी मुदा निन्न नि□ा होइत अछि मोन बोझिल लगै'छ।

नर्स एकटा दबाई ढेलक आ हॉट चाकलेट। एखन माथ पर कतबो जोर दैत छी तइओ किछु सोचि नि□ा पबैत छी। लगै'छ जेना मानसाकाश मे छोट–छोट बादलक टुकड़ा हिलकोर मारि रहल अछि।

–सत्ते इम्हर किछु दिन सँ हम काजक पाछु तेइन अपस्यॉत रहलहुँ अछि

जे ने दिन कें दिन बुझलिऐ ने रातिकें राति। ई शिकागोक प्रदर्शनी लेल तऽ करीब पन्द्रह दिन सँ राति मे तीने चारि घंटा सूतैत हएब से निश्चिन्त भऽ नि□ा। नीना कहैत छलीह–भौजी एतऽ कनि' आराम कऽ लिअ ओतऽ शिकागो मे तऽ एको पल पलखति नि□ा भेँटत देह कोना ठाढ़ रहत!'

तखन हम कहैत छलिए– 'नि□ा नीना एखन आराम करबाक बेर नि□ा छै एहन मौका फेर भेँटत की नहि। स्पिलवर्ग स्वयं–स्टाल लगयबाक आफर देलक अछि।'

–नीना तीसवर्षक भऽ गेलीह मुदा एखनहुँ विवाह नि□ा कऽ रहल छथि आब विवाह कऽ लेबऽ चाही। ओना हमर ओ दहिन हाथ छथि सबसँ वेशी हुनके सहारा अछि हमरा। इएह सभ गुन–धुन करैत छलीह धीरे–धीरे आँखि मुना गैलेन्हि। खूब गहीर निन्न मे सूतल छलीह। भोर मे निन्न टूटलैन्हि तऽ सामने टँगल कैलेंडर पर नजरि पड़लैन्हि आइ अट्ठाईस अप्रैल भऽ गेलै। गुड मार्निंग कहैत नर्स चौकठी टपलीह।

– ''की हम बहुत अबेर धरि सूतलि रहलहुँ?''

– ''हां, आह अहाँ खूब सुतलहुँ। एखन अहाँ पहिने नास्ता करब की स्नान?''

– 'स्नान कऽ ली तऽ नीके लागत।'

– 'वेश, चलु। अहाँ कें कमजोरि तऽ नि□ा बुझा रहल अछि?'

–'नि□ा, एकदम नि□ा।'

'वाह!' नर्स प्रियाकें पलंग सँ उतारलनि, सुसुम पानि सँ नहा कऽ प्रिया के ताजगी महससू भेलैन्हि।

नास्ता मे गरम–गरम क्रोशा, मक्खन, जैम आ दूध संतराक रस पीलनि ब्लैक काफी पीलनि। पश्चिमक प्रत्येक होटल मे ऐहि तरहक नास्ता करबाक आदत भऽ गेलैन्हिए। नास्ता क तृप्त भऽ सोचऽ लगलीह प्रिया चमड़ाक ई व्यवसाय शुरू कयल कतेक वर्ष बीत गेल! आ कहिया सँ एहन यायावरी जिन्दगी जीवि रहल छी!! हम एहन एक्सपोर्टक काज शुरू हे कियेक कयलहुँ? देश–विदेश हरदम यात्रा मे समय बीतैत अछि। कोन दुःख दर्द बिसरऽ लेल ई यात्रा शुरू कयलहुँ? आ सुख? सुख कहिया भेँटल?? मोन ने पड़ै'छ कोनो सुखक क्षण। मुदा आई मोन मे स्नेहभावक उदवेग ककरा लेल एहन कोनो खास व्यक्ति ने मोन पड़ैछ ने रिश्ता–नाता। हँ, छोटकी माँ आ नीनाक प्रति स्नेह स्वभाविक बुझना जाइछ। स्नेहक पात्र अछि हमर स्टाफ जे राति–दिन हमरा संग खटैत रहै'छ। अबैत काल संग–संग आबि माल जहाज पर चढ़बैत अछि। जँ से

सभ बिमारीक समाचार सुनता तऽ बहुत चिन्तित हेताह।

–किछु आर आत्मीय व्यक्ति छथि हुनको खबरि भैँटले हेतैन्हि। छोटकी मां क स्वभाव तऽ बुझले अछि परम्पराकेँ निमाहऽ वाली ओ नरेन्द्र के फोन द्वारा अवश्य सूचित कयने हेथिन। एतके न□ा ओ संजु आ निधि के पठयबाक लेल आग्रहो कयने हेथिन फेरू मनाहि सुनि ठाकुर कड़ी मे बैसि कनने होएतीह। एतहु विदेश भूमि मे हमर किछु आत्मीय बन्धु छथि जाहि मे सबसे वेशी निकटा अछि फिलिप उठा जुडी सँ।

अस्पताल मे आइ दोसर दिन बीता रहल छी। मोन पड़ै'छ अपन आन्तरिक संवेदनाक स्मृति स्मृतिक ओ क्षण जकरा हम विस्मृतिक खोह मे धकेल देने छलिऐ आई सेह क्षण बरे–बरे स्मृतिक पटल पर झलकै'छ एतबा दिन हम बिसरने छलहुँ चाहैत छलहुँ सभ दिन बिसराएले रहए जेना अनजान शहर क भीड़ मे कतेक अजनबी चेहरा लोक देखै'छ संगहि चलै'छ पैदल वा कोनो सवारी मे मुदा फेर ओ स्मरण कहाँ रहैत छैक। यात्रा क बाद सब अपन–अपन ठेकान दिस बढ़ै'छ ककरो मुँह कान मोनो ने पड़ैत छै। अन्हार गुज–गुज सुरंग मे धड़धड़ाइत टयूब रेल मे अगल–बगल बैसल यात्री एक दोसरा से असंपृक्त रहै'छ होइत जे तहिना हमर स्मृति दिन–राति दर्दक सुरंग मे हकमैत दौड़ैत रहत मुदा ओ कहियो–सुरंग सॅ बाहर आबि हुलकियो ने मारत। कखनहुँ न□ा।

–तखन आइ एना कियेक भऽ रहल अछि। एक बेर एक संग नहि बेरा-बेरी टुकड़ा–टुकड़ा मे ऑखिक आगू पसरि जाइछ। रूम मे दवाईक गंध, फिलिपके आनल टयूलिपक गमक संग मिझरा कऽ एकटा अजीब गंध.. .... उज्जर दप–दप देवार स्वच्छ फर्स आ रंग–बिरंगक–ट्यूलिप। कहने छलाह फिलिप– अइ मौसमक ई पहिल ट्यूलिप छै। यूरोप मे एखन– पूर्णरूपेण बर्फ पिघललै अछि नहि, तैँ अप्रैलोमासक ट्यूलिप के रंग हल्लुक छैक– दूधिया गुलाबी, पीअर आ नव रंग–रूप लेबऽ लेवन आतुर उज्जर........हरियर पात। हम बहुत कष्ट झेलने छी। शोषण, उत्पीड़नकेर पीड़ा आ त्रासदी मे झुलसी एक–एक क्षण व्यतीत कयलहुँ अछि। जाहि दिन एहि त्रासदीकेँ अपन जिनगीक शर्त बुझलिऐ ताहि दिन सॅ आत्मस्वीकृतिक संग बेकार बेमतलबक विरोध से जूझब छोड़ि देलहुँ। किछु विशेष अर्थ मे एकरा हमर समर्पण बूझल गेल। समस्त शोषण उत्पीड़न क सोझा अपना के सलीब पर टँगल रहबाक अनुभूति भेल। मुदा एहि एकटा फायदा भेल आब हम अपना के जिनगीक समस्त चुनौतिक सामना करबा लेल तैयार छलहुँ।

पूर्व स्मृति नहुँए सँ कान्ह–छुबै'छ कि सोझा मे हमर हम सम्पूर्ण रूप मे ठाढ़ होइछ एकदम शान्त निर्विकार। पहिलुका संस्मरण वापस चलि जाउछ।

–'ओइ दिन नरेन्द्र हमरा सोझा मे टका सँ भरल ब्रीफकेश खोलिकऽ उझलैत चिचिआयल छलाह लिअ, अहाँके कतेक टका चाही?' लाख, दस लाख, करोड़? टका, टका, टका राति–दिन टकाक पाछू अपस्याँत रहैत छी? बाजू, बाजु ने कतेक टका चाही लऽ लिअऽ।'

आ फेर क्रो□ से तमतमाइत दस–दस हजारक गड्डी उठाकऽ हमरा देह पर फेकऽ लगलाह। हम नीचाँ मे बैसल अपना बक्सा पैक करैत छलहुँ। डायरी मे लिखल समानक मिलबैत छलहुँ– कोट, कार्डिगन, नाइटी, ब्रा, पैंटी, शर्ट्स, पैंट, सलवार–समीज, साड़ी ब्लाउज..............की दू टा साड़ी सँ निमही जाएत। दवाई लऽली एहि बीच नरेनद्र तुफान उठौलनि। न□ा रहि भेल हुनका दिस तकैत बजलहुँ– नरेन्द्र। ई व्यवसाय हम टका अर्जित करबा लेल न□ा कऽ रहल छी। ई हमर आइडेंटिटी अछि। हँ, चारि साल पहिने जहिया काज शुरू कयने छलहुँ तहिया भनहिं टका क जरूरत छल। आइ टका सॅ वेशी एकर महत्व छैक जे ऐहि देश सॅ विदेशक उड़ान हमरा जिनगीक कैनवास के बहुत पैघ बनबै'छ। नित नव व्यक्ति सॅ परिचय जान–पहिचान जीवन शैलीकेँ बूझऽ सूझऽ क अवसर दै'छ।

–'सोझ बात बाजु ने जे ऐहि व्यवसायक लाथे एसगर मौज मस्ती करबा मे नीक लगै'छ।

–'नरेन्द्र! अहाँ की बाजि रहल छी?'

–'हम बिल्कुल सही कहि रहल छी। अहाँ विदेश मे की करैत छी से हम–देखऽ जाइत छी? देखू, हमरा दिस देखू मोन पाड़ू जहिया ई व्यवसाय शुरू कयने छलहु तहिये हम चेता' देने छलँहु'

– काज करू मुदा ई न□ा बिसरब जे अहाँ विवाहिता छी, एकटा बच्चाक मां छी, अग्रवाल हाउसक पुतौहु छी।'

–'नरेन्द्र, बिना बात क दोष न□ा दिअ ककरो पर इल्जाम बिनु बुझने न□ा लगाबी। एहन शक होइछ तऽ संगे चलू देखू हम ओत की करैत छी।'

– वाह! हम अहाँक संगे चलू! अहाँके पाछू–पाछू सैंपलक बक्सा उठौने? धन्य छी श्रीमती जी! अपन पतिक केहन दिव्य खाका–घिंचलहुँ अछि?

हम आब चुप्पे रहनाई–नीक बुझि अपन फाईल उनटेलहुँ। जँ कोनो कागज छुटि जाएत तऽ ओतऽ प्रर्दशनी मे आफत भऽ जाएत। एखन धरि–श्यामल कॉस्टिंग पेपर्स न□ा पठौलक। सांझुक पाँच बाजि रहल छै सैंपलो पूरा न□ा

आयल अछि। एयर इंडियाक बारह बजेक-□लाइट अछि। ई □लाइट सोझे लंदन- पहुँचतै। हम कनखि सँ नरेन्द्र दिस तकलहुँ चेहरा घृणा सँ विकृत बुझना गेल। हे भगवान! ई फेर ने कोनो उत्पात मचाबए एक तऽ ओहिना यात्राक समय खासकऽ व्यापारिक यात्राकाल तनाव से माथ फटैत रहै'छ।

-बेर पर कखनौ कोनो वस्तु न□ा भेँटतै अछि तऽ कखनहुँ कोनो आवश्यक कागजात। जकर डर छल सेह भेल-फेरू चिचिएनाइ शुरू भेल- 'दरअसल हमरे गलती अछि एतेक छूट देबहि ने चाही। उड़ऽ सँ पहिने पाँखि कतरि देबऽ चाहैत छला केना अहाँक बात मे आबि गेलहुँ। चेहरा देखि क्यो बुझियो ने सकै'छ जे अहाँ केहन मक्कार औरत छी।'

-आहत मन सँ बजलहुँ-'आबहु चुप्प होउ!'

'न□ा हम चुप्प न□ा रहब। पहिने तऽ अहाँ कहैत छलहुँ मोन न□ा लगैत अछि घर मे गुमसुम बैसल रहने। तऽ मोन बहटारऽ लेल ई काज शुरू कयलहुँ। आ आब काजक अलावा आर कोनो बातक होशे न□ा अछि? एकदिन-कानि-कानि कऽ अहीं कहने छलहुँ'

- 'नरेन्द्र! हमरा मे आत्मविश्वासक कमी अछिं! कोनो मन लग्गू काज-करब तखने तनांव कम होएत आ स्वस्थ होएब।'

- 'तऽ की आब हम स्वस्थ न□ा छी? पहिने सँ वेशी संतुलित, आत्मविश्वास न□ा बुझाइत अछि?'

''संतुलन आ अहाँ? अहाँ तऽ सदैव 'वन ट्रैक माइंड' छी। पागल जकां जे करब ताहि मे अपस्यॉत रहब। भोरे आठ बजे-घर से बहराइत छी आ राति मे आठ बजे घरि घुरिकऽ आबि तऽ भाग्य सराहि।''

- हम कतहु चलऽ कहब तऽ हम थाकल छी माथ मे दर्द होइत अछि, मुदा क्यो अहाँक व्यापारी आबि जाय तऽ ओकरा संगे बारह- बजे राति घरि बाहर रहब। तखन ने माथ मे दर्द होएत ने थकनी, खूब चहकैत-रहब।'

'नरेन्द्र! अहाँ जनैत छी- हम काज सँ बाहर जाइत छी मुँह लटका कऽ बैसने हमर काज न□ा भऽ सकै'छ। हम कतहु ककरा संग नेह-छोह लेल न□ा जाइत छी।'

- 'इएह तऽ हम जानऽ चाहैत छी- जे दिनो-दिन अहाँ मशीन कियेक बनल जा रहल छी? अहाँक व्यक्तित्व मे कनिको रस बुझाइते ने अछि केहन निरस भऽ गेलहुँ। कनि देह पर हाथ रखैत छी तऽ छिहुलिकऽ हटि जाइत छी जेना बिजलीक करेंट छूबि गेल होइ। एकदम फ्रिजिड.......... होपलेस। अहीं कहने छलहुँ हम हरदम घरे मे बैसल रहब तऽ पागल भऽ जाएब।'

- हँ, हम कहने छलहुँ तऽ?

- तऽ इएह जे आब की भेल? कतऽ गेल अहाँक शर्त?

- नरेन्द्र! केहन शर्त! आ के चलै'छ शर्त पर? अहाँ चलैत छी शर्त पर? दुनियाँ मे सब अपन सुविधानुसार शर्त कैँ तोड़ि-मरोड़ कऽ चलै'छ।'

- 'यानि आपसी ईमानदारी, स्नेह-समर्पण.......... सभटा फुसी।'

- 'नरेन्द्र! इ सभ शब्दक भ्रमजाल छैक! औरत कैँ इसभ पाठ एहि पढ़ाओल जाइत छै जे ओ एहि शब्दक चक्र- ब्यूह से बहराई न□ा। अन्यथा युग-युग से आहुति देबाक जे परम्परा छै से चालु कोना रहैत?

- 'हमरा अहाँक फिलॉसफी ने सुनबाक रूचि अछि ने बहस करबाक। हँ, एकटा बात अहाँ सुनि लिअजँ आइ राति-अहाँ लन्दन जायब तऽ घुरिक अइ-घर मे न□ा आबि सकैत छी । कथमपि नहि।'

- 'ठीक छै।'

हम यथासाध्य अपना कैँ संयत रखलहुँ। ऑखिक नोर ऑखिये मे सुखा गेल। एखन यात्राक बेर मे हुनका से उलझब ठीक नहि। ओहिना ततेक तनाव अछि, बीच मे इ बखेड़ा। बिना मतलब के बकझक! गलती हमरे अछि। सोचने छलहुँ शनि के चंलला से कम से कम एक दिन रवि कैँ लन्दन मे आराम कऽ लेब, फेर ओतऽ से शिकागो- चलि जायब। मुदा इ न□ा सोचने छलहुँ जे बक्सा पैक देखि नरेन्द्र एतेक - उत्पात मचौता। मोने-मोन इएह सभ गुनधुन करैत छलहुँ कि फेरू नरेन्द्र दहाड़ऽ लगलाह- 'सुनू प्रिया! हम सीरियस छी. .. आइ मीन इट..... अहाँ आब अइ घर मे घुरि कऽ न□ा आबि सकै छी।'

- 'हम हँसैत पूछलिऐन्हि - की ई घर-मात्र अहिंक अछि?' सोचने छलहुँ एना बजने वातावरण किछु हल्लुक होएत। ओ वातावरण के हल्लुक कियेक होमऽ देताह। विषाह लोक वातावरण कैँ विषाक्त बनाओत ने।

क्रो□ सँ बजलाह-'हँ, हँ कानि खोलि कऽ सुनि लिअ ई घर हमर अछिआ कानूनक नजरि मे बेटाक कस्टडी बापे के भेँटैत छैक तैँ सँजु हमरे लग रहत।'

- 'नरेन्द्र ! अहाँ के की भऽ गेल अछि? की आलतु-फालतु बात लऽ कऽ बैस गेलहुँ क्यो बाहर सँ सुनत तऽ की कहत?'

- 'जकरा जे बुझबाक होइ बुझए। हम अहाँक तलाक देबऽ चाहैत छी।'

'राक्षस!' एकाएक मुँह से उएह शब्द- बहराएल।

'हँ, हम तऽ राक्षस छी आ अहाँ? अहाँ की देवी छी ! शैतान क जड़ि छी, ओहिना एतेक व्यापार पसरि गेल?'

आइ हेट यू ..... आइ रियली हेट यू।'

– 'नरेन्द्र! व्यापार पसरल मेहनत आ ईमानदारी सँ धूर्तें सॅ नहि! आ ने इ हमरा विरासत मे भेँटल अछि।'

– 'ओह! तऽ विरासत कहि कऽ अहाँ हमरा पर व्यंग्य करैत छी। प्रिया ई जुनि बिसरू हम पुरूष छी–अई घरक मालिक!

– 'अइ घर मे हमर मर्जी चलत सिर्फ हमर।'

– 'से तऽ हम देखिए रहल छी। अहिंक मर्जी चलै' छ। आ हम अहाँक कोनो सुख मे बिघ्नो न□ा दैत छी। चुपचाप अपन काज कऽ रहल छी।'

– इ काजतऽ बहाना अछि पाई कमएबाक भूत सवार भेल अछि। असल मे अहाँ आत्ममुग्ध महिला छी। अपने रूप के सजबैत रहऽ चाहैत छी। अहाँक महत्वाकांक्षा दिन दुगुना राति चौगुना बढ़िते जा रहल अछि।'

– की महत्वाकांक्षी भेनाई अपराध छैक? की अहाँ टकाक पाछु अपस्यॉत न□ा रहैत छी? शेयर के भाव बुझऽ लेल दिन–राति फोन कान सँ सटेनहि रहैत छी। एतऽ सॅ लेलहुँ ओतऽ बेचलहुँ। तऽ अहाँक हमर कमाइ सँ जलन कियेक होइछ? अहाँ तऽ साल मे करोड़ो कमाइत छी हमरा तऽ मुश्किल सँ पाँच सँ सात लाख होइछ! की अहाँ 'फिक्की' क प्रेसीडेंट होमऽ न□ा चाहैत छी? सभा–सोसायटी मे मंच पर बैसकऽ मे हार पहिरनाई नीक न□ा लगै' छ?

– 'ओह! तऽ अहाँके' हमरा सँ जलन होइछ? तैँ सजि–धजि कऽ इंडिया टू डे मे फोटो छपबेलहुँ? ए ग्रेट बिजनेस इंटरप्राइजर मिसेज प्रिया–अग्रवाल।'

'नरेन्द्र! सत्ते एखन अहाँक मूड खराब अछि।'

– 'मूड' क बहाना छोड़ू । हम फेर सिरियस भऽ कहैत छी, जँ आई अहाँ लंदन जायब तऽ अइ घर में घुरि कऽ न□ा आबि सकैत छी।

– दुर इहो कोनो जिनगी भैले जखन देखू तखन बस बिजनेस। आइ कस्टमर आबि रहल अछि तऽ काल्हि सैम्पल बनबाबऽ मे फैक्ट्री मे आधा राति बीत जाइछ। राति मे मिनट–मिनट पर फोनक घंटी बजैत रहै' छ। घर ने भेल पागलखाना भऽ गेल।'

– 'अहाँ केँ दिक्कत न□ा होमय तैँ तऽ हम अलग कमरा मे रहैत छी। पापा क देहांतक बाद तऽ ....।'

– 'बाजू, बाजू ने चुप्प कियेक भऽ गेलहुँ? अहाँ इउह ने कहऽ चाहैत छी जे आबतऽ हम लड़की सभ केँ घरो लऽ अबैत छी?'

– 'सब बुझिते छी। शान्त होउ। हम लंदन–अवश्य जायब।'

– 'तऽ अहॉ जयबे करब .... अहाँके एतेक हिम्मत?'

– हुनका ऑखिक लाली हिंसाक संकेत दऽ रहल छल करेज कॉपऽ लागल। फेरू चिचिएलाह – 'अंतिम बेर कहैत छी सुनि लिअ घुरि कऽ एत न□ा आयब। गेटे पर से धक्का दऽ बाहर कऽ देब।'

बाहर हाल मे सोफा पर माथ पकड़ने सासु बैसल छलीह– पाथरक मूरूत जकाँ। ऑखि से दहो–बहो नारे झहरैत छलैन्हि। घरक केवाड़ लग ठाढ़ भेल सँजू सभटा बात सुनैत छंल। पैर पटकैत नरेन्द्र घर सँ बहरेलाह। पलंग पर खुजल ब्रीफकेश ओहिना धएल छल सभटा टका छिड़ियाल छलै। सँजु हमरा भरि पाँज पकड़ि कानऽ लागल।

– 'मां।'

'हँ, बौआ बाजू की ?'

– 'मां की अहाँ केँ लंदन' जाएब बहुत जरूरी अछि?'

– 'हँ, बेटा काज समये पर करऽ पड़ैत छै।'

– 'मुदा इ पापा के पसंद न□ा छैन्हि। आ, मां..... अपना सभके पाइक अभाबो तऽ न□ा अछि।'

– 'बेटा हमरा तऽ टका क जरूरत अछि।'

मोने–मोन सोचलहुँ – एतेक समझौता कयलाक बाद ई हाल अछि पतिदेवक।

संजु हमरा गरदनि मे बॉहि धऽ जोर सँ कानऽ लागल। हम अपना केँ कहुना जप्तकऽ कोमल स्वर मे कहलिऐ – 'बौआ, चुप्प भऽ जाउ। जिनगरिक बाट आसान न□ा छैक।'

हाथ मे ताजा ट्यूलिपक गुच्छा नेने फिलिप के देखलिएन्हि। लग आबि–नहुँए सॅ माथ पर हाथ रखैत पूछलैन्हि –

– 'आब केहन मोन अछि प्रिया?'

– 'तरोताजा।'

– 'की अई फूल जकाँ?'

दूनू गोटे भभाक हँसलहुँ।

'जूडी अहाँ के याद करैत छलीह । हम अहाँक रहबा लेल डूयब्रवनिक मे होटल बुक करा देलहुँ अछि। एखन कम से कम दस दिन आरामक जरूरत अछि। सेतीस्टेफा मे पैघहस्ती छुटी□ बिताबऽ अबै' छ। देखऽ योग जगह छैक।'

'महग हेतै?'

'प्रिया! अहाँ एफोर्ड कऽ सकैत छी।'

'तथापि....?'

'प्रिया नि□ा जानि कियेक भारतीय नारी अपना आप केँ प्यार कियेक नि□ा कऽ पबै' छ? अहाँस्वयं एतेक कमाइत छी' तखन एहन अवस्था मे अपना लेल सुख भोगब अन सोहाँत कियेक लगैत अतिछ?'

'ओह! फिलिप! हमरा शब्द नि□ा भॅटैत अछि की कहि धन्यवाद दी!'

– 'अच्छा! पिछला पन्द्रह वर्षक दोस्ती मे एखनहुँ धन्यवादक औपचारिकताक लेल जगह खालि छैक । अरे, हम एक दोसराक नीक अधलाह नि□ा सोचब तऽ के सोचतै? असल मे जूडीक इच्छा छलनि जे हम अहाँ के अपने घर नेने आबि। मुदा हम जैनेत छी अहाँ एकान्त वेशी पसिन करैत छी। हँ जँ मन अबि जाए तऽ हालैंड ऊबि जायब। आँखि नोरा गेल एतेक अपनत्व? मानल हुँ एतेक वर्ष सँ मित्रता अछि साल मे कतेक बेर भेंट होइछ? हँ एतबा अवश्य जे एको दिन लेल भेंट होइछ तऽ आधा-आधा राति धरि जूडी, फिलिप आ हम गप्पे करैत रहि जाइत छी। कॉफी पर कॉफी पिबैत-अतीत सॅ लऽलऽ वर्तमान धरिक वृतान्त कहैत-सुनैत बीतै' छ।

संजु पिताक वारिस बनल हुनके लग छल। हँ बीच-बीच मे हमरा सँ भेंट करऽ अबैत छल सहमल-सहमल बुझना जाइत छल। हम नि□ा चाहैत छलँहु जे हमरा दूनूक दोगला राजनीति मे इ लड़का पिसाइत रहए। ओना अपना भरि ओ हमरा खुश करऽ चाहैत छल। धीरे-धीरे संजु पूर्ण रूपेण नरेन्द्रक मुट्ठी मे बन्द होइत गेल। बापक डरेँ हमरा सँ दूर-दूर रहऽ लागल। नरेन्द्रक व्यवहार देखि हम शुरूहे सॅ क्षुब्ध छलँहु। सच कहू तऽ हमरा नजरि मे ओ-हेल्दी एनिमल छलाइ। हम लंदन सँ घुरि कऽ कतऽ गेल छलहुँ।

आई अस्पताल मे हमर तेसर दिन छल। भोर मे बहुत देर घरि बगीचा मे टहलैत रहलहुँ। डाक्टर आइभरि एतहि रहऽ कहलक अछि। काल्हि प्रातःकाल डूयब्रवनिक चलि जायब। नीना सॅ गप्प भेल ओ बेर-बेर कहैत छलीह भाभी अहाँ चिन्ता नि□ा करब, एतऽ हम सब सम्हारि लेब।

खिड़कीक उज्ञर पर्दा पर डूबैत सूर्यक-उदास छाया वातावरण के फीका कऽ गेल। धीरे-धीरे उज्ञर आकाश मे रातुक स्याही पसरए लागल। हम करौट फेरलहुँ अतीतक परछॉही आँखि मे हुलकी मारऽ लागल। सबसे पहिने देखलहुँ नेनपनक एकटा सांझि।

स्मृतिक बाट पर नहुँ-नहुँ डेग बढ़ेलहुँ। तइओ स्मृतिक जंगल झाड़ मे करवनहुँ आँचर ओझराइत छल तऽ करवनहुँ पैर मे ठेस लगैत छल पाथर सॅ, करवनहुँ कुहेस सॅ भरल आकाश .... कतहु किछु ने सुझाए तऽ कौखन शीतल ओसक स्पर्श से पैर से देह धरि भुलुकि उठय। फेरू मोन पड़ल आँखि

से झहरैत नोर!

बहुत दूर से बीतलल अतीतक परछॉही के डोलैत देखलहुँ! मात्र साढ़े नौ वर्षक नान्हिटा- बच्ची सांझि ए सॅ गुमसुम खिड़की पर बैसल- छैक! आई खेलऽ लेऽ नीचॉ नि□ा उतरल। संगी सहेली बजाबऽ एलै तऽ झनकि कऽ मना कऽ देलकै। शान्त गुम्म भऽ देवार पर अबैत-जाइत छॉही केँ देखैत रहल। सूर्य डूबि गेलै। अन्हार पसरि गेलै तइओ ओ ओतहि बैसल हल। ठंढ़ा बसात बहलै, दाई मां स्वेटर पहिरा देलथिन।

– खेनाई ले' पूछलकै दाई मां तऽ मना कऽ देलकै। सामने मे रहै' छै चित्रा ओकरा एतऽ खेलहु नि□ा गेल।

के छै इ लड़की?

के? ई तऽ हम छी हम!

अपने नेनपनक तऽ इ परछॉही देख रहल छी। नेनपनक ओ दुर्घटना कहियो बिसरा सकै' छ। रतुका साढ़े नौ बाजक छलै-सुतबाक बेरा गुप्ता हाउस मे सब काज घड़ीक सूई संग होइत छै सभक समय निर्धारिक छैक। दाई मां हमर नाइटी पैंटी, देहपोछबा लेल तौलिया पावडर क्रीम सब चीज राखि रहल छलीह। एहनाबेर में हम वेशी काल चुप्पे बैसल रहैत छलहु। कपड़ा राखि कऽ दाई मां दूध उठा टोस्ट लऽ कऽ आबि गेलीह, चल बुच्ची, कनि दूध पी' ले सूतऽ क बेर भऽ गेलै'।

दूध पीबि हम बाथरूम मे घुसलहुँ। ब्रश-कयलहुँ। नि□ा जानि कियेक मां क सोझा मे नाइटी पहिन कऽ जयबा मे लाज लगैत छल ाई मांक सोझा किधु पहिरक चलि जाइत छलहुँ कनिको धाख नि□ा होइत छल। पैंटी बदल लहुँ समीज लेल हाथ बढ़ाबिते छलहुँ की दाई मां क नजरि हमरा पैंटी पर पड़लै'। उज्ञर पैंटी मे खूनक धब्बा!

'बाप रे, ई की भेल? ई खून..... एखन तऽ दसमां बरस शुरूहे भैले ए.... हे भगवान! हमरा बच्चीकेँ इ की भऽ गेलै?' दाई मां! अहाँ कियेक चिचिआइत छी मां के सब मास एना खून लगिते छै कपड़ा मे?

तऽ.... दाई मां एखनहुँ आतंकित छलीह।

– 'लड़का भैया आई हमरा ....'

'अरे कसाई! अपन सहोदर बहिनो के नि□ा छोड़लें। ओना ओकर बानि तऽ बुझले अछि। बहुरानी केँ डरेँ किछु नि□ा बजैत छै।

'दाई मां! भैया एना कियेक कएलन्हि? हम रोकने छलिएन्हि चिचिआय लगलहुँ तऽ जारे से थापड़ मारलैटि आ हमर मुँख बान्हि देलनि! हम मां के सब

बात कहि देबई।'

'नि□ा बौआ नि□ा। आब अहाँ कैं शीलभंग तऽ भइए गेल। बुच्ची ई बात कहियो ककरो लग नि□ा बाजब।'

बजैत-बजैस दाई मां कानऽ लगलीहा हमरा अपना करेज मे सटने कतेककाल धरि हुचुक हुचुक के कनैत रहलीह। दाई मां क ममता हमरो मोन सिहरि उठल मन मे भेल जे हमरा सँ कोनो भयंकर गलती भऽ गेल अछि। अपराध बोध भेल, पहिल बेर जिनगी मे बुझायल जे एकरे पाप कहल जाइछ।

'दाई मां! .... मां हमरा कियेक भारतीह? भैय तऽ हमरा जबरदस्ती बाथरूम मे लऽ गेल छलाह आ हमर पैंटी खोलि कऽ.......।'

'हम कतबो कभैत रहलहुँ तइओ हमरा नि□ा छोड़लनि। हमर गलती तऽ नि□ा अछि तऽ मां हुनके बजथिन, बाबूजी क गेलाक बाद तऽ घर मे पैघ पुरूष भैये छथिन। मां कहैत छथिन भैया बड्ड बुझनुक छथि हरदम भैयाक बड़ाई करैत रहैत छथिन। मां कहैत छथि भैया नि□ा रहितथि तऽ हम साभ भूखे मरि जैयतहुँ। हमहुँ कभैत छलहुँ आ दाई मां तऽ कनिते छलीह। हम बरे बरे बजैत छलहु दाई मां हमर कोन दोष मां हमरा कियेक भारतीइ कहबैनिधत? दाई मां भाभी नैहर।

- गेल छलथिन तकर प्रात हम एसगर अइ रूम मे छलहुँ तऽ भैया पैंटक बटन खोलैत छलाए तखने चमेलिया आंबि गेलै तऽ भैया बाहरन चलि गेलाह।' दाई मां हमराकरेज सटनहि छल। फेरन बाजल-बुच्ची! हमर बात मानू एखने नि□ा जिनगी मे कहियो ककरो लगई बात नति□ा बाजब। ब्याह हेत तऽ पति परमेश्वरी से नि□ा बाजबा आ आई सँ हरदम हम अपना नजरि से ओझल नि□ा होम देब। बुच्ची! हम अहाँ कैं छोड़ि कऽ कतहु नि□ जाएब।

सत्ते दाई मां! अहाँ अपना गाँव नि□ा जायब। दाई मां! अहाँ हरदम हमरा लग रहब? दाई मां घर मे अहीं तऽ हमरा दुलार करैत छी आर क्यो हमरा खूब मानैत छलाह, बाबूजी कियेक चलि गेलाह?'

'की कहू बुच्ची भगवानक मर्जी।'

हमर छोट छीन दिमाग सोचऽ मे व्यस्त भऽ गेल। पलंग पर पड़ल-पड़ल सोचैत छलहुँ बाबूजी कोना चलि गेलाह? हमरा त कखनौ काल लगै' छ जे खड़ाम पहिरने बाबूजी हॉल मे चलि रहल छथि। ओई दिन बाबूजी ऑफिस गेलाह से घुरि कऽ नि□ा अयलाहा राति मे बारह बजे खाली गाड़ी लऽ ड्राइवर घुरल छल दरबजे पर चिचिआइत धड़ाम सॅ खसल -बड़का बाबूजी नि□ा रहलाह। हुनका हार्ट फेल भऽ गेलैन्हि।' दाई मां हमरा जगाकऽ कहने छलीह-बुच्ची!

-अनर्थ भऽ गेलै, बड़का बाबूजी कैं आफिसे मे हार्ट फेल भऽ गेलैन्हि। देवता सन मालिक आब नि□ा रहलाह जुलुम भऽ गेलै। दाई मां दनू हाथ माथ पीटैत छल। मांक रूम सॅ कननइक स्वर आबि रहल छल हम दौड़ैत हुनका लग गेलहुँ। मां देवार सॅ कपाड़ फोड़ि रहल छलीह सरला दीदी कनैत-कनैत बजलीह-मां, एना करबै तऽ हमरा सभके के देखत, आब अहींक सब सम्हारऽ पड़त।

बड़का भैया काज सँ रंगून गेल छलाह। काल्हि भोर मे आबऽ बला छलाह। भैयाक कईसी बाबूजी के नि□ा सोहाइत छलैन्हि। हुनकर फिजुलखर्ची देखि बहुत दुखी रहैत छलाह। रोज नव-नव सूट, इत्र सॅ गमकैत रूमाल, केश मे तेल नि□ा बिल क्रीम लगबैत छथि। जहिया बाहर जाइत छलाह ओहू- दिन बाबूजी कहने छलथिन - विजयक मां, अहॉके बेटाक रईसीक अन्त नहि। कतबो कमाएत बचतै नि□ा।' मां के नि□ा नीक लगलैन्हि लोहदि कऽ बजलथिन-

'यौ, अहाँ तऽ हरदम ओकरे पाछु पड़ल रहैत छी कम से कम यात्राकाल तऽ शुभ-शुभ बाजू।'

बाबूजी ओहुना बड्ड कम बजैत छलाह। आ जखन मां क प्रलाप प्रारम्भ होइत छलै तखन तऽ सोझे उठि कऽ अपना रूम मे चलि जाइत छलाह। हँ घर बच्चा सभ लेल हुनकर रूम हरिदम खुजले रहैत छल। बाबूजीक घर मे नेवारवाला पलंग छैलैन्हि ताहि खूब मोट गद्दा आ मसनद छलै। बाबूजीक पाछाँ-पाछाँ हरदम छोटका भैया चलैत छलाह। तकरा पाँछा।

-सरोज आ हम बड़की दीदीक दूनू नेना रवि जकरा हम सभ बुल्ली कहैत छलिऐ से आ नीलू बुल्ली आ नीलू प्राय: एतहि रहैत छल। हम चारू सरोज, बुल्ली, नीलू। आ हमरा सभ मे मात्र एक-एक साल क अन्तर। मां क दहिन हाथ छलथिन बड़का भैया आ बाम हाथ सरला दीदी। सरला दीदी के घर मे सब सल्लो कहि कऽ शारे पाड़ैत छलनि।

सल्लो दीदी कें बड्ड पैछ घर मे विवाह भेल छलनि। जीजा जी देखबा मे कुरूप कारी छलाह बाबूजी हुनका देखि कऽ विवाह लेल मना कयने छलथिन। मुदा अइ विवाहक प्रस्ताव अनने छलाह मामा। ओ मां के बुझा सुझा कऽ मना लेलथिन। खानदानी घर छै, अपन जुटमिल, कॉटन मिल, बैरकपुर मे लोहाक कारखाना, चाय बगान छै। ई तऽ बेटीक भाग्य अन्यथा कहाँ हमरा लोकनि कहाँ हुनकर परिवार। मां मानि गेलथिन! बाबूजी कें पसंद नि□ा नि□ा छलैन्हि। मामा कैं कहने छलथिन- 'जय कुमार जी, सटोरिया परिवारक कतेक गुणगान करब? भऽ सकैंद काल्हि सटा□ मे ओकर जुटमिल आ कॉटन मिल

बिका जाइ? आ ओ लोकनि कोना पाइ बटोरलनि से हम नहि जनैत छिए? अहाँ कनिको अघलाह नहि लगैं'छ एहन सोनपरी सन भगिनी कें कारी कौआ सॅ ब्याह तय करब? हमरा कहीक कभी अछि? हँ, भौतिकता मे हुनका सॅ उन्नीस छी सेह ने! मुदा हमर खानदान? खनदानक बात सुनिते मां भड़कि गेलीह। हँ, हँ बड्ड नीक खानदान अछि अहाँक?

– ने ककरो ड्रेस सेंस अछि ने बातचित करबाक शऊर। अहॉक मां के कहिकऽ थाकि गेलहुँ मुदा ओ सारी बिनु पेटीकोटे के पहिरतीह। कतेक खराब लगैत छॅ। ओई दिन भगवानक कथा सुनबा लेल रूँगटा हाउस गेल छलहुँ जमुना मौसी टोकिए देलनि – ए कस्तुरी ! अहाँक सासु-केहन फुहड़ छथि एक छिन्ना सारी पहिरैत छथि आ ऊपर उघाड़ ब्लाउज नहि। आ तेहन गंवार भाई सभ अछि। बहिनक कोन गप्प ने कथुक लुरि व्यवहार ने पढ़ल लिखल।

मामा जी इस भटाा वृतांत सुनिते कुटिल मुसकि छोड़लनि। बाबूजी हारि मानि बजलाह।

– 'ठीक दै अहाँ बेटीक मां छी आ इ अहाँक भाई छथि तऽ अहाँ दूनू गोटे के इ 'कथा' पसिन्न अदि तऽ त करू। मुद्र एकटा बात हम पहिने कहि दैत छी हम एक लाख टका पहिनहिं दऽ देबैन्हि ओ जेना जे खर्च करथि बाद मे हमरा सॅ उम्मीद नहि राखथि।

–जीजा जी, अहॉ कोन चर्चा लऽ कऽ बैसि गेलहुँ। अरे हुनका कथीक कमी छैन्हि? सेठानी चौअन्नीक आकारक पाँच-पाँच ट हीरा पहिरने रहैत छथि।

पाँच-पाँच टा हीरावाला करोड़पतिक गुणगान मांक सॅ सदतिकाल सुनैत छलहुॅ। दूनू काने मे चौअन्नीक बराबर हीरा नाकक छक हीराक आ दूनू आंगुर मे हीराक अंगुठी। हॅ मायिओ के हीरा क अंगुठी छलैन्हि आ जमुना मौसीके हीरा क अंगुठी छैन्हि। पाँच टा हीरा तऽ मां के देहो पर झलकैत छैन्दि मनहिं छोट-छोट छैन्हि। अच्छा।

–ओइ समय जे बाबूजी एक लाख टका देने छलथिन आइ चालीस साल बाद ओकर कतेक कीमत हेतै? करीब-करीब करोड़ टका सॅ ऊपर दहेज मे ढ़ेल गेल छलै।

सोचबाक क्रम जारी छला एतेक दिनक बादो बाबूजीक स्मरण होइते ऑखि डबडबा जाइत अछि। 'हँ, जहिया हमरा बरबाद कयने छलाह बड़का भैया तहिया कतेक हब्बी ढ़कार कनैत सोचैत छलहुँ जॅ बाबूजी एखन आबि जाएताह ...... मुदा मुइल लोक कतहु घुरि कऽ आबय।'

.... 'सूति रहू बुच्ची, उऽाक कनने की ....'

दाई मांक ममत्व हुनकर हॅसोथैत हाथ देह मन कें शक्ति देने छल ऑखि कखन मुना गेल नहि बुझलिऐ ।

हम सब छह भाई-बहिन छलहुँ । बड़की दीदीक नाम छलैन्हि सुमित्रा। हुनक चौदहे वर्ष मे विवाह भेल छलैन्हि आ तइसम वर्ष होइत-होइत चारि बच्चाक मां भऽ गेलीह। बड़की दीदीक विवाह समय मां मात्र अट्ठाइस वर्षक छलीह। हुनका बाद छलीह मंझली दीदी सरला हुनका बाद बड़का भैया विजय फेरू छोटका भैया अजय आ सरोज हमरा से एक साल मैघ। दाई मां कहने छलीह हमर नाम प्रिया डाक्टर अमृता कौर रखने छलीह। सब भाई-बहिनक रंग गोर छलै हमरे टा गेहुआँ रंग छल। कॉलेज मे संगी गेहुआँ गोर आ कटबार ऑखि नाक वाली कहैत छलीह। अपन रंग-रूपक नीक कॉम्पिलमेंट कॉलेजे में सुनलहुँ! बड़की दीदी सरोज बड्ड चंचल छलीह जखन तखन भैया आ दीदी कामक चुगली बाबूजी लग करैत छलीह।

– हुनका सँ सब डरल-सहमल रहैत छल कखन ककरा बात पर हंगामा कऽ देतीह जोर-जोर कानऽ लगतीह तकर कोनो ठेकान नहि। 'देखऽ मे बड्ड सुधंग मुदा एक नमरकँ चुगलखाोर जहरक पुड़िया।' भैया आ सरला दीदी इएह कहि हुनका खौंफ बैत छलथिन। आ सब सँ छोट रहितहुँ हम ने दुलारे छिड़िआइत छलहुँ ने करो चुगलीए करैत छलहुँ। तैं हम बड्ड नीक जकरा जे मोन होई हमरा कहैत छले ।

डूयब्रवनिक मे होटलक नाम छै 'सेतीस्टेफा'। कमरा नम्बर 211 केवार फोलि भीतर गेलहुँ। खूब पैध साफ सुथरा बाथरूम। खिड़की सँ सटल बालकनी। कमरा मे आराम दायक दू टा पलंग। ईस्टर के छुट्टी मे इ होटल टूरिस्ट सॅ भरल रहैत छैक तखन इएह रूमके डबल रूमक चार्ज लगैत छै। प्रत्येक दिनक कतेक डालर लगैतै ? अपन आइ सोच पर हँसी लागल। फिलिप ठीके कहने छलाह 'अहाँ कँ अपना आप सॅ प्रेम नहि अछि? भूख लागल अछि। आब की करू? .... ककर दोष हमहीं चाहैत छलहुँ – ठीक छै आब रूम सर्विस कँ फोन कऽ चाह आ टोस्ट के आर्डर दऽ दैत छिएक।

– 'मैडम अहाँ लेल क्ररोर अरलजहुँ अछि एखन तुरत बेकरी सॅ एलैए।'

मने मन हँसी लागल इ होटल वला सथ अपन गेस्टक कतेक ध्यान रखैत अछि आ समयानुकूल सुझाव दऽ देत। रूम सर्वेट कँ जाइते हम फेरू पलंग पर आंघरा गेलहुँ पंख से भरल मुलायम तकिया नीक लगै' छ फेय मोन पड़क कोसा तऽ दऽ गेल चाह नहि ढेलक। फेरू फोन कयलहुँ-चाह आबि गेल। एक घुंट पीलहुँ एकदम बेस्वाद।

– लागत, क्रोसा कहुना आधा खेलहुँ जी हौरंऽ लागल। अचानक न□ा की भऽ गेल?

एखन हम सड़क पर छी मोन एखनहुँ नीक न□ा लगै'छ घुरि कऽ होटल आबि गेलहुँ सम्पूर्ण शरीर मे थकनि दर्द क अनुभव होइछ ऑँखि मुनि पलंग पर सुति रहलहुँ न□ा जानि करवन ऑँखि मुना गेल।

भोर मे उठलहुँ तऽ मन हल्लुक लागल। सोचलहुँ आब ऑर्गनाइज कऽ ली समय। सांझि भोर ऐहि होटल मे खायब, ओना हमरा लेल भोजन आतेक महत्व न□ा रखैं'छ। घूमब प्रत्येक दिन घंटाा दू घंटा चारि घंटा। से हो केहन घुमनाई? लक्ष्यहीन । वर्तमानक झरोखा सॅ अतीत बेर बेर हुलकी भारैत अछि। से हो क्रमब□ नहि आगा पॉछा बेढंगा। लिखऽ चाहैत छी मुदा कोना लिखू? हँ एकटा अनुभूति भऽ रहल अछि जे एसगर रहने एकटा लाम-भेल अछि जे भीतर मे जमल बर्फ पिघलऽ लागल अछि तरल पारदर्शी चेतना, अतीत मे बीतल घटना केँ हूबहू देख रहल छी आ बहुतो बात एहन छै जकर आब अपेक्षा न□ा कयल जा सकै' छ। हमर इ नितान्त अपन एकान्त कोना काजक व्यवस्तता मे ओझल रहैत हल। मुदा आब अपना के ठगब होएत एकरा अन्ठाएब। अपना के एसगर रहबाक त्रासदी केँ की कहिऐ आतंक की कर्मक फल? ऑँखिक नीर के तीव्र गति सॅ जीवनक दौड़ मे सुखबैत रहलहुँ अछि। पछिला दस वर्ष सॅ काजक पॉछा तेहन व्यस्त रहलहुँ जे कहियो अतीतक विषय मे सोचबाक लेल पलखति न□ा भेँटल।

– आ जँ काजक व्यस्तता न□ा रहैत तऽ की हम जी सकितहुँ? हम्हर दस दिन सँ ई प्रश्न पूर्ण अस्मिताक संग हमरा आगाँ ठाढ़ रहै' छ- उतारा मंगै'छ हम की उत्तर दिऐ? जिनगी व्यतीत करबाक आर बहुत तरीका छैक-मुदा कोन तरीका? जूडी हरदम कहै' छ 'प्रिया! अहाँ अपन मनक बात डायरी मे लिखल अरू मन क मार हल्लुक हेतऽ । महिला एखनहुँ मौन रहैत दथि मुदा हुनकर नीर दुनियॉ हॅसैत छैन्हि। हिस्टिरियाक दौड़ा पड़लापर कानब, चिकड़ब सुनि पुरूष कान मुनि लै' छ। मुदा शब्दक महत्व छैक शब्तक अपन इतिहास छैक. .... आ जॅ प्रकाशित भऽ जाय तऽ ओकर अपेक्षा न□ा कएल जा सकै' छ।

– 'मुदा जुडी एहन किछु हम न□ा लिख सकैत छी।'

लिखाई शुरू करब तऽ अपना सन हजारो-लाखो महिलाक मन सँ संवाद स्थापित कऽ सकब। न□ा जानि कतेक के अहाँक शब्द मरहम जकाँ घाव केँ शीतलता देतै! अनगिनत मौन महिला केँ मुखर बनाओत। गोंगा बनलि छथि से बजतीह हँ, हँ इ कथा सत्य छै एहन हमरो संग भेल अछि।'

आइ एतऽ अपन परिचित लोकवेद सॅ दूर भौगोलिक परिवेश सॅ सुन्दर छी तऽ लगै'छ जेना पियाजक छिलका जकॉ परत दर परत उघड़ि रहल अछि जे किछु हमर अपन वास्तविकता अछि जतबा बाहरी दुनियाँ के संघातक दौरन हम आत्मसात कयने छलहुँ से सभटा ऑँखिक आगू नाचि रहल अछि।

– आब जरूरी छै एकटा सभकेँ नीक जाकाँ चिन्हब। भनहिं हमरा पर परिस्थितिक प्रभाब परल आ हम जीनगीक जरूरतक अनुसार नव बाट पकड़लहुँ नव परिस्थिति गढ़लहु। मुदा आब कतेक चमत्कृत करै'छ जे आब हम परिस्थितिक हाथक कठपुतरी नीन्नो जेना पहिने परिस्थितिकेँ अपन नियति बुझि लेने छलहुँ से बात आब न□ा रहल।

एहि विराटक प्रक्रिया मे कोना छोट छीन प्रयास सम्मिलित होइत रहलै से भाव उभड़ै'छ तऽ आत्मविश्वास और बढ़ै'छ। की कहू, जिनगीक मादेँ खासकऽ हमर जिनगी तऽ विरोधाभासक बंडल आछि। ओझराएल ताग, बीच बीच मे गीरह पड़ल लगै'छ नहि जे सोझरा सकबा मुदा आब उलझन संग जीयब सीख लेलहुँ अछि। आ इएह समझदारी जिनगीक प्रति लगाव केँ जीवित रखने अछि। एहि सँ आन्तरिक एहन अहोभावक अनुभूति होइछ जकर वर्णन करबा लेल शब्द न□ा भेँटै'छ ने एहि आनन्दक बखान कऽ सकैत छी। आश्चर्यक गप्प त ई जे आइधरि अपना विषय मे सोचैत ने अपना सॅ अतेक लग हलहुँ ने कहियो अपना सॅ एतेक दूरे। एक ही पल मे दूनू तरहक घटना घटित होएब केइन अजगुत लगै'छ जिनगीक।

माथक ऊपर सॅ दू टा कारी कौआ फड़फड़ाइत उड़ि गेल। ऊपर नजरि गेल देखलिए होटल तग जे गेट सॅ सटले गुपटी छै ताहि पर बैसल छै कौआ। भोर का सुनहरा सूर्यक किरण फूल पात पर पड़ल ओसक बुन्नकेँ सोखि रहल छल। लग सॅृ।

– वृ□ जर्मन पति-पत्नी हँसैत बढ़लीह। जहिया सॅ अयलहुँ अदि वृ□ दम्पतिक हँसमुख चेहरा देखि मन-प्रसन्न भऽ जाइछ। 'प्रेम' ई उढ़ाई आखर मनुष्यताक सम्पूर्ण पुरम्परा केऽ उद्‌धोय करैं'छ।

................की प्रेम एखनहुँ बॉचल छैक? ऐहि जर्मन दम्पतिकेँ देखि भरोस होइछ हॅ एखनहुँ एहन भाग्यशाली लोक अछि एहि संसार मे जे अढ़ाई उठाखरक अर्थ बूझै'छ कतेक स्नेह सॅ बूद जर्मन पत्नी केँ कॉफीक प्याली पकड़बैत छैक। बेर-बेर ससरैत शॉल के ठीक करैत रहैत छै। दूनू बेकती पूर्वी जर्मनी सॅ आयल छथि। इ लोकनि अंग्रेजी न□ा जनैत छथि आ जर्मन भाषा न□ा जनैत छी ब्रेक फास्ट टेबुल पर स्टिवार्ड जोसेफ दुभाषियाक काज कयलनि।

न□ा जानि कियेक जोसेफ हमर परिचय लेखिकाक रूप मे कयलनि हम तऽ लेखिका छी नहि। ओह! अब बुझलिए ई प्रपंच फिलिपक छैन्हि ....हमरा एकान्त चाही तैँ ओ हमरा लेखिका कहि रूम रिर्जव रौने हेता आ अई देश मे लेखक कैँ विशेष आदर-सम्मान छैक। एहि वृ□ दम्पति कैँ देखिकऽ बुझाइछ प्रेमक कोनो सीमा नहि! एहि संसार मे सुखी वैवाहिक जीवन सँ बढ़िकऽ किछु आर न□ा भऽ सकै'छ मुदा एहन सुख कतेक लोक कैँ नसीब मे होइत छैक? मुइल सम्बन्ध कैँ उद्यैत रहब बड्ड कस्टकर होइत छैक। एहन सड़ल-गलल सम्बंध के फेंकनहि कुशल-जिनगी बड्ड हल्लुक गमगम सुमन सौरभ सन लगैत छैक जॅ स्नेह रस सॅ सराबोर रहए।

- रूमक खिड़की सँ सटल अंजीरक गाछ छै आ ओकेरे दोग सॅ झलकै'छ नीला आकाश। आ रूम सॅ सअले अछि सन बालकनी जतऽ बैसिकऽ समुद्र के दूर-दूर धरि देखल जा सकै'छ अनन्तक एहि विस्तार मे क्षितिजक महज कल्पना कयल जा सकै'छ। लहरक एहि संसारक ने दै ने अन्त! हमरा संग अछि हमर अकेलापन जे जीवनक सही अर्थ समझा रहल अछि। हम कोना-कोना अपनाके बचेलहुँ अछि, अपना जीवन मूल्य के संयोगि के रखलहुँ अछि। हां, टूटलहुँ अछि कतेक बेर मुदा हिम्मत न□ा हारलहुँ तय चोटक निशान न□ा रहल........दुनियाँ क पैर तर थकुचाइओ कैँ माटिक मुरूत न□ा बनलहुँ! अड़तालिसम वर्षक अवस्था मे अदद औरत छी जे जिनगी के आब फैले'छ न□ा हँसैत समय बीता रहल अछि। अपना उपलब्धि पर गौरव होइछ। मित्रता लेल हाथ बढ़ा गर्मजोशी सॅ लोक कैँ लग कऽ लैत छी।

आब हम एसगर न□ा छी पहिने कहियो छलहुँ। आह तऽ नील आकाशक एक नव अर्थ लागल अछि-पहिने कहियो आकाशक विस्तार के अपना ऑखि सॅ नपबाक कोशिशो न□ा कयने छलहुँ। एखनहुँ की दूनू ऑखि सॅ आकाशक विस्तार कैँ नापि सकब? मुदा कहन अद्भूत आनन्दक अनुभूति मऽरहल अछि।

नेनपन मे एसगर बरामदा मे बैसि चिड़ै-चुनमुनी संग एकालाप बड्ड नीक लगैत छल।

- स्वयं प्रश्न करैत छलहुँ आ स्वयं उत्तर दैत छलहुँ। एक दिन की भेलै कि हम चुनमुनी संग न□ा जानि की सभ गप्प करैत छलहुँ-

रेलिंग पर बैसल। हमर उमर इएह पाँच छह वर्षक रहल दोएत। खूब मगन भऽ ओकरा सॅ पूछैत छलि अले, चनमुनि चिलियॉ आइ तू कतऽ कतऽ गेले कहने। चिलियाँ काली कौआ देखकऽ तोलो उल लगैछौ? बाज ने - तू हूँ

हमला से न□ा बात कलबे?........ उतबा मे खूब जोर सॅ टहाका पाड़ि हँसब सुनलहुँ पाछाँ घुरिकऽ तकलहुँतऽ छोटका भैया, सरोज, नीलू आ बुल्ली छल।

देखू, देख एहि पागल के चिड़ैं सॅ बतिआइत छल '....... तू हू हमला से न□ा बात कलबे ......? बड्ड बदमाश छयि छोटका भैया एक नम्बर कैँ नकलची। हमरा चिढ़ाबलेल बेर-बेर सभकैँ कहैत छलथिन - अले, अले बाज ने चिड़ियाँ .... तोतराही के दॉत चिड़ैए के चोंच जकां बहराएल छै। हम चिकड़ी-चिकड़ी कनैत छलहुँ आ हमर भाई-बहिन पेट पकड़ि हँसैत छल। कम्हरो सॅ सल्लो दीदी आबि गेलीह हरा कनैत देखि दया भेलौन्हि। लग आबि दुलार कयलनि कोरा मे उठा ले लैन्हि दुलार मलार पबिते हम तुरते चुप्प भऽ गेलहुँ। दीदी बड्ड नीक छघि। मोन पड़ल एक मासक बादे दीदीक ब्याह भऽ जेतैन्हि। हमर सबसँ नीक बहिन सल्लो दीदी सासुर चलि जयतीह। ई बात मोन पड़िते आँखि फेर नोरा गेल। खूब धुमधाम सॅ विवाहक तैयारी भऽ रहल छै। ओ धर्मशाला हमरा एखनो याद अछि। ताहि दिन बाबूजीक पाँचो भाई।

- दादी जीवित हलथिन।

चौक आ सीढ़ि पर कोन मे ठंढ़ई लेल राखल रंगीन बर्फक सिल्ली एखनो याद अछि। र्फक सिल्लीक तर मे तरह-तरह के फल जमाओल गेल छलै। कोनो सिल्लीक तर मे आम झलकैत छलैतऽ कोनो सिल्लीक तर मे फालसा। अ तऽ बुल्ली हमरा बतौलक जे इ सभ नकली फल छैक सजावट लेल राखल छै।

दीदीक ब्याह भेलैन्हि 1949 क गर्मीक मौसम मे। बाबूजी कैँ तहिया खूब आमदनी हलैन्हि तैँ दिल खोलि खूब खरच कयलैन्हि। सासुर सँ दीदीक जेवर अयलैन्हि से देखि सभक ऑखि फाटि गेलै' नाक, कान, गर सभमें हीरे हीरा झलकैत छलै ' पहिल बेर गुप्ता खानदान मे सासुर सॅ हीरा आयल हलै। नानी बड्ड प्रसन्न छलीह बाबूजी अपना भाई सभ मे अलगे सँ चमकैत छलाह। हुनकर रूआब क दब दबा छलै। बालीगंजक पॉश मकान मे हम सभ रहैत छलहुँ। हमर जन्मो एहि मकान मे भेल छल। दाई मां कहैत छलीह डा. अमृता कौर हमर जन्मकाल हलीह। हमर जन्म होइते डाक्टर अमृता दाई मां के कहने छलैन्हि - तुम्हीं जाकर सेठ जी से कहो लड़की हुआ है। हम बोलेगा तो हमारा प्रेक्टिस खराब हो जायेगा। सब कहेंगें डाक्टर अमृता से जापा करबाने से लड़की ही होती है।

दाई मां कैँ बाहर अबिते दादी पूछलथिन की भेलैन्हि?

'बेटी भेलैन्हि मां जी। कार्तिक नवमी मे घर मे लक्ष्मी एलैन्हि लक्ष्मी।'

'हे भगवान एखन तऽ दू टा कुमारिए तेसर जुमि गेलै। खरचेक घर।'

बाबूजी बजलाह 'माँ, सब अपन-अपन भाग्य लऽ कऽ अबैत छै। भगवतीक जे इच्छा।'

हे भगवान! चारि-चारि टा बेटी आबि गेलै बेटा ले ऑखिमुनने छथिन देव-पितर!

– 'अच्छा जे भेलै से नीके रहए-मां अहाँ आराम करू जा कऽ।'

'हँ, बाबू! आधा राति सॅ वेशी बीत गेलै हम सूतऽ जाइत छी।'

दादी मां, मांक रूम मे झॉकबो न□ा केलथिन्हा डा. अमृता कौर दाई मांक कोरा मे हमरा धऽ कऽ चलि गेलीह। बड़की दीदी मां क सिरमा मे बैसल छलीह।

– 'सुमित्रा, बाबूजी भोजन परसि दहुन भोर सॅ भूखले हथिन।'

मांक निराशा रोआँ-रोआँ मे परसल छलैन्हि। पलंग सँ नीचा पैर रोपबा मे तीन मास लागि पलंग सँ नीचा पैर रोपबा मे तीन मास लागि गेलैन्हि। हम्हर सल्लो दीदीक ब्याहक तैयारी करबाक छलै। मां पलंग पर पड़ले पड़ल आर्डर दैत हलथिन। सभ वस्तुक देख-रेख सुमित्रा दीदी करैत हलथिन। बच्चे सॅ देखैत हलिएन्हि मां, कहियो स्वस्थ न□ा छलीह।

हमरा मां कहियो कोर मे लऽ दुलार कयने होयतीह से मोन न□ा पड़ै'छ। न□ा जानि किएक शुरूहे से मां कैँ हमरा सॅ कोन चीढ़ छलैन्हि। वा हुनक घार निराशाक।

प्रतिक्रिया स्वरूप हमरा देख न□ा चाहैत छलीह। हमरा पाललनि-पोषलनि दाई मां। अपन तीन सालक बेटा भोलाकैँ छोड़ि कऽ ओ विधवा और भूख आ गरीबी सँ तंग आबि कऽ एत आयल हल। नानी जीक ओतऽ जे दाई काज करैत हलै से दाई मांक पिसिऔत सासु हलै सम्बंध सँ। दाई मां के एतऽ पिसिऔत सासुए रखबौने छलै। हमरा कोर मे लैते' दाई मांक स्तन में दूध होमऽ लगलैन्हि। हमर रंग गेंहुआ गोर अछि आ स्वास्थ नीक ताहि पर सॅ दाई मांक पालन-पोषण। हमर सर्वस्व छलीह दाई मांक। हम हुनकर आँचरक खूंद चौबिसो घड़ी छयने रहैत छलहुँ। ओ बेचारी बाथरूमो मे जाइत छलीह तऽ हम कानऽ लगैत छलिए। हमरा लेल मां माने दाई मां। ने अपना मां क कोरा मे रहबाक स्मरण अछि ने ओकर स्पर्श वा दुलार भलार। हमर नामे पड़िगेल छल दाई मांक बेटी। सुमित्रा दीदी हमरा बाछी कहैत छलीह हम चारि छाप मे हाल मे अइकात सँ ओइ कात पार भऽ जाइत छलहुँ। हँ नेना ये हमरा एकटा आर नाम भेटँल छल मिलिट्री घोड़ी। हमर शरीर स्वस्थ छल आ मांक प्रिय बेटी सरोज रोगियाहि छलै।

हँ एकटा आर घटना स्पष्ट याद अछि। एतेक वर्षक बादो माथक घोघरि मे आहिना घतेक वर्षक बादो माथक घोघरि मे आहिना घएल अछि। किछु तेहन स्मृति रहैत छै जाहि पर कालक कनिको प्रभाव न□ा पड़ैत छै। न□ा जानि कोनो-कोनी स्मृतिक क्षय कहियो कोना न□ा होइत छैक। हम बरंडा पर बैसल खेलाइत छलहुँ। बाबूजी हमरा कोरा मे लऽ मांक बगल मे सुता देलनि। एखनहुँ ओहिना याद अछि।

मां क चिकड़ब। .... 'ओह ई की हम ओहिना मरल जाइत छी-एको क्षण चैन न□ा सँटै'छ ताहि पर अहॉ एकरा आनिकऽ हमरा करेज पर लादि देलहुँ।' मांक क्रिश्चियन नर्स बगले मे ढाढ़ि छलीह राधा।

ओकरा डपटैत कहलथिन 'राधा की देख रहल छैँ उठा एकरा आ जो चमेलियाक मां' लग घऽ

बाबूजी आहत भऽ बजलाह – 'ए विजयमां अहॉ कैँ एकरा सॅ एतेह यदि कियेक अछि? ई हो अहींक बेटी अछि।'

'की कहू! सत्ते हमरा ई न□ा सोहाइत अछि। जहिया सॅ जनमल अछि हम खाट घऽलेलहुँ।'

बाबूजी हमरा कारे मे उठबैत बजलाह 'हमर ई लक्ष्मी बेटी अछि। जहिया सँ जनमल अछि टका बरसि रहल अछि। संयोग एहन जे अपना मकान सबसँ पहिने एकरे जन्म भेलै।'

'तऽ हम की करू? खेलाउ लक्ष्मी बेटीकैँ। हमरा सँ न□ा सम्हरत।'

मांक ओ कर्कश स्वर आइओ कान मे बजैत रहै'छ 'लऽ जाउ एकरा, हटाउ!

पटकि दिऔ एकरा दाई मांक कोरा में .....।' बाबूजी सॅ भेँटकरऽ एकटा कनकटा ज्योतिषी अबैत छलैन्हि। बाबूजी हुलसी हमरा लऽ गेलाह ज्योतिषी लग। ओ हमरा देखिते बाजल छलाहु – 'सेठ जी, ई लड़की बउऽ यशस्वी होएत, अहाँक खानदानक नाम रौशन करत ...।' मां सुनलनि तऽ लोहछि कऽ बजलीह – खूब नाम हेतैं'। मूँह मे बकार तऽ छैहे न□ा। जे पबै छै से चोटि घीचलै' छै जकरा मोन होइ छै से थापड़-मुक्का सॅ थोपिया दैत छै।

बात सही छै। सरोज के क्यों कनि देह छुबिकऽ देखौ। कोनो भाई-बहिन कनि डॉटि-ऽपटी दौ सौंसे घर ओकरा चिचीएनाइ सॅ सहमि जाइ छै। ककर मजाल छै क्यो किछु कहि देतैं। कनैत-कनैत सबके पेरशान कऽ दैत छै आ सांझि जखन बाबूजी एथिन तखन अपराधी कैँ जाबत सजा न□ा भैँटतै ओ ककरो चैन सॅ सांस न□ा लेबऽ देतै।

बुल्ली तऽ हमरे बतारी छल तैँ हमरा वेशी तंग नि□ा करैत छल ओना छीआ-पूताक खेल मे मारि-पीट होइते छै। मगर हमर छोटा भैया बड्ड उत्पाती छलाह। हमरा चारू बच्चा कैँ कनयाब छोड़ि हुनका आर कोनो काजे नि□ा छलैन्हि। बाबूजीक दुलरूआ छलाह हुनका के किछु कहैतन्हि। मुदा ऊहो सरोज दीदी सँ डेराइत छलाह हल्लाकऽ सौंसे घर माथ पर उठा लेतै कनिको छू ढेला पर। नीलू बड्ड सुकुमारि मांक ऑखिक पुतरी ओकरा के मारतै' पीटतै या खौंझेतै'। बुल्ली तऽ भैयाक शागिर्दे छलैन्हि ओकरा किछु करथिन्ह तऽपोल खुजि जेतैन्हि। तऽ सबसे निमूह बचलहुँ हम। तऽ कखनहुँ घंटी हमरा मुर्गा बना एक पैर पर ढाढ़ कऽ दैत छलाह तऽ कखनहुँ सुतला मे हमर चोटीक फीता खिड़कीक ग्रील सॅ बान्हि दैत छलाह। निन्न टूटला पर हम चिचिआइत छलहुँ .... दाईमां कतऽ गेलहुँ केश दुखाइत अछि ......देखू हमर फीता खिड़की क ग्रील मे बान्हल अछि........।' भैया आराम सँ कुर्सी पर बैसल छलाह-'कान......आर कान दाई मां तऽ स्नान करऽ गेल छौ.....।'

हम हुनका नेहोरा करि-भैया, गोर लगै छी भैया!

- खोलि दिअ फीता..... केश बड्ड दुखाइत अछि। आब अहाँ जे कहब हम करब...........।'

'वेश प्रॉमिस कर.........।'

'हं, भैया प्रॉमिस।'

- 'ठीक छै। चल छत पर।' भैयाक संग-संग गेलहुँ दत पर। तमाशबीन सरोज आ बुल्ली पाछाँ-पाछाँ चलल। छत पर जाइते भैया हमरा दूनू हाथे उठा कऽ पानिवाला हॉज मे धऽ देलनि। हम ऊपर आबऽ के कोशिश करि तऽ फेर दाबि देल जाए। बुल्ली आ सरोज थप्पड़ी पारि खूब हँसैत छल। एहि नाटक कचरम सीमा पर पहुँचैत दाई मां हमरा तकैत ऊपर एलीह।

'बापरे बाप! ....सब मिल कऽ बुच्चीक जान लऽ लेतै'। अजय बबुआ। हमरा बुच्चीक मारिए देबै। आब हम चुप्प नि□ा रहब आबऽ दियौन्ह मालिक कैँ सब वृतांत सुना देबैन्ह। केहन अत्याचारी भऽ गेलै भाइ-बहिन!'

दाई मांक डॅटला सॅ सब भागल। दाई मां हॉज सॅ बाहर कऽ उनटा लेटाकऽ पेट सॅ पानि निकाललीह तखन हमरा होश भेल। कपड़ा बदलि कोरा मे लऽ हमर देह हॅसोथि रहल छलीह आ मुँह सॅ बजैत छलीह-नि□ा जानि कियेक सब हमरे बुच्चीकैँ नंग-चंग कयने रहै'छ। सरोज आ बुल्लीके अजय बाबू कहियो छुबि कऽ देखथुन। सबटा दोष मालकिन के छैन्हि। सब ले' स्नेह अड़ैत रहै' छैन्हि। बुच्ची फुटली ऑखि नि□ा सोहाइत छैन्हि। बेटा नि□ाा भेलैन्हि तइमे

बुच्चीक कोन दोष!'

'दाई मां! हमरा खाली अहां आ बाबूजी दुलार करैत छथिआर क्यो नि□ाा'

'बुच्ची। बाबूजी तऽ देवता छथि हुनकर परतर के करत।'

'दाई मां! अहाँ तऽ हमरा खूब प्यार करैत छी। अहॉ हमरा छोड़ि कऽ कतौ नि□ा जाउ दाई मां! राधा कहैत छल-अहाँ अगिला सोमदिन अपना गाँव जाएब। दाई मां! हमरा दूध के पियाएत? के खाना खुआएत। के हमरा सबसॅ बचा दे? सब मिलक मारत। दाई मां अहां नि□ा जाऊ?' दाई मां किछु नि□ा बजलहि हमरा करेज सटा कऽ माथ सोहराबऽ लगलीह।'

ओई दिन स्कूल सॅ घुरिकऽ आयल छलहुँ तऽ बुल्ली सीढ़िए पर ढाढ़ छल थपड़ी पारी हॅसैत बाजल।

'तोहर दाई गेलौ, आब के बचेतौ?'

'हरिया! कह हमर दाई मां चलि गेल? हम पूछलिऐ।

'हँ, बौआ दाई मां अपना गाम गेल।

हमरा ऑखि सॅ नोट टघरऽ लागल। हरिया गिलास मे दूध दऽ गेल हम क्रो□ मे दूध ओकरे देह पर उझलि देलिऐ। ओ चुप्पे चलि गेला फिर राधा आयल कपड़ा बदलाबऽ हम ओकरो दनादन थापड़-मुक्का सॅ मारऽ लागलिए। सभके बड्ड आश्चर्य होइ हमर एहन रौद्र रूप क्यो नि□ा देखने छल।

हम चिचिआइत छलहुं दाई मां किये गेलै? दाई मां के बजा। हमर एहन जिद्द क्यो देखने छल ने क्रो□ा।

बेचारी दाई मां सात सालक बाद अपना गाम गेल छल। ओकरो छोट-छोट नेना छलै। आ एत दर्जनो दाई नौकर दलै। गोविन्द महराज रसोइया छल, बलिया जिलाक नथुनीसिंह दरबान, पहाड़ी रामसिंह ड्राइवर, मीनीम कालूरामजी आ एकटा नर्स। कुल मिला कऽ चौदह जन स्टाफ। दक्षिणी कलकत्ताक शानदार कोटी मे हमर कोठी सबसँ भव्य। कोठीक भव्यता एहन जे लोक देखऽ अबैत छलै।

- ताहिदिन हमर काका, काकी समस्त गुप्ता परिवार बजारवला पुरनका हवेली मे रहैत छलाह। नानीयोक घर छलै ओतहि बड़ा बाजार क हैरिसन रोड मे। सरोज पुरना हवेली मे जाएबाक नामे सॅ नाम भौं सिकोड़ि लै'छ-मां हम ओतऽ नि□ा जेबै बाथरूम बड्ड गंदा रहै छै। पुरना हवेली मे बड़की टा आंगन छलै चारू कात रूमा बाथरूम फड़क। रसोइघर छत पर। सब काकी कैँ एक-कएटा घर छलैन्हि ओहि मे सूतब बैसब चारि-चारि पांच-पांचटा घिया

पुता संग।

‘हं, तऽ ओई दिन सात बजे बाबूजी ऑफिस सॅ एलाह। हम तीन बजे स्कूल सॅ आयल छलहुँ तखन सॅ एक घोंट पानियों नि□ा पीने छलहुँ-मां खिसियाकऽ दू थापड़ मारनहु छलीह-‘मर चमेलियाक मां लग जा कऽ राक्षती ! बुझाइते नि□ा छै हमरा कोखि सॅ जनमल अछि? आबऽ दहि आब चमेलियाक मां के ओकरो करबै एकदम बिगाड़ी देलकैए।’

‘बाबूजी समटा बात सुनला पर हमरा लग आबि कोरा लऽ कऽ कहलनि-चल बौआ खाना खा ले।’

हम हुनका लग अबिते उतार हुचुकि-हुचुकि कान लगलहुँ। कोरा लेलनि तऽ मरि पॉज पकड़िक कहलिऐनह ‘बाबूजी, हमर दाई मां ...... बजा दिअऽ।’

बाबूजी कहलनि-हं, बौआ हम बजा लेबै।

‘नथुनी सिंह! सुनू एखने रतुका गाड़ी सँ जाउ, उठा एकरा दाई मांकऽ नेने आयब अपने संग। हं, चमेलिया के कहबै एत नेने आब ओकर इलाज हम करा देबै।’

– मां बाजलीह-‘सुनू दरबानजी, जँ चमेलियाकँ छुतहा रोग होइ तऽ ओकरा नि□ा अनबै।’

– मां! चमेलियाक छोड़िकऽ दाई मां नि□ा अबै तऽ?

‘चुप्प रह! दाई मां, दाई मां रट □ लगौने छेँ जो पर दाई मां लग।’

हम मां क कर्कश स्व्र सुतिन सहमल बाबूजीक कुरता हाथ सॅ पकड़ने टुकुड़-टुकुड़ हुनकर मुँह तकैत छलहुँ। बाबूजी हमरा भरोस दैत बजलाह-‘दाई मां जरूर आयत।’ खैर चारिमदिन नथुनी सिंह के संग दाई मां चमेलियाक लऽ कऽ पहुऽचल। चमेलिया कैँ निमोनियॉ बोखार छलै, टी०बी० नि□ा। फैमिली डाक्टर गांगुली कहलथिन-‘चिन्ताक बात नहिं इंजेक्शन सॅ जल्दी ठीक भऽ जेतै।’ चमेलियाक उम्र बड़की दीदी सॅ वेशी छलै। दाई मां के एकगोट इएब बेटी आर तीनटा बेटा छै-छेदी, मंगला आ भोला।

दाईमां अबिते हमर कोरा लऽ करेज सॅ सटा लेलक हमर देह आगि जकॉ छीपल छलु ज्वर सॅ। डाक्टर गांगुली बबूजी कैँ कहलथिन-‘गुप्ता साहेब! दाई मां तो एई मेये मां, ओ के आर जूेते देबेन ना। सेठानी जीर तो शरीर भालों थाकें ना । एई निरीह मेय के आर के देखबे। ए तो दाई मां छोड़ू किछु कोरचे ना.......।’

मां सत्ते अस्वस्थ रहैत छलहि। हमरा जहिया सॅ होश भेल ताहिया सॅ

पलंगे पर सूतल देखैत छिऐन्ह कखनौ कऽ कुर्सी पर बैसैत छथि। कहियो ठाढ़ होइतो नि□ा देखलिऐन्ह।

लोकसभ बजैत छै जे हमरा जन्मक बाद तीन मास घरि ब्लीडिंग होइते रहलनि। ताहि दिन शायद युटे्रस निकालनाई कठिन ऑपरेशन बूझल जाइत छलै। मां के दिक्कत नि□ा होइन्ह तयॅ प्रत्येक बच्चा लेल एक-एक टा नौकर या दाई राखल गेल छलै। हरियाक काज छलै सब बच्चाक नास्ता भोजन करेनाई। राधा मांक देख-रेख करैत छलीह आ सरोज आ नीलूक जवाबदेही छलै। बच्चा सभ शारे-गुल सॅ मां बेहोश भऽ जाइत छलीह। दोसर अइ बात क दुख छलैन्हि जे एकटा आर बेटे होइ तैन्हि, तैँ हमरा देखऽ नि□ा चाहैत छलीह। मां बड्ड पैघ धरक बेटी छलीह। नाना खानदानी रईस लोक कोलकिंग कहैत छलैन्हि। मां क शरीर आ तेवर दूनू राजसी छलैन्हि। मां क शरीरआ तेवर दूनू राजसी छलैन्हि। बाबूजी मां के जी जान सॅ चाहैत हलथिन डाक्टर गांगुली कैँ कहैत छलथिन-‘डाक्टर साहेब-विजय के मां के किछु भऽ जेतैन्हि तऽ हम बच्चा सभकैँ कोना सम्हारबै? कहुना हुनका बचालिअ, कोनो उपाय करू।’ बड़का सॅ बड़का डाक्टर अबैत छलाह मास मास दिन धरि अंग्रेज डाक्टर वाटकिन आ नलिनी रंजन दत्ता क इलाज चलैत छलै मुदा कोनो फायदा नि□ा। महीना मे बीस-बीस दिन धरि ब्लीडिंग होइत रहैत छलैन्हि। आखिर एक दिन अयलाह डाक्टर विधान चन्द्र राय जो बंगालक मुख्मंत्री छलाह। विधान बाबू अयला पर घर मे आर्डर भेलै ‘साइलेन्स प्लीज।’

विधान बाबू पांच मिन धरि मांक नब्ज पकड़ने सोचैत रहलाह।

–फेर बजलाह-‘रेडियम थेरेपी दी जाए।’ दादी बात बुझलथिन नि□ा मुदा बुझेलैन्हि बहुत खरचाबला इलाज छै। ओ बाबूजी के अपना लग बजा कऽ कहलथिन-‘बाउ! सभ टकातऽ बहुए मे खरच भऽ रहल छऽ। सात-सात गो बच्चा जन्मांकऽ धऽ देलथुन ओकरो सभ्ज्ञक वास्ते सोचऽ। ई नखरावाली पलंग पर सूतल-सूतल तोरा नचा रहल छऽ ....।’

मां क ब्लीडिंग बंद भेलैन्हि मुदा टानसिल बढ़ि गेलैन्हि। अहि बीच बड़का भैयाक ब्याह तैय भऽ गेलैन्हि। बाबूजीक जिगरी दोस्त बालूरामजी केडियाक भाईक बेटी सॅ। एक दिन भोर-भोर बालूरामजी हमरा घर पर अयलाह। जाड़क समय छलै। बाहर वला रूम मे बदामक हलुआ खाइत बजलाह –‘भैया साँवर! अहॉ हमर प्रिय मित्र छी हम एहि मित्रता कैँ आपसी सम्बन्ध कऽ स्थायी बनाबऽ चाहैत छी।’ बाबूजी कहलथिन ‘से कोना हम बुझलहुँ नि□ा।’ ‘देखू अहॉक बेटा अछि आ रघुक बेटी हमर भतीजी अछि। टका

हम दू लाख गनि देब बस अहाॅ हॅ कहि दिअऽ।'

– 'बालू! मात्र टकाक बात न□ि छै हमरा सोचबाक समय दिअ। लड़की कतेक पढ़ल लिखल अछि?'

'अहाॅके नौकरी करयबाक अछि। अरे घर गृहस्ती सम्हारबाक लुड़ि छै'। एतबा कहि ओ अपन पगड़ी उतारि बाबूजीक पैर पर घऽ देलथिन। बाबूजी गुम्म भऽ गेलथिन। दोसर दिन हम सभ होमऽ वाली भाभी के देखऽ विक्टोरिया मेमोरल पाछूवला गेट पर गेलहुँ। मां गेलथिन डाक्टर गांगुलियो केँ। मां के सबसे वेशी हमदर्द, सबसे बड़का साइकोथेरापिस्ट, समसत घरेलू समस्याक सलाहकार छथिन डाक्टर गांगुली डाक्टर साहेब के बड़का भाई अपल गांगुली छथि बाबूजीक सालिसिटर। गांगुली बाबू बड्ड पैध घरानाक लोक। मांक कहब छैन्हि कु समय तीनेटा संग दैत छै पुलिस, वकील आ डाक्टर गांगुली परिवारक बड़का बेटा पुलिस विभाग मे उच्च पद पर छथिन मांझिल अनिल बाबू वकील हुनका सॅ छोट भाई उदयन जे किच्छु कोरेना शुघु गान कोरे ओ कोबिता लेखे।'

हॅ तऽ भाभी के देखि मां बजलीह–'बांगुली बाबू! लड़की बड्ड दुबर कमजोर बुझाइछने?'

न□ि, न□ि । सेठानीजी ब्याहक बाद तऽ सब लड़की मोटा जाइत छै।'

मुदा गांगुली बाबू रंग श्याम छै से?'

से तऽ श्यामा मां क रंग कारी छैन्हि। हमरा बंगाली समाज तऽ चोख, नाक देखै'छ मैदा सन उज्जर के कोन महत्व।

बड़का भैया शौकिन मिजाजक लोक देखब मे खूब सुन्दर। ओइ समय मे ग्रेजुएट। तैं बाबूजीके लड़की देखलाक बाद मन में भेलैन्हि बेटाक लायक पुतौही न□ि हेती। मुदा दोस्तीक कारण किछु न□ि बजलाह।

मामाजी पूछलथिन–'बहिन ! लड़का राजी अछि?'

मां कहलथिन– 'हॅ।'

–तखन हम की कहू – 'अहाॅ आ जीजा जी कहियो व्यवहारिक न□ि होएब।

एखन सरलाक ब्याह मे एतेक खर्च भेल। बेटीक बाप पाइबला लोक छै। एत आयत तऽ एकटा अंग्रेज गवर्नेस राखि देबै–पूरा ट्रेनिंग भऽ जेतै।

–ई तर्क बाबूजी के नीक लगलैन्हि। कहलथिन–जयकुमार ठीके कहैत छथि। पढ़ा–लिखाकऽ स्मार्ट बनाओल जा सकैं' छ। सरला दीदीके सास तऽ मैट्रिकक परीक्षा न□ि देबऽ देलथिन। बाबूजी विवश छलाह। तै मां के कहैत छलथिन 'अजयक मां! देखबै हम तोता, मैना केँ खूब पढ़ेबै'–हमरा आ सरोज

केँ तोतो, मैना कहैत छलथिन बाबूजी। बाबूजी अपने मात्र चौथा पास छलाह मुदा स्वाध्याय सॅ तेहन फर्राटेदार अंग्रेजी बजैत छलाह जे क्यो ग्रेजुएट की बाजत। सरिपहुँ बाबूजी जीनियस ब्यक्ति छलाह। मुदा मों अपना कें बाबूजी सॅ वेशी बु□िमान बुझैत छलीह वेशी महीनी आ सोफियानाक दाबी छलैन्हि। कोलकिंगक बेटी छलीह। नानीक आंगनको बैसऽ लेल चॉदीक सिल्ली छलैन्हि। मामा एकलौता बेटा। चर्चारा चारिटा मामा छलाह। पाँचो भौजाई के पाँच–पाँचटा हीरा छलैन्हि। आ हमरा गुप्ता परिवार मे पहिलबेर पॉचटा हीरा क जेवर मां के छलैन्हि तकरबाद सल्लो दीदीक सासुर सॅ हीरा कनेकलेस, अंगुठी, टाप्स नाकक छल सभटा छलैन्हि। बड़का भैयाक ब्याह खूब धूमधाम सॅ भेलैन्हि। पन्द्रह दिन घरि उत्सव चलल। बाबूजी हिया खोलि खरच कयलैन्हि। सब नोकर चाकर के इनाम भेंटलै उतबे न□ि ओकरा सभक गांव मे जे कर्ज छलै से हो चुकता कएल गेलै। खूब दान धर्म मे खर्च भेलै।

बाबूजी हमरा सॅ पूछलैन्हि – 'तोरा दाई मां के की दिऔ?'

हम कहलिएन्हि – 'सोनाक चेन आ कंगन।' राधानर्स इ सुनि जरि गेल। न□ि बर्दास्त भेलैं तऽ बाजल–इंह, चमेलोक मां सोन पहिरत.........? मुँह ने कान बीच मे दोकान।'

दाई मां के बाबूजी दू भरिक चेन आतीन भरिक कंगन देलथिन । हमर खुशीक ठेकान न□ि। दाई मां के कहलिएन्ह–'दाई मां बरियात मे अहूँ चलब राधा सन लाल साड़ी पहर कऽ।'

–दाई मां बजलीह – राम – राम बुच्ची एहन बात न□ि कहू हम विधवा छी। आइ हमर घरवला रहैत तऽ.......'

दाई मं के उदास भऽ एना बजैत सुनि हमरा भेल कोनो अधलाह बात हम कहि देलिए।

भाभी आबि गेलीह। विवाहक बाद भैया बिमार रहऽ लगलाह। आब हमरा बुझाइत अछि जे मन लायक पत्नी न□ि भेलैन्हि तयें हुनकर नर्वस ब्रेक डाउन भेल छलैन्हि। मुदा मां के भ्रम छलैन्हि जे क्यो टोना–मोना कऽ देलकैए। बाबूजी बहुत दुखी रहैत छलाह इ की भऽ गेल बेटा क संग। भाभी एको आखर अंग्रेजी न□ि जनैत छलीह ने पढ़बा–लिखबाक सेहंता छलैन्हि। छमास धरि सांझि भेर मिसेज विल्किन माथा हुनका संग माथापच्ची करैत रहल मुदा कोनो फायदा न□ि भाभीजी कें पढ़बा मे मोने न□ि लगैत छलैन्हि। हारि थाकि कऽ मिसेज विल्किन बजलीह–मिस्टर गुप्ता–शी इजए रौंग मैच फार योर सन ....दे आर पोल्स अपार्ट।' ढ़रैत पिअर सांझिक ज्योति समुद्री लहरि संग मिझराकऽ

हरियर भेल जाइछ। एखने कनिकाल मे इ समस्त दृश्य कारी भऽ जेतै’। दूर पुरनका किलाक बुर्ज पर नारंगी रंगक रोशनी जरऽ लागत। पता नि□ा फोकस लाइट कतऽ फिट कयने छै। एतऽ बरांडा पर सॅ देखने लगै’छ जेना गुच्छा क गुच्छा रोशनी समुद्रक लहरि सॅ बहरा कऽ किलाक देवार आ बुर्ज पर छिड़िया रहल छै। नि□ा जानि कियेक एतेक दूरो सॅ ई जादुई–माहौल मे डूयब्रवनिक केर कारी समुद्री राति हमरा बड्ड नीक लगै’छ। तरेगण केहन चटख लगैत छै। तेहने अपूर्व लगै’छ नारंगी रौशनी मे डूबैत समुद्रक लहरि। होटल केर डेक सॅ बान्हल पॉच छहटा मोटर वोट लहरक कोर मे मचलै’छ हम दूनू ऑखि ई दृश्य पीवि रहल छी। हमरा लेल मनोरम दृश्यक अवलोकन आवश्यको अछि अहि नशा मे हम अतीतक छिलका सोहि सकब। कखनौकऽ दूर घुमावदार सड़क पर कोनो गाड़ी तीव्र गति सॅ भगै’छ तथापि बहुत शान्ति छै वातावरण मे। छपाक सॅ एकटा माछ लहरिक ऊपर कूदलै दूर बहुत दूर चलि गेलै। हमर तन्द्रा टूटल। अख्यिासऽ लगलहुँ की सोचैत छलहुँ कथी यादें?

हम सोचि रहल छी। सोचैत जा रहल छी। हमरा चारू कात रातुक कुहेस खूब सघन भऽ गेल अछि। दर्दक अनुभव होइछ। जनैत छी ई दर्द हड्डीक भीतर घुसल अछि एकर कोनो इलाज नहि।

स्मरण करबाक प्रयास करैत छी लगै’छ जेना बेर बेर कोनो अदृश्य दैत्यक पंजा मुँह के जोर सॅ दाबि रहल अछि असह्य पीड़ा सॅ कछमछा रहल छी। नि□ा, आब नि□ा चुप रहब हम। हम कह चाहैत छी अहॉ सॅ हुनका सॅ सब सॅ। अपना मां क लेल दुखी होएब वा हुनकर स्मरण क ई अर्थ नहि जे हमरा हुनका प्रति स्नेह अछि। ओ तऽ कहियो अपना कोर मे लऽ हमरा दुलरो नि□ा कयलनि। घंटो हुनका रूमक चौकठी लग ठाढ़ देखि अपना लग बजौतीह...... ... शायद अपना लग रजाई मे सुतौतीह। मुदा नि□ा कहियो कनिको काल ले अपना लग नि□ा आब ऽ देलनि। मां बैटीक बीच एकटा शाश्वत दूरी बनल रहल। मां हमरा कहियो अपन बेटी नि□ा बुझलनि। ममत्वक प्रसंग मे मोन पड़ै’छ दाई मां एखनो बुझाइछ कखनौक’ दाई मां दुलार सॅ हसोथि रहल छथि। पाढ़िवला उज्जर साड़ी, ढ़ील ढ़ाला बड़कीटा ब्लाउज सीधा पल्ला आंचरक खूंट मे बान्हल खैनी। भोर सात बजिते दाई मां हमरा रूम मे पहुँच जाइत छलीह आ तखने सॅ हमर जिनगी शुरू भऽ जाइत छल। अविते हमरा चुम्मा लऽ कहै छलीह – बुच्ची ऊठू, जल्दी करू सात बाजि गेलै........ तुरत स्कूल जयबाक बेर भऽ जाएत। मॅुह–हाथ धोआ दैत छलीह फेर हुनका हाथ सॅ दूधक गिलास लऽ गटगट पीबि जाइ। शुरू भऽ जाइत छल दौड़ धूप किताब कॉपी। फ्राक क बटन

दाई मां जल्दी करू.......फीता कतऽ छै? दाई मां हमर बेल्ट, दाई मोजा नि□ा भेंटैए ई नि□ा नवका जूता–मोजा। देखिऔ दाई मां सरोज हमर नवका जूता मोजा पहिर लेलक अछि। सरोज खोल हमर जूता.....।’

‘नि□ा, नि□ा देबौ जे करबे से कर।’

दाई मां सरोज जूता नि□ा देलक कानऽ लगलहुँ तऽ दाई मां चुप्प करा कहलनि–‘बुच्ची स्कूल जाय मे देरी भऽ जायत। आऊ पुरनके जूता पहिर लिअ सरोज मांक दुलएआ बेटी छै। सरोज के स्कूल जाइतकाल मांक नर्स राधा तैयार करैत छलै। बढ़ियॉ सॅ चोटी गूथै रीबनक फूल बना दैतत छलै। दाई मां नीक सॅ ने गूथै छल ने रीबन बन्हैत छल। केश मे तेल ततेक छऽ दैत छल जे माथ पर चुअैत रहै छल ऑखि मे मोट काजर। मुदा की कयल जाय दीदी सभ लग जा कऽ केश बन्हाबी से साहस नहि। स्कूलो मे संगी सभ हॅसैत छल। राधा सरोज कें तैयार कऽ नीलू कें तैयार करैत छल बिल्लू के हरिया। खाना मे सब दिन एके चीज भात, दालि आलूक भूजिया से हो जल्दी–जल्दी बस छुटबाक डर। सरोज आ नीलू पहिने तैयार भऽ जाइत छल मुदा हमरा सब दिन किछु ने किछु ताकऽ मे देरी भऽ जाय। क्यो कोनो वस्तु एकठाम नि□ा रहऽ दैत छल। कहियो जाइत काल देखि जूता मे पॉलिश नि□ा भेल अछि दाई पॉलिश करऽ बैसए तऽ लेट भऽ गेल। दौड़ैत गेलहुँ ताबत बस हार्न बजबैत भागल। मुँह–लटका कऽ घर घुरलहुँ। मां आठ बजे सॅ पहिने उठैत नि□ा छलीह। बाबूजी भोरे 6 बजे जूटमील जाइत छलाह। हमर देखिते मां गर्ज लगलीह। ‘बस छुटि गेलौ ने आब बैस घर मे के जेतौ स्कूल पहुँचाबऽ।’

दाई मां कहलथिन–बहुरानी! कनि दरबानजीके कहियौ ने – ‘टैक्सी पर बैसरा देथिन।’

‘पाई नि□ा लगै छै टैक्सी मे।’

फेर दाई मां कते निहोरा कयलनि तखन स्कूल गेलहुँ।

एखन किछु सोचि नि□ा पबै छी। बाहर रोशनी जगमगा रहल छै, नीचां डाइनिंग हॉल मे बीथोबन केर सिम्फनी बाजि रहल छै। आ एत बरांडा मे हमरा चारू भर रतुका सन्नाटा पसरल अछि। ई सन्नाटा हमर संग कखन छोड़लक? भरल लोकक भीड़ मे एसगरे तऽ रहैत छी! बड़का घरक बेटीआ बड़का घर क पुतौहु दून्नू ठाम सम्पन्न मुदा हुम केहन विपन्न छी कतेक अभाव झेलैत रहलहुँ अछि! दर्द क संग सुतैत रहलहुँ दर्द क संग उठलहुँ कहाँ? साबुत बॉचल छी।

विवाहक एक साल के बद भाभी जी कें बेटी भेलैन्हि। बाबुजी नाम राखलथिन – गुड्डी। गुड्डी वास्तव मे गुड़िया सन छल। रंग छलै दादी सन दुधि

या गोर मां सन कटगर आँखि नाक आ पापा सन तेजस्वी दिमाग। दू वर्ष पुरैत – पुरैत ओ रंग – बिरंगक खेल करय तोतरा तोतराक गीत गबैत छल ओकरा संग खूब मोन लगै छै सबसे मन मोहि लैत छल। एक दिन भाभी आकरा कोरा मे लऽ बरांडा पर ठाढ़ि छलीह गुड्डी आ चिलियाँ आ चिलियाँ कहैत रेलिंग सॅ नीचा झुकलै आ मां क हाथ सॅ ससरि गेलै। तीन तल्ला पर सॅ नीचाँ खसलै कोन काल बिसा गेलै से न□ि जानि। गुड्डीक वियोग सॅ बाबूजी भीतर सॅ टूटि गेलाह। कखनौ गुड्डीक बिसरी न□ि पबैत छलाह। हरदम ओकर बाललला मोन पड़ैत छलैन्हि। दस मास बीतैत-बीतैत-भाभी जी कैँ बेटा भेलैन्हि। मां बड्ड प्रसन्न छलीह। चांदीक थारी बजौलनि। खूब इनाम बक्खसीस बॅटललनि। मुदा बाबूजी कनैत ग्हलाह गुड्डीक विरोग मे। शायद ताहि दिन बाबूजी को व्यापार मे बहुत घाटा भेल छलैन्हि। बाबूजी जीवन मे पहिलबेर एहन घाटा उठौलनि छल। समय कच्क बाबूजी कें सेठिया ओतऽ वर्किंग पार्टनर शिप स्वीकारऽ पड़लनि। काका सभ व्यंग्य मे कहैत छलथिन 'भैया! अहाँ सेठजी सॅ बाबू बनलहुँ आ आबतऽ नौकरी करऽ लगलहुँ!' खैर सेठियाक ओत कहबा लेल वर्किंग पार्टनरशिप छलै मुदा बनबारी लाल सेठिया बाबूजीक कोनो निर्णय पर दखल न□ि दैत छलनि। स्वतंत्र रूपें निर्णय लैत छलाह। हिनका अनुभव सॅ सेठिया कें खूब आमदनी बढ़लै। मुदा आमदनी बढ़िते ओकर नीयत ब्रोली गेलै हिस्सेदारी मे बड्ड बेईमानी कएलक। मन-मुटाव बढ़ि गेलै। जूट बाजार मे इ खबरि पसरि गेलै। मामाजी के स्वयं जूटमील छलैन्हि हुनका भनक लगलैन्हि। ओ मां के कहलथिन-'जीजा जी पानि मे रहि कऽ मगरमच्छ सॅ असरि ठनलनि अछि। हमरा जनते एकर परिणाम-नीक न□ि हेतै'।' मामक आशंका निर्मूल न□ि छलैन्हि। बाबूजी कें जिगरी दोस्त समधि बालूरामजी आ बनबारी लाल सेठिया जहर दऽ मारि देल कैन्हि।

'दोसर दिन अखबार मे ईसनसनीक खबर छपलै ' प्रसि□ उद्योगपति श्री सॉवर मलजी गुप्ताक मृतशरीर ..... रहस्यमय मौत। लाश सोना गाछीक बाथ हाउस मे पाओल गेल।' मॉ कुहरि उठलीस जालिम! एक तऽ बेकसूर पतिक हत्या कयलक ेसर देवतासन पुरूष पर एहन घिनाउन इल्जाम! बाबूजी मौत के बाद न□ि मां के कहॉ सॅ अतेक शक्ति आबि गेलैन्हि जे कहियो पार्वान त्यौहर आ शुभ काजक अलावा कहियो पलंग सॅ नीचाँ पैर न□ि रखैत छलीह कनिको शोर गुल भेला पर माथक दर्द सॅ बेहाल भऽ सैरिडन खाइत छलीह। से शेरनी जकॉ दहाड़ि कऽ बजैत छलीह-हमर पति मुइलाह न□ि हुनका राक्षस सभ मारि देलकनि। हमर घर उजड़ि गेल। हत्यारा सभ के कहियो चैन न□ि भेँटतै हमरे

जकॉ बहु-बेटी कनतै।'

शायद ऊपर बला मांक आर्तनाद सुनलनि बालूराम जी आन्हर भऽ कऽ मुइलाइ आ बनबारी लाल सेठिया बीस बरस धरि जाबत जीवित रहल घर सॅ बाहर न□ि बहरायल अपंग भऽ गेल। फेफड़ा मे से हो कोनो खतरनाक बिमारी भऽ गेलै प्रायः आक्सिजन पर दिन खेपलक।

ओ राति कहियो ने बिसरत बड्ड बोझिल वातावरण छलै। मां एक-एक कऽ अपन पाँचो हीरा खोललनि आर दोसरो जेवर खोलि लेलनि लग मे मात्र सल्लो दीदी छलथिन। मां सल्लो दीदी कें कहलथिन दादी या काकी सीा पता न□ि चलै जे हम जेवर खोलिकऽ कतऽ राखलहुँ ओरिया कऽ राखि दे।' हम स्तब्ध छलहुँ किछु ने फुराइत छल। मां लग ठाढ़ि सरोज सॅ पूछलिऐ दीदी, हार्ट फेल ककरा कहै छै? की होइ छै? दीदी जवाब मे कहलनि – 'एंखन चुप्प रह।'

भोरे बड़का भैया आबि गेलाह। अखबाक समाचार पढ़ि मारवाड़ी समाज आश्चर्यचकित छल तकरा संग एहन सलूक! काका सभ पोस्टमार्टम के बाद दूपहर मे लाश अनलनि। 'ज़हर खुआक हमरा भाई के मारलक हम बदला लऽ कऽ रहबै।' मुदा के बदला लेलकै? हमरा ओ दृश्य न□ि बिसराइत अछि जखन बाबूजी के चारूभाई कन्हा पर अर्थी पर लऽ गेलथिन। बाबूजी चारू कन्हा पर छलाह पाछू-पाछू दूनू भाई आ जीजा जी ताहि संगे सैकड़ों लोक। अनगिनत गाड़ी। हम खिड़कीक छड़। हमरा सभ मे कुमारि लड़की श्मशानघाट न□ि जाइत छैक। मने मन होइत छल ई हमर बाबूजी न□ि छलाह जकरा सभ नेने जाइत छै। मूँहो तऽ झाँपल छलै। न□ि रहि भेल तऽ दाई मां सँ पूछलिऐ-दाई मां, दाई मां, हमर बाबूजी औता नै। ई जरूर ककरो आन लोकक लाश हेतै। झूठे खबरि छै जे हमर बाबूजी कें जहर खोआ कऽ मारि देलकैन्हि।'

दाई मां तऽ अपने कनैत-कनैत बेहाल छलीह-हे भगवान केहन दिन – देखयलह......।'

कनिते-कनिते दाई मां हमरा आ सरोज कें नहौलक। हम कनैत-कनैत सुति रहलहुँ फेर कानब सुनि निन्न टूटल। देखलिए-घाट पर सॅ सब घुरिकऽ आयल छलाह। डाक्टर गांगुली मां क नब्ज पकड़ि कऽ बैसल छलाह। मां जोर-जोर सॅ बजैत छलीह-डाक्टर साहेब हुनकर हत्या कयल गेलैन्हि। हत्यारा हमर सोहाग उजाड़ि देलक।

'भाभी अहाँ शान्त रहूँ! हम सभ बदला जरूर लेबै।'

'कोना बदला लैबै? आब हम बाल बच्चाक पोसब की घर-द्वारि बेच

कऽ ममला-मुकदमा लड़ब?'

बहुत दिनक बाद सल्लो दीदी कहने छलीह जहिया बाबूजी दुनियॉ से गेलाह तहिया मां लग मात्र पाँच सौ टका छलैन्हि। बाबूजीक अचानक मौत भेलैन्हि। सब टका पाई तऽ बालूजीक गददी मे जमा छलै। आर कतऽ कतऽ पाई छलैन्हि से ककरो बूझलो नि□ा छलै। बालूजी तऽ सभटा टका पचाइए लेलथिन।

'काल्हि की हेतै' बच्चा सभ के कोना पोसब पालब? मां एहि छगुंता मे सदति काल रहैत छलीह। एक दिन बड़का कका कहलथिन-भाभी आब रईसी नि□ा चलत बड़ा बजारक मकान मे चलू आई दाई नौकरक फौज हटाऊ।'

मां मुँह झपनहिं कहलथिन-हम कतौ नि□ा जायब जेना होइत एलैए तहिना सब हेतै हुनकर मान-मर्यादा मे बटा□ नि□ा लागऽ देबै।'

'खर्चा चलत कहाँ से?'

भगवान देथिन। स्वर्ग में बैसल बाप अपना बाल बच्चाक एतबो ख्याल नि□ा राखथिन?'

एहन फुहड़ि औरत कें के समझाओत? खिसियाक बड़का कका चलि गेलाह।

'मामला-मुकदमा लेल टका चाही? दोसर कका बजलाह। तऽ मां कहलथिन- हम पैघ खाना दानक बेटी छी अनपढ़ गंवार नि□ा! हमरा अपना बाल-बच्चा भविष्य देखबाक अछि। मुकदमा कोट-कचहरी सॅ हमरा सभ के सबूत अछि। सार सेठिया के फॉसी दिया सकैछी। भाई साहब खानकदानक नाक छलाह।'

से जे होइ मुदा हम मामला-मोकदमा क चक्कर मे नि□ा पड़ब! के जानए काल्हि ओ विजय संग किछु कऽ बैसए!'

'की विजय एसगर छै बाप नि□ा छथिन तऽ कको सभ मरि गेलै? खैर अहाँ के जे इच्छा होए करू हम सभ नि□ा बाजब।' मंझिलो कका चलि गेलाह।

मामा – मां के कहलथिन-बगल मे जे खालि जमीन छै ताहि मे मकान बना कऽ किराया पर लगा दिऔ। मासे-मास टका भेंटैत रहत घरक खर्च लेल।

मां कहलथिन 'मकान बनाबऽ लेल बहुत टका चाही हम कतऽ अनबै ओतेक टका?'

'हम बात तऽ कहलहुँ लाख टका क। तखन रुपैया पैसा एखन हमरो हाथ पर नि□ा अछि। अहाँ जनिते छी सोधपुरक कारखाना बन्द भऽ गेल अछि।'

'भैया हम अहाँ सँ टका कहाँ मंगैत छी?'

ओहि राति भैया बाबूजी के सपना मे देखलथिन बाबूजी कहलथिन-'अहाँ

सभ जुनि घबराऽ बड़का तिजोरीक दहिनाकातक ड्राअर खोलिक कहियो मां के देख।' भैया हड़बड़ाक उठलाह मां के जगा कऽ सभटा बात कहलथिन-। मां तिजोरी खोललनि। दहिना ड्रॉअर मे बैंक के पासबुक छलै जाहि मे दस लाख टका जमा कयल छलै। पासबुक मे मां आ भैया दूनू गोटेक नाम छलैन्हि भोरे-भोरे भैया बैंक गेलाह टका निकालननि काजग वास्ते आर टका दोसर बैंक मे जमा कऽ देलथिन। मां अपन हीरक चारू चुड़ी बेच देलथिन। श्रा□ कर्म मे कोनो कभी नि□ा कयल गेलै।

अइबेर दिवाली मे ककरो उत्साहे नि□ा छलै कहुना विध पुरल गेलै। दिवालीक बाद बगलबला खालि जमीन पर मकानक नेउ देल गेलै' धीरे-धीरे मकान बनि गेलै।

काल्हि राति मे अजीब सपना देखलहुँ। राति मे बारह बजेके बाद ऑखि मुनने होएब। सोचैत-सोचैत अचेतन अवस्था मे घॅसैत चलि गेलहुँ। सपना मे देखलिऐ हम एकटा पैद्य रूम मे बन्द छी। क्यो हमरा दिस झपटैत अछि। आ हम छलांग मारि रूम सँ बाहर लाबी मे भगैत जा रहल छी। अचानक एक्जिट देखाइत अछि। हम घड़घड़ाइत घुमावदार सीढ़ी पर उतरैत जा रहल छी बुझु जे दस मंजिला सॅ एक मिनट मे उतरि गेलहुँ। बड्ड हॉकि रहल छी। देह थाकि कऽ चूर-चूर भ्ज्ञऽ गेल अछि। बुझाइत अछि जे क्यो रस्सी सॅ करेज बान्हि रहल अछि।......फेर एकटा स्वीमिंग पूल........नि□ा ई तऽ गंगा नदी छै बड्ड तीव्र वेग ठहरल पानि नि□ा। तखने एकटा छोट लड़की के देखैत छी चारि पाँच बरसक ओकरा हेलऽ नि□ा अबैत छै। ऊब डूब भऽ रहल अछि। अरे ई तऽ डूबि रहल छै हम झटकि कऽ ओकरा लग गेलहुँ। अपना दूनू तरहथ्थी पर ओकरा उनटा पारिकऽ हेलनाई सीखा रहल छी। धारक तेज प्रवाह मे हम तलमलाइत छी। मन मे होइत ई हरिद्वारक गंगा फेर होइछ नि□ा ई बंगला देशक प□ा छै। प□ाक धारक एहन तीव्र वेग! खैर ओ बच्ची हेलनाई सीख गेल। आब ओ भभाकऽ हँसि रहल अछि।

'देखू, आब हमरा हेलऽ आबि गेल।' हमरा हमरा ई सुनि अद्‌भूत आनन्द भेंटल। प्रसन्नता सॅ कहलिऐ- हं, बेटा एहिना हेलब सीखैछ सब।'

भोरे निन्न टूटल। खिड़की सॅ देखलहुँ दूर-दूर धरि अनन्त अथाह समुद्र मोन पड़ल खुका सपना। अर्न्तमनक द्वन्द्व सॅ कहिया छुटकारा भेंटल! की करु!! कलकत्ता जायब तऽ फेर काजक चक्करघिन्नी मे घुमैत रहब। ब्रेकफास्ट के बाद वापस आबि बरांडा पर राखल डेक चेयर पर ऑखि मुनि बैसि रहलहुँ। फिलिप जबरदस्ती हमरा समुद्रक कात मे पठौलनि। हमरमोन समुद्रक निरन्तर

गर्जन सँ घबरा जाइत अछि। हमरा पहाड़ नीक लगैत अछि। काल्हि रातिबला सपना फेर मोन पड़ल। ओइ सपनाक मतलब नि□ा बुझाइल कहियो जूडी सँ भेंट होएत तऽ पूछबै जरूर। ओकरा साइक्रियाटीक अनुसार और सपनाक विश्लेषण की हेतै।'

फिलिप आ जूडी भारत सँ एतेक दूर रहितहुँ कतेक निकट लगै'छ। शायद कलकत्ता मे एतेक अपनत्व ककरो सँ नि□ा अछि शायद आब क्यो दोस्तो नहिए अछि। काल्हि रातिमे अपन नेनपनक बाते सभ सोचैत सुतल छलहुँ ताहु मे वेशी मोन पड़ल छल बाबूजीक मृत्युक बात सभ।

बाबूजीक मृत्युक समय हम लगभग साढ़े नौ बरसक रहल होएब। बाबूजीक मृत्युक बाद घरक आर्थिक हाल दिनोदिन बिगड़ैते गेलै। ओना बाहरी आडम्बर झाड़ फनूस, तोरण सजाकऽ यथास्थिति रखबाक कोशिश मे मां जी जान सँ लागल रहैत छलीह। भीतर सँ रिक्त-तिक्त भऽ गेल छलीह किछु आर कठोर मुदा धिया-पुता लेल बहुत स्नेह आवेश बुझना जाइत छल। नर्स छलैन्हि राधा तकरा हटा देलथिन। आब डाक्टर गांगुलि यो वेशी काल नि□ा अबैत छलथिन। हं, आब दाई मां हुनकर आव-भगत मे लागल रहैत छल। दाई मां सलाहकार, सेविका, हमदर्द जे बुझि सभ छलैन्हि। मां क पलंग-बड़कीटा छलैन्हि से बाबूजीक बिना सुन्न लगैत छलै खाली-खाली सन। दाई मां ओहि घर मे नीचाँ मे गद्दा ओछा कऽ हमरा सुता दैत छलीह। सरोज, बुल्ली आ छोटका भैया बाबूजीक रूम मे सूतैत छलाह। नीलू कहियो काल नानीक ओत रहैत छल कहियो दीदी लग। हम बाबूजी घर मे जाइत घंटो बरांडक कोना मे बैसल रहैत छलहुँ। आकाश दिस तकैत छलहुँ तऽ धुँआ-धुँआ सन लगैत छल। वेशी काल हम गौरैया चिड़ैं सँ बतिआइत रहैत छलहुँ मुदा आब मोने-मोन बतिआइत छलहुँ डर होइत छल फेर जँ भैया सझ सुनता तऽ की करता की नहि। गौरैया जखन रेलिंग पर आबि कऽ बैसैत छल तऽ हम पूछैत छलिऐ-

'ए चिड़ियाँ कह ने हमर बाबूजी कहिया औता?' कहियोकऽ स्कूल सँ आबि तऽ सीढ़ी पर चढ़ैत काल मन मे होइत छल-बाबूजी अपना रूम मे कान सँ टेलिफोन सटौने बतिआइत हेताह। मुदा से दिन कहियो ने भेलै। करीब छ मास बीतैत-बीतैत हमरा विश्वास भऽ गेल आब बाबूजी कें नि□ा देखबैन्हि ओ सत्ते हमरा सभ कें छोड़िकऽ चलि गेलाह। तकरा बाद हमरा संग दुर्घटना भेल भैया बला। पैंटी मे जहिया दाई मां खून देखलनि तहिये सँ मां क रूम मे हमरा सुताबड़ लगलीह। दाई मां बहुत देर घरि मां कें मालीश करैत छलथिन मां औंधा जाइत छलीह तखन मालीश करब छोड़ैत छलीह। मांक संग मालीशकाल खूब

बतिआइत छल खाली बाबूजी विषय मे। हम चाहैत छलहुँ जे सभटा बात सुनि मुदा आँखि मुना जाइत छल। एक राति अधरतिया मे निन्न टूटि गेल तऽ सुनलहुँ मां हुचुकि हुचुकि कनैत छल तइओ पैर दाबि धीरे-धीरे मां लग पहुँचलहुँ। आ दाई मां के दाई मां उठलीह हुनका आँखि पनिया गेलैन्हि हमरा कहलनि-बुच्ची! मां कनतीह नि□ा तऽ की करतीह दुःखक पहाड़ खासि पड़लैन्हि माथ पर।

दाई मां फेर हमरा लग एलीह तखन नहुँए सँ पूछलिऐन्हि- दाई मां दिन मे मां के कनैत नि□ा देखैत छिऐनह!

बुच्ची अहाँक बहुत जीवटवालीं छथि। जहिया सँ मालिक विदा भेला कहियो राति मे चैन सँ नि□ा सूतलनि। मुदा दिन मे करेज पर पत्थर राखि, सभटा भार सम्हारैत छथि। कहै' छथिन-'चमेलिया माथ हम कनबै तऽ बच्चा सभ दिहरू भऽ जायत। कतेक जतन सँ धिया-पुता के पालैत पोषैत छलथिन। एकरा सभके कष्ट हेतै तऽ हुनकर आत्मा दुखी हेतैन्हि। प्रात भऽ कऽ ई बात हम सरोज दीदी के कहलिउे जे राति मे मां दाई मां संग बाबूजीक बात करैत छै आ कनै छथि। सरोज एक नमर के चुगलखोर ओ ई बात बड़का भैया आ भाभी कें कहि देलकैन्हि। भाभी जी दूनू दीदी कें फोन पर कहि देलथिन। दूनू बहिन एहि बात पर मां के फोन कऽ बजलथिन 'मां अहां एना कनबै तऽ हमरा सभके के देखत।' सुमित्रा दीदी कहलथिन फेर सरला दीदीक फोन एलै-मां अहा कहि तऽ किछु दिन लेल हम आबि जाय अहाँ एना कियेक कनैत छी बाबूजी तऽ चलिए गेलाह अहां सब दिन अस्वस्थ रहैत छी एना मे अहूँ नि□ा रहब तऽ हम सब तऽ टूअर भऽ जायब।'

मां कहलथिन-'नि□ा हम कहाँ कनैत छी के कहलक अहाँ के? हमर तऽ चारूधाम सब तीरथ अहीं सब छी। हमर घर तऽ मंदिर अछि। आ अहांक बाबूजी कतहु नि□ा गेलाह अछि हमरे सभ्क बीच एखनहु छथि। हं, हमरा लोकनि हुनका देख नि□ा पबैत छिऐनह।

एहि फोनक बाद मां हुक्म भेल जे आब प्रिया बच्चा बला रूम मे सूतत। आब सरोज आ हम एक रूम मे सूतैत छलहुँ आ दोसर रूम मे छोटका भैया आ बुल्ली। दोसर रूम मे सूतैत छलहुँ मुदा दाईमां हरदम हमरा पर नजरि रखैत छलहि। हमरा याद अछि बाबूजीक देहान्तक शायद छ मासक बाद सल्लो दीदी सासुर सँ आयल छलीह विवाहक दस वर्षक बाद बेटा भेल छलैन्हि। मां चान्दी थारी बजौलनि। रसगुल्ला बाँटल गेलै। मुदा भीतरे-भीतर हुनका चिन्ता सँ मन बेचैन छलैन्हि खिचड़िक नेग मे बहुत खर्च होइत छै कोना हेतै'? आइ ओ रहथिन तऽ कम से कम पच्चीस हजारक खिचड़ि देल जाइत। बिल्लू भेल छलै

तऽ शानदर नेग बाबूजी पठौने छलथिन। आइ सॅ पैंतिस वर्ष पहिने पच्चीस हजार टकाक महत्व छलै। हलांकि बगल मे मकान बनि गेलै। दस हजार टका प्रत्येक मास किराया मे अबैत छै। आब घर खर्च लेल मां निश्चिनत भऽ गेलीह। मुदा ई ऊपरि खर्च कोना निमाहल जायत। बाबूजी क गेलाक बाद शायद अहि चिन्ता फिकिर सॅ मां क स्वभाव मे चिड़चिड़ापन आबि गेलैन्हि। बात-बात को खिसिया जाइत छथि।

मुदा आर अहठाम हम कियेक मांक अतीतक पोथा लऽ कऽ उनटा रहल छी? कियेक कखनौक एकटा असहम वेदना यॅ कुहिड़ि उठैछ मन-प्राण?

केहन अन्सोहाँत लगैत छै अपन मांक आलोचना करब। मुदा बात छै तेहने मां हमरा कहियो स्नेह न□ि देलनि मांक ममता केहन होइ छै हम कहियो न□ि बुझलिऐ! तकर कारण इएह जे हम चारिम बेटी छलिऐ। अइमे हमर कोनो दोष? मां चाहैत छलीऐ तीनटा बेटी कछिए आब बेटा होमए। तऽ की गुप्ता हाउस मे बेटी क रूप मे जन्म लेब वा बेटाक रूप मे हमरा वश मे छल? ओनो कखनौ काल मां पर दया होइछ- हुनका जिनगी मे भेटँलनि की? संघर्ष मात्र संघर्ष। मुदाइ हो सत्य छै जे ओ स्वयं सुखक चिड़ैंक पाँखि नोचि-नोचि कऽ फेकैत रहलनि। मां एकटा अहंकारी जिद्दी बच्चा जकां छलीह जे परसल थारी पटकी भखलो बैसल रहै छै। न□ि जानि कियेक हुनका व्यथा आ त्रासदी मे कोन सुख भेंटैत छलैन्हि। मंच पर एक सफल निर्देशक जकाँ हमरा सभकेँ अपन त्रासदीक भागीदार बनाइए कऽ सांस लैत छलीह कखनौ अपने व्यथित रहैत छलीह तऽ कखनौ पर पीड़न सॅ सुख भेंटैत छलैन्हि। हुनकर बोली-वाणीक आक्रमकता आ शब्दक चाबुक तड़ाक-तड़ाक पीठ पर पड़ैत छलै नील निशान रहि जाइत छलै आ लोक दर्द सॅ कुहड़ि उठैत छल।

हम आ छोटका भैया मां क कोप भाजन वेशी काल बनैत छलहुँ। हमरा बुझना जाइछ मां क दृष्टिकोण सॅ महिला क जन्म पाप छला महिला माने एहन हीन स्थिति जेहन क्यो गुलाम होइ जे मालिक बिना जीवित न□ि रहि सकै'छ। जँ मालिक असमय चलि गेलाह-सिंहासन खालि भऽ गेलै तऽ युवराज ओइ आसन पर बैसथु। आ सेह भेलै। बड़का भैया युवराजक रूप मे खालि भेल सिंहासन विराजमान भेलाह। मां के हमर किछु नीक न□ि लगैत छलैन्हि। ने मुँह-कान ने पैध-केश ने नमछर देह। सबसॅ वेशी अखरैत छलैन्हि हमर स्वस्थ कद काठी दसम वर्ष होइत-होइत पीरियड्स शुरू भेनाई किशोरी जकां उभार। हरदम टोकैत छलीह- धम-धम करैत चलै छें नहुँ-नहुँ चल ढंग सॅ बैस। कतेक जोर सॅ हँसैत छें। केना खों खों कऽ खॉसैत छँ खोंखी दाबि ली तऽ माल-जाल

जकॉ गरगराइ छें कियेक। कोनो तरेहँ चैन न□ि।

हमरा एखनो आहिना याह अछि मां के पानि पीबऽ बला बहुत सुन्दर शीशाक केटली छलैन्हि जे हमरा हाथ सॅ छुटिकऽ फुटि गेलै। चिचियाक क पुछलैन्हि- की फुटलै। हम-हुनकर आवाज सुनिते भुगलहुँ पछिला बरांडाक रेलिंग पर। एक पैर अइ कात दोसर ओइ कात धऽ नीचॉ खसबैतऽ हमहुँ मारि जायब।नीके हेत मरि जाइतऽ। हमरा मरला पर कयो कानबो न□ि करत। हं, एकटा दाई मां हमरा ले' कनतीह। मां तऽ नहि ए कनतीह हुनका तऽ हम मरि जाइ तऽ खुशी हेतैन्हि। हं सरोज आ बुल्ली कनतै। मुदा मरलाक बाद हम बुझबै कोना जे के कनै'छ के न□ि? दाई- मां कहै छथिन जे अल्पआयु मे मरैत छै से प्रेत भऽ जाइ छै..... इएह सभ सोचैत छलहुँ ताबत चिचिआइत दाई मां दौड़ल एलीह - बाप रे बाप। ई को करै छी बुच्ची।' आ हमरा धिय कऽ रेलिंग पर सॅ उतारंलनि। सोचत छी तऽ लगैए जे केहन असहाय, अनाथ सन छल हमर बचपन! शायद बैधब्य महिलामे हीनभाव आ असुरक्षाक बोध सॅ कठोर स्वभाव भऽ जाइत छै।

मां एसगर भऽ गेल छलीह तैँ हरदम ककरो ने ककरो सॅ बतिआइते रहैत छलीह। पहिने लोक सँ एतेक कहाँ बतिआइत छलथिन। आब तऽ कखनौ दीदी सब सॅ कखनौ बड़की भाभी सॅ तऽ कखनो यमुना मौसी या कमला मौसी सॅ। कखनौ काकीक बेटी राधा सॅ। एके बात एकहि घटना मौका बे-मौका सभ सॅ बतिआइत छलीह। ओहुना कोनो बात के बतंगर बनाकऽ दू-दू घंटा। बतिआइत छलीह विषय किछु भऽ सकै'छ। हरिया गाँव-गेल दू दिन लेल आइधरि धुरिकऽ न□ि आयल। गोविंद महाराज आब देरी करताह तऽ नौकरी सॅ हाटाइए देबैन्हि। .....बाजार मे सभ वस्तुक दाम बढ़ले जा रहल छै फल कतेक महग भऽ गेलै। आब सब बच्चा कँ मौसमीक जूस देब संभव नहि। आर न□ि किधु तऽ बेट क बढ़ई। श्रवण कुमार अछि हमर बेटा! एहन बुझनुक बेटा न□ि रहैत तऽ हम सभ एखन-सड़क पर रहितहुँ......। हमर अपन दियादनी सभ की सभ न□ि कयलनि जादू टोना समेत मुदा भगवतीक कृपा हमर बेटा सरिपहुँ मातृभक्त अछि। एक मात्र बड़की काकी के माहँ मां न□ि किछु बजैत छलीह ओ चुकी निर्दलीय छलीह जे क्यो किछु अदगोई- बदगोइ कहैत छलैन्हि से अपने मन मे रखैत छलीह। दियाछनीक बाद ननदि सभक सिधांस शुरू करैत छलीह..... सभ खालि लेबऽ लेल मुँह बौने रहैत छथि...।

दरअसल मां के भेटँलनि की? कोन विषय पर चर्चा करतीह। हर साल एकटाक बच्चा जन्मौलनि! आ बच्चाक कारण महिलाक शरीर खोखला भऽ

जाइत छै ताहू अतेक संतति। पहिने अपनाधिया- पुताके कयलहूँनी फेर सन्तानक बच्चाकाँ। इहए सब खरेहा लोक केँ सुनबैत छलीह। ....की कहूँ कहियो चैन नहि सालोभरि पावनि त्यौार ताहि मे बेटी सभक सासुर मे सनेश पटेनाई! खर्चक कोनो अन्त नहि। अहिना गप्प पर गप्प फोनो पर आ लोकोलग। ओना कोनो काजक गेर कखनौ हरिया के तऽ कखनौ लक्षमिनियाँ वा सीताराम केँ मुदा गप्प करबाकाल बड्ड फुर्ति रहैत छैन्हि। अर घर मे पछिला पचास वर्ष सॅ नौकर बदलाइत रहल अछि मुदा कोनो नब नाम नि□ा सुनलहुँ। जे आयल तकरा पुरनके नौकर वला नाम सम्‍ शारे पाड़ल जाइत रहल अछि। खैर नाम मे की राखल छै हँ, तऽ बेचारा सीताराम तीन वर्ष धरि बर्तन-बस्सन मंजैत रहल ओकरा गेलाक बाद जे आयल तकरो नाम रहलै सीताराम। एहिना हरी छोटे मे आयल छल पहने हरि फेर हरिया कहल जाइत छलै जखन बूढ़ भऽ रिटायर भऽ गाम गेल तऽ आयल बेचन ओकरो नाम रीलै हरिया। दाई मां क अलावा दू टा नौकरानी छलैन्हि मां केँ। राधा नर्स चलि गेलै मुदा एखन जे नौकरानी छै तकरो नाम छै राधा। जखन मां क्रो□ मे रहैत छथि तखन रधिया कहि कऽ शोर पाड़ैत छथिन। पछिला तीस वर्ष सॅ छाई मां के गेलाक बाद मां के देख-रेख करैत छैन्हि रधिया आ कृष्णा।

तकर अलावा साक्षात राजलक्ष्मी बड़की पुतौहु आगाँ-पाछाँ करैत रहैत छथिन। मां क कहव छैन्हि भगवानक नाम रखने अनायास लोक अनेक बरे भगवानक नाम लऽ लै'छ। तखन हमर नाम प्रिया के राखलक? डा॰ अमृता कौर नि□ा, नाम रखलक राधा नर्स! कृतज्ञ छी हम नर्स राधक। सुमित्रा, सरला सरोज आ तकर बाद जँ हमर नाम सावित्री राखल-जाइत तऽ? ओ तऽ राधा नर्स राधा नर्स कहलकै आब 'स' अक्षर सॅ नाम नि□ा रखियौ नि□ा तऽ पांचम बेटीए होएत।

एकटा बात बुझलहुँ मां के जँ दूइओ मिनट एसगर रहऽ पड़ैत छैन्हि तऽ ओ घंटी पर घंटी बजा कऽ आडन घर केँ आन्दोलित कयने रहैत छथि। पलंग के सिरमा लग भैया कॉलिंग वेल लगबा देलथिन। मां बटन दबबैत रहैत छथि लोक दौड़ल- जाइत छैन्हि पूछऽ। वेशीकाल बड़की भाभीजी आ छोटकी भाभी जी जा कऽ पूछैत छथिन - 'मां जी! की भेल? किछु चाही??

-नि□ा, रानी! ई रधिया कखनौ एकठाम टिकते नि□ा अछि। आ अहाँ सभके अपन धिआ पुता ओझरौने रहै'छ। हमरा माथ मे दर्द होइत अछि तैँ घंटी बजौने छलहुँ जे रधिया बाहर सॅ आओत।

- 'मां जी कहू न कोन दवाई दी?'

- 'सरिडान आ एकटा हार्टवला दवाई लिब्रियमा दवाई दऽ कऽ भभी जी घुरऽ लगैत छलथिन तऽ मां कहैत छलथिन अरे क्यो तऽ रहू- हमरा लग। हमरा लग। हमर मन घबरा रहल अछि।'

आ बड़का भैया केँ जँ ऑफिस सँ घुरिकऽ।

घर आबऽ मे आधो घंटाक देरी भेला पर हाय तौबा मचा दैत छलीह.. .....' हे भगवान! आकाश मे बिजुरी चमकै'छै चारू भर मेघ लागल छै..... हमरा बड्ड चिन्ता भऽ रहल अछि। करेज थरथरा रहल अछि.... कहीं एकसीडेंट नि□ा तऽ भऽ गेलै?'

- 'मां जी! किछ नि□ा भेल हेतै' अबिते होयताह कियेक चिन्ता करै छी।'

जँ रातुक बेर रहैत छलै तऽ कहैत छलथिन- 'सब दिन कहैत छिऐ वशी राति कऽ नि□ा अबि। जमाना खराब छै, बाट-घाट मे चोर-डकैत अवसरक ताक मे रहै'छै।' जहिया सही समय पर भैया घुरि कऽ अबैत छलथिन तऽ सबसे पहिने मां क रूप मे जाइत छलाह मां बैसल रहैत छलथिन ओ हुनके- लग सूतल-सूतल अपन दिनचर्चा सूनबैत छलथिन। ओ समय समिट कांफ्रेन्सक रहैत- छलै तखन आर क्यो गप्प-सप्प भेला क बाद मां बेटा भोजन लेल बैसैत छलाह तऽ बड़की भौजी बैसि कऽ भोजन करबैत छलथिन। बाबूजीक स्थान लेलैन्हि बड़का भैया। धरक आर सदस्य सहमल-सहमल अपना-अपना रूपमे रहैत छल। सभकेँ अंदेशा रहैत छलै नि□ा जानि आइ ककर पेशी हेतै'? ककरा डॉट-फटकार लगतै?'

एकटा सांझि ओहिन याद अछि। ओना त अपन नेनपनक कतेक सांझि ओहने बीतल छल। छुटी□ मे सब दुपहरिया मां क नाम समर्पित करऽ पड़ैत छल। हुनका नजरिक सामने बेसल रहू हुनका कंखन कोन वस्तुक जरूरत पड़तैन्हि। पहरा दैत बीतैत छल दुपहरिया। हं, तऽ सांझि भेल जाइत छलै'। पछिला बरांडा मे मां कुर्सी पर बैसल छलीह। बगल मे मोढ़ा पर बैसल सल्लो दीदी स्वेटर बुनैत छलीह। नीचाँ सॅ सरोज, नीलू आ बुल्लीक आवाज सुनाइत छल। किछु पड़ोसियोक धिया-पुता खेलाइत छलै खूब जोर-जोर सँ सब बजैत छल- 'आलकी पालकी जय कन्हैया लालकी......... मां हमहूँ जाउ खेलऽ।'

की एक दिन नि□ा खेल जयबें तऽ मरि जयबें? देखैत छहीं सल्लो चुपचाप बेसल छै, यानी पीरियड्स मे। किछु बुझऽ सूझऽक अवगति नि□ा। जरलाहो मासे-मास ई आफत! (पीरियड्स) आ बड़की (बड़की भैजी) राजलक्ष्मी नैहर गेल छथि मां बजौने छलथिन। मास दू बेर-तीन बैर नैहरक

चक्कर लगबैत छथि। मां-दस दिन बीतैत-बीतैत फोन करऽ लगैत छथिन 'समधिन! पारो कैँ पठा दिअ।' मन तऽ होइत कहिऐन्ह सब दिन राखि लिअ अपने ओतऽ। एक दिन आजीज भ कऽ कहबो कयलन्हि - 'एक आबऽक काजे कोन ओतहि रहतीह!'

-पुतौहु बजलीह- मां अहाँ एना कियेक बजलिऐ?' कोन अनर्राल बजलहुँ। अपने तऽ जाइते छी संगे मुन्नो के लऽ जाइत छी। घर केहन सुन्न भऽ जाइछ। मोन नि□ा लगैए। दोसर बात ई जे ओतऽ अल-बल खा लै छै आ बिमार पड़ि जाइत छै। तखन डाक्टरक फीस कियेक नि□ा नानी दैत-छथिन। कहू तऽ चोर बगान रहऽ योग जगह छै? चारू भर रांदगी नाक नि□ा देल जाइ छै।' फेर हमरा दिस तकैत बजलीह- 'प्रिया जो हमर केश झाड़ऽ बला ब्रश नेने आ।' जाए लगलहुँ ब्रश आनऽ नऽ सल्लो दीदी के कहलथिन 'सल्लो, देखहि ई तऽ दिन दुगुना राति चौगुना बढ़िते जाइत छै ऊँट जकां। आ बु□ि-ज्ञान रत्ति भरि नि□ा।' मां क ब्रश देलऐन्हि केश झाड़ वला तऽ बजलीह बिना अयनाक केश थकड़ब? सल्लो! कनि एकए ट्रेनिंग दऽ लुड़ि-व्यवहार सीखा। केना सासुर जायत एहन अलबटाहिके कोन लड़का पसिन्न करतै? हम अयना लऽ कऽ झटकल एलहुँ तऽ कहलनि जाइत छलैँ तऽ पूछिते ने आर की चाही? मूँहपोछऽ वला तौलिया आनि दे।' तौलिया आन जाय- लागलहुँ तऽ फेर चिकरलनि-'कत जाइत छैँ?' 'तौलिया आनऽ।'

तौलिया गेल भाड़ मे। पहिने 'चूडि कोलोन'क शीशी आनि दे। बाप रे माथ मे दर्द होमऽ लागल।

-'यूडिोलोन'क शीशी लऽ कऽ एलहुँ फरमान जारी भेल-माथ मे लगा। माथ मे यूडकोलोन लगबैते छलिऐन्हि की फेर बजलीह-माथ दाबि दे दर्द-होइए।' माथ दबैत छलिऐन्ह तऽ हुकुम भेल- 'धुरऽ केना जातै छैँ हाथ मे दम नि□ा छौ? खाइ छथि भरि थारी......।'

हमर ऑखि नोरा गेल सल्लो दीदी दिस तकलहुँ मुदा हुनका हिम्मत छलैन्हि जे किछु बजितथि! कनि कालक बाद फेर चिकड़लनि 'बाप रे बाप कत्ते जोर सॅ दाबि रहल छैँ हाथ छै की लोहा....? जो हट हमरा टेलिफोन आनि कऽ दे।

-टेलिफोन आनि कऽ देलऐन्ह तऽ कहलनि 'यमुना मासी से बात करा।' नमबर लगा कऽ चोंगा कान मे सटेलहुँ -'मां ऑपरेटर कहैत अछि एखन लाइन एंगेज छै।'

-गदही, मुँह मे बकरा नि□ा छै-'कहलही कियेक नहि जे अर्जेंट बात

करबाक छैक, जलदी-लाइन दे।'

फेर हमरा कपड़ा पर नजरि पड़लनि। समीज एतेक गंदा केना भऽ गेलौ? हरदि कोना लगलौ? खा कऽ समीज मे हाथ पोंछि लेलैँ। केहन ढ़हलेल भऽ गेलै' ई कहियो नि□ा सुधरत!'

मां, हमरा समीज मे बुल्ली हाथ पोछि लेलक। हम तौलिया सॅ हाथ पोछैत छी।'

'पोछऽ कियेक देलही? जो बदल कपड़ा चमैन सन लगैत छौ!'

ढ़हलेल, अपराजक, अलबटाहि कतेको उपाधि सॅ विभूषित भऽ हम कपड़ा बदलऽ गेलहुँ। बुझायल पीरियड्स शुरू भऽ गेल। ओह! आब जँ एखन मां कहबनि तऽ फेर चालू भऽ जयतीह धंटो की कहॉ बजैत रहतीह। ठीक छै आइ पहिल दिन छै परसू माथ धो कऽ नहा लेब।

पैड लेब लेल डेराइत-डेराइत मां के कहलिऐन्ह -'मां पीरियड्स......'

मुँहक बात बहराइते भयानक विस्फोट भेलै। -'चंडाल! आइए इ हो होयबाक छलौ। काल्हि तोहर बाबूजीक बरखी छैन्हि। पीसी, काकी सब जुटतै। एकर काकी क तऽ गी□क दृष्टि छै ओ तऽ देखते कहथिन- सल्लो! ई तऽ दस साढ़े- दस बरख उमरे मे चौदह बरसक देखबा मे लगै'छ। मां बड्ड असहज भऽ दीदी दिस तकलनि। दूनू गोटा किछु फुसुर-फुसुर बतिऔलनि हम नि□ा सुनि सकलहुँ। हँ भीतरे-भीतरे उफान उठल छल पीरियड्स होइछ ताहि मे हमर कोन दोष? बिना अपराधो के हरदम बात सुनैत छी। आ केहन निर्मम सजा भेँटैत अछि काल्हि भरि दिन पाछाँ बला बरांडा मे बन्न रहऽ पड़त। बीच मे नास्ता, भोजन दाई मां दऽ जाइत छलीह -खा ले बुच्ची।'

-'दाई मां हम बाथरूम जायब।'

-बुच्ची, भरल आंगन लोकसभ छै हम कोना एखन लऽ कऽ जाउ? बहुरानी त हमरा कांचे जीबा जेती। कनि धैर्य राखू चुच्ची। आहंक पीसी आ काकी सभ आंगन सॅ हटतीह तऽ हम लऽ जायब।

भादवक उमस बला दुपहरिया आ एसगर गुमसुम बैसल रहब। हमर अस्तित्व डॅामाडोल भऽ रहल अछि। मां हमर कोन दोष? हमरा की नीक लगै'छ दूनू जांघक बीच खुन बहब? आ नाहि लेल एहन चातना। हमरा केहन आत्मग्लानि होइछ से मां के बूझल छैन्हि? की ओ हमर अपराध बोध अनुभव करैत छथि? एखन धरि ई कस्ट सरोज के नि□ा भोगऽ पड़लै ओ तऽ हमरा सॅ पैघ अछि! सुनैत छिऐ जे सल्लो दीदी के चौदहम वर्ष मे पीरियड्स शुरू भेल छलैन्हि। तखन हमरा अहि उम्र मे कियेक भेल? पॉच बजे मे दाई मां बरांडाक

किवाड़ खोललैन्हि। मां धीरे सॅ कहलनि कपड़ा तेना फेकीहे जे ककरो नजरि न□ा पड़ै।' सरोज, बुल्ली, नीलू आ छोटका भैया बाहर खेलाइत छल। बुल्ली हमरा देखिते चिढ़ाबकऽ लागल –'ए अछूत कन्या! अछूत....।' लाजे ऑखि झुकि गेल। तऽ सब कैँ बूझल छै?

'दाई मां! हमरा देह सॅ प्रत्येक मास कियेक खून निकलै'छ!'

दाई मां कहलनि –'होइत छै सबके मुदा अहॉ कैँ –जल्दी भऽ गेल।'

'हमरा जल्दी कियेक भेल?'

–आब हम की कहू–दाई माँ उसाँस लैत बजलहि।

–ओइ दिनक दुर्घटनामे पैंटी मे खून लागल छल। आ ओकर दू मासक बादे सॅ मासे–मास खून खसैत अछि। एकर माने हमर कस्टक कारण छथि बड़का भैया। सौंसे शरीर मे जेना आगि लागि गेल। बड़ी काल धरि कनैत रहलहुँ।

–'दाई मां! हरा सँ मां चिढ़ल कियेक रहैत छथि?'

बुच्ची! अहाँ सब तऽ शहर मे छी। गाँव मे तऽ जँ कोनो लड़कीकैँ ब्याह सॅ पहिने मासिकधर्म होइत छै तऽ लोक कहै छै जे माय–बाप कैँ पाप बढ़ैत छै?'

–दाई मां अहीं कहैत छी पीरियड्स कैँ मासिकधर्म! तऽ धर्म मे पाप केना बढ़ै?'

दाई मां कहलनि हम पढ़ल–लिखल न□ा छी लोकक मूँहेँ जे सुनलिऐ से कहलहुँ।'

हमरा किछु बुझबा मे न□ा आयल। बस एतबे बुझलिऐ जे हमरा संग बहुत गलत भेल। शायद एकरे पाप कहैत छै। आ तैँ मां हमरा सॅ एतेक घृणा करैत छथि। हमर कोनो बात नीक न□ा लगैत छैन्हि–हॅसब, बाजब, चलब एतवे न□ा देह बाढ़ि सॅ देह मे लुत्ति लागि जाइत छैन्हि! हम एतेक लम्बा कियेक भऽ रहल छी? हमर रंग खूब उज्जर दूधिया गोराई न□ा अछि। मां बाबूजी दूनू गोटे धप–धप गोर। दूनू भाई आ बहिन सभके रंग खूब साफ हँ बड़की दीदी के गेहुऑ गोराई छैन्हि हमरे जकॉ। न□ा जानि कियेक बाहरी लोक कैँ चाह देबऽ काल हमर हाथ कॉपऽ लगै'छ। तहिना कतबो सतर्क रहैत छी तइओ चलैत छी तऽ धम–धम आवाज होइत छै। हम हरदम ओइ परिक कल्पना करैत रहैत छी जे अपना छड़ी सॅ छूबि कऽ लोककैँ सिंडेला बना दैत छै एक बेर हमरो ओहि छड़ि सॅ छुबि दैत तऽ हमहूँ सिंडेला बनि जाइ। आब हमरा एकदम मन न□ा लगै'छ कछु मे। मोन न□ा पड़ैए जे कखनौ कनैत काल मां दुलार कऽ कोरा मे उठौने हेजी। चाहेँ हम भूख सॅ कनैत होइ या पेटक दर्द सॅ। कतौ खसलौह कतहुँ

छिला गेल या कथु सॅ आंगुर कटि जाय। मां चिचियाकऽ दाई मां के शोर पाड़तीह 'ए चमेलिया माय देखियौ की भेल बेटी कैँ। आब एखन सॅ करैत रहू दवाईबिरौँ। हमरसभटा परिचर्या करब दाईमांक काज छलैन्हि। हमरा बोखार लगैत छल तऽ राति–राति भरि दाई मां सिरमा मे बैसल रहैत छलीह। आ जँ बोखार दू–तीन दिन मे कम न□ा होइत छल तऽ दाई मां– मां लग जा कऽ रिरिआइत छलीह – 'बहुरानी! तनि गांगुली बाबू के बजा दियौ ने। तीन दिन सॅ बुच्चीक बोखार सॅ देह धीपल रहैत छै अहॉके कनिको दया–मया न□ा अछि? एखन सरोज बौआ या नीलू कैँ कनि सर्दी हेतै' तऽ तुरते डाकटर साहेब के बजालेब।'

–'हमरा की कहै छैँ तोहर बेटी तऽ धोड़ा सन मजबूत छौ ठीक भऽ जेतै। डाक्टर गांगुली मंगनी मे न□ा अबैत छथिन फीस देबऽ पड़ैत छै।' दाई मां ऑचर सॅ नोर पोछैत हमर रूम मे आबि सिरमा मे बैस जाइत छलीह वा तरबा सोहरबैत छलीह। आ हुनकर आत्मलाप शुरू भऽ जाइत छल।

–'लगिते न□ा छै जे बहुरानीक ई अपन बेटी छैन्हि, कनिको दया–मायाक लेस न□ा सतौतो माय के एहन पत्थर करेज न□ा देखलहुँ! जहिया सँ मालिक गेलाह हिनकर स्वभाव आर कठोर भऽ गेलैन्हि।'

हम चुपचाप सोचैत रहैत छलहुँ मां कैँ कोना खुश करि। तैँ खेलऽ कूदऽ के वयस मे हम सियान नर्स जकाँ हुनकर सेवा करैत छलिऐन्ह। मुदा धीरे–धीरे हमरा बुझा गेल सभटा व्यर्थ प्रयास अछि। ठुनका हमरा प्रति रत्ती भरि स्नेह ने छैन्हि ने कहियो हेतैन्हि। एक दिन हम अपना ने संगि सॅ फोन पर बतिआइत छलहुँ। मां आबि गेलिह। हाथ सॅ टेलिफोनक चोंगा ल कऽ नीचाँ   मे पटकि देलथिन आ तड़ाक–तड़ाक थापड़ मारलनि –दिन भरि फोन कान मे सटौने रहत।' मां क आवाज सुनि बड़की भाभी दौड़ल एलीह। ठोर पर आंगुर राखि हमरा चुप्प रहबाक इशारा कयलनि। बहुत देर के बाद पता चलल बगलबला मकान सँ एकटा किरायादार जा रहल छै। तैँ मां क पारा गरम छलैन्हि जाबत नव किरायादार न□ा एतै ताबत दूसौ रूपयाक घाटा हेतै। जे होउ हमर कोन गलती क्रोध होइत छैन्हि तऽ हमरे बात कहि मोन शान्त करैत छथि घर मे आर बाल–बाच्चा न□ा छैन्हि? की सरोज–फोन पर न□ा बतिआइत छै– ओकरा कखनो टोकबो करैत छथिन। हमरे एतेक गंजन कियेक करैत छथि की हम हुनकर बेटी न□ा छिऐन्ह?

मोन बड्ड अशान्त छल। दाईमां के पूछलिऐन्ह –दाई मां सच–सच कहू आहँके हमर सप्पत हम अहॉक बेटी छी? ओ हमर मां न□ा छथि?' हे भगवान! ई कोन बात भेलै। अई मे सप्पत देब बला कोन गध! अरे बुच्ची अहूँ हुनके

कोखि सॅ जनमलहुँ। डाक्टर अमृता साक्षी छथि। हमर भेला ताहि दिन तीन बरखक छल। हमरा बड्ड दूध होइत छल। भोला के गाम में छोड़ि कऽ आयल छलहुँ तऽ अपन दूध अहिँ के पीबैत छलहुँ। तऽ हमर संगी कुमकुम कियेक कहलक जे 'ई तोहर अपन मां नि□ा छौ सौतेली मां छौ?'

'सुनू बुच्ची! ओकर सभक बात पर ध्यान नि□ा दिअ। असल मे ओ देखैत छै जे आर सभ बाल-बच्चा कैँ दुलार-मलार करैत छथिन अहाँके कखनौ नीक बातो नि□ा कहै छथि। तैँ हने हेत। मुदा ई बात जँ अहांक मां के कान मे जेतैन्हि तऽ ओ अहिंक कपाड़ फोड़ि देती। कुमकुम कैँ की बिगड़तै।'

-'एखन हम कतऽ छी? ई कोन स्थान छै?' ....ओइ हम तऽ डूयब्रवनिक छी।

आँखि निन्न सॅ एखनो बोझिल लगै'छ। सूर्यक- घाही एखनो छै। हम डेक चेयर पर बैसल बैसले सूति रहल छलहुँ। पैर लग कॉफीक कप ओधरायल छल। एक दिस किताब आ डायरी छल। आई शुक्र छै। एत आयल चारी दिन भऽ गेल। उठि कऽ ठाढ़ भैलहुँ। हमरा ई बालकनि बड्ड नीक लगै'छ। दूर-दूर धारी लहराइत समुद्र। किलाक बुर्ज पर किछु सैलानी ठाढ़ छै जे एतेक दूर सॅ मात्र छोट सॅ आकृति बुझाइछ। हवा कझोंका पहाड़ दिस सॅ आबि कऽ गाल छूबैत अछि शीतलता सॅ मन प्रसन्न भऽ जाइछ।

हमरा खिड़की सॅ बगीचाक देबालक पीठ झलकै'छ आ किछु लतर देखाइत अछि ओइ लतर पर भोर का सूर्य क किरण चमकै छै। लगे मे अंजीरक खूब पैध गाछ छै एकटा अल्हड़ लड़कीक खिलखिलाक हॅसऽ जकाँ हवा पात-पात पर झुमैत बुझाइछ। ई हवा हमर आशान्त मन के प्रफुलित कऽ नव ताजगी दऽ रहल अछि। हमरा खिड़कीक पर्दा पर धूप-छाँह का खेलौड़ भऽ रहल छै।

आइ पूर्ण विश्राम लेब। ओना तन धुर-धुरिकऽ अतीत के खुरचैत रहै'छ। मुदा ओइ-खुरचन मे हमरा भेटँत की ...... की हम अपना आपके वापस कऽ सबक? मन क जख्मी चिथड़ा के टुकड़ाकैँ जोड़ि सबक? हं प्रयास कऽ सकैत छी। आ सेह कऽ रहल छी। नि□ा जानि कियेक बचपन मे हमरा मां बौकी ढ़हलेल, बकलेल नामे धयने छलीह। बाबूजी कहियो एना नि□ा बजैत छलाह ओत सदति काल बजैत छलाह-हमर ई बेटी बहुत तेज अीछ खून पढ़त विदुषी होएत। आ मां हमरा एकदम फूहड़ बुझैत छलीह। हुनकर देल विशेषण एखन धरि अचेतनमन मे सई जकां गंथल अछि। आ तैँ अहू उम्र मे जँ क्यो हमर प्रशंसा करैत अछि तऽ विश्वास नि□ा होइत आछि। कोनो कॉम्पटनीमेंट कैँ हम

ग्रेसफुली नि□ा लऽ पबैत छी। हँसैत काल दांत देखाइत छल त सब भाई-बहिन हमरा दंतुली नाम धयने छल। सबसॅ रंग कम छल तऽ मां क आया राधाक कहब छलै कतबो साबुन लगौती प्रिया तइओ सरोज सन उज्जर नहिए होयतीह। अपना वर्ग मे सबसे वेशी लम्बस छलहुँ तयॅ हमरा सब दिन पछिला बेंच पर बैसऽ पड़ैत छल। कहियो कोनो प्रश्नक जवाब नि□ा दऽ पबैत छलहुँ। घर मे हमरा लेल नव जूता अबैत छल तऽ पहिने सरोजे पहिरैत छल नव ड्रेस आबयतऽ पहिने सरोज पहिरए। साज-श्रृंगार मे हमरा कहियो रूचि नि□ा रहल। स्कूलक बाद जखन कालेज मे प्रवेश कयलहुँ तऽ संगी साथी सब कहलक चेहरा केहन सुरेबगर छै! तऽ हमरा विश्वासे नि□ा भेल। लड़का सब सँ हम सहमल रहैत छलहुँ। दोसर बात ई जे सब हमरा नजरिमे बच्चे छल। पता नि□ा हमर केहन दिमाग छल जे चौबीस-पच्चीस वर्षक हमरा बच्चा सन बुझाइत छल। समय सॅ पहिने हम सियान भऽ गेल छलहुँ!

-रिजेक्ट! रिजेक्ट देम टोटली-हमर मन कहैत छल। हमर सपना बदलि गेल छल आ हम खुब चैन सॅ ओइ सपना के देखैत छलहुँ। खासकऽ सपना ओहने देखैत छलहुँ जकर वास्तव मे अभाव खटकैत- छल। असल मे हमरा अर्न्तमन मे एक असुराक्षित लड़की छल जकरा एखनो अपन बाबूजी रक्षक छलह। हुनकर जीवन शैली सभटा हमरा लेल गौरव क बात छल। हम पुरूषक निर्मम पक्ष नि□ा देखने छलहुँ कियेक तऽ हमर पिता शाखा-प्रशाखा पसारने एकटा वट-वृक्ष छलह। तैँप्रत्येक पुरूष मे हम हुनके छवि तकैत छलहुँ। सुरक्षा हं, सुरक्षाक गप्प तऽ छलैहे जे हमरा बड़का भैया सॅ बचाबए। हमरा ओ राति नि□ा बिसराइत अछि जहिया भाभी जी बड्ड बिमार छलीह आ सरोज सूतैत छलहुँ। ओ राति मे ससारिक हमरा पीठ लग सटि कऽ फुसफुसाकऽ बजैत छलाह प्रिया ए प्रिया आ तकर बाद हम सांस रोकि भगवान के नाम लऽ मने मन विनती करि हमरा बच्चा लिअ भगवान। बहुत देर धरि पीठ पर कोनो कड़ा वस्तुक रगड़बाक अनुभव होमए करेज धक-धक करैत छल। फेर लगैत छल लसलस जकां समीज मे चादर मे। दाई मां भारे मे विछावन झाड़ैत काल चादरि मे दाग देखि हमरा दिस तकैत छलीह तऽ हमरा हुनका दिस आँखि उठा कऽ ताकि नि□ा होइत छल। एकटा पाथर पर जीवित आदमी अपना कैँ धसैत छल। सब दिन एहन नि□ा होइत छलै मुदा तीन चारि मास मे कतेको बेर एहन भेलै।

हम राति-राति भरि डरैँ सूति नि□ा पबैत छलहुँ! बी.ए. फाइनल के परीक्षा छल आ मोन एकाग्र नि□ा भऽ रहल छल। कॉलेज सॅ घर घुर बाक इच्छा नि□ा होइत छल। सूरज डूबिते एकटा दहशत घेर लैत छल। पता नि□ा आइ भैया

कतऽ सूतता जॅ फेर हमरे रूम मे.....।'

एक राति सूतल छलहुँ डरेँ निन्न तऽ नहिए भेल छल कि भैया जोर सॅ बिठुआ कटलनि- हम उठिकऽ भगलहुँ बरांडा दिस दाई मांक विछावन नीक लागल अपन पलंग केर डनलप सॅ। भोर मे उठलहुँ तऽ दाई मां कहलनि- बुच्ची आब हम चुप्प नि□ा रहब। आब बहुरानी के अवएसे कहबैन्हि।'

-नि□ा दाई मां! अहॉ कैँ हमर शपथ। दाई मां। अहाँ ककरो किछ नि□ा कहबै। ई हमर कर्मक दोष अछि। आब हम कुमारी छी कहाँ? दुःख आ क्षोभ सॅ दाई मां करेज पीटऽ लगलीह। अइ- बड़का घरक दाई मां बड़का घरक बेटीक दुख सॅ दुखी भऽ बस एतबे बजलीह- केहन कुकर्मी छै अपना माय बहिन के नि□ा छोड़लक से कतौ मनुष होइ ई तऽ साक्षात राक्षस छै एहन देह मे आगि उठलै तऽ कोठा पर जाइत।'

मुदा आब हम बजबै। बाजऽ पड़त। मुदा कहबै ककरा? आर ककरा कहबै ऊ राक्षस आय एतै तऽ कहबै। की कहबै? हमरा नि□ा धू। निर्लज मानि जायत। हमरे उनटे गरदनि दवा देत। अहि घर मे सरोज छै ओकरा कहाँ धुबऐ छै? हम एमरे शोषण कियेक करैत अहि? मां ठीके कहैत छथि- हम बौकी छी। बेवकूफ छी, अप रोजक छी .....।'

राति मे साढ़े नौ बजे भैया बरांडा पर ठाढ़ भेल गिरेट पीबैत छलाह आर क्यो नि□ा छलै। हम शान्ति पूर्वक ओइठाम जा कऽ ठाढ़ भेलहुँ।

-'भैया।'

हमरा दिंस तकैत बजलाह 'ओह, अहाँ।'

'हं, हम छी। हम एखने ऊपर सॅ कुदिक आत्महत्या करऽ जाइत छी... .' एतबा बाजि हम एकटा पैर रेलिंग पर रखलहुँ।

-'शट अप! यू स्टूपिड गर्ल.....।' आ ओ हमर हाथ पकड़ि लेलैन्हि।

हम लोहछि कऽ बजलहुँ- हमर हाथ छोडू।'

-'पहिने प्रामिस करू अहां कोनो एहन काज नि□ा करब।'

'तऽ पहिने अहीं प्रॉमिस करू जे....।'

हां, प्रॉमिस बाबूजीक शपथ छल।'

महा झंझावात के बाद क शान्ति छल।

आब ओ दोबरा कहियो नि□ा छुलैन्हि। मुदा हमरा अपने सॅ घृणा भऽ गेल। हं, ओ हमर उपेक्षा करऽ लगलाइ फीस लेल पाइ नि□ा दैत छलाह कोनो छोट-छीन जरूरतो लेल तरसैत छलहुँ। खैर आब घर सुरक्षित-बुझाइत छल।

हमरा मोन नि□ा पड़ैए हमर दादी केहन छलीह ने कखनौ नानीक

मुँहकान याद अछि। हं, नानीक घरक स्मरण अछि बड़ा बाजार मे हैरिसन रोड मे। हमसब साल मे मात्र चारि बेर नानी ओतऽ जाइत छलहुँ। साओनक तीज मे। होलीक गनगौर मे राखी मे दिवालीक दोसर दिन। गनगौरक सिंधारा मे नानी ग्यारह रूपया दैत छलीह। भोजन मे तिवारी दुकानक समोसा, उजरा रसगुल्ला कचौड़ी, आलूक रसदार, भरूआ परोर आ छोहराक - चटनी। दिवाली मे दिलरवुश बरफी, दही बड़ा, आलू मटर के तरकारी, कोबीक भुजिया।

मां कोबिक फूल कहलाकपर खौंझाइत छलीह आ नानी तऽ किछु बजने चट मां के शिकायत करैत छलीह 'कस्तुरी! तोहर बेटी बड्ड तर्कदैत छौ? हम बिनु अपरोध नहुँ-नहुँ छोटकी नानीक घर मे जा कऽ नुका जाइत छलहुँ। हमरा छोटकी नानी खूब मानैत छलीह। मुदा मां आ यमुना मौसी छोटकी नानी कैँ देखऽ नि□ा चाहैत छलीह। नि□ा जानि नाना दूटा ब्याह कयने छलाह की कोनो ओ रहैत छलीह। हं, मामा दून्नू नानी कैँ एक रंग आदर करैत छलथिन। कोनो भेदभाव नि□ा। मामा अपनो दूटा ब्याह कयने छलाह। छोटकी मामी मामा सॅ तीस वर्षक छोट छलीह। छोटकी मामी के कीनकऽ आनल गेल छलैन्हि। दुबर-पातरि खूब सुन्दर फैशनवाली। मुदा बड़की मामी सन सम्मान नि□ा छलैन्हि परिवार मे। बहुत दिनक बाद एक दिन मामी हमरा मां कैँ कहैत छलथिन -अहांक भाई हमरा कियेक ब्याहिकऽ अनलनि जखन परिवार मे क्यो हमरा मनुष बुझिते नि□ा अछि! खालि बच्चा जनमाबऽ लेल ब्याह भेल हमर! बच्चो कहां हमरा अपन मां बुझैत अछि। कैलाश त बच्चे सॅ बड़कीए मां लग रहै'छ, हुनके हाथे खायत हुनके लग सूतत। पैध भेल तऽहमरा संग कतहु जयबा मे लाज लगैत छै। कहैए अहाँ तऽ हमर भाभी सन लगैत छी।

कुल मिला कऽ नेनपन मे हमरा ककरो प्यार-नि□ा भैँटल। एकहि खूटा छलै गड़ल एकेठाम चाहे दिन होउ या राति, जाड़क मौसम गर्मीक मौसम होउ या बरसातक, बिना कोना लोभ-लाभ के दाई मां दुलार करैत छलीह हमर जरूरत क ध्यान रखैत-छलीह। मोन नि□ा पड़ैत अछि जे कहियो क्यो हमरा लेल खेलौना किनकऽ अनने होमय। हे दाई मां सब मंगल कैँ काली मंदीर जाइत छलीह ओ हमरा लेल पेड़ा, आ कोनो ने कोनो वस्तु अनैत दलीह। हम दाई मां के अबिते हुनका पकड़िकऽ पूछऽ लगैत छलिऐन्ह- दाई मां देखाउ ने हमरा लेल की अनलहुँ अछि। दाई मां पेड़ा रखने छी आ हमरा लेल चूड़ी अनलहुँ की नि□ा? फीता कहने छलहु आनि देन। हं, दाई मां प्रसाद ककरो नि□ा देबइ एकोटा पेड़ा नि□ा देब सरोज कैँ।

-'नि□ा, बुच्ची, हम ककरो नि□ा देबइ।'

ई बात-चित्त होइते रहैत छल ताबत सरोज आबि जाइत छल। आ बुल्ली बिना पूछने मतने मिठाईक दोना पर झपटा मारैत छल। आ सरोज पेड़ा खाइओ लैत छल आ मां लग जा कऽ चुगलिओ करैत छल। बस मां झनकैत बाजऽ लगैत छलीह- 'ए चमेलिया माय अहाँ बजारक सड़ल-गलल मिठाई खोबैत-छिऐ बच्चा सभ के। आ मोन खराब हेतै तऽ?' हं, हं, काली मायक प्रसाद सँ बच्चा बिमार पड़ि जेतई?

हम सरोज दिस तकैत कहै छलिऐ- 'खचड़ी कही के।' दाई मां डँटैत बजैत छलीह- 'एक बुच्ची एहन गारि कतऽ सिखलहु? बहुत खराब बात छै नि□ा बाजि एहन बात।'

-'तऽ कहू अहाँ देलिऐ किये सरोज कँे प्रसाद।'

-'अच्छा आब नि□ा देबै। ऊ हो त बेटिए छै।'

नि□ा, दाई मां अहाँक बेटी हम छी आर केयो नि□ा।

दाई मां क गरदनि पकड़िक कोरा मे बैसिकऽ कहैत छलिऐ- -दाई हमरा तऽ सब कहैए' झल्लो माई, कल्लोमाई, आयी आयी, दाई मां की बेटी आयी।' हमरा घर मे तुकबन्दी करबा मे छोटका भैया उस्ताद छलाह। भैया, दीदी सब हमरा खिसियबैत छल।

इ तऽ दाई भऽ गेलै दाई मां क संग खाइत अछि। ठीके हम कतबो खा-पी लैत छलहुँ तइओ जाबत दाई मांक संग नि□ा खाइत छलहुँ ताबत मोन नि□ा भरैत छल। नौकर-चाकर लेल फटक सरसोक तेल मे लहसून-पिआज बला तरकारी आ मसूरिक दालि बनैत छलै। दाई मां जखन खाइत छल पहिने हमरा भात-दालि सानि कऽ खुआ दैत छल तकर बाद अपने खाइत छल। भरि घरक लोक खा लैत छलै तखन दाई नौकर बरांडा पर बैसकऽ खाइत छलै। कहियो-कऽ दाई मांक थारी मे तरकारी नि□ा रहैत छलै भात-दालि आ हरियर मिरचाई पिआज संग खाइत छल। हम पूछिऐ- 'दाई मां तरकारी नि□ा छै?'

तऽ कहैत छल- 'हरिया सब हँसोथि लेलकै।'

-अहाँ रोकालिऐ कियेक नहि?'

-'की हेतै' आइ हम बिना तरकारिए के खा लेब।'

-'अच्छा, आइ आबऽ दियौन्ह बाबूजी कँे, हम कहि देबैन्हि।'

-'नि□ा बुच्ची! एकदम नि□ा। ई छोट छीन बात पुरुष कँे कान मे नि□ा दी।'

ई दाई मांक ट्रेनिंगक कमाल छलै जे हमरा जीवन मे क्षुद्र लोभ, लाभ दिस ध्यान नि□ा गेल। के हमरा की देलक आ हमरा सँ बदला मे की लेलक

तकर हिसाब नि□ा कयलहुँ। दाई मां-कहियो लेन-देन के हिसाब कहाँ कयलनि। दाई-मां जहिया गाम सँ अबैत छलहि तऽ हुनका पोठरी मे रंग-बिरंगक खेलौना, जरीक चोटी, जौ के सतुआ आर कतेक वस्तु हमरा लेल अनैत छलीह। माँ जखन देखैत छलीह कपड़ाक बनल गुड़िया माटिक सुग्गा मैना तऽ हमरा पर हँसैत छलीह। ऊँट सन भऽ गेलीह आ खेलतीह गुड़िया सँ। हँ, दस वर्षक उम्र में हम औरत बनि गेलहुँ। तथापि कोनो कोन मे एखनहु नेनपन छल हम गुड़िया लऽ कऽ खेलाइत छलहुँ दाई मांक आनल जरीवला चोटि लगाकऽ खूब प्रसन्न होइत छलहुँ। आ दाई मां जे सतुआ। अनैत छलीह से तऽ ककरो पता लगिते नि□ा छलै। दाई मां चुपचाप नुकाकऽ खुआ दैत छलीह।

-हम कहैत छलिए -'दाई आर सत्तु दिअ ने।' तऽ कहैत छलीह- 'नि□ा बुच्ची एके दिन वेशी खा लेब तऽ खराबी करत, काल्हि फेर देब।' दाई मां क बेटी चमेलिया हमरे ओत आबि गेल छल मुदा ओ अलग रूम मे रहैत छल हमरा-सब संग नि□ा। ओकर बोखार उतरि गेल छलै। मुदा हमरा मां के शक होइत छलैन्हि कोनो-छुतहा रोग छै तैँ हमरा सबके ओकरा लग नि□ा जाय दैत छलीह। मुदा हम कहां मानऽ वाली छलहुँ। दाई मां हमरे कारण घर नि□ा जाइत छलीह तऽ चमेलिया कँे अहिठाम लऽ अयलीह। तैँ हम दाई मांक संग चमेलियाक कोठरी मे- जाइत छलहुँ। मां-बेटीक बात सुनैत छलहुँ। वेशी काल चमेलिया मां के देखि कनैते रहैत छल। हमरा ओकर कानब नि□ा नीक लागय। हं, चमेलिया कपड़ाक खूब सुन्दर गुड़िया बनबैत छल। पुरान उज्जर कपड़ा लऽक मूँह-बनबैत छल फेर ओइ मे एइया भरैत छल।

-कारी सूत सँ आँखि बनाबए लाल सूत सँ डोर आ बिन्दी बनबैत छल। मुँह के धड़ बनाबय रूई ठुसि ठुसि कऽ छाती बनाबय पैर बनबय तऽ दाई मां के देखाकऽ पूछैत छलै- 'देख तऽ माय ठीक बनल की नि□ा?'

जखन कखनौ चमेलिया जोर सँ हँसैत छलै तऽ दाई मां डँटैत छलथिन- 'एना जोर-जोर सँ-कियेक हँसैत छैँ। आराम करऽ नि□ा त फेर बिमार पड़बे तऽ हम कतौके नि□ा रहब!' हम अपन गुड़िया लऽ कऽ नीचाँ खेलऽ गेलहुँ। हमरा देखलक गुड़िया नेने तऽ सराज अपन वॉकी-टॉकी विलायती गुड़िया लऽ कऽ आयल। नीलू अपन बेबी डॉल अनलक जकरा हाथ मे एकटा शीशी छलै। नीलूक गुड़िया जखन शीशी सँ पानि पीबैत छलै तऽ पेशाब करै आ सब हँसैत छलै। ई दूनू गुड़िया बाबूजीक मित्र इतालवी अनने छलै। ओ देखने छल हमरा आ सरोज कँे मुदा जहिया ओ-गुड़िया लऽ कऽ आयल तहिया नीलू नानी घर सँ आबि गेल छल। तऽ मां बेबी डॉल नीलू कँे देलथिन आ वॉकी-टॉकी सरोज

झपटि लेलकै। मां कहियो देलथिन दूनू बहिन मिल कऽ खेला तखन हम दाई मां के कोरा मे बैसकऽ बड्ड कनलहुँ। खैर, आब हमरा नव-नव गुड़िया बना कऽ देबऽ कहलक- 'हम कालीमाय के किरिया खा कऽ कहैत छी- 'अहाँ के छोड़ि हम ककरो गुड़िया बना कऽ नि□ा देबै।'

एक दिन चमेलियाक बनायल गुड़िया लऽ कऽ हम दाई मांक संग हुनकर संगी खेदरबाक माय के घर गेलहुँ। हमर गुड़िया देख कऽ खेदरबा बड्ड खुश भेल। ओ हमरा कहलक हम दूनू गोटे गुड़ियाक ब्याह करब। आब कहबै चमेलिया के कनि नम्हर गुड़िया बनाबए आ ओकरा घाघरा पहिरा देतै।

-हमरा मोन पड़ल सल्लो दीदी ब्याह से घाघरा पहिरने छलीह। आ मां क भारी भरकम घाघरा त चर्चे नि□ा। ओइ मे असली मोती टांकल छलै। मां के बड़का-बड़का बक्सा मे कतेको रंग-बिरंगक पोशाक छलैन्हि। भारी-भरकम जरदोजीक काज कयल घाघरा, ओढ़नी असली जरीक काज कयल बनारसी साड़ी। मुदा मां कें भारी साड़ी नि□ा सोहाइत छलैन्हि। कहियोकाल अपन अतीतक चिट्ठा लऽ कऽ सल्लो दीदी संग बतिआइत छलीह आरे ओ जमाना छलै भारी-भरकम घाघरा पहिरू, बोग्ला बान्हू बड़की टाक ओढ़नी ओढ़ू। हाथ मे चूड़ा, पैर मे पायल। हमर दादरी तेहन वेष बना दैत छलीह जे की कहियौ। आ भोरे चारिए बजे उठि कऽ दादी आ तोहर काकी जॉत पर बैस जाइत छलथुन ऑटा पीसऽ। जॉत पिसकाल जॅतसार गीतो गाबथि।

नानी कहियो घाघरा नि□ा पहिरैत छलीह। मां क नैहर मे सब रंगरेजक रांगल ढाकाक महीन मलमल क सारी कढ़ाई कयल पहिरैत छलैन्हि। लम्बा कुरता जकॉ ब्लाउज। तैं मां के घाघरा फूहड़ ड्रेस बुझाइत छलैन्हि। हं, कड़की मे मां अपना एक-एक घाघरा सॅ दस-दस किलो चॉदी-निकालि कऽ ओकर थारी, बाटी गिलास बनबाकऽ बड़की दीदीक बेटीक ब्याह मे पठौने छलथिन।

हं, तऽ हम चमेलिया के कहलिऐ- एकटा खूब सुन्दर आ नमहर गुड़िया बना दे ओकरा घाघरा पहिरा दिहे। ठारह भऽ सकय से ध्यान रखिह नि□ा तऽ 'वर' गला मे वरमाला कोना पहिरेतै।'

चमेलिया के ई सुनि कऽ छगुन्ता भऽ गेलै। ढारह होमऽ वला गुड़िया कोना बनाओत। ओना सरोज आ नीलूक गुड़िया तऽ चलितो छै मुदा ओ विलायती गुड़िया छै।

-तऽ की देसी गुड़िया ब्याह मे वरमाल काल ठाढ़ नि□ा भऽ सकै'छ? दुनियाँ भरिके उत्कंठा हमरा आवाज मे छल। फेर हम चमेलिया कें कहलिऐ- 'सुनै छें हम अपन गुड़ियाक ब्याह खेदरबाक गुड्डा सॅ पक्का कयलहुँ अछि

एहि शिवराति कें ब्याह हेतै।'

चमेलिया मूँह मे ऑचर धऽ हँसैत बाजल- ऊ खेदरबा बहु कें ब्याह मे चढ़ायत की? ओकरा त एकटा चौअन्नी टा नि□ा छै।'

-'हं चमेलिया, इ त हम सोचबे नि□ा कयलहुँ! आब कोन उपाय करू? एक बेर हं, कहिकऽ आब नि□ा कोना कहबै?'

'अच्छा छोड़ऽ जेहन गुड़ियाक भाग।' -'तऽ गुड़िया बनि जयतै ने?'

'हँ, अइ शर्त पर जे अहां बेर-बेर ऊपर नि□ा आउ हमरा समय भेंटत त नीक गुड़िया बनत।'

-'किये चमेलिया हम कोनो तोरा तंग करैत छिऔ?'

-'नि□ा से बात नि□ा छै। असल मे हमरा धूत वला बिमारी अछि जॅ अहाँ पटि जायत तऽ अहूँ बिमार पड़ि जायब।'

-'धूतहा रोग छौ तोरा?'

फेर मोन पड़ल सत्ते कहैत अछि। राधा मां के कहैत छलैन्हि चमेलियाक बर्त्तन अलग रखबाउ। ई सुनि हमार दाई मां बड़ी काल धरि कनैत रहलीह।

चमेलिया सत्ते गुड़िया बना देलक। जरीक घाघरा चोली पहिरने घोघ तनने गुड़िया ठाढ़ छल। बड्ड सुन्दर लगैत छल देखऽ मे गुड़िया। पातर डॉर- ताहि मे मोतीक डरकस। अपूर्व! हम चमेलियाक पकड़ि हुलसैत कहलिऐ- 'सत्ते चमेलिया तू- बड्ड गुणमंती छें।'

-'चमेलिया तोरा कतेक बेर कहलियौ बात किये ने बुझैत छें? फेर दाई मां हमरा दिस तकैत बजलीह- बुच्ची चमेलियाक संग एना सटल रह छी आ बहुरानीक कान मे ई बात पड़तैन्हि तऽ हमरा कतेक गंज्जन करतीह?

-दाई मां हम जाइत छी- खेदरबा के कहऽ ओ अपन गुड्डा के लऽ एतै।'

हम, चमेलिया आ दाई मां छतवला कोठरी मे बैसल बतिआइत छलहुँ दोपहर छलै तीन बजैत हेतै।

'दाई मां हम खेदरबा के खाय लेल की देबै?' 'बुच्ची, सतुआ छै ने।'

हम दाई मांक हाथ धयने सीढ़ी सँ उतरलहुँ। सड़क पार क खेदरबाक माय लग पहुँचलहुँ। दाई मां ओकरा संग बतिआय लागल। खेदरबा गुल्ली-डंडा खेलाइत छलै' हम शोर पाड़लिऐ।

खेदरबा दौड़ल आयल। हम पूछलिऐ 'तू अपना-गुड्डाक ब्याह हमरा गुड़िया से करबें?' खेदरबा कें एकटा विलायती प्लास्टिक गुड्डा छलै कता कूड़ा मे भैंटल छलै। खेदरबा खुश भऽ बाजल, हं हम अपना गुड्डाक ब्याह

करब। कहकहिया?'

'एखने।' दाई मां चलू।

–'ए बुच्ची कनि सांस लेबऽ दिअ।'

दाई मां फेर बतियान मे लीन भऽ गेलीह। खेदरबाक मां हुनका हाथ मे हुक्का धरा देलकैन्हि। हम खेदरबा के कहलिऐ– 'चल हमरा गुड़िया के देखऽ।'

खेदरबा हमरा संग आयल। पैर दाबि नहुँ–नहुँ सीढ़ी–पर चढ़लहुँ। गुड़िया ओहिना सजल–धजल ठाढ़ छल खेदरबा मुग्ध भऽ ओकरा देखते रहि गेल।

'बहुत सुन्दर दै गुड़िया एकरा हम बढ़ियॉ सॅ रखबै' खेदरबा बाजल। ताबत आबि गेल बुल्ली। बुल्ली के देखते हम गुड़िया के अपना कोरा मे नुका लेलहुँ।

–ओ जिद् करऽ लागल देखा की छै हमरा देखा दे...बुल्ली के छीनाझपटी करैत देख चमेलिया कहलक प्रिया, देखा दिऔ ने बराती लेल तऽ लोक चाहीने। ताबत सरोज आ नीलू दूने पहुँचल।

–'केहन सुन्दर गुड़िया छै अरे ई त ठाढ़ भऽ जाइ छै वाह!' कहैत गुड़ियाक घाघरा उठा कऽ देखऽ लागल।

हम चिचिएलहुँ छोड़ हमरा गुड़िया के तू सभ केहन बेशरम छे?'

मुदा हमर बात के सुनैत। नीलू चहकल–देखही–सरोज ई गुड़ियाक बांसक खपच्चीक पैर बनल छै। तीनू मिल कऽ गुड़िया लऽ हँसैत नारा लगाबऽ लागल प्रियाक गुड़िया क जय, जय।

हम कनैत नीचॉ मे ओंघराए लगलहुँ। खेदरबा भागि गेल छल। सरोज, नीलू आ बुल्लीक संग–संग अइ जुलूस मे सांझिकऽ खेलऽ वला आर धिया–पुता सामिल भऽ गेलै। सब मिलकऽ गुड़ियाक तहस–नहस करऽ लागल बांसक खपची निकालि देलकै आ जोर जोर सॅ नारा लगौलक प्रियाक बच्ची, बॉसक खपच्ची...तकरबाद घरक पैघ लोक ताना मारनाइ शुरू कयल। दीदी मां के कहलथिन : मां प्रियाक ब्याह खेदरबा सॅ कऽ दही भरि दिन गोइठा ठोकैत रहतै।'

शायद ई गप्प बाबूजी सुनि गेलथिन। हरिया के पूछलथिन त ओ सभटा वृतांत जतबा ओ जनैत छल कहल कैन्हि। बाबूजीक फरमान जारी भेल– 'हरिया चमेलियाक मां के कहि दही प्रिया के अपना संग जतऽ ततऽ नि□ा लऽ जाई। ओइ राति ढाई मां आ हम दूनू बड्ड कनलहुँ। हम हुनकर नोर पोछैत छलहुँ आ ओ हमर। हुचुकैत दाई मां बजलहि– 'बुच्ची गरीबी सब से बड़का अभिशाप छै।' हं, दाई मां, आब हम कहिओ गुड़ियाक ब्याहक चर्चा नि□ा करब। बहुत

दिन धरि छोटका भैया आ दीदी सब हमरा खेदरबाक नामलऽ खौंझबैत छल। खेदरबा गोइठा ठोकऽ बाली गरीब महिलाक बेटा छलै आ हम महल मे रहऽ बाली बड़का घरक बेटी! मुदा बड़का घर क बेट रहितहुँ हमरा लग कहाँ विलायती वॉकी–टॉकी गुड़िया छल। ककरा हमरा सुधि छलै जे हमरा लेल खेलौना किनैत! हमरा तऽ दाई मां क– गेठरी मे भेँटैत छल खेलौना। चमेलिया बनाकऽ दैत छल गुड़िया। ओकर बाद तऽ हम गुड़िया खेलनाईए बिसरी गेलहुँ। हम जखन सरोज अ नीलूक गुड़िया देखैत छलहुँ तखन मोन कानि जाए। दाई मां फेर कहियो हमरा खेदरबाक घर नि□ा लऽ गेलीह। दाई मां हमर दुःख बुझैत छलीह मुदा ओ की कऽ सकैत छलीह। किछु दिनक बाद सॅ बाबूजी विदा भऽ गेलाह।

एकटा एहन समय आयल जहिया हमरा दाई मां आ अपन स्तरक बीचक दूरीक पता चलल। इ हो–बुझबा मे आयल जे दाई मां आ हमरा मां क संस्कार आ तौर तरीका मे जमीन आसमानक फर्क छै। हमर मनक बहुत प्रश्न अनुत्तरित छल ककरो लग जकर उत्तर नि□ा छलै। आब हम पैघ भऽ गेल छलहुँ बी.ए. पास भऽ गेलहुँ। दाई मां के ऑखि मे मोतिया बिंद पाकि गेलैन्हि, डॉर झुकि गेलैन्हि। आब कोनो काज कयल–नि□ा होइत छलैन्हि। कोनो ने कोनो दाई नौकर हुनका खिसियबैत रहैत छैन्हि आ ओ गारि पढ़ैत रहै छथिन। हुनका बैसऽ उठऽ मे कष्ट छलेन्हि केहियो ठेहुना में दर्द होइत छलैन्हि कहियो डॉर मे दर्द। एक–एक कऽ सभटा दॉत टूटि गेल छलैन्हि। आब दाई मे दालि मे रोटी गुरिकऽ खाइत छलीह। मां बिना किछु कहने–सुनने अपना काजक वास्ते कृष्णाकेँ राखि लेने छलीह। कृष्णा एखन जवान छल चारि लोकक काज एसगर करऽ वाली खूब रिष्ट पुष्ट।

कोनो ने कोनो बात पर मां केँ दाई मां सँ रोज झगड़ा होइत छौन्हि। दाई मां हमरा कॉलेज सॅ घुरैत काल–नीचॉ गेट पर बैसल रहैत छथि। हुनका अगल–बगल दरबान, ड्राइबर, बगल मे काज करऽ बाली दाई सभक जमघट लागतल रहैत छै। दाई माँ बिड़ी पीबैत बड़बड़ाइत रहैत छथि–अरे जाबत मालिक छलाह ताबत गरीब–गुरबाक ख्याल रखैत छलाह ओ मनुष्य नहि देवात छलाह। हुनकर परतर के करत। आब ने ओ राजा ने ओ कराह।

हमरा देखिलेते हुलसिकऽ कहैत छलीह। अरे, आबि गेल हमर बेटी। हिनके मुँह देखिकऽ एतऽ छी नजि तऽ एत कियेक रहितहुँ। हम अनायास

अपना के अपराधी बुझैत छलहुँ। दाई मांक भविष्य एकदम अन्धकारमय लगैत छल। शायद आई फेर मां दाईमां मे कहासुनी भेल हेतैन्हि। आब हम नेना नञि छी मां क दर्द बुक्षऽ लागलहुँ आछि। जेहन छथि जे छथि हमर जननी। जँ मां हिम्मतवाली नञि रहितथि तऽ काका सभत तऽ कहिया ने घर के बर्बाद कयने रहताह। एक दिन संवेदना छल निःस्वार्थ स्नेह दोसर हिस परिवारक प्रतिष्ठा उवा अन-बान शानक रक्षा लेल मां संघर्षशील छलीह। मां के कोन सुख भेटँलैन्हि? एक-एक पाइ जोड़िकऽ परिवार चलौलनि चारि-चारिटा बेटीक ब्याह कयलनि। की हुनका नञि बुझल छलैन्हि भैयाक चालि-चलन, हुनकर रईसी? ओ सब जनैत छलथिन मुदा विवश छलीह-किछु कऽ नञि सकैत छलीह। सदतिकाल बजैत छलीह आमदनि थोड़ खरचा अनन्त। एकबेर हम कहने छलिऐन्ह- मां, एतेक नौकर चाकर के रखबाक कोन जरूरी छै-समटा पाई तऽ एकरे सभ पर बुका जाइत छै ....

तऽ कहने छलीह-सबसे पहिने तू अपना दाई मां के गाँवा पठा। अपने जे खाय- पीबए तहि लेल कोनो मनाहीनञि छै मुदा भोज-भंडारा करत से नञि चलऽ बाला छै। रोज एकरा गाम से क्यों ने क्यों अबिते रहैत छै। एखने एक डेकची में भरिकऽ नीबूक शर्बत बना कऽ नेनेजाइत छल टोकलिऐ जे एतेक शर्बत की हैतै तऽ डेगची पटकि कऽ भागि गेल। की सभ ने बाजल .... हमर मेहमान आयत तऽ ओकर खाय-पीअऽ लेल नञि देबई ?

भाभीजी कहलनि-'बौआ, आई दुपहरे सें नीचे में बैसल अछि जखन से मां टोकलथिन। पूरा मोहल्लाक दाई-नौकर घेरने रहै छै ओ समक लीडर अछि। ओकरा अहीं बजा कऽ आनु'

सब जनै छै-हमरे बजौने ओ ऊपर आयत। आई दाई मांक मन बउ्ड व्यथित छलै। बड़ी कालधरि कनैत रहलीह। आब हमरा हुनकर कानब -रवीजव बर्दास्त नञि होइत अछि। घर में अेहिना हरदम तनाव बनल रहैत छै। बड़की भाभी बहुत दिन से बीमार छथिन। मां पानि जकॉ पाई बहा रहल छथि काल्हि क्यों कहैनञि जे ठीक से इलाज नञि भेलै। भाभी सात बरसक बेटाक निहारैत डाक्टर से पूछलथिन 'हम स्वस्थ भऽ सकै छी डाक्टर साहेब? मां हुनकर बात सुनि अपना रूम मे जा कऽ कानऽ लगलीह।

बाबूजी गेलाक बाद अब कनि रास्ता पर ससरल छल परिवारक गाड़ी। सोचैत छलीह मां अब कहुना सरोजक ब्याह कऽ लेब। आ अब ई आफत बेटाक घर उजड़ि रहल छैन्हि। हम ओई राति दाई मां से बात कयलहुँ। 'ए बुच्ची हम तऽ आहींक मुँह देखिकऽ छी-अइ घर मे। हम तऽ कहिया ने चलि

गेल रहितहुँ अपना गाम। अइबेर तऽ हमरा छेदी कहलक तोहर बेटा आब कमाइत छौ। मुदा बुच्ची अहाँ तऽ हमर जिम्मेदारी छी। अहांक बयाह भऽ जाए तऽ हम बूक्षब गंगा नहा लेलहुँ।

दाई मां ऊहाँ कान खोलिकऽ सुनि लिअ-'हम एखन ब्याह नाञि करब। आ अहाँके आब काज कयल नञि होइछ। आब क्यों अहां संग नीक बात व्यवहार नञि करैछ।'

'मुदा हम ऊहाँके छेड़िकऽ कोना जाउ? राक्षस ....?'

'दाई मां अहाँ चिन्ता नञि करू। अब भैया हमरा संग किछ नञि कऽ सकैछ।'

'से कोना बुक्षैत छिऐ........?'

'हम कड़ा चेतावानी दऽ देलिऐ।'

'अरे आब धमकी देला सँ की। औरत के जिनगी जँ एकबेर बरबाह भेल तऽ सब खतम।'

'दाई मां अहाँ कोन युग के बात कऽ रहल छी?'

'तऽ अइ युग में की होइ छै अहांक अंग्रजीक किताब मे की लिखल अछि।'

'दाई मां हम अहाँ के कोना बुक्षाउ। अच ई कइने जे अहाँ नोकरी नञि करितहुँ तऽ बाल- बचाक कोन हाल होइत सबसे पहिने औरत के अपना पैर पर ठाढ़ होमऽ चाही ' स्वावलखन ब्याह से बेशी जरूरी छै।'

अरे हम कोनो खुशी से नौकरी कयलहुँ। आई अहाँक बाबूजी रहितथि तऽ कहिया ने अहांक ब्याह मेल रहैत। एखन धरि तऽ हम नातिक मुँह देखने रहितहुँ!'

दाई मां के समक्षेनाई असम्भव छल। बहस से कोना फायदा नाञि तखन हम एकटा काज कयजहुँ अपना पाकेट मनी से किछु टका हुनका दऽ हैत छलिऐन्हि ई कहि जे अहाँक मेहमान आबय या धरक लोक तऽ बाजार सँ मंगाकऽ नास्ता भोजन करा देबई। ककरोसे बकझक नाञि करब। परीक्षाक बाद भेल गर्मी छुट्टी। हमरा छुट्टीक समय हरदम बोझिल लगैत छल। एक दिनक छुट्टी रवियों के तनाव बढ़ि जाइत अछि। छुट्टीक दिन मांक सखती बढ़ि जाइत छैन्हि।

दीदी के हुकूम सुना दैत छथिन-टूनू धौड़ी के काज धंधा सिखा।'

ई गप्प स्कूले दिन से सुनि रहल छी। काज-धंधाक मतलब चाइर दालि बीछनाई राई जमाइन, जोर मरीच धनि सभके साफ कऽ सुखाउ। मां आराम

कुर्सी पर बैसैत छलीह आ हुनका सोझा में हम, सरोज, दूनू भाभी आ दीदी काज करैत छलहुँ।

मां कोन माटिक बनल छलीह से नञि जानि। पता नञि कोन शाप-पाप के ढ़ो रहल छलीह। आइ एतेक समय बीतलो पर सचाई सँ ऑखि मुनब कठिन लगै'छ। असल मे हम मां क स्वरचित नरक केँ ह कहियो स्वीकारि नञि पयलहुँ। एकबेर जाड़ मे बहुत सर्दी पड़ल छलै मां एक सौ कम्बल मंगा कऽ गरीब के बॅटलनि आ हुकूम भेल' हम सभ बाजि-कस्तुरी देवीक जय।' 'बाज जोर सँ बाज। ए लछमनियॉ, हरिया, सीताराम एकरा सभकेँ कहियै हम जगदम्बाक अवतार छी। हमर बाल-बच्चा हमर पूजा करैत अछि।'

मन मे भेल कहबाक जे मां अहां ई नाटक छोड़ू प्लीज देवि जुनि बनू। साधारण लोक जकॉ व्यवहार करू। कहियो काल कतहु जाउ घूमू फिरू।' मुदा से कहाँ बाजि भेल। एक-एक कऽ मानवीय प्यार-व्यवहारक समस्त द्वार ओ बंद कऽ लेलैन्हि। ओ कखनौ नीचाँ मे नञि बैसैत छलीह। हुनक कहब छलैन्हि डाक्टर नीक सॅ हार्नियॉक आपरेशन नञि कयलक पैर क एकटा नस कटि गेल अछि। हलांकि डा० ए० के० सेन अइ बात केँ नञि स्वीकारैत छलाह। ओ कतहु जाइतो छलीह तऽ गाड़ीक डिक्की मे हुनकर कुर्सी जाइत छलैन्हि। दू टा नौकर हुनका बड़का पीढ़ि पर बैसाकऽ उतारैत छलैन्ह। एकटा आया आ दूनू भाभी मे क्यो एकटा संग जाइत छलथिन। ओना तऽ ओ कहियो कतहु जाइते नञि छलीह कोनोकाज परोजन मे नैहर या दीदीक सासुर काका-काकीक घर तऽ एनाइ जेनाइ बंदे भऽ गेलै छल। हं ज कोनो घर मे पेरशानी होइ या क्यो बीमार पड़ैत छलैतऽ हुनका बड़ड फुर्ती भऽ जाइत छलैन्हि।

अपना देहोक होश नञि रहैत छैन्हि। मुदा सब भऽ गेलाक बाद अपना ढगयबाक हताश भाव मन मस्तिष्क केँ जकड़ि लैत छैन्हि। स्वार्थी लोकक चलाकी सॅ मर्माहत भऽ जाइत छथि। हुनकर इ मनोभाव दिनोदिन मुखर भेल जाइत छैन्हि दीदी यो सब बुझि गेलथिन। मां दुःखी छलीह अपन सन्तानक स्वार्थी स्वभाव सॅ, आपसी होड़, जलन आ ईर्ष्या सँ दुखी छलीह घरक सम्पत्ति पर बड़का भैयाक कब्जा सॅ।

एक दिन कॉलेज सॅ घुरलहुॅ तऽ देखलिए छोटकी भाभी मांके उजरा सारीक रफ्फू करैत छलीह। हमरा मुँह सॅ बहरायल 'भाभी अहाँ कियेक एतेक मेहनत करैत छी। दाई मां अपने सीब लेतै।'

भाभी गुम्मे छलीह मां हमर बात सुनिते लोहदिकऽ बजलीह 'सौ-सौ रूपयाक ढ़ाकाक महीन साड़ी तोरा दाई मां के दऽ दिछि। पाइ कतौ गाछ मे

फड़ैत छै? फाटल छैतऽ की हेतै हम रातिकऽ पहिरब।'

हमर आत्मा कुहड़ि उठल-हमर मां जे कहियो पुरान नञि पहिरैत छलीह से आब फाटल साड़ी सीब कऽ पहिरतीह! काल्हिए बड़का भैया आ भाभी प्लैन सॅ दिल्ली गेलाह! मास दिन पहिने सल्लो दीदी केँ सासुर जाइतकाल बक्सा भारि कऽ कपड़ा देलथिन। तखन कतऽ सॅ टका आयल छलै? मां के अपना लेल हरदम अभावे रहैत छैन्हि! आब घरक लेल कतेक आहुति देतीह? मुदा हमरा हिम्मत नञि भेल जे हुनका किछु कहबैनिह। हं मने-मन संकल्प कयलहुँ आब अइ घर सॅ एको पाई नञि ले। फेर हमहूँ तऽ मां ए जकां तिलतिल अपन छोट-छोट सुख क गला घोंटैत रहलहुँ। पुरूष के प्रति देवत्व भाव, एक निष्ठ श्रद्धा स्वीकार करैत रहलहुँ अछि। की बेटीक मन मे अचेतन मे मां क प्रतिछाया प्रतिष्ठित रहैत छैक? उम्र क संग-संग कतेक बेर जीवन मे छल प्रपंचक शिकार भेलहुँ स्वयं केँ दोषी पयलहुँ। व्यथा आ अन्तर्द्वन्द्वक क्षण मे अपना आचरण मे मां क व्यवहारक छवि देखलहुँ। हं, विशुद्ध ममत्व छल दाई मां क निःस्वार्थ स्नेह। दाई मां सन महिला आब कतहु भेटँत? मां के तऽ अपन ठोस अहम के प्रति, अपन संतति के प्रति ममता आ त्याग छलैन्हि। मुदा दाई मां तऽ आनक बेटी के लेल व्याकुल रहैत छलीह सत्ते व्यवहार एहन उदार हृदय मन ककरा हेतै?

दाई मां क ममता मे सत्ताक संग्राम नञि छलै। हुनकर निश्छल वात्सल्य मे कोनो अपेक्षा नञि छलै। मुदा तै की हमर इ कर्त्तव्य अछि जे हम स्वयं अपन मांक कफन के कपड़ा सीबी की इएह सोहाद्र छै? जॅ से करब तऽ की अपन व्यक्तित्वक कमि नञि सूझत? ओ तऽ चौकठी पार कऽ तीनो डग कहियो नञि चललैन्हि आ हम तऽ तीन डेग मे दुनियॉ धाँगि लेबऽ क कल्पना करैत छी।

हं, तऽ हम गर्मी क छुट्टीक बात करैत छलहुॅ। छुट्टीक दिन मे एकटा नव रूटीन बनैत छल भोर दस बजे सॅ सांझुक पांच बजे धरि केँ। की मजाल जे क्यो टस सॅ मस करतै। जाड़ मे स्वेटर बुनब, गर्मी के रेशम कर कढ़ाई सिलावय ऊपर से मां के आर्डर दस दिन मे बेडकवर बनि जयबाक चाही। एक दिन रूमाल तकियाक खोल। जँ रेशम ओझरा जाय वा आंगुर मे सुई गड़ि गेल त मां बड्ड फझ्रति करैत छलीह-नञि जानि पढ़ाई मे कोना फर्स्ट भऽ जाइछ। मन मे होमय जे इ रेशमे कर फूल पात बनौनाइ आ पढ़ाई मे कोन सम्बंध? कोनो तुक नञि बुझाइत छल मुदा प्रतिवाद करबाक साहस कहां?

- सरोज महाधूर्त ! मन होइतऽ कढ़ाई करए नञि तऽ पढ़ाईक बहाना बना उठि जाए। कखनहुँ जानि कए खॉसऽ लागए। मां के हरदम ओकर

स्वास्थक चिन्ता रहैत छलैन्हि। जाड़ मास मे सर्दी खांसी घऽ लैत छलैतऽ परीक्षाक समय मे उल्टी होमऽ लगैत छलै। सब दिन ओकर स्वास्थ खराबे रहैत छलै। ठीक से भोजन करतै नञि छल। कहुना दू टा रोटी खाइत छल आ नीलू बस एकटा आ हम तीनटा रोटीक बाद कनि भातो खाइत छलहुँ। तैँ हमर देह-दशा ओकरा सभ सॅ नीक छल मुदा हमरा मां कैँ हमर डिलडौल कहियो ने सोहाइत छलैन्हि। आ बड़की काकी तऽ खोधि-खोधि।

– कऽ पूछैत छलथिन- 'बहिन प्रिया कतेक पैघ भऽ गेल हमरा विमलाक बतारि अछि मुदा क्यो कहैतै जे दूनू क जन्म एकहि मास मे भेल छलै।' आ एहि सभ सँ तंग भऽ हम जहिया दसमा मे पढ़ैत छलहुँ तहिए मां हमर ब्याह क बात मीराक भाई सॅ चलौने छलीह ओना ब्याहक चर्चा शुरू कयने छलथिन मीराक मां। हुनका हम पसिन्न छलिऐन्हि तैँ अपन मांझिल बेटा जे ताहि दिन ओकालत पढ़ैत छलैन्हि तकरा वास्ते हमर चयन कयने छलीह फेर की भेलै की नहि बात आगां नञि बढ़ैलै।

तकर बाद मां क हमरा प्रति व्यवहार आर कठोर भऽ गेल छलैन्हि भाई – बहिन के नजरि मे तऽ हम कुरूपे छलहुँ। मां बजैत छलीह- 'सरोज के तऽ क्यो रीजेक्ट नञि करैत- मुदा प्रियाक ब्याह कोना हेतै'? हमरा मन में विद्रोहक भाव बढ़ऽ लागल नञि हेत ब्याह नञि होऽ हमरा ब्याह करबाक इच्छो नञि अछि। दाई मां के छोड़ि सभक प्रति उपेक्षा अवज्ञा बढ़ैत रहल। घरक लोक सॅ वेशी अपनत्व बाहरी लोक सॅ भेँटैत छल। मां क स्थान स्कूलक प्रधानअध्यापिका लेलैन्हि। हमर किशोर मन आब जीवनक अभाव केर पूर्ति कल्पना सँ करैत छल। स्नेही मांक कल्पना करैत छलहुँ। कल्पना मे कोनो भाई बहिन लेल जागह नञि छलै हम एसगरे छलहुँआ संग छलीह हमर दाई मां।

– मुदा बहुत जल्दी हमरा एहि काल्पनिक संसारक सीमाक बोध भऽ गेल। हम बुझ लगलहुँ जे जिनगी कल्पनाक सहारा सॅ नञि चलि सकै'छ। बहुत तरहक झंझटि छल जाहि मे हम ओझरायल छलहुँ। लाइब्रेरी सॅ सप्ताह मे एकहिटा किताब लऽ सकैत छलहुँ, हमर भूख बढ़िते जाइत छल। क्लास मे पाँच छह टा संगीक ग्रूप छल जे अपने पढ़ए वा नञि हमर चूनल किताब ओ सभ अपना नाम पर इसू करबा लैत छल। बस हम अपन किताबक दुनियाँ मे मगन रहैत छलहुँ ने मां क झिड़की ने भैयाक खौफ। शरतचन्द्रक पारोक घुटन एन कोन काजक पागलपन। ओ प्रेमचंदक जालपा? जे गहना लेल पति कैँ चोरि करबा लेल विवश कयल? मुदा धर्मवीर भारतीक गुनाहों का देवता' पढ़ि हम बहुत दिन धरि कनैत रहलहुँ। हमरा मन मे स्वस्थ सहज प्रेमक कल्पना कहियो

नञि भेल। हमर दिवास्वप्न नायक सतत् व्यथित दुखी शोषित वा जीवन सॅ उदासीन आ हम छलहुँ ओकर अभावक पूर्ति करऽ बाली। की पढ़बाक चाही आ की नञि से कहियो नञि सोचलहुँ। श्लील-अश्लील जे भेँटए पढ़ैत छलहुँ। घर मे पढ़वला कुर्सी मेज पर बैसिकऽ कोर्सक किताब के बीच मे उपन्यास राखि कऽ पढ़ैत छलहुँतऽ क्यो बुझितो नञि छल। दोसर बात इ जे हमर चिन्ता ककरा छलै। जखन प्रेसीडेंसी कालेज मे गेलहुँ तऽ चारू भर किताबे-किताब छल।

हमरा घर मे दू टा वर्ग छलै-एकटा शोषण करऽ वला सदस्यक वर्ग जकरा हाथ मे तिजोरीक चाबी छलै। ओकरा सभकैँ जौ कनि सर्दियो होइतऽ डाक्टर गंगुलिए नञि सौ टका फीस लेब बला डाक्टर नलिनीरंजन दताक कैँ बजाओल जाइत छलै।

हुनका सभके घरऽक सब वस्तु पर अधिकार छलैन्हि। अइ दल मे छलीह-मां बड़का भैया, बड़की भाभी आ नान्हिटा चारि-पाँच वर्षक हुनकर बेटा, सल्लो दीदी, डाक्टरी पढ़ऽबाली सरोज। दलित वर्ग मे छलहुँ हम, छोटका भैया जे कोनो समझौता करबा लेल कखनहुँ तैयार नञि छलाह आ हमर छोटकी भाभी जे सदतिकाल मांक सेवा मे जुटल रहैत छलीह। बड्ड मधुर वाणी सबसॅ स्नेह सिक्त व्यवहार जेठजीक हर बात के माथ झुका-स्वीकार कर वाली। जे व्यापारक आमदनी होइत छै आ किरायाक पाइ अबैत छै सब बड़के भैयाक हाथ मे जाइत छैन्हि। हाथ उठा कऽ ओ जकरा देथिन। पिताक सम्पत्तिक दूनू भाई बराबर के वारिस मुदा छोटका भैयाक हाथ मे एकटा पाइ नञि। मां कहैत छलथिन बड़का भैया कैँ-'अरे, आब घर-गृहस्थी वला भेलै एकरा अपना संग आफिस ल जाहीं तोरा संग-संग रहतै तऽ काज धंधा सिखतै' मां के कहला पर भैया छोटका भैयाकैँ घर सॅ ल जाइत छलथिन मुदा किछ दूर गेला पर मेट्रो सिनेमा हाल लग सिनेमाक टिकट हाथ मे दऽ कहैत छलथिन-'जो सिनेमा देख।' भैया व्यथिन भऽ घर घुरि अबैत छलाह। सांझि मे बड़का भैया घर अबिते मां कैँ कहैत छलथिन।

– 'की करू मां किछ ने फुराइत अछि।' अहांक कहला पर हम लऽ गेलिऐ ऑफिस। ओतऽ सँ कहलिऐ फाइल लऽ कऽ इन्कमटैक्स ऑफिस जयबा लेल तऽ चलि गेल सिनेमा देखऽ। एतबा सुनिते मां आगि बबुला भऽ जाइत छलीह।

'कहाँ छै अजैया, आ इम्हर। खेऽ लेल अढ़ाई सेर चाही दू बेटाक बाप भऽ गेलैँ आ एक पाई कमाबऽ के लूरि नञि। लक्ष्मी सन पत्नीक जीवन बरबाद

कऽ देलकै।'

छोटका भैया बरांडा मे बैसल चुपचाप सब सुनैत छलाह कोनो प्रतिवाद नञि। बजैत-बजैत मां चुप्प भऽ जाइत छलीह तखन जरला पर नून छीटऽ लेल पहुँचैत छलीह बड़की भौजी। मां जो, अहॉ कियेक चिन्ता करैत छी समय अयला पर छोटका बौआ अपने सुधरि जेथिन। एतेक क्रोद्ध करब तऽ अहॉक बल्डप्रेशर बढ़ि जायत। बस मांक आहि अलम शुरू भऽ जाइत छल । छोटकी भौजी के ऑखि सँ दहो-बहो नीर घुबैत छलैन्हि भैया मांक बात सुनि कऽ झट नीर पोछि पहुँच जाइत छलाह मांक सेवा मे। 'मां कोन दवाई दिअ।'

'कोरामिन दऽ दिअ रानी! हार्ट ....।' सत्तो बात बजबाक साहस नञि छलैन्हि छोटकी भाभी कें। बेचारी निरीह जकां सभक बात सहैत छलीह नैहरो तेहन नञि छलैन्हि जे तकर गुमान होइतैन्हि ओना कहबा लेलतऽ राज परिवारक बेटी छलीह कहियो राजसी ठाठ छलैन्हि मुदा आब तऽ भोजनो पर आफत छलै। छह बहिनक ब्याह करोड़पतिक घर मे भेल छलैन्हि ताहि दिन एहन विपन्न नञि छलाह। हिनकर सम्बंध हमर मसिऔत भाई करौने छलथिन। कहने छलथिन 'पीसी, लड़की हजारो मे एक छै। दिल्लीक लेडी डरविन कॉलेज सँ आई० ए० पास छै। संगीत मे ग्रेजुएट, संस्कृत मे विशारद् घरकलुरि-व्यवहार मे कुशल। नाम छै सविता।' तखन मां, बड़का भैया कैँ लड़की देखऽ पठौने छलथिन। हुनका पसिन्न पड़लैन्हि तुरत चारि टा गिन्नी हाथ पर घऽ शगुन दऽ देलथिन। क्यो छोटका भैया सँ किछ पूछबाक जरूरत नञि बुझलकैं। सल्लो दीदी कहबो कयलथिन्ह जे एकबेर अजय के लड़की देख लेब चाही'-की देखतै फोटो तऽ आयले छै आ विजय देखिए लेलकै।

एक दिन रूम मे बैसल भैया कपसि-कपसिकऽ कनैत छलाह। मूक गाय जकाँ भाभी अहुरिया कटैत छलीह। एकाएक भैया उठलाह पैर में चप्पल पहिर बाहर चलि गेलाह। मां हॉले मे कुर्सी पर बैसल छलीह पूछलथिन-'अजय कतऽ जाइ छैँ'?

'काज करऽ।'

'हँ, खूब काज करबें!'

मांक ओल सन बोल सुनि ओ विदा भेलाह। जखन चारि बजे सांझि धरि नञि घुरलाह तऽ सभ के चिन्ता भेलै। खोज शुरू भेल। छोटकी भाभी के कनैत-कनैत ऑखि लाल भऽ गेल छलैन्हि हम कहलिएन्ह मां के-'मां आइ भोर में भौयाके कनैत देखने छलिऐन्ह। बड़का भैया घर अयलाह तऽ मां क कानब खीझब चालू भऽ गेलैन्हि।

'ए बौआ, ऊ कसाई हमरे दुःख देबऽ लेल जनमल अछि। बाबूजी गेलथुन से दुःख की कम छल जे ई हमरा आर व्यथा दऽरहल अछि। डर होइछ किछ भऽ जेतै तऽ एहन लक्ष्मी सन पुतौहु के कोना मुँह देखब?'

भैया फोन कऽ पारिवारिक सालि सिटर सँ राय-विचार लेलैन्हि। तखन मां के कहलथिन - 'हम पुलिस स्टेशन जा कऽ पता लगबैत छी।' भैया सीढ़ि पर उतैरते छलाह कि देखलथिन बड़का जीजाजी क संग छोटका भैया आबि रहल छलाह। मां एतबा काल मे अनगिन मनौती मानलैन्हि हनुमान-जी के सवामन कैँ दाल-चूरमाक प्रसाद, राणीसती जी कैँ चूड़ा-चूनरी क चढ़ावा आर नञि जानि कोन-कोन देवता-देवीक मनौती मान लैन्हि। आ छोटका भैया कैँ देखते चिचिआ उठलीह - 'चंडाल! कतऽ छलैंह एखन धरि। एक भोरे के गेल आब घर क सुधि भैलौ।'

- छोटका भैया बिना किछु बजने अपना रूम मे चलि गेलाह। जीजा जी मां आ बड़का भैया कैँ कहलथिन।

- 'अहाँ दूनू गोटे भीतर चलू-बात करबाक अछि।' दू घंटा धरि मां, बड़का भैया आ जीजा जी नञि, जानि की-फुसुर फुसुर बतिआइत रहलाह' फेर खौंझायल जकॉ धुरिकऽ चलि गेलाह एक कप चाहो नञि पी लैन्ह। हुनका जाइते घर मे भूकम्प मचि गेलै। मां बजलीह-'अजैया! तोहर एहन हिम्मत जे तू बॉट-बखड़ाक बात करैत छैँ? जीजाजी कैँ पंच बनाबऽ गेल छलैंह ।'

अपना हिस्साक बात करैत छैँ? मां अपना पैर सँ चप्पल खोलि दोड़लीह छोटका भैया दिस।' छोटकी भभी झट दऽ हुनकर पैर पर खसि पड़लीह-'नञि मां जी एना जुनि करू।'

बड़का भैया अबिकऽ मांक हाथ पकड़ि बैसा देलथिन। छोटका भैया दिस गुम्हरैत बजलाह-इ एना नञि मानतै' आब एकर इलाज हमरे करऽ पड़त।'

बाजू ने कोन इलाज करब? अहाँ की कमाईत छी से हमरा नञि बूझल अछि। हमर बाल बच्चा एक टका क वस्तु लेल तरसैत रहैंछ। छोटका भैया के करेज फाटि-गेलैन्ह! मां किछ कहऽ चाहैत हलथिन ताबत बड़का भैया बजलाह-'तू बुझैत छठीं जे बॅटबाड़ा कयने बाबूजीक प्रतिष्ठा बढ़ि जयतैन्ह? इएह जीजाजी हमरा सँ फरक कऽ तोहर टका तोरा लग रहऽ देथुन?'

जीजाजी के दोष नञि दिऔ। हम नेना छीजे ओ हमरा सँ टका लऽ लेता?

दूनू भाइ आमने-सामने बजैत छलाह कि मां तड़ाक सँ छौटका भैया गाल पर थापड़ मारलथिन-'नालायक! हमरा कोखि कैँ कलंकित कयलक।'

'मां जी.... मां जी! एना जुनि करूँ? अपना के सम्हारू!' छोटकी भाभी अनुनय-विनय करैत छलथिन। मां धम्म सॅ कुर्सी पर बैसलीह-अचेत भऽ गेलीह। की भेलै मां के की भेलै? कहैत, भैया दौड़लाह। 'जल्दी फोन लगा डा० गांगुली कैँ। 'सविता, जल्दी सॅ कोरामीन लाउ। छोटकी भाभी तरबा रगड़ैत छलथिन। बड़की भाभी कोरामीन दऽ पंखा हौंकऽ लगलीह। बड़का भैया गरजलाह-'आई जँ मां के किछ भेलै तऽ अजय कैँ जान मारि देबै।' छोटका भैया कनैत मां कैँ पैर पकड़ि कहऽ लागलथिन।

-'मां मां हमरा माफ कऽ दिअ। हमरा नञि चाही धन सम्पत्ति। नञि लेब अपन हिस्सा बखड़ा।' नञि जानि कियेक अवाक् छलहुँ। कान मे बिना कोनो प्रतिक्रियाक एकहिटा बात गुंजि रहल छल-'तू बूझैत छहीं बॅटबाड़ा सॅ स्वर्गीय बाबूजीक प्रतिष्ठा बढ़ैतन्हि? घर्र-घर्र-घर्र स्वर.......अरे इ तऽ सीलिंग फैनक आवाज छैक। आ हमरा होइछ जे एतेक सालक बादो भैयाक कर्कश स्वर अइ हॉलक कोनो कोन सॅ आबि रहल छै। हं, तऽ मां क बेहोशी टूटलैन्हि। दूनू भाभी सहारा दऽ कऽ रूम मे पलंग पर सुता देलथिन। ताबत डाक्टर गांगुली आबि गेलाह।

'डाक्टर बाबू, आइ तऽ बुझू हमर हार्ट फेले भऽ जाइत। हमरा कोखि सॅ कंस जनम लेलक अछि। बड़का बेटा तऽ श्रवण कुमार अछि राति-राति भरि हमर सेवा करै'छ।

-'शोब ठी भऽ जायत। विजय बाबू के अजय के अपना संग काज करऽ लऽ जाय। अहॉ सभतऽ लड़काक काज-धंधा से पहिने शादी कऽ दैत छिऐ।'

की कहू डाक्टर साहेब हमर दियादनी सभ माथा खराब कयने छल। सदति काल एकहि गप्प अजय क ब्याह कहिया करबै? बूढ़ारी मे ब्याह देत?

-'अच्छा! आब बायॉ बायॉ करौट फेरू।

हं, कनि पेटिकोट ढ़ीला करू। एकटा सूई दैत छी आराम हेत। अहां कें नरबस ब्रेकडाउन भऽ गेल अछि।'

'हम तऽ एकदम बुझू डाउन भऽ गेलहुज़ अछि जहिया सॅ साहेब गेलाह।'

'साहेब तऽ देवता छलाह। मां कालीक मोर्जी। सूई लगाबऽ से पहिनहिं मां-आह -ऊह करऽ लगलीह हुनकर ई पुरान आदत छैन्हि। डाक्टर गांगुली हॅसैत बजलाह-'ओ मां हम तऽ एखन सूई लगेबहु ने कयलहुँ आ अहॉ आह-आह करैछी? मां चुप्प भऽ गेलही।

मां के निन्न भऽ गेलेन्हि। छोटका भैया बिना खयने पीने चुपचाप हुनका अगल मे बैसल छलाह। छोटकी भाभी सेवा मे जुटल छलीह। मां के

आदेशानुसार खास-खास व्यक्ति के फोन कऽ देलथिन बड़की भाभी। सबसे पहिने अयलाह मामाजी। मां क प्रिय आदर्श पुरूष। खूब खुसुर-फुसुर भेलैन्हि दूनू गोटे मे। पाछू पता चलल जे मामा मां के कहलथिन जावत बेटी सभक ब्याह नञि होइछ ताबत घर के बान्हि के राखू। किन्हु बॉट बखड़ा नञि होमए। लोक के तऽ मजा अबैछै घर फुटने मुदा ई सोलहो आना सच छै जे घर करोड़ोक से फुटने चौअन्नीक भऽ जाइछ।

मामा जी गेलाह। मां के ई बात बुझबामे कोनो भांगठ नाञि भेलैन्हि जे बड़का जमाय अजय कैँ पक्षधर छथि हुनके ई आगि लगाएल अछि। बस ओ किराया बला मकान बड़का भैया क नाम लिख देलथिन। बड़का भैया मां के सामने घर क पूजा घर मे जा भगवतीक सोझा आ स्वर्गीय पिताक फोटो कैँ साक्षी मानि शपथ खयलनि-जहिया मां कहतीह मकानक आधा हिस्स अजय के दऽ देबै। मां मने-मन निश्चय कयलनि करिया नाम क दांत तोड़ब। ओ तऽ हम बेहोश भऽ गेलहुँ तयँ बात नञि बढ़लै अन्यथा अजय बहनोई सई पर कोर्टक दरवाजा खटखटबैत। तैँ मां बड़की दीदी कैँ बजाकऽ बेटी जमाय दूनू कें बड्ड बात कहलथिन । तकरबाद कबुला कयने छलीह से हनुमान जीक सवा मन क दालि-चूरमा क प्रसाद चढ़ा सबकैँ बजाकऽ खूब महोत्सव मनौलनि। फेर भादोक अमावस्या दिन खूब धूमधाम सॅ अढ़ाई हजारक चूड़ा-चूनड़ सती राणी के चढ़ाओल गेल। मारवाड़ी समाजमे सतीराणीक चढ़ाओल चूड़ा-चूनड़ सोहागिन ननदि आ बेटी के देल जाइत छै। तऽ बड़की दीदी सॅ मां नाराज छलीह तऽ चूनड़ सल्लो दीदी कें भेंटलनि। सल्लो दीदी पन्द्रह वर्ष क बाद जखन बेटी ब्याह मे ओ चूनड़ देलथिन तखन ओकर कीमत छलै पच्चीस हजार।

अइ सभक परिणाम इ भेल जे सब धन बड़का भैयाक हाथ मे छलै आ सभटा गहना बड़की भाभी के जिम्मा। मां बहला फुसियाक छोटकी भाभी क डायमंड केर कानवला आ डाइमंडक अंगुठी लऽ कऽ तिजोरी मे रखबा देलथिन। तिजोरीक चाभी रहैत छलैन्हि भाभीक हाथ। मतलब बड़का भैया आ भाभी घरक मालिक।

किछ दिनक बाद सल्लो दीदी आ मां बतिआइत छलीह आ हम ओहिठाम बैसल सरोज के सांठ मे देबऽ लेल बैडकवर पर फूल काढ़ैत छलहुँ। मारवाड़ी परिवार मे जहिया सॅ बेटी जन्मै छै बेटी क मां सांठ मे देबऽ लेल टीशूक थान, जरदोजीक साड़ी, घाघड़ा, ओढ़नी, चांदीक बर्त्तन जोगाबऽ लगैत छै।

-आ सारोज तऽ आब मेडिकलक पार्टवन के फाइनल दऽ रहल छै। तैँ

बेडकवार, तकियाक खोल आ रूमाल पर नव-नव डिजाइनक कढ़ाई कयल जाइत छै। मां धीरे-धीरे सल्लो दीदी कें कहैत छलथिन।

'हम बगल बला मकान विजय क नाम लिख देलिऐ। अजयक कोन भरोस कखन रखन कोन तमासा ठाढ़ करत।' हमरा हुनकर बात नञि नीक लागल तैं बजलहुँ मां अहां देखबै बड़का भैया ओई मकान मे छोटका भैया के हिस्सा नञि देथिन। तड़ाक सँ गाल पर थापड़ मारलैन्हि पॉचो आंगुर क निशान पड़ि गेल पूरा कान झनझना उठल। ऊपर सँ कर्कश स्वर मे बजलीह -'फेर कहियो एहन बात बजबें तऽ जीह उखाड़ि लेबौ।' हमरा ओतऽ नञि रहि भेल उठि कऽ बरांडा पर चलि गेलहुँ। बड़ी काल घरि कनैत रहलहुँ। ओना आई-काल्हि हम कनैत नञि छलहुँ। अपना मन के बुझा लेने छलहुँ।

'प्रिया जाबत अइ घर मे छे गांधीजी क तीनू बानरक अनुशरण कर। ने किछ बाज ने सुनमे किछ देख। जतबा संभव होइ चुप्प रह। एहि घर मे सरोज जखन जे फरमाइश करैत छै तुरत पूरा कयल जाइत छै आ तू दस टका क किताब किनबा लेल तरसैत छें।'

दिन बीतैत रहल। हमर बी०ए० क परीक्षा समाप्त भेल। सरोज मेडिकल फाइनल मे छल। बड़का भैया हमरा दूनू बहिन, बुल्ली दूनू भतीजा कें कश्मीर घुमाबऽ लऽ गेलाह। जिनगी मे पहिलबेर पहाड़ देखलहुँ। पहिलबेर ए० सी० कम्पार्टमेंट मे एतेक दूरक यात्रा कयलहुँ। खूब ऐश मौज कयलहुँ। मुदा एत बेर-बेर छोटका भैया आ भाभी क उदास चेहरा मोन पड़ैत छल। मां क देख-रेख के करतै से कहि छोटका भैया-भाभी के नञि आलथिन।

कोन ठेकान अगिलो गर्मी मे छोटका भैया-भाभी घूम एती की नञि? कहॉ सँ एताह बच्चाक दूधक पाइके हिसाब देबऽ पड़ैत छैन्हि। हुनका हाथ मे छैन्हि की?

कश्मीर सँ घुरला पर बड़की भाभी बीमार रह लगलीह। ओतुका हवा-पानि सूट नञि भेलैन्ह। भैयाा रोज राति मे एक दू पैग व्हिस्की पीबैत छलाह भाभी के नञि बर्दास्त होइत छलैन्हि। हुनका ई शराब पीयब चारित्रहीनताक लक्षण लगैत छलैन्हि ओ पुरान संस्कार क महिला छलीह। भैयाक इच्छा छलनि ओ सूट पहिरकऽ बाहर घूमथि। लिपिस्टिक लगाबथि भाभी कहैत छलथिन हम कुलबधु छी कोठा पर बाली नञि। भाभी जँ मां लग भैयाक शिकायत करैत छलीह तऽ मां हुनके फझति करैत छलथिन-'भरि दिन खटिकऽ अबैत छै तऽ राति मे एक गिलास औरंजक जूस पीबैत छै से अहॉ के बर्दास्त नञि होइत अछि?

-'मां जी! ओ शराब पीबैत छथि जूस नञि।'

-'हे, फालतू बात जुनि करू। हमर ओ श्रवण-पुत अछि। अहॉ के होइत अछि जे ओ मां के सेवा कियेक करैछ? अहाँक इशारा पर कियेक ने नचैत अछि?' भाभी गुम्म भऽ जाइत छलीह। बड़की दीदी सँ फरियाद कयलनि। तऽ दीदी साफ-साफ कहलथिन'भैयाक खिलाफ बाजि कऽ के मां सँ उलझत? अहाँ अपन परिवारक बात अपने सोझराउ।'

भैया क चरित्र क गुनधुन मे भाभी क चिन्ता बढ़ैत रहलनि। भैया जाति-पाति नञि मानैत छलाह आ भाभी छूआ-छूतमानैत छलीह। कश्मीर यात्रा मे धरक बनल पेठा-पकवान आ फले खाइत छलीह। हाउसबोट मे मुसलमान खाना बनबैत छलै मुदा ओ अपन धर्म नञि छोड़लनि।

भाभी मनोव्यथा बढ़ैत रहलनि। कश्मीर सँ घुरलीह तहिया सँ दुखिते छलीह। पेट मे बच्चा छलैन्हि। दिन भरि उल्टी करैत छलीह। एक दिन बेहोश भऽ खसि पड़लीह। डा० गांगुली एलाह। ब्लड प्रेशर चेक भेलै। डा० अमृता कौर कहलथिन 'तुरत एर्बार्शन कराओल जाय नञि तऽ मांक जान नञि बचा सकबै। भाभी छमासक भ्रूण हत्या क पाप अपना माथ पर नञि लेब चाहैत छलीह। मुदा भैयाक आगु हुनकर बात के मोजर की छलैह। मुदा भैयाक आबुगु हुनकर बात के मोजर के दितै। एर्बार्शन भेलै मुदा भाभी फेर उठि कऽ ठाढ़ नञि भेलीह खाट घऽ लेलैन्ह। डा० गांगुली आ डा० अमृताक दवाई काज नञि कऽ रहल छलै। डाक्टर नलिनी सेन गुप्ता के बजाओल गेल। डा० शरत सेन अयलाह सम्पूर्ण शरीरक जॉच भेलै तऽ पता चललै हार्ट उनलार्ज्ड भऽ गेलैन्हि, थायरडो काज नञि करैत छलैन्हि। दवाई आ इलाज सँ किछ सुधार भेलैन्ह मुदा भाभीजीक मनरोग नञि छुटलैन्ह। जहिया कऽ भैया हुनका ग्रैंड होटल मे संग लऽ जाइत छलथिन भोजन कराबऽ तहिया ओ अबिते बाथरूम मे उल्टी करऽ लगैत छलीह। हुनका नजरि मे भैया अबारा चरित्रहीन शराबी छलाह। भैया ताहि दिन खूब पाइ पीटैत छलाह तइओ खर्चा आमदनी सँ दुगुना छलै तैं पाइ जमा नञि भऽ पबैत छलै। सरोजक ब्याह के चिन्ता मे मां उदास रहैत छलीह। मां कें खुश करबा लेल भैया मांक हाथ पर किछ टका दऽ दैत छलथिन मुदा नीक घर, वर लेल 1962 ई क समय मे लाख टका सँ कम दहेज नञि लगैत छलै।

इं हमरा आइ कतेक तरहक बात याद आबि रहल अछि। मां क स्वभाव मे कनि नरमि अयलैन्हि। आब हमरे नञि सरोजी के मासिक शुरू भऽ गेलै।

हम दूनू गोटे बड़की दीदी के कहि सुनि कऽ मां के मना लेलहुँ जे 'आब हम सभ तीन दिन घरि छुआ छुत नञि मानब। हं फ्रिज नञि छुअब,

रसोई घर मे नञि जायब ने अहॉंक घर मे मुदा आब एसगर एक कोन मे बैसल नञि रहब तीन दिन घरि।' खैर इ तऽ समझौता भऽ गेल मुदा बात अटकि गेल बस हमरा वास्ते। हमर वाह्य शरीरक रूपांतरित भऽ रहल छल। बारह वर्षक किशोरी देखबा मे युवती लगैत छलहुँ। आ हमर ई उभारसँ मां परेशान छलीह। सत्ते हम उम्र सँ वेशी पैध लगैत छलिए। हमर स्वास्थ्य नीक छल दिन-प्रतिदिन देह भराएल जाइत छल। एक दिन सल्लो दीदी एकटा नव समीज देलैन्हि जकर डॉर सँ ऊपरका भाग छलै जैकेट जकाँ। कहलनि 'इ पहिर।' पहिरलहुँ बहुत टाइट छलै। दीदी के कहलिऐन्ह ।

'दीदी इ हमरा साइज सँ दू इंच छोट छै।' दीदी कहलैन्ह-' तैं पहिर ऽ देलिऔ। सबटा बटन लगा। अइ सँ छाती सपाट लगतौ।'

ओहातऽ हिनका सबके हमर छातीक उभार अखरैत छैन्हि। हम तऽ बाथरूमक अयना मे प्रस्फुटित होइत रूप के देखि प्रसन्न होइत छी। साहस कऽ फेर बजलहुँ 'दीदी ई बहुत टाइट दै अकशक लगैए।'

'अकशक लगने मरि नञि जएबें। आदत पड़ला पर सब ठीक भऽ जेतौ। समीज क तर मे सब दिन पहिर।'

-'से कियेक?'

से अइद्वार जे नेना छे लोक युवती नञि बुझै। 'अहॉं कियेक ने पहिरैत छी?

-'कुमारि छलहुँ तऽ हमहूँ पहिरैत छलहुँ। मुदा थोडबे दिन पहिरलहुँ। हमर ब्याह बारहे वर्ष मे भऽ गेल छल। आ तोरा जकॉं दसे वर्ष मे हमरा पीरियड्स शुरू नञि भेल छल।'

स्कूल गेलहुँ तऽ बुझाइत छल जेना दमफुलैए, पानि पीबऽ के छुट्टी लऽ बाथरूम गेलहुँ। ऊपरका समीज खोलि ओइ जैकेट केर सिलाई खोलिकऽ पहिरलहुँ। आब मोन अकशक नञि करैत छल। घर घुरलहुँ- दुपट्टा ओढ़ने छलहुँ तइओ मां क नजरि सँ किछ नुकाएल नञि रहल। ओ हमरा नञि किछ कहलनि मुदा दीदी के कहने हेथिन। हम अपना रूम मे जा कऽ किताब रखिते छलहुँ कि दीदी पहुँचलीह। केवाड़ बंद कऽ आर्डर देलैन्हि। प्रिया समीज खोल।'

'नञि दीदी। आब हमरा किछ नञि कहूँ। क्लास मे हमरा सांस नञि लऽ होइत छल।'

'ठीक छै हम किछ नञि कहबौ। चल मां लग कहुन जे सांस नञि लऽ होइए।'

हमर बोलती बंद भऽ गेल मां क नाम सुनिते।

'दीदी-सरोज आ नीलू तऽ एहन जैकेट नञि पहिरैत छै?'

-'सुन वेशी बात नञि बना। जहिया समय एतै ओकरो सभके पहिरऽ पड़तै। अच्छा खोल हम कनि ढ़ीला कऽ के सीब दैत छिऔ।'

दीदी ई घरो मे पहिरऽ पड़त?'

-'हं, घर-बाहर, सांझि, भोर राति-दिन हरदम।' हमरा मोन पड़ल पर्ल-बर्क क एकटा नायिका। जकरा बचपन मे लकडीक जूता पहिराएल गेलै पैर छोट रखबा लेल। जखन औ पैद्य भेलैतऽ पैर ततेक छोट भऽ गेल छलै जे आकरा चलबा मे कष्ट होइत छलै।

ओ दासीक सहारा लऽ कऽ चलैत छल। की आब ई पहिरने हमरो विकास रूकि जाएत? पुरूष जकाँ सपाट.... नञि एहन नञि होमऽ देबै' लोक हमरा हिजड़ा कहत। दाई मां हमर प्रश्न के उत्तर नञि देलैन्हि। ओ कहलनि-बुच्ची। अहाँक उम्र मे तऽ हमरा छेदी जनमल छल।

'तऽ ओइ समय मे अहॉंक साइज की छल ?'

'अच्छा ई कहू जे एखन जेहन छाती अछि तेहने पहिने छल?'

'नञि पहिने एहन नञि छल। ई तऽ छह-छहटा नेना के दूध पिला सँ एना टूटि गेल। आब हम बूढ़भेल हुँ।'

'तऽ मां आ दीदी हमरा कियेक तोड़ऽ चाहैत छथि?'

बुच्ची मासिक भेला क बाद औरत जवान होमऽ लगैत छै। अहॉं समय से पहिने जुआन भेल जाइत छी। आ अइ सभ भेल ओइ राक्षस के कारण फुलाय सँ पहिने ओ तोड़ि देलक।'

ओह तऽ असमय युवती होइबाक कारण अछि हमर निर्दय बड़का भैया रोआँ-रोआँ कलपि उठल। ओहि दानव के कारए हमर इ हाल भेल। बच्चे मे पीरियड्स फेर इ उभार जॅं क्रम चलिते रहितै तऽ पेट मे बच्चो। ओई राति एको घड़ी चैन सँ सूतलहुँ नञि......। असमय बोझिल कैशोर्य, कुम्हलाएल नेनपन जो राक्षस तिल-तिल के मॅरबें हमर नोर क श्राप पड़तौ। हमर सम्पूर्ण अस्तित्व हाहाकार कऽ रहल छल। दाई मां क शब्द बेर-बेर माथ पर हथौड़ी कचोट जहॉं काँ बुझना जाइत छल......'कलि के फूलाए सँ पहिने मयोड़ि देलकै।' ने हम फूल बनलहुँ ने नागफनीक कॉंट। एक सुनगैत अंगारे! छुँआ उगलैत ऑंखिक नोर सँ भीजल जारन। की कहल जाए । हमर तऽ व्यक्तित्वे चूर-चूर भऽ गेल। एक दिस विद्रोहक आंगि मे जड़ैत दोसर दिस भयाक्रान्त।

हम तऽ सब पुरूष मे अपन दुष्ट भाईक प्रतिबिम्ब देखऽ लगलहुँ। सहमल, भीतरे-भीतर कुहरैत लड़की। कहॉं चलि गेलाह बाबूजी। आब कहियो

नञि औता? हुनकर आश्वस्त करैत ओ सुदीर्घ कद, सुरक्षाक बोध करबैत ममत्वपूर्ण नयन-अपन उपेक्षित बेटी कें दाई मां क कोर मे प्रसन्न देखि प्रसन्नता छलकैत चेहरा। जँ बाबूजी भैयाक कुकर्म बुझि जयताह तऽ ओ की करितथि? की भैया के घर सँ निकालि देथिन छल? नञि कथमपि नञि। मां किन्नहुँ बेटा के घर सँ निकालऽ नञि देथिन छल ओ बेटाक गलती नञि मानि सकैत छषि वरू हमरा ब्याहि घर से हटा दितथि। आ इएह होइत रहलै ए युग-युग सँ। लड़कि के पैघ होमऽ सँ पहिने ब्याहिक सासुर पठा घर का पुरूष कें नजरि मे खटकए ताहि सँ पूर्व घर सँ भगा। पता नञि अलबल सोचैत हमर आँखि कखन मुनाएल सपना मे देखलहुँ क्यो बरांडा सँ उठा कऽ बाहर सड़क पर फेक देलक। मुदा हमरा किछ भेल नञि चोटो नञि लागल। बस गरदा झाड़ि कऽ उठलहुँ आ मकानक पाछूवला बरांडा सँ लटकैत सीढ़ि पर चढ़ि वापस घर आबि गेलहुँ। मां क घर होइत हुनका बिनु देखनहिं हॉल टपलहुँ। फेर बाबूजी क रूम तकरबाद ओ बरांडा फेर वएह दृश्य बरांडा सँ उठा कऽ फेकब.. दहशत सँ चिचिआ उठलहुँ।

-'की भेल बुच्ची? कियेक कनै छी?' मम्त्वपूर्ण हाथ माथ हसौं थि पूछैत अछि।

-'दाई मां, दाई मां!'

बुच्ची! हम कहैत छी सूतऽ से पहिने हाथ पैर धो कऽ हनुमान चालीसा पढ़ि कऽ सूतू, मुदा हमर बात अहाँ किये मानब। हम तऽ गंवार अनपढ़ औरत छी? जाउ, एखन आँखि मुनि सूति रहू। देरी सँ उठब तऽ मां बजतीह।'

-'हं, दाई मां! अहूँ सूति रहू ऊतऽ सपना छल।' हमरा माथ पर हाथ रखने ओहिठाम दाई मां सूति रहलीह। हमहूँ आँखि मुनि पड़ल छलहुँ।

निन्न टूटल। अरे! ई तऽ डूयब्रवनिक छै। सांझुक लुक-झुक बेर छलै। कतहु किछ नञि। शून्य-साफ विस्तृत आकाश उड़ैत सांगल पाखी। नि:शब्दता भंग करैत निरन्तर छप-छप लहरि समुद्रक। अइ बेर मे नञि जानि कियेक होटलो शान्त भऽ जाइत छैक। लोक सब फुसफुसाक बाजत। दूर सँ कोनो-जहाजक सीटी सुनाई पड़ल। अई क्षणिक गोधूलि बेर मे कतबा किछ घटित भऽ जाइत छै। अनाम उदासी हवा मे भिझरायल बुझना जाइछ।

संझुका पहर प्राय: टूरिस्ट किलाक भीतर सजल दोकानक मे चक्कर लगबै'छ। अइ छोट छीन शहरक सबसँ वेशी आकर्षणक केन्द्र छैक इएह किला। अहि मे सजल धजल छोट छोट बाजार, रेस्टोरेंट आखरी छोर पर एकटा ऊँच जगह छै जतऽ कहियो काल नाटक होइत छै। किला मे जाइते बाम भाग

मे कन्सर्ट हॉल छै। दहिन भाग मे आबिजान के चित्रक प्रदर्शनी लागल छै।

हम मोने-मेन संकल्प कऽ लेलहुँ जे लड़की बनल रहब औरत नञि। तैं समीजक नीचा. पहिरऽ बला जैकेट के खूब कासिकऽ पहिरऽलगलहुँ। आब सत्ते ऊपर सँ एकदम सपाट करेज बुझाइत छलै। मुदा तइओ नञि जानि हमरा चेहरा मे की अभरैत छलै। जे लड़का, पुरूष सभके गिद्ध दृष्टि हमरे चेहरा पर गड़ल रहैत छलै। ने ओइ नजरि सँ क्यो सरोज कें देखैत छलै ने नीलू कें। सभक कामुक दृष्टि हमरे पर कियेक?

जहिया एगारह वर्षक छलहुँ तखन हमरा माथ मे कतहु कतहु केश झड़ि जाए आ उज्जर चकत्ता भऽ जाइत छल। पहिने अठन्नी जकाँ फेर ओहू सँ पैध। भाभी के देखेलिएन्ह। भाभी मां के कहि देलथिन। मां माथ धुनऽ लगलीह। बजैत बजैत हुनकर मुँह टेढ़ भऽ गेलैन्हि ओ बेहोश भऽ गेलीह। भाभी झट कोरामिन आनऽ गेलीह दाई मां मँह पर यूडीकोलोन छींटलथिन, बड़की भाभी पंखा सँ हैंकात छलीह। होश भेलैन्हि। दाई मां हुनकर तरबा रखड़ैत बजैत छलीह- 'बहुरानी। हिम्मत राखू इलाज हेतै सब ठीक भऽ जेतै।' मांक फुेर विलाप शुरू भेलैन्हि-चमेलिया भाय। एकर भागे फूटल छै कोना एकर ब्याह हेतै।? सौसें माथक केश उड़ि जेतै? हे देव-पितर। बालाजी।। आब अहिंक हाथ मे लाज अछि। हे राणी सत्ती दादी-हमर अहिंक हाथ मे लाज अछि। हे राणी सत्ती दादी हम झुझणु जा कऽ चूड़ा चुनड़ी चढ़ायब हमरा बेटीक रोग छुटि जाए। हे मां एकरा पर कृपा करिऔ' एतबा कहि मां फेर बुक्का फाड़ि कानऽ लगलीह फेर मुँह टेढ़ भऽ गेलैन्हि।

नञि जानि कियेक मां कें एना विलाप करैत देख हमरा भीतर सँ खुशी भऽ रहल छल। पहिल बेर अनुभव भेल जे ओ हमरो मां छथि। पहिल बेर हुनका मुँह सँ सुन लहुँ बेटी कहैत। हमरा लेल चिन्तित छथि से देखि सुख भँटल। भाभी फेर हुनका कोरामीन पिया कऽ विछावन पर लऽ जा कऽ सुता देलथिन। दुपहरक समय छलै दू बजैत रहै। गर्मीक छुट्टी छल। भीषण गर्मी मे हम माथ झुकौने सरोज के सॉठ मे देबऽ लेल आरगंडी साड़ी मे महीन शैडोवर्क के फूल काढ़ैत छलहुँ। आत्मा भीतर सँ तृप्त छल-मां के हमर चिन्ता छैन्हि। हमरो मानैत छाथि। कनैत-कनैत बेहोश भऽ गेलीह। दाई मां गोरथाड़ी मे बैसल मां क पैर जँतैत छलीह। आइ भोर सँ दाई मां हुनके सेवा मे लागल छथि किछ खयबो नञि कयलैन्हि। मां आई जतेक हमरा लेल कनलनि ततेक ककरो लेल कहाँ कनै छथि। बुल्लियो के माथ मे चकत्ता भेल छै। मां ओकरा लऽ कऽ डाक्टर ओतऽ गेलीह। तखन सँ डा० पंजाक देल दवाई सँ रोज ओकरा माथ मे

मालिश करबैत छथिन। मुदा ओकरा लेल कहियो कानलथिन? हम सिलाई कऽ के उठलहुँ। मां के कहलिएन्ह 'मां हम पैर जॉंति दै छी। दाई मां नहा खा लेतीह। मां इशारा सॅं दाई मां के जाय कहलथिन। हम हुनकर पैर जॅंतैत छलहुँ। थोड़ेकालक बाद मां बजलीह–'जा बैआ सूतऽ। आराम करऽ।'

नञि मां। अहांक मोन खराब अछि हम एखन नञि सूतब। हम विजयोल्लास मे सरोज दिस ताकि ओकर मूँह दूसलिऐ। देख मां हमरा कतेक मानैत छथि।

डाक्टर गांगुली अयलाह। एखनो मां क मुँह टेढ़ै छलैन्हि। मां के देख डाक्टर गांगुली बजलाह।

'शोब ठीक भऽ जायत। मिसेज गुप्ता।' की ठीक हेतै डाक्टर बाबू। चारि मास सॅं बुल्लीक इलाज भऽी रहल छै। कतेक डाक्टर बदललै। खैर बुल्ली तऽ लड़का छै चीनी क लड्डू टेढ़ो भला। मुदा प्रिया लड़की छैं कोना हेतै ब्याहदान? ओहिना त एखन बारहोवषक नञि भेल अछि आ लगैत छै जेना सोलह वषक होई। किछ करू डक्टर साहब। कहुना एकर केश नञि उड़ै, आ उजरा चकत्ता मेटा जाइ।

–ठीक छै हम सोचिक कहब। अहाँ एखन किछ नञि सोचू। डा० गांगुली असली मनुष के ताकि कऽ आनत।'

आइ काल्हि हमरा सभक सहानुभूति भेंट रहल अछि। सबसे पहिने मां बड़का भैया कें हमर माथ देख बैत कहलथिन।

'देखहि अठन्नीक बराबर उज्नर चकत्ता भऽ गेलैए।'

मां, अहाँ चिन्ता जुनि करू। जँ एतऽ ठीक नञि हेतै तऽ हम एकरा बम्बई लऽ जेबै इलाज कराबऽ। 'छोट-पैघ सब देखलक। बुल्लीकऽ अहिना माथ मे कतेक ठाम केश उड़ल छै आ उज्नर चकत्ता भऽ गेलैए। मुदा तैं की ओ तऽ लड़का छै। हँ, हमरा कोनो रोग ग्रसित कऽ लेत तऽ हमर ब्याह कोना हेत?' दोसर दिन मां हमरा लऽकऽ नानीक घर गेलीह। नानी हमरा माथक केश हटा कऽ उज्नरा दाग देखलनि तऽ माथ पर हाथ घऽ बैसि गेलीह– ए कस्तुरी! एकटा नीक जकॉं इलाज कराबऽ पड़तै। लड़की छै ब्याह-दान करबा मे कठिनाइ हेतै। मामा, मामी देखलनि। मामा कहलथिन–'बौआ, कलकत्ता मे तऽ एकरा टोप डाक्टर छै डा० बी० सी० राय। तोरो ओकरे सँ इलाज भेल छलौ।' ताहि पर मामी बजलीह–मुदा ओतऽ आइ काल्हि पेशेंट के देखते नञि छै।'

–'अरे, पाइ रहऽ चाही। टका मे बहुत तागत छै। टका छै तऽ सब छै टका नञि तऽ किछ नञि। टका भेला सॅं कलिया मुनिम के आब लोक कालूराम जी

कहै छै।'

मामा डाक्टर राय सॅं बात कयलनि। समय लऽ लेलथिन। मामा मामी आ हम डा० बी० सी० राय ओत गेलहुँ। डा० राय विटामिन क इंजेक्सन सप्ताह मे तीन-दिन लेबऽ कहलनि। पानि सन कोनो लोशन देलनि आ केश मे जवाकुसुम तेल लगाबऽ कहलनि। डा० साहेब मामा कें कहलथिन–'किछु दिन मे बिमारी जड़ि सॅं खत्म भऽ जेतै जँ ठीक नञि हेतै तऽ डा० बी०सी० राय अपन नाम बदलि लेताह।

धुरती काल मामीजी हमरा रैली सिंह के गुलाबक शरबत पिऔलनि। हमरा एतेक इम्पार्टेन्स क्यो कहियो नञि दैत छल। हम तऽ कल्पनो नञि करैत छलहुँ जे मां हमरा डाक्टर सॅं इलाज कराबऽ लऽ जयतीह। आब बुझलिऐ मां बड्ड नीक छथि हमरो सॅं स्नेह छैन्हि।

दू दिन सॅं तेहन अन्हर बरसात भऽ रहल छै जे सूर्यक दर्शनो नञि भेल। नीचाँ उफनैत समुद्र ऊपर बरसैत आकाश। मोटाक मोटा पानि उझलि रहल छै आकाश तइओ नञि तृप्त होइत छै समुद्रक पिआस। जतबा पानि पीबै'छ समुद्र ततबे नशा मे मां तल रहै'छ। समुद्रक सतह गतिहीन छै, बरखा क चोट सॅं लहरि लगै'छ स्तब्ध! एखन हम बाहरे सॅं टहलि कऽ अबि रहल छली। छाता लऽ कऽ गेल छलहुँ मुदा तइओ ऊपर सॅं नीचॉं धरि भीजल छी किछ लोक एसगर रहऽ मे घबराइत छै। तैं मन बहटारऽ लेल ककरो सॅं दोस्ती कऽ लै'छ सेह तें सब गप्प-सप्प मे मगन छल। हम सोचैत छलहुँ कतऽ बैसि हॉल मे की लाउन्च मे। मदा लाउन्च मे त कतहु जगह नञि छै। जर्मन दम्पति भरि दिन ताश खेल मे मस्त छल। जोसेफ हमरा कहलक 'मैडम! अहाँ कनिएक प्लम ब्रांडी लऽ लिअ।' हम एक घोंट पीलहुँ कि बुझाएल जेना कंठ सॅं पेटक अॅतरि धरि आगि लेस देलक। ओ बाजल–'मैडम! ब्रांडी ताहू मे प्लम ब्रांडी एना नञि पीअल जाइछ।'

हम ओकरा कहलिए –'जोसेफ अहॉं कहलहुँ दवाई जकॉं पीब जाउ तऽ हम पी लेलहुँ मुँह कान सॅं लऽ कऽ कंठ करेज सब मे धाह दऽ रहल अछि!'

–मैडम घाह तुरते ठीक भऽ जाएत। हं एसागर बैसल छी। चलू, दू टा अमेरिकन काल्हि ए आयल अछि ओकरा सँ दोस्ती कऽ लिअ।'

–'नञि, जोसेफ। अमेरिकन बड्ड बजैत छै आ हम......।'

–हँ, हँ, हम बुझि गेलहुँ अहॉंके एकान्त प्रिय अछि अहा लेखिका छी।'

हमरा हँसी लागल। सत्ते अइठाम लेखक के बड्ड सम्मान छै। 'मैडम!

अहाँ कोन भाषा मे लिखैत छी?'

–'हिन्दी मे।'

'अंग्रेजी मे कियेक नञि लिखैत छी?'

'हमरा लेल ओ विदेशी भाषा अछि।'

'मुदा हम पढ़ित हुँ.........।'

–'ठीक छै कहियो अंग्रेजी मे अनुवाद कऽके पठा देव।'

'धन्यवाद! मैडम आब मोन केहन लगैए। आब तऽ कनिको ठंडा नञि लगैत हेत?'

'नञि सत्ते कनिको ठंडा नञि लागि रहल अछि। प्लम ब्रांडी क लेल धन्यवाद आब तऽ ताजगी महसूस कऽ रहल छी।'

–'वेश तऽ मैडम आब अहाँ लंच कऽ लिअ। हम वेजिटेबल प्लेट सजा दैत छी।'

'जोसेफ! किछ और नञि भेंट सकैए। एहन मौसम मे ई टीन वेजिटेबल। ऊँ हूँ।। ओहूना इ खाइत–खाइत मोन ऊबि गेल अछि।'

'जोसेफ उदास भऽ गेल। फेर किछु सोचैत बाजल मैडम अहाँ लेल कढ़ी बनबैत छी। राइस एंड कढ़ि।'

'बना लेब ?'

'हं, कियेक नञि। अहॉ पहिने फरमाइश कयने रहितहुँ। हमरा तऽ होइत छल जे डाक्टर अहॉ कें ऊसनल तरकारी कहलक अछि। बेलग्रेड सॅ अहॉक दोस्त इएह निर्देश देने छलाह।'

–फिलिप! ओह! तऽ ई फिलिपक कारस्तानी छै। सॉरी। जोसेफ, हमर दोस्त किछ वेशीए हमर ध्यान रखैत छथि। आब अहा कैँ जे इच्छा होमय बना कऽ दिअ।'

जोसेफ खुश भऽ गेल। ओ कहलक आइ राति मे अहाँ कैँ स्पेशल 'कीश' बनाकऽ खोआब आ ओकरा संग चीज बॉल। ओह हमरा पहिने कहने एहितहुँ। सॉरी वेरी सॉरी!!'

'गलती हमर अछि अहॉ क कोन दोष?'

जोसेफ टमाटरक रस मे तरकारी सिझौलक नीक स्वाद छलै भातो बढ़ियाँ छलै आ ताहि संग छलै' स्टाबेरी टर्टि। मुँह क स्वाद कतेक दिनक बाद बदलल। विछाबन पर सूतिते प्लम बांडीक असर बुझाएल। खूब गहरा निन्न मे सूतलहुँ। निन्न टूटल तऽ खिड़की लग जा कऽ ठाढ़ भेलहुँ। समुद्र मे खसैत मूसलाधार वर्षा आ धुआँ–धुआँ सन उठैत समुद्री लहरक बाहरि। सप्पूर्ण शहर

भींजल तितल। चट्टान पोर–पोर भीजल ओइ पर पड़ैत बौछरक नजारा अद्भूत लगैत छल। लगैत छल खिड़की लग ठाढ़ छी से हवा तऽ लगिते छल पानियो पीबऽ रहल छी। थोड़ेक काल एहिना ठाढ़ रहलहुँ। बॉलकनि मे एखन बैसब कठिन छै। तऽ की करू? लिखू बुझाएल जेना जूडी आदेश दऽ रहल अछि। मुदा एहन मौसम मे एना एसगर –एसगर ....? त की भीड़ भाड़ मे लिखल जाइछ? अपन बेवकूफी पर अपने हॅसलहुँ।

एसगरक तहे–तह जिनगीक झंकार सुनाई पड़ल। बरसाक कारण माटिक सोंह सुगंध नाक मे हलचल मचौने छल। चारू भर धुंध छलै तैं ककरो चेहरा–चिन्हब मुश्किल छल।

कखनौ कऽ बरसाक बौछार कम भऽ जाइत छलै तऽ बीच–बीच मे बत्तीक झिलमिलाहट झलकैत छल। बुझाइत छै आइ बरसा घुटतै नञि। भोरे उठि कऽ हम बॉलकनि मे गेलहुँ। बरसा थम्हि गेल छलै। ताजा खिलल गुलाब सन भींजल भोर का समुद्र क शान्त लहरि बड्ड नीक लगैत छल। सबटा मकान राह–बाट, गाछ–बिरीछ फूल–पात सब मे ताजगी छलै।

मन मे अजीब बेचैनी महसूस भऽ रहल अछि, माथक नस मे तनाव। भीतर मे किछु घुमड़ि रहल अछि। अथाह समुद्र। गरजैत लहरि संग किनार पर ठाढ़ि एसगर छी। निस्पंद। कतहु सॅ आवाज आबि रहल छै मुदा हम नञि सुनि रहल छी। समुद्रक लहरि के शोरगुल मे आवाज स्पष्ट नञि भऽ रहल अछि तथापि चेष्टा करैत छी। के अछि ओइ पार? समुद्रक ओइ पार, क्षितिज के पार जतऽ जमीन क कोनो कोन मे हम सब संग छलहुँ........ जतऽ हमर घर छल, बाबूजी छलाह। गप्प कर ऽ चाहैत छी सबसॅ जे बहुत पॉछा छुटि गेल।

'हेलो आपरेट?'

'यस'

'कैन यू गिव मी दिस नम्बर?'

हम ओकरा फिलिपक नम्बर दैत छिऐ। एमस्टरडमा सॅ पचास मील दूर वाल वाइक कैँ जतऽ फिलिप आ जूडी रहैत छयि। व्यापारक रिश्ता घनिष्ठ मित्रता मे बदलि गेल अछि। नि:स्वार्थ, निस्पाप पारस्परिक सद्भावना। किछु ए दिनक परिचय क बाद व्यापार के फरक कोनों कंपनर मे राखि देल गेलै। व्यापारे तऽ करैत छी हम सब। ढ़ेरो व्यापारी एकटा भऽ जायत, किनऽ बला बेच बला मुदा मीत? बड्ड मुश्किल सॅ भेंटैत छै मन क मीत ई कहब छैन्हि जुडि कैँ।

हेला! .... हं, फिलिप.........हैँ हम एकदम स्वस्थ छी। की....

आवाज मे उदासी? नञि एहन कोनो बात नञि। हं, हम चाहैत छी किछ दिन आब अहीं सबके संग रहि?.... नञि हम कतहु घूमऽ नञि जाए चाहैत छी। बस हमरा अहिंक घर....। ओह फिलिप फोन पर सबटा नञि कहि सकब। .... ओह अहॉ तऽ सदिकाल जेट स्पीड मे रहैत छी। जूडी कतऽ छथि? ऑफिस मे? कहि देवैन्हि हम याद करैत छिऐन्ह। ओ के भोजन करैत काल हम फेर सोचऽ लगलहुँ। मां आब कतेक वर्षक भेल हेती? पचासीक ऊपर त अवस्से भेल हेती। लगैं'छ दिनोदिन हुनके जकां शिथिलता आ चिड़ चिड़ापन हमरा रग-रग मे लहु संग दौड़ रहल अछि। की तैं हम कहियो अपना के नञि स्वीकारि पबै छी? अर्न्तमन मे दस वर्षक अबोध लड़की कें जीबैते जरा देलिए। नञि, हम ओहन औरत नञि बनऽ चाहैत छी?

मां अहॉ जकॉ या दीदी सब जकॉ जिनगी कें हम नञि स्वकारि सकैत छी? ने बड़की भाभी जी जकां भीतरे-भीतर कुहूकैत मरऽ चाहैत छी। तइओ परम्पराक जड़ि हमर पछोड़ नञि छोड़ि रहल अछि। युग-युग करे एहन अमानवीय परम्परा के कोन रोगक नाम देल जाए जकरा कारण हमरा सन विद्रोही महिनाला समर्पित पत्नी आ मां बनऽ लेल विवश होइछ। हम तऽ जिनगीक बहुत लम्बा हिस्सा मां सन नञि बनऽ मे बितेलहुँ संघर्ष करैत। तथापि इच्छाा मां प्रसन्न रहथि,....... मुदा नञि ओ तऽ बाबूजीक मुइला क बाद अपना जीवन क रेगिस्तान बना लेलैन्हि। ने कतहु जायब ने ककरो सॅ कोनो तेहन मैत्री।

बाबूजी जाबत जीवित छलाह हमरा लोकनि प्रत्येक साल पूजाक छुट्टी मे लाव-लश्कर संग यानी महराज, मुनीम, चारि टा ढ़ेनामा, देनमी, दूनू भाई सल्लो दीदी कलकत्ता सॅ बाहर जाइत छलहुँ। से हो दूर-दूर कहियो हजारीबाग तऽ कहियो जसीडीह या देवघर। बिहारक लाल-लाल माटि, सांय-सांय करैत शीतल बसात, ऊबाऊ दुपहरिया आ कखनौ नञि खत्म हुअबला राति।

जाय सॅ पूर्व डाक्टर गांगुलीक सोझा मे सब घिया-पुताक वजन लेल जाइत छलै। डायरी मे मुनीम जी नाम संग सभक वजन नोट करैत छलाह। मां कहैत छलथिन-'बच्चा सभ दुबरा गेल अछि। बंगालक अइ बरसाती मौसम मे बाहर रहत त शरीर स्वस्थ रहतै।' डा० गांगुली ताहि पर टिपैत छलाह हं सात्ति कहै छथि एतुका गरम हवा ऑत के सड़ा दै छै एखन बच्चा सभ लेल पाश्चिमक के हवा जोरूरी छै।8 मां स्वयं बिमार रहैत छलीह बाहर जायब हुनको लेल जरूरी छलै। तऽ एक मास पहिने सॅ तैयारी शुरू होइत छल। सबसे पहिने एकटा कोठी भाड़ा पर लेल जाइत छल। सल्लो दीदी लिस्ट बनबैत छलीह कोन-कोन बक्सा जेतै। बड़का बड़का लोहाक कारी बक्सा मे कोनो मे बर्तन-बासन कोनो

मे भोजनक सामग्री कोनो मे दवाई, गरम कपड़ा सभक ओढ़ना बिछौना बिस्तरबंद बड़का-बड़का बंडल। स्टेशन पर बाबूजीक परेशान चेहरा। कालूरामजी के रूपैया क थैली सम्हारबाक डियुटी बड़का भैया क सख्त आदेश। तखन पहुँचैत छलहुँ हजारीबाग क सुनसान जंगल क सुन्न बंगला मे। बंगलाक चारू भर बड़का बड़का गाछ-बिरीछ। दाई मां सॅ राति मे हरिया बतिआइत छल-'मौसी काल्हि राति ओइ गाछ तर भूतनी बैसल छलै।'

'सच्चे।'

'हं, हं हम सुनने रहिऐ छन-छन आवाज अबैत छलै मोन तऽ भेल लग जा कऽ देखिए मुदा ऽर भेल।'

-'हे भगवान! एहन गलती नञि करिहे जान चलि जेतौ।'

-'हम पूछलिऐ-दाई मां भूतनी कें लोक कोना चिन्हतै?

-'भूत-प्रेत क डरेँ वरके गाछ लग चबुतरा छै ओम्हर क्यो नञि जाइत छल। खाली दाई मां जाइत छल शिवजीक जल ढ़ारऽ। दाई मां कहैत छल-'भूत प्रेत शिवजी लग रहिते छै।

-पहिल सप्ताह नीक जकॉ बीतैत छल। मां अपन दवाई बिरो बन्द कऽ लैत छलीह। भोजनक रूचि बढ़ि जाइत छलैन्हि आ खोराको। राधा कहैत छलै-जॅ मैडम तीन मास एतऽ रहथि तऽ पूर्ण स्वस्थ भऽ भयतीह। मां कहैत छलथिन तीन मास तऽ नञि सवा मास धरि अवश्य रहब, धनतेरस दिन कलकत्ता। पहुँचब।

सप्ताह बीतैत-बीतैत राधा आ दाई मां क बीच लड़ाई शुरू भऽ जाइत छलै। मां क आर्डर छल धिया-पुता के तेल-उबटन राधा लगेतै। राधा कामचोर ककरो ठीक सॅ मालिश नञि करै ताहि पर दाई मां टोकि दै।

फेर महराज क भोजन हमरा सभकेँ नीक नञि लगैत छल। रोज सजमनि आ पालक, मूंगक पातर दालि। आलू-मटर कोबी कहियो पत्ता कोबी। सब मे एके स्वाद। जीर आ हींग सॅ छौकल हरैद, धनियॉ, लाल मिरचाईक क सूखल पावडर आ खटाई। हं तऽ झगड़ा होइत छलै भानस धसे चमेलियाक मां गेलै सब धुआ गेल। चमेलियाक मां जाइत छल जखन महराज इनार पर स्नान करैत छलाह। ओ धिया-पुता लेल पिआज दऽ भुजिया बना दैत छलै से पिआजक गंध लगैत छलैन्ह महराज कें। दोसर हल्ला होइत छल जे लछमनियाँ पानि छू देलकै। हरियाक ई हिम्मत जे बच्चा सभकेँ टमाटरक सलाद मे पिआज दऽ देतै? महराज जी चौकला-बेलना पटकि कऽ पछुआर मे जाऽ कऽ बैसथि। घ मे सब खेतै आ ब्राह्मण कोणा भूखल रहताह तैँ दाई मां पूरा रसोई धो पोछि

दैत छलथिन। तइओ ओ गरि-सराम दऽ रसोई मे जाइत छलाह। हम दाई मां के कहैत छलिए - 'दाई मां अहां महराज के मनाबऽ किये जाइत छी ओ गारि सराप दैइ ए।'

-जाय दिऔ बुच्ची! ब्राह्मणक गारि, सराप आर्शीवाद होइ छै।

एक दिन हरिया बगीचा मे दू टा ईंट जोड़ि कऽ लकड़ी जरा कऽ लहसून-पिआज आ गरम मसाला दऽ कऽ खिच्चड़ि बनौलक आ बगीचा सॉ गाजर-मूरै आ टमाटर पिआजक सलाद संग केरा के पात पर परसि कऽ बच्चा सभके खुऔलक। सब प्रसन्न भऽ खूब खेलक। महराज जी क मक्खन वला टिकिया घयले रहि गेलै। एहन बेइज्जति। महराज जी बड़बड़ाइत गेलाह मुनीमजी लग-'मनीम जी हम तऽ चललहुँ बहुरानी के कहि देबैन्ह।' मुनीम जी कतबो खुशमद कयलनि, मुदा ओ सरपट भगलाह लछमिनियॉ स्टेशन घरि हुनका पाछु गेलै मुदा ओ टेनू मे बैसिए गेलाह। हुनकर राम छलैन्ह सुजानगढ़। हम सब खूब खुब खुश छलहुँ। महारज जी लहसून पिआज नञि दैत छलाह कथु मे। आब दाई मां आ हरियाक हाथक बनल खास खास तरकारी बनत आलूदम, आलूबड़ी, पिआज बला भुजिया आ सांझि मे पिआजक कचड़ी भेँटत।

सप्ताह बीतैत-बीतैत भानसघर अराजकता सॅ मां परेशान भऽ गेलीह। मुनीम जी अलगे बड़बड़ाइत छलाह -'बहुरानी! नोकरी करैत छी तकरकी मतलब छुआछुत के नञि मानी? सब धिया पुताक मुँ सॅ लहसून-पिआजक गंध अबैत छै। घी मे बनल बदामक हलुआ रसखले रहि जाइछ आ सब चाट पकोड़ा खाइए। एतेक तेल मसाला धिआ पूता खाएत तऽ लीवर खराब भऽ जेतै। ओना मां लेल बिनु तेल मसालाक तरकारी बनैत छलै तइओ रोज झमेला होइत छल। मां क माथा गरम भऽ गेलैन्हि जखन बाबूजीक संग तीन-तीन टा गाड़ी मे हुनकर मित्र अन्तिम सप्ताह बीता बऽ आयल छलैन्हि। दिन भरि ताशक महफिल आ पर चाह। नास्ता लेल बाबूजी कलकत्ता सॅ अनने छलाह बीकानेरके भुजिया आ कलकत्ते सॅ बनबाक मूंग दालि के भरल कचोड़ी, रंग-बिरंगक मिठाई। मां क अनुसार तीनेटा मधुर स्वास्थ के लेल नीक होइछ मामड़ा बदामक बर्फी संदेश आ उजरा रसगुल्ला। सूजी आ खोआक तड्डू, गुलाब जामुन, पेड़ा इ सभ स्वास्थ लेल हानिकारक। बच्चाक सेहत लेल एकदम वर्जित ताहू मे सरोज आ नीलू दूनू रोगाही। कनिएक जॅ छींकत तऽ मा क हिसाब सॅ खान-पान के गड़बड़ी क कारण तैँ मां क अति सतर्कता के वजह सॅ हेल्थफूड एकदम स्वादहीन। आ मेनू लिखैत छलाह डाक्टर गांगुली। घी-तेल सॅ छह-छह करैत मारवाड़ी भोजन सॅ डा० गांगुली के चीढ़ छलैन्हि। एक बेर बरसात क सांझि मे

बाबूजी डा० गांगुली के ताशक महफिल मे शामिल कयने छलथिन भोजन मे बनल छल पचमेल दाल-बाटि आ चूरमा सूखल सांगर क मिरचाई मसाला बला तरकारी आ लहसूनक चटनी। मुंग, उड़िद, चना राहड़ि आ छिलकाबला मूंग के फेंटल गाढ़ दालि जकरा लौंग इलायची, दालचीनी दऽ घी सॅ छौकल गेलै। आ बाटी तऽ लिट्टी जकरा गोइठा पर सेद कऽ घेक डेगजी मे डूबा देल गेलै। चुरमा मे तऽ घी पुस्ट सॅ देले जाइत छै खादार ऑटा मे मोयन दऽ कड़ा सानिकऽ मुड़िया बनाकऽ घी मे तरह जाइत छै। फेर चीनी आ इलांइची घऽ कऽ कुटि कऽ आधा-आधा पौआक लड्डू बनलै। डा० गांगुली सबक संग खूब स्वाद लऽ खयलनि। मुदा राति मे हुनकर मोन खराब भऽ गेलैन्हि। बारह बजे रति मे फोन एलै अरे भाई मि० सांवर जी हमरा की खोआ देलहुत्र तेहन कड़ा लड्डू छलै जे पेट मे गुड़-गुड़ करैए।

बाबू जी ओतेक राति मे नेबोक रस मे सुखाएल हरियर पीपरवटी आ पत्थर हजम चूड़न दादी क बनाओ लऽ कऽ गेलाह। गरम पानि संग चूड़न खयने कनिकालमे पेटक गैस बहरे लैन्ह त चैन सॅ सूतलाह डा० गांगुली के किछ भऽ जेतैन्हि तऽ मां क की हेतैन्ह एहन नीक लोक कतऽ भेँटत।

ताहि दिन सॅ मारवाड़ी भोजन सॅ डा० गांगुली ए के नञि बल्कि मां क मन मे बैस गेलैन्हि जे ओ गरिष्ट होइत छै। डा० गांगुलीत चीढ़ले छलाह मारवाड़ी भोजन सॅ तैं मां के कहैत छलथिन जे 'बच्चा देर ओइ झोल भात दिन आरा कांचा कला आर पेपे शेद्धो।'

बाबूजी कैँ हजारीबाग अबिते आर झमेला बढ़ि गेलै। एक तऽ गोविन्द महाराज रूसिक चलि गेल छलाह। बीस लोकक नास्ता, भोजन, पिकनिक के समान दाई मां दिन भरि भानसे घर मे रहैत छलीह। मां किछ करतीह से ककरचनो नञि कयल जा सकै'छ। बड्ड करती तऽ चटनीक लेल धनिक पात, पुदिनाक पात बिछ-चुनि कऽ राखि देतीह आ एहु लेल टोपिया मे पानि आ हाथ मे तौलिया नेने नर्स राधा ठाढ़ रहैत छला। हं, मोनपड़ल भोजनक संदर्भ मे मां क बनाओल खिच्चड़ि। साओनक मास छलै। महराज गाम गेल छलाह। कलकत्ता मे खूब जोर सॅ फ्लू पसरल छलै। हम बड़का भैया, मां आ बाबूजी के अलावा सब बिमार छलै। दाई मां क देह आगि जकॉ गरम छलैन्ह आ भोर सॅ हरियो माथ पर पट्टी बान्हि सूतल छल। लक्ष्मीनियाँ आ राधा मिलकऽ खाना बना सकैत छल मुदा मां क छुआ-छुति बला रोग छैन्हि। धर्म-कर्म जाति पाति के वहम माि मे कुंडलीमारी कऽ बैसल छनि। खासकऽ मेहतर सॅ बडड घृणा छैन्हि। मेहतर के चढ़ऽ लेल फरक सॅ सीढ़ी बनल। आलीशान आधुनिक मकान

रहैंत मां कें कारण एटेच्ड बाथरूम नञि बनल। तैं स्नान घर फरक छै। दू टा लैटरीन एकटा अंग्रेजीक स्टाइल बला एकटा भारतीय। पेशाब घर फरक। माटि सँ हाथ धोबऽ पड़ैत छल बाद मे लाल साबुन सँ हाथ धोबऽ लगलहुँ डा० गांगुली के कहला पर। बड़की टा स्नान घर जाहि मे एक दिन बाथटब छल तऽ दोसर दिसन चबुतरा बैस कऽ स्नान करबाक लेल, इटालियन मार्बलक बसिन छलै मतलब पूरब आ पछिम स्टाबूलक खिच्चड़ि। मेहतरक सीढ़ी पर आर क्यो लात नञि घऽ सकैत छल। मेहतरक सीढ़ी पर आर क्यो लात नञि घऽ सकैत छल। मेहतर ग्यारह बजे घरि शोर पाड़ैत अबैत छल 'पानि दिअऽ।' ओकर नल धुबऽक मनाही छलै। लछमिनियाँ नल खोलिकऽ बाल्टीए बाल्टी पानी दैत छलै मेहतर कें मेहतर आबि गेलै मे सुनिते मां नाक पर रूमाल घऽ घर मे बैसि रहैत छलीह। मेहतर के गेलाक बाद लछमिनियाँ बाथरूम आ लैट्रिन खूब पानी उझलि कऽ साफ करैत छल। एहि क्रिया कलाप मे करीब एक डेढ़ घंटा लागि जाइत छलै अइ बीच मे जँ ककरो पैखाना लागि जाय त आ छटपटाइत रहैत छल। लछमिनियाँ जखन साफ कऽ बाल्टी लऽ कऽ हॉल पार कऽ ऊपर जाइत छल तऽ रामू हॉल मे पोछा लगबै'छ।

हम कहैत छलहुँ मां क रसोई के विषय मे। हरिया के अचानक बहुतर जोर सँ बुखार लगलै आ लछमिनियाँ त मेहतर कें पानि दैत छलै फेर बाथरूम साफ करैत छलै तैं मां ओकरा अछूते बुझैत छलथिन। रामू कपड़ा साफ करऽ गेल छलै। राधा नर्स क्रिश्चियन छै रसोई घर मे कोना जाएत। शंभु बाबूजीक नौकर छैन्ह ओ भोरे आमक पथिया लऽ बड़की दीदीक सासुर गेल छल एखन धरि घूरल नञि। साढ़े ग्यारह बाजि गेलै आधा घंटा मे बाबूजी जूट मील सँ आबि जेथिन आ खाना नञि बनलै। भोर मे सबके दवाई आ बार्ली बनाकऽ हम देने छलिए।

खाना बनाबऽ हमरा अबितो नञि अछि। हारि-थाकि कऽ मां गेलीह रसाई घर मे। आलू उसनऽ लेल चुल्हि पर चढ़ौलनि। थारी मे चाउर तऽ कऽ सुनऽ बैसलीह। राधा के कहलथिन सबके अनारक रस निकालिकऽ पीयाबऽ। हम कहलिएन्ह 'मां आइ भोर सँ दाई मां किछु नञि खयने छथि।'

मां झनकैत बजलीह-क्यो मना कयने छै? कियेक नञि खाइत छै? राध ा बात के नमरबैत बाजल हम त कतेक बकर खाय लेल पूछऽ गेलिए किछ खाइते नञि छै। हमरा चुप्प नञि रहि भेल-'झुठी कहीं के। एको बेर दाई मां क रूम मे झांकऽ नञि गेल अछि। मां हम दाई मां कें दूध दऽ अबिए?

'हं, आ जँ साबूदाना या बार्ली खेतई तऽ दऽ दिहे बुखार उतरलै की

नञि थर्मामीट लगाकऽ देख। चमेलियाक मांक बिमार पड़ने हमर हाथे-पैर टूटि गेल अछि।'

हम दूध लऽ कऽ जाइत छलहुँ तऽ सुनलिऐ मां कें राधा कहैत छलै-'प्रिया कें दूध लऽ कऽ कियेक जाय कहलिऐ फ्लू के धूत जल्दी पटैत छै। चमेलियाक मां के बुखार हेतै नञि ओ भारे-भोर उठि कऽ नहाएत पूजा करत बड़का पूजारिन बनैए। हमहूँ सब तऽ जीसू के मानै छी।

हम घुरिकऽ मां के कहलिएन्ह मां राधा के कहि दिऔ दाई मां क आदगोई बदगोई बंद करय नञि तऽ ओकरो बुखार लागि जेतै।'

- मां, कहलनि-'अच्छा जो चुपचाप।'

'हम जल्दी जल्दी सीढ़ी पर चढ़ि दाई मां क रूम मे गेलहुँ। माथ छू कऽ देखलिएन्ह-दाई मां आब के हम मन अछि?' दूध पी लिअ।

दाई मां कहलनि-'मोन बड्ड बेचैन लगैए। हम एखन दूध नञि पीयब।'

ओहिठाम हरिया सूतल छलै। दाई मां दूधक गिलास हरिया के दैत बजलीह ले दूध पी ले। हम बूढ़ पुरनियाँ छी ठीक भइए जेत।

हरिया गटागट दूध पी गेलै हमरा नीक नञि लागल। आइ भोर मे हरिया नास्ता कंयनहि छल ओकर बाद आकरा बोखार लगलै। तैं हम दाई मां के कहलिए 'फेर दूध लऽ कऽ अबै छी।' दाई मां मना कऽ देलनि। कहलनि-नञि हमरा एक गिलास पानि दिअ आ पोटरी मे बान्हल धानक लावा छै आ गुड़ से खोलि कऽ दिअऽ।'

दाई मां लावा गुड़ खा, पानि पी नीचां उतरल। रसोई घर मे खिच्चड़ि चढ़ल छलै मां पीढ़ी पर बैसल छलीह राधा पाछू मे ठाढ़ हुनका पंखा हौंकैत छल।

दाई मां के देख कऽ मां बजलीह-'चमेलिया मां कियेक नीचाँ उतरलें हम बना लेबै खिच्चड़ि आ साना।' तइओ दाई मां रसाई मे जा कऽ आलू के ठंडा पानि मे रखलनि आलू बड्ड गलि गेल छलै। फेर खिच्चड़ि के देखऽ गेलीह-हे भगवान! बहूरानी ई की बनेलहुँ? एतेक ने पानि धऽ देलिऐ चाउर-दालि के पते नञि छै?

'तऽ हम की करिए हमरा मानस घर मे गर्मी सँ माथ धूमऽ लगैए। आब जे भेलै से भेलै। अइमे नेबो गारि कऽ जूस जकाँ सबके पिआ देबै। आ, साहेब के? हुनको इएह जूस देबैन्ह?'

हम किछ नञि करबै सब इएह खाएत चल राधा हमरा माथ मे यूडिकोलोन लगा दे माथ फाटल जाइए। आ हमर प्रिय मां गेलीह अपना रूम

मे। जिनगी मे शायद पहिल बेर मां रसोई घर मे गेल छलीह। दाई मां बड़बड़ाइत छलीह छह बच्चाक मां छथि आ एकटा खिचड़ियो बनबऽ नञि अबैत छैन्ह। हमरा कहलनि–'बुच्ची अहाँ ई खिचड़ीक जूस सबके दऽ आउ। हम साहेब लेल' खाना बना दै छी।'

दाई मां कनि खिच्चड़ि अहूँ खा लिअ।

'सुनू तऽ हमर बुच्चीक बात। अरे घर क मालिक एखन खयलनि नञि ताबत हमहीं खाउ?' बुखार सँ धीपल शरीर बेर-बेर पसीना पोछत पयपन वर्ष क प्रौढ़ा आ तकर एहन स्वामिभक्ति.......एतेक ममता।

बाबूजी खाना खाय बैसलाह ताबत मां सैरिडानक दू टा गोली खा लेलनि आ बजैत छलीह–गृहस्थी औरत लेल बड़का अभिशाप छै। असल मे मां के अइबात क दुःख छलैन्ह जे सब एके बेर कियेक बिमार पड़ि गेल। सबसँ वेशी कष्ट छलैन्ह जे हरिया आ दाई मां बिमार पड़लै। तैं बजैत छलीह जे आब महराज आयत तऽ ओकरा नौकरी सँ हटाइए देबै हरबम गांव जइत रहैए। आई मां के मानस घर मे जाए पड़लनि खिच्चड़ि बनौलनि आ डा० गांगुली के अयलापर बच्चाक रूम मे बैसऽ पड़लनि। बाबूजी तुरत आफिस मे फोन कऽ कालूरामजी के कहलथिन जे जल्दी ठेका पर काज करऽ बला रसोइया पठाउ। आ डा० गांगुली के फोन प बहलथिन सांझि मे आबि कऽ फेर रोगी सब के देख लेबैं' हमर गाल थपथपबैत बजलाह ई हम्मर बहादुर बेटी अछि।

'हं, ई तऽ खा-खा कऽ पहलवान भऽ गेल अछि। मां खौंझ कऽ बजलीह।

नीक बात छै स्वस्थ अछि अंग्रेजी मे कहबी छै हेल्थ इज वेल्थ। अहाँ अहाँक खुश होमऽ चाही जे ई स्वस्थ अछि तैं अहाँक मदति कऽ रहल अछि।' हुनका सुनल नञि भेलैन्हि। झट आर्डर देलनि–'प्रिया जो सरोज के थर्मामीटर लगा कऽ देखहि।'

पता नञि कियेक आइ एतेक बात मोन पड़ि रहल अछि। घड़ि देखलहु रातुक बारह बाजि रहल छै।

समुद्रक लहरि कें मंथर स्वर सुनाई पड़ैत छल। आइ सेतीस्टेफा मे अन्तिम राति अछि। ऊठि कऽ बरांडा मे गेलहुँ। पूर्णिमाक राति छलै। चानी जकाँ चमकैत छै समुद्रक लहर। मंत्र मुग्ध बड़ी काल धरि निहारैत रहलहुँ फेर कुर्सी पर बैस गेलहुँ। छिट-फुट बहुत बात मोन पड़ल-इ सभ याद रहत-लिख सकबै? ठेकनाबऽ लगलहुँ हजारीबागक बात सब। बाबूजी आबि गेलाह। आब के तेल-मालिश करा कऽ रौद मे बैसत? फेर सुसुम पानि मे नीमक पात घऽ नहाओत। मां क सब योजना फेल भऽ जाइत छैन्हि। रोज सांझि मे गरम-गरम

नास्ता बनै छल बदलि-बदलिकर बाबूजी के बुझल छै माहाराज कें हन नास्ता भोजन बनबैत छथि तैँ सोहन महाराज कें ठेका पर बजालेलथिन। ओ नास्ता मे कहियो समोसा बनबैत छल तऽ कहियो गरम-गरम जिलेबी, कहियो आलू -मटर भरल कचौड़ी आ सूजीक हलुआ। सोहन महाराज के छुआ-छूति के रोग नञि छलैन्ह। तैँ दाई मां हमर पसिन्न के आटाँ बला हलूआ बना दैत छलीह गुड़ धऽ कऽ। एक दिन प्रोग्राम बनल हजारी बाग सँ सौ मील दूर राँचीक हुडरूफॉल पिकनिक पर जयबाक। बाबूजीक संग तीन टा गाड़ी आयल छलै। भरतीय जी आ बाबूजी पहिने राँची चलि गेल छलाह पिकनिक मे ओतई सँ पहुँचता। मां ओतऽ जयबा लेल किन्नहु राजी नञि भऽ रहल छलीह। बाबूजीक बहुत आग्रह पर तैयार भेलीह मुदा हुनकर शर्त छलैन्ह-अलगे गाड़ी मे जयतीह संग मे राधा नर्स रहतैन्ह आ हरिया। मां क टिफिन भोरे चारी बजे उठि कऽ दाई मां बनौने छलथिन-घी मे छानल नरम-नरम पुरी, आलू-मटर कू सूखल भूजिया आ नीबूक अंचार, छेनाक संदेश, थर्मस मे संतराक जूस। एकटा अटैची मै चारि टा तौलिया, साड़ी ब्लााउज, पेटीकोट, माथ दर्द क दवाई, उल्टीक दवाई, पेट ददर्क दवाई आ हार्ट बाला दवाई। दून्नू भाई बाबूजीक संग आगाँवला गाड़ी पर बैसलाइ। दादी मां घरक रखवारी करऽ डेरा पर छलीह। हुनकर कहब छलैन्ह हम की करऽ जायब कोनो कुम्भ के मेला छै। जखन गाड़ी स्टार्ट होमऽ लगलै तऽ मां आर्डर देलथिन एकटा बच्चा के हमरा संग बैसा दिउनै सब एके ठामा रहत तऽ ऊधम मचा देत। राधा गेट खोलैत बाजल-'आउ प्रिया अहाँ मां लग बैसू'।

'नञि हम नञि उतरब।' नञि जानि कोना आइ हमरा मुँह सँ विद्रोह स्वर बहराएल।

नञि सुनिते मां क पारा गरम भऽ गेलैन्हि। जोर सँ बजलीह 'उतरैत छँ की नञि?' हरिया जो ओकरा लऽआ। मन मे भेल कहिऐ-मां, हमर कोन काज पड़ि गेल? मुदा हिम्मत नञि भेल। आँखि नोरा गेल। तऽ मां राधा के कहलथिन- 'सरोज बात नञि मानैत आ बिल्लू तऽ बानरे छै भरि बाट तबाह कऽ दैत।' नीलू मां क दुलरूआ छै तैँ ओ कोना मे खिड़की लग बैसल छल। एकटा हमहीं दब्बू छी जे मां क हुकूम पर नचैत छलहुँ। सुनसान रास्ता मे मां राधा सँ बतिआइत रहलीह। 'राधा! हम तऽ फेर अस्वस्थ भऽ गेलहुँ। दस दिन मे जे कनि सुधार भेल छल सब चौपट भऽ गेल। साहेब जहिया सँ अयलाह हरदम हंगामा होइते रहैत छै बच्चाक संग बच्चे बनि गेलाह। संग मे दूचारि टा सब दिन दोस्त रहिते छैन्ह। हमर एहन शरीर, अहाँ तऽ कहियो स्वस्थ रहिते

नञि छी!' अरे हंम की स्वस्थ रहब। एतेक धिया-पुता के पालब पोसब आसान छै। किछुए दिन पहिले देखलहुँ ने बरसात मे सब बिमार पड़ल छल।

'हं, गांगुली बाबू तऽ कहनहि छलाह-अहाँ कँ एखन आराम करऽ चाही।'

घुर! हमार नसीब मे आराम लिखले नञि अछि। जहियासँ साहेब अयलाह अछि रोज घोड़ दौड़े भऽ रहल अछि।

'सत्ते कहैत छी। आब दूपहरो मे बच्चा सभ हल्ला गुल्ला करिते रहे छै। क्यो नञि सूतै छै।' 'राधा। हमर सभक जिनगी मे खुशी कहाँ? जहिया सँ विवाह भेल साले-साल बच्चा पर बच्चा। एकटा लड़कातऽ मुइले जन्म लेने छल। पहिल बेटी आठ वर्षक उम्र मे मुइल। चारिबेर तऽ ओगण (एबसिन) भेल। शरीर मे शक्ति रहत कोना? सुमित्रा के देखियौ चौदहम मे ब्याह भेलै आ पन्द्रहम मे बुल्ली भऽ गेलै।'

-'ह, ई उम्र मे कतहु बच्चा होइ?'

अट्ठाईस वर्ष क उम्र मे चारि-चारिटा बच्चा। तैं बुल्ली आ नीलू के हम अपने लग रखैत छिए। ऊ त चमेलियाक मां छै जे सबके सम्हारै छै।

'घुर, चमेलियाक मां कोन जोकरक छै। एकदम गंवार छै कनिको अक्किल नञि। प्रिया पर कोन जादू कयने छै जे अहां सँ वेशी मोजर प्रिया ओकरे दैत छथि।'

दू घंटा सँ गप्प पर गप्प होइत रहल अछि। राधा दाई मां के देखऽ नञि चाहै'छ तैं मौका तकैत रहै'छ हुनका विरोध मे बजबाक। हम खिड़की सँ बाहर माथ झुकौने नागपुरक पहाड़, जंगल आ आकाश मे घुमड़ैत बादल देख रहल छलहुँ। गप्प बंद भेलै तऽ मां क ध्यान इम्हर भेलैन्हि। हमरा कहलनि-'खिड़की बन्द कर ठंढ़ा लगतौ।' फेर हुकुम भेल-'सोझ भऽ कऽ बैस मुदा बजबाक साहस नञि भेल। सुसू करबाक छल से हो हिम्मत नञि कोना बाजू? आँखि नोरा गेल। अइ घर मे दाई मां क सिवाय आर क्यो हमर जरूरत नञि बूझै'छ। हम अपना के एकदम एसगर बुझैत रहलहुँ अछि। अनचाही सन्तान से हो बेटी! पेट मे दर्द होमऽ लागल बुझाइत छल आब उल्टी भऽ जाएत। एकाएक उल्टी भइए गेल। से हो मां क देह पर!

जुलूम भऽ गेलै। मां जोर से बजलीह-'गाड़ी रोकू, ड्राइवर जी।' राधा फरके चिचिआइत छल। हमरा सम्पूर्णशरीर ऐंठ रहल छल आ भयभीतभऽ मां दिस तकैत छलहुँ। ई हम की कयलहुँ? मां क चेहरा सँ घृणा आ जुगुप्साक भाव झलकैत छल। मां के तऽ मेहतरक नामे सुनि कऽ जी ओकिआए लगैत छैन्ह। गाड़ी रूकल। ड्राइवर-दौड़ल पानि आनऽ। मुदा पानि कतऽ भेँटतै?

पछिला गाड़ी मे पानि बला थर्मस छलै। मां काठक मुरूत जकां ठाढ़ छलीह सड़क पर। राधा तौलिया भीजाक उल्टी साफ कयलक। मां कुरूर कयलनि। राधा हुनका कपड़ा बदलि देलकैन्हि। मां बजैत छलीह-हमरा जी ओकिआ रहल अछि। राधा जल्दी-जल्दी गाड़ी साफ कऽ यूडी कोलोन छीटलक। मां गाड़ी मे बैसलीह। सरोज आ नीलू झाड़िक अढ़ मे सुसूकरऽ गेल। बुल्ली सड़के पर ठाढ़े ठाढ़ पेशाब कयलक। मुदा हमरा एखनो बकौर लागल छल कुरूर करबा लेल एक गिलास पानियो मांगबाक हिम्मत नञि भेल। मुँहक स्वाद खटाइन लगैत छल। आब मां क ध्यान हमरा दिस भेलैन्ह। राधा के कहलथिन हाथ-मूँह छोआ कऽ कपड़ा बदलऽ। ताबत नीलू के हरिया मांक गाड़ी मे बैसौलक। हम दोसर गाड़ी मे खिड़की लग बैसलहुँ। बुल्ली कहलक हम अपन सीट सँ नञि हटबै। सरोज बाजल-ले हमहीं बीच सँ उठि जाइत छी। कोन ठेकान फेर उल्टी हेतै तऽ? बुल्ली आ सरोज दूनू हमरा सँ हटि कऽ बैसल।

आगाँ गाड़ी गेलै तऽ देखलहुँ-बाबूजी गाड़ी रोकि कऽ ठाढ़ छथि। की भेलै? गाड़ी कतहु रूकलै छल? मां झुझलाकऽ सबटा बात कहलथिन। बाबूजी चिन्तित भऽ हमरा लग आबिकऽ पूछलनि बौआ, आब केहन मोन छौ? एखनो जी हौडै छी? अजय, एकरा जमाइन दहिं।' मन विहवल भऽ गेल अपना के संयत कयलहुँ।

हंडरू फाल पर सब नीचां उतरि स्नान करऽ गेल। मां हमरा मना कऽ देलैन्ह। फेर मोन खराब भऽ जेतै प्रतिवाद करबाक हिम्मते नञि भेल। राधा दिस ताकि कऽ मां बजलीह-उल्टीक दुर्गंध सँ माथ मे दर्द भऽ रहल अछि ऊपर सँ ई रौद! मां चट्टानक सीढ़ी पर उतरियो ने सकैत छलीह। तैं मां आ हम रहि गेलहुँ। राधा मां क पैर जँतैत छलीह। हम चुपचाप सीढ़ी दिस तकैत छलहुँ। दूर सँ अबैत झर-झर झरनाक स्वर कान मे जा पूछैत छल-उल्टी भेल ताहि मे हमर कोन दोष? खूब ऊपर पहाड़, पहाड़ सँ झहरैत पानिके झर-झा स्वर! मोने मन होइत छल मां, एहन अपूर्व सुख के कियेक नकारैत रहैत छथि आ अपना-संग-संग हमरो छोट-छोट सुख सँ वंचित रखैत छथि?

आधा घंटाक भीतर राम सिंह ड्राइभर दौड़ैत आयल।

-'बड़ा बाबूक पैर मे चोट लागि गेलैन्हि दू गोटे सहारा दऽ ऊपर आनि रहल छैन्हि।'

'की भेलै? की वेशी चोट लगलैए? घबराहट मे बड़बड़ाइत छलीह-पहाड़ पर चलबाक अभ्यास नञि छै। किछ भऽ जेतै तऽ? एक ने एक आफत अबिते रहै छ। हमर मोन ठीक हेएत कोना? कहियो शान्ति सँ समय बीतैत अछि?'

ताबत बाबूजी के सहारा दऽ हरिया अबैत छला। चोट गंभीर छले। दिहिना पैर क घुठ्ठीक हड्डी निकलि गेल छलैन्ह। पन्ना महराज जल्दी सॅ चूना लऽ कऽ अयलाह। मां धिया-पुता दऽ पूछलथिन- 'विजय आ अजय कत छै। आ तीनू छोटका?' बाबूजी कहलथिन -'नहा कऽ अबिते हेतै। एलैए मौज-मस्ती करऽ।' 'भेलै खूब मौज-मस्ती भऽ गेलै। भाई जी। आब हम हिनका लऽ कऽ कलकत्ता जायब। कहीं पैर मे अबाह भऽ जेतैन्ह।' मां क जिद्द क आगॉ ककरो वश नञि चललै। हजारी बाग जयबाक बदला दू गाड़ी मे मां, बाबूजी, बड़का भैया, बालू जी, हरिया आ राधा पुरूलियाक बाट दिस बढ़ल। एकटा गाड़ी मे छोटका भैयाक संग हम सब हजारीबाग घुरलहुँ। दू दिनक बाद पूरा लाव-लश्कर कलकत्ता चलल। सत्ते बाबूजी के चोट गंभ्झीर छलैन्ह। छह मास घरि ओ लंगारा क चलैत छलाह। आ मां सब दिन हुडरूफालक पिकनिक मादे बजैत छलीह।

एहिना हमरा लोकनि प्रत्येक साल मां क संग पश्चिमक हवा मे सॉस लेबऽ कहियो देवघर कहियो जसीडीह कहियो रॉची-तऽ कहियो हजारीबाग जाइत छलहुँ। हं, एक बेर 'पुरी' गेल छलहुँ कुल मिला कऽ सोलह वषक उम्रध रि मां क संग हमर वार्षिक छुट्टी बीतल छल। जाहि मे सब खेप हम एक-एक दिन गनैत बीतबैत छलहुँ जे कहिया ई छुट्टी खत्म हेत आ स्वास्थ लाभक कर्म कांड सॅ पिंड छूटत। जहिया ट्रेन सॅ घुरैत छलहुँतऽ बंगालक हरियरि देखते थप्पड़ी पीटैत छलहुँ-'सरोज देख, देख ने बाहर कतेक नीक लगैत छै धानक खेत। आ देखहि ने आम-कटहर बला गाछी। कतहुँ घरक चार पर सजमनि आ छिंगुनीक लती छलै तऽ कतहु खेत। आ देखहि ने आ छिंगुनीक लती छलै छलै तऽ कतहु कदीमाक लती। एक पतिआनि सॅ नारियरक गाछ बड़ड नीक लगैत छलै देख मे। बंगालक भूमि जत ने गर्दा-धूल ने खालि परती पॉतर! सौन्हगर माटिक महक सॅ मनात प्रफुल्लित भऽ जाइत छल नयन हरियरि देख जुड़ाइत छल। हमसब महालयाक दोसर दिन जाइत छलहुँ। पाँच-सात दिन छुरछुरि पटाखाक छोड़ में बीतैत छल। मां सॅ चोराऽ कऽ छोटका भैया दू सौ अनार बनबाकऽ अनैत छलाह एहि मे लछमिनियाँक पूरा सहयोग हुनका भैंटैत छलैन्हि।

दिवालीक चारि-पाँच दिनक बाद फेर घर क सोझा मे स्कूलक बस ठाढ़ होइत छलै। किताब-कॉपी लऽ जल्दी जल्दी भगैत छलहुँ बुझू जे जेल सॅ कैदी भगैत होई। सत्ते हमरा घर जेलखाना बुझाइत छल। कनि पैघ भेलहुँ तऽ बोर्डिग हाउस मे रहऽ लगलहुँ। हमरा स्कूलक दुनियॉ बड्ड प्रिय छल। संगी सभक स्नेह भेंटैत छल। शिक्षिका प्रशंसा करैत छलीह।

बहन जी मां क स्थान लऽ लेलैन्ह। हुनक घवल वस्त्र में श्वेत केश मे

आ शुद्ध आचरण तक कतहु बनाबटीपन नञि नजरि अबैत छल। हमर समस्त समस्याक व्यवहारिक समाधान करैत छलीह बड़ी बहन जी। ककरो बुझौ ने दैत छलथिन। कहियो मां के जाऽ कऽ बुझबैत छलथिन कहियो फोन पर कहैत छलथिन-'प्रिया के एन० सी० सी० कैम्प मे जाए दिऔ।'

आब दाई मां लग बैसऽ मे मोन नञि लगैत छल। आब हमरा लग छल मन लग्गु किताब आ संगी सहेली, आब दाई मां साल मे दू बेर कऽ गामो जाइत छलीह। हं एखनो राति मे माथ मे तेल घऽ चोटी बनेनाई आ तरबा मे बिनु तेल लगौने हुनकर मोन नञि मानैत छलैन्हि। बी० ए० मे जाइते हमरा संग पढ़वाली संगी सभक एकां एकी ब्याह होमऽ लगलै। सब से पहिने पुष्पा इंदौर चलि गेलीह। सुनीता बम्बई चलि गेलै। विभा पढ़ऽ दिल्ली चलि गेल आ सुधा के ब्याह भऽ गेलै। एकटा हमहीं मारवाड़ी प्रेसिडेंसी कॉलेज मे पढ़ि रहल छलहुँ। नव संगी, नया महौल को-एजूकेशन बला कॉलेज। विद्वान प्रोफेसर सब। आब बुझाना जाइछ जे आर्य कन्या महाविद्यालयक बहिन जी के कतेक कम ज्ञान छलैन्ह। मुदा ओ हमर घर छल। बाहरी दुनियाँ मे आब पैर रखलहुँ अछि।

किलाक पूब बला पहाड़ि पर सांझुक झल-फल दृष्टिगोचर भेल। नहुँ-नहुँ बसात फूल पात के छुबि रहल छै। अचानक नजरि गेल शान्त समुद्रक लहरि कैं डूबैत सूर्य देख खितिज दिस लहराइत। आकाश मे अन्हार पसरल जाइत छै आ सब दिस परछॉही कें पकड़ि पबैत छी? सबटा कोना मिझराएल जाइछ। सुख:दुख, धूप-छाँह रोशनी मे सभक भुतिएनाई। कतऽ कतऽ ताकू? मोनक कोन-कोन कोना मे झाँकू? जिनगी केहन रहस्यमय भऽ जाइत छै जखन अहाँ ओकरा आखर मे अभिव्यक्त नञि कऽ पबैत छी। जखन कि अहाँ प्रयत्नशील रहैत छी पारदर्शिता देखयबा लेल। मुदा कि जिनगी कें सिसोहि कऽ व्यक्त कयल जा सकै'छ?

ऊँच आर ऊँच हिलोर लैत लहरि। सूर्य निपत्ता भऽ गेलाह समुद्रक फेन में। ओना लाली खत्म नञि भेलैए। हम मुग्ध भऽ देख रहल छी समुद्र में नील आ लाल रंग क छिड़काव। शान्त, निस्तब्ध गोधूलि बेर, हल्लुक सन स्पर्श सॅ जेना एक क्षण लेल सब किछु ठहरि गेल होइ पुन: सांझ बसातक ऑचर पकड़ि क्षितिज दिस भगैत अछि। आ हमरा भीतर एक टा सुप्त वेदना सिसकि उठै'छ।

थाकल सांसक संग हमर ऑखि दूर-दूर धरि-अन्हार मे किछ टटोलि रहल अछि। स्मृतिक अयना मे एक पर एक झलकै'छ। पहिने की सोचू आ ककरा पाछू धकेल दिअ। कल्हुका गोछूली वेला मोन पड़ल। भरि दिन बरसैत पानि प्लम ब्रॉडी.......... फेर अतीतक घटना क विषय मे सोचैत-सोचैत सूति रहब।

भोर मे कॉफी क कप।

मोन पड़ै'छ तहिया हम बी० ए० अन्तिम वर्ष मे छलहुँ। मूसलाधार वर्षा भेल छलै। सड़क पर बुझाइत रहै जे नदि बहि रहल छै। घर जेनाई असंभव छल। किछ लड़का-लड़की जकर घर लग छलै से हाथ पकड़ि-पकड़ि पानि ठेलैत आगाँ जाइत छल। संझुका साढ़े चारिए बाजल छलै। दूर जकर घर छै से कोना जाएत? हमर एकटा सहपाठी असीम लैंस डाउन रोड लग रहैत छल। सीधा सादा लड़का। देखबा मे खूब सुन्दर। प्रायः लाइब्रेरी सॅ घुरैत कावल ओकरे संग बतिआइत घर घुरैत छलहुँ। ओकरे कहलिए-'चलब पैदल।'

-'एतेक डॉर भरि पानि मे?'

'केहन डरपोक छी?'

'वेश चलू।'

रमेश बाबू हमर दर्शन विभागक प्रोफेसर, ओहि ठाम ठाढ़ छलाह।

-'ई प्रिया जे अछि.....

हम झटकि कऽ बदलहुँ जेना किछ नञि सुनने होई। दू घंटा मे हम सब लैंस डाउन रोड के मोड़ घरि पहुचलहुँ। पानि डॉर सॅ कनी ऊपरे छल से पैर जेना एक-एक मन के भारि भऽ गेल छल।

डेग उठाबी तऽ लगैत रहए जे आब खसलहुँ। शायद इएह हाल छलै असीम के मुदा ओ एकदम चुप्प छल डरपोक क विश ेषण सुनि। दूनू एक-दोसर के सहारा दऽ बढ़ैत छलहुँ। मद्धिम इजोत मे चारू भर पानिए पानि देखाइत छल ताहि मे डूबल गाड़ी, बस। चलैत अभरल एक टू टा रिक्सा या मिलिट्री या पुलिसक जीप। आब एलगीन रोड क मोड़ पर छी।

-'असीम, आब कतेक चलऽ पड़त?'

'झोसीक रानी! थाकि गेलहुँ?'

'नञि चलू।'

फेर हिम्मत कऽ आगाँ बढ़लहुँ। बेचारा असीम अपने अधमरू भऽ गेल छल मुदा की बाजत? हम ओकर हाथ छोड़ि देलिए।

-'प्रिया आगॉ खद्धा छै आ मैन होल खुजल छै सम्हरि कऽ चलू।'

-'अहॉ अपन ध्यान राखू।' तखने कात दऽ एकटा रिक्सा जाइत छलै। पूछलक 'जरूरी अछि'?

हमरा बाजऽ सॅ पहिने असीम बाजल 'हं भाई रूकऽ। सर्दन एवेन्यू जयबाक अछि।'

'पच्चीस टका लेब से हो एडवांस।'

हम सब अपन-अपन पाई देखलहुँ। तय भेलै जे पाँचटका घर पहुँचला पर देबै। घड़ी मे साढ़े सात बाजि रहल छले। दूनू गोटे रिक्स पर बैसलहुँ। धीरे-धीरे वर्षा भऽ रहल छलै। रिक्सावला पर्दा लगा देलकै। थाकल देह मन के राहल भैँटल असीम हाथ सॅ हमरा कान्ह पर कसियारिक पकड़ने छल जोर बढ़ले जाइत छलै। ओ पागल जकॉ हमरा चूमि रहल छल। उन्नमाद.....? एहन उन्माद? नञि इ देहक धर्म छै एकरा नकारल नञि जा सकै'छ। सुखद अनुभूतिक तात्कालिकता मे के नञि बहकि जाए। हमरो ठोर ओकरा ठोर सॅ सटल फेर लजाक मुँह घुमा लेलहुॅ। मुदा ओ आर कसिकऽ पकड़ि लोलक दूनूक सांस भिझरा गेल कि तखने रिक्सा रूकलै। पर्दा उठा रिक्सावला बाजल-हम कनि सुस्ता लैत छी। हम दूनू गोटे विहुँसलहुँ। बड्ड मासूम, निर्दोष छल ओ मुस्कान। नीक परिवारक सज्ञन लड़का जकरा प्रोफेसर कहैत छलै भालो छेले।'

'भालो छेले' कहएबा लेल प्रेसीडेंसी कॉलेज मे किछ विशेष विशिष्टा जरूरी छलै। ओ कोनो पैघ डाक्टर, बैरिस्टर वा आई०ए०एस० के बेटा होई। बीड़ी-सिगरेटक आदत नञि होइ। लड़कीक चक्कर नञि लगबैत होमए। मृदु भाषी शिष्ट व्यवहार, मेघावी आ सुदर्शन होमए। विश्वविद्यालय मे प्रथम या द्वितीए स्थाना होइ। असीम सॅ पालिटिकल सांइसक लेक्चरर आ विभाग अध्यक्ष के इएह अपेक्षा छलैन्ह।

दर्शन विभागक हेड आफ डिपटिमेंट डा० सुखमय चटर्जी एक दिन हमरा बजा कऽ पूछलैन्ह-'अहॉक भविष्यक योजना की अछि?

-'कहियो सोचलहु नञि, मुदा आक्सफोर्ड या कैंब्रिज मे पढ़बाक मन अछि।'

'की प्रोफेसर बनऽ चाहैत छी?'

'नञि बैरिस्टर।'

-'ठीक छै। तखन प्रथम आ द्वितीय स्थान मंजुला आ सुबोध लेल रहऽ दिऔ।'

कॉलेज में लड़का संग पढैतौ हमरा कोनो लड़का सॅ विशेष सम्पर्क नञि छल ने क्यो तेहन प्रिय। असलमे हमरा औरतपना सॅ चीढ़ छल। एकर परिभाषा छलै क्ला समे ताक-झांक, रोमांटिक बातचित, रूमानी कल्पना फेर विवाहक सपना। सबटा बकवास।

मुदा सरिपहुँ नीक लागल छल युवा शरीर क स्पर्श, आलिंगन, उत्तेजित गर्म साँस, चुम्बन आ ओ सिहरन! घर पहुँचैत-पहुँचैत रातुक नो बाजि गेल। बहुत बात सुनऽ पड़ल कियेक तऽ बड़का भैया पुलिसक जीप लऽ कॉलेज पहुँचल

छलाह हमरा आनऽ। ओतऽ पता लगलैन्ह हम दोस्त संग पैदल विदा भेलहुँ। मुदा हमरा ककरो बात क असर कहाॅ पड़ल। मां की सभ बजलीह बुझबो नञि के लिए। हम तऽ अजीब नशा मे मद्‌मस्त छलहुँ। रग-रग कसमसा रहल छल। सपने देखैत राति बीतल।

भोर होइत-होइत बहुत तेज बोखार भऽ गेल। तीन-चारि दिन घरि बोखाकर नञि उतरल तखन खून टेस्ट कराओल गेल। डॉक्टर गांगुली कहलथिन-'टायफॉयड छै।' मतलब कम से कम पन्द्रह दिन घरि कॉलेज जेनाई बंद। हमरा इ सुनि नीके लागल। पता नञि कियेक हम दोबरा असीम सॅ भेंट नञि करऽ चाहैत छलहुँ। अपन देह के एना अपका भेनाई नीक नञि लागल छल। आ प्रेम? हमरा न ककरो सॅ प्रेम करबाक अछि ने ककरो सॅ विवाह। विवाह फेर बच्चा। ऊँ हूँ!! मां कैँ कहियो सुखी नञि देखलिऐन्ह। ओना उपन्यास मे पढ़ने छलहुँ जे बच्चा भेला पर औरत सम्पूर्ण होइछ। मुदा मां तऽ अपन बच्चा पर हरदम कुपित रहैत छथि। सदति काल खौझाएल।

देखैत छिए जे बड़की दीदी के चारिटा बच्चा छैन्ह तखनहुँ सम्पूर्ण कहाँ छथि हरदम माथे दर्द होइत रहैत छैन्ह हरदम झखैत रहैत छथि। आ सल्लो दीदी के माइग्रेन सॅ छटपटाइत देखैत छिऐन्ह। बड़की भाभी के सतत्‌ घुटन महसूस होइत छैन्ह। ककरो खुश नञि देखैत छी। हमरा जनैत जे समाजक बनल फ्रेम मे अपना कें कोनो तरहें पिुट नञि कऽ पबैछ ओ अपना नजरि मे खसिते नञि अछि बल्कि अपना पर संदेशों करऽ लगैत अछि। इम्हर किछ दिन सॅ अड़ोसी-पड़ोसी आ सर-सम्बन्धी सरोज आ हमरा ब्याह लेल बड्ड उत्सुक छल-'बेटीक ब्याह नञि करबै थी? अजग भऽ गेल कतेक दिन घर मे बैसाने रहबै?....

बड़की दीदी घोषित कयलनि हम बेटीक ब्याह कऽ रहल छी'। नीलू हमरा सॅ छमास छोट अछि। मां सरोज लेल जे सांढक वस्तु ओरिऔने छलीह सबटा नीलू के दऽ देलथिन। भात मे मामाक घर सॅ जतबा टका जाय चाही तकर दुगुना समान गेलै। क्यो ई नञि बूझय जे टकाक अभाव मे विवाह नञि भऽ रहल छै। ताहि दिन आर्थिक स्थिति नीक छलै आ सरोज के लेल चूँकी ओ डाक्टरी पढ़ि रहल छलै कतेको वर के प्रोपोजल अबैत छलै मुदा ओ मना कऽ दैत छलै। हं, हमरा लेल कहियो कोनो ठाम सॅ प्रस्ताव नञि आयल छल। हम अपनो नजरि मे कुरूप छलहुँ। कॉलेज मे जॅ कोनो लड़का हाथ बढ़ावऽ चाहैत छल तऽ ओकरा तेना डपटि दैत छलिऐ जे ओकरा सिट्टी-पिट्टी गुम्म भऽ जाइत छलै। टाइफॉयड सॅ मुक्त भऽ जखन कॉलेज गेलहुँ तऽ हमरा देखि कऽ असीम प्रसन्न

भऽ बाजल-'कॉफी पीअ चलब?'

हम एकदम रूखऽ उतारा देलिऐ-'नञि।' बस मे हम सब चढ़लहुँ संगहि मुदा संग उतरलहुँ नञि। हम कहलिए-'हमरा गरियाहाट बड़की दीदीक ओतऽ जयबाक अछि।' ओकर खुलम खुल्ला उपेक्षा करऽ लगलहुँ। ओ जतबे हमरा मे सटऽ चाहैत छल हम ओतबे दूर हटैत छलहुँ। औ घंटो बस स्टॉप पर हमर प्रतीक्षा करैत छल। आ हम या तऽ तखन कॉमन रूम सॅ बहराइते नञि छलहुँ या आन बस पर संगी सबक संग चढ़ैत छलहुँ। एक दिन ओ एसगर मे भेंटल। हमरा सॅ नाराज छी?'

'नञितऽ'

'तखन एना दूर-दूर कियेक रहैत छी?'

'साफ बात छै। अहाॅ जे चाहैत छी से हम नञि दऽ सकैत छी।'

'हम प्रतीक्षा करब। सत्य कहैत छी प्रिया! हम आजीवन प्रतीक्षा करब।'

'हमरा देवदास वला लचपच भावुकता सॅ सख्त चीढ़ होइछ।' अइ तरहक अपमान सॅ ओकर चेहरा स्याह भऽ गेलै। ओ बाजल-'प्रिया अहाँ एहन कठोर कोना भऽ गेलहुँ। हम देवदास बनबाक दावा कखनौ नञि कयलहुँ।'

'तऽ आजीवन प्रतीक्षाक बात कोना बजलहुँ?'

'प्रतीक्षा करबा मे आ तिल तिल कऽ मारऽ मे फर्क होइत छै।'

'हम बुझलहुँ नञि।'

बुझि जेबई एक दिन। हम चाहैत छी अहाँ कें। मनींह एकहि क्षण हमरा भेंटल, यदि क्यो दोसर देत तऽ ओकरा अपन बना लेब मुदा अहाँ कें कहियो बिसरब नञि। प्रिया! अहाँके क्षण भरि जकरा स्पर्श भेंटतै ओ कहियो नञि बिसरत।

'छोडूजखन ककरो संग चलिए जायब तखन कोन बातक दावाक बात करैत छी? जाऊ, प्रतीक्षा करबाक कोन प्रयोजन?'

'ओह! आब बुझलहुँ। अहाँ अपना जिनगी मे एकटा आरक्षित स्थान राखऽ चाहैत छी?'

'मतलब ?'

'मतलब इएह जे हम प्रेम करैत छी आ ई एकटा एहन मधुर स्वप्न अछि जे हम चाहब आजीवन ई जीवंत रहए .... मुदा आरक्षित स्थानक पूरक भऽ रहब.......? ऊ हूँ! प्रिया हम एहन सस्ता नञि छी।'

तखन ओकर बात क सही अर्थ नञि बुझने छलिऐ आ ने बुझबाक प्रयास कयने छलहुँ। ताहि दिन हमरा एकटा धुन सवार छल अपन प्रत्येक कोमल

भावना के थकुचबाक आ एना मे आनन्द भेंटैत छल। एकदम पुरखाह स्वभाव भेल जाइत छल।

हं, कतेको वर्षक बाद एक दिन ओकरा सॅ भेँट भेल छल। हम जर्मनीक बिजनेस ट्रीप सॅ घुरल छलहुँ। एयर इंडियाक फ्लाइट मे भेंटल। ओ अपना पत्नीक संग भारत आबि रहल छल। बाबाक मृत्युक बाद असीम लन्दन मे अपना मौसीक संग रहऽ लागल। बार एट लॉ ओहिठाम कयलक। विवाहो भेलै लंदने मे। मांक देहान्त भऽ गेल छलै बच्चा छल तखने। मौसी अमीर छलै आ सगरे छलै। कोनो अंग्रेज सॅ ब्याह कयने छलै ताहि अपराध मे लंदनक कारावास मे बन्द छलै। पीटर कहिया ने छोड़ि देने छलै आब कोन मुँह लऽ बंगाल घुरैत!

–'एखन कोनो काज सॅ भारत जा रहल छी?'

'हं, पुरनका स्मरण के ताजा करऽ।'

ओकर ऑखि मे पुरना स्वप्नक इन्द्रधनुषी रंग अभरल।

असीम कहलक–'व्यापार मे लागल छी?'

'से कोना बुझलहुँ?'

'इंडिया टुडे' मे अहॉक विषय मे पढ़ने छलहुँ। अहाँ सब दिन विद्रोही ए रहलहुँ।'

–'असीम! आब तऽ विद्रोहक भाषा बिसरि गेलहुँ। हम चाहैत छी जिनगी मे क्रान्ति! हम अपन जिनगीक खालि पन्ना पर अपने तारीख लिखलहुँ अछि।'

'की एतेक एसगर चलब जरूरी छै? एहन त भऽ ने सकै'छ जे अहाँ पर ककरो नजरि नञि पड़ल होइ?'

'हम तऽ एक बच्चाक मां छी।'

'मुदा इंडिया टुडे मे एकर कोनो चर्चा नञि छै?'

'हम रहैत छी एसगरे।'

'ओह।'

'असीमक ऑखि मे एखनहुँ एकटा अजीब सन पिआस झलकल। की एकर पत्नी पिआस केँ तृप्त नञि कऽ सकलै? के ककरा तृप्त कऽ पबैत छै? हम जकरा लेल अपन जिनगीक होम कयलहुँ से संतुष्ट अछि?'

'ए प्रिया! की सोचऽ लगलहुँ एहन व्यथा वेदनाक भाव!'

'नञि, किध नञि! जाउ अहॉ अपन पत्नीक संग बैसू।'

'की हम अहॉक मित्र नञि छी? अपन कार्ड नञि देब?'

हमर कार्ड खत्म भऽ गेल अछि। अहों अपन कार्ड दिअ हम करब सम्पर्क।'

'जरूर देब। जहिया लंदन जाउ सम्पर्क करब। हमर ऑफिस पार्क एवेन्यु मे अछि ताकऽ मे कोनो दिक्कत नञि हेत।'

ओकर पैघ-पैघ ऑखि हमरे पर गड़ल छलै। फेर हमरा ओकरा ऑखि मे पुरनका पिआस बझलकल आ एतेक वर्षक बादो हम फेर महिलाक अई पक्ष कें नकारि देलिए जकरा कारण बेर-बेर ठगाइत छी।

कहि नञि भेल जे असीम अहूँ विवाहित छी हमरा की दऽ सकब? आ हमरे आब की बॉचल अछि? बहुत कानि लेलहुँ। प्रेम कऽ ओई पुरूषक लेल अपन आधा जिनगी कनैत बीतेलहुँ। नञि असीम! नञि!! आब ऑखि मे नोर सूखा गेल आब हिम्मत नञि बांचल अछि कानबाक! आ सबसॅ पैघ बात ई छै जे हम भ्रम मे जी नञि सकैछी। आ 'प्रेम' ओ उठैत-खसैत लहरि छै मात्र मृग मरीचिका। हम प्रेम क कोनो वैश्विक परिभाषा नञि कऽ रहल छी। ई हमर निजी अनुभवक निचोड़ अछि। आ अपन तित-मीठ अनुभव कें के नकारि पबै'छ? लोक ओकरे दोहर बैत छै जकर अभ्यास रहैत छै। प्रेम नञि करबाक अभ्यस्त भऽ गेल छी। हं, सत्ते कहैत छी 'असीम' आब कानि यो ने सकब? मुदा असीम के हम किछ नञि कहलिऐ। चुपचाप हाथक किताब मे ऑखि गड़ौने बैसल छलहुँ। विमान दिल्लीक हवाई अड्डा पर उतरि रहल छल। ओ उठिकऽ पत्नी लग जा कऽ बैसल पत्नीक बगल मे गुलथुल चारि सालक बच्चा बैसल छलै। पत्नी खूब सुन्दरि शालीन छलै। सुखी जिनगी बुझना जाइछ तखन ओकरा ऑखि मे ओ पुरनका पिआस कोना झलकलै? हमरा लोकनि हजारों वर्ष सॅ किछ रोमांटिक शब्द सॅ मन-मानस कें अनुकूलित नञि कयने छी? मुदा एक सपना कें पिआस के जिनगी भरि जोगौने राखब कनिटा बात नञि। से हो अइ युग जमाना मे। अई सॅ आसान छै अपना के मारब। हं, हम कायर छी। प्रेम करऽ सँ चोट सॅ डेराइत छी। सच छै हम डेराइत छी नोर सॅ प्रतिकूल व्यवहार सॅ। कॉलेजक समय सॅ जेना-जेना हम पैद्य भऽ रहल छलहुँ। दुनियाँक देखबाक दृष्टिकोण बदलि रहल छल। हं एकटा बात गहाई सॅ मन मे जमि गेल छल जे हम मां सन जीवन नञि जीयब। ने बड़की भाभी जकॉ घुटन जिनगी मे बर्दास्त करब। हम अपन जीवन नोर मे नञि बहाबऽ चाहैत छी। की एक बुन्न नोरे मे महिलाक समस्त ब्रह्माण्ड घुसिया जाए? कियेक? कनैत नोर बहबैत नोर क नदी, समुद्र मे हेलैत रहू? मां, दीदी, बड़की भाभी, पीसी, काकी एतेक धरि जे हमर शिक्षिको जिनका दिस हम बड्ड उम्मीद सॅ तकैत छलहुँ जे हमरा नजरि मे क्रान्ति चेता छलीह से हो अपन-अपन नोर सॅ समुद्र के भरैत छलीह। लड़कियो सब कियेक नञि उन्मुक्त भऽ भभाकऽ हँसै'छ जेना मदमस्त लड़का

हँसैत छै? कॉफी हाउस मे जाइत अछि लड़िकियो सब मुदा सभक ध्येय रहैत छै आत्मप्रदर्शन। जहाँ चारिटा लड़की एक टेबुल पर जमा भेल कि बस बात शुरू हेतै इश्क, मोहब्बत आ फलां लड़का सुन्दर छै तऽ फलां स्मार्ट। हम चाहैत छलहुँ किछ सार्थक बहस होमए। ताहि दिन विश्वविद्यालयक प्रांगण मे छात्र परिषद् केर समर्थक जोर अजमाइस करैत छल। बात बात मे बम फेकल जाइत छल। घंटा भरि मे आठ टा ट्राम आ कतेको बस जरा देल गेल। रमेश बाबू बजैत छलाह ई प्रतिक्रिया छैक क्रान्ति नञि। तऽ क्रान्ति ककरा कहैत छै? जे इतिहासक तारीख बदलए। की हम कहियो इतिहासक तारीख बदलि सकब? कम से कम अपन जीवनक इतिहास के तारीख बदलि ली सेह बहुत।

एक दिन डा० चटर्जी स्टाफ रूम मे बजौलनि। 'की बात छै? देख रहल छी आइ काल्हि अहाँक मोन क्लास मे नञि लागि रहल अछि।'

'सर, हमरा मन मे दर्शनक जे रूप रेखा छल से नञि पढ़ाओल जाइछ। सर..।'

'हं, हं, बाजू डरू जुनि।'

सर, देकार्त, कांट, हीगेल, ब्रैडले सब पढ़ि लेलहुँ। एतेक अभूर्त बात, आधा बात तऽ बूझऽ मे अबिते नञि छै .... आ सर भारतीय दर्शन तऽ आर विकट बुझाइछ अद्वैत, वेदांत...... ब्रह्म सत्यम् जगत मिथ्या ई वाक्य बस हम रटैत छी। रटि कऽ लिखला सँ कोन लाभ?

–'अहाँ दर्शन शास्त्रक चुनाव कयलहुँ कियेक? नम्बर बढ़ियाँ आयल छल– पोलिटिकल साइंस या अर्थ–शास्त्र लितहुँ।,

'सर नञि जानि कियेक बिना सोचने–विचारने हम चुनाव कयलहुँ। मुदा जाबत हम अपना कें अपन स्थिति के नञि जानब–बूझब ताबत पढ़ने कोन फायदा? हमरा मात्र समाज शास्त्रक विषय नीक लगैत अछि। जान स्टुअडि, मिल विदकेनस्टाइन आ सर सबसे नीक लगै'छ मार्क्स फेर दर्शन।' हूँ। डा० चटर्जी गंभीर भऽ माथ डोलौलनि। ओ एंटी एस० एफ० छलाह। गांधीक परम भक्त। त की मार्क्स के नाम लेने नम्बर कटि जायत? कटौ हमरा कोन फर्स्ट क्लास चाही।

'काल्हि एहि समय मे आऊ। हम किताबक लिस्ट तैयार राखब। हं, किछ अर्मूत धारणा के समझनाईयो जरूरी छ।'

'मतलब?'

'अरस्तु आ प्लेटो, हीरोल आ शंकराचार्य अइचारू मे मात्र शंकरा चार्यक अद्वैत वेदांत ध्यान सँ पढ़ि ली तऽ मानस–भूमि पोख्ता भऽ जायत।'

'हम कोशिश करब।'

नञि कोशिशे नञि भारतीय दर्शन अवश्य पढ़ू, बेर बेर पढ़ू। अर्थक खोंइचा उद्यड़ैत–रहत। हं अहांक भीतर तीन बातक जरूरी हेत–अभीप्सा, जिज्ञासा आ संकल्प। आ सबसे वेशी जरूरी छै बेर–बेर दोहरयबाक अभ्यास'।

दोसर दिन डा० चटर्जी किताबक लम्बा लिस्ट देलनि। फेर पूछलनि–'कीन सकब? किछ किताब एहन छै जे अवश्य किनबाक चाही। ओहुना–किताब किनबाक अभ्यास जरूरी छै।

हम लिस्ट देखलहुँ–हीगेल, नीत्शे, कीर्केगार्द, हर्सेलक पोइट्री, डाइडेगरक बीइंग, सार्त्रक साइकोलॉजी ऑफ इमैजिनेशन, ईगोक सिद्धात, लार्नाशेक उपन्यास, प्लेग, मिला आफ सिसिफिस, मार्लो पोंतीक नोट्स।

सर कहलनि 'अध्ययन शुरू करू जतऽ बूझबा मे भांगठ होमए हमरा सँ पूछि लेब। स्टाफ रूम वा हमरा घर अयबा मे संकोच नञि करब। अहाँक मानसक जे बनाबट अछि आ अहां जे तकैत छी ओ सभटा किताब मे भेंटत। हं, एकटा बात आर जे दर्शनक पैद्य व्याधि छै जे ओ विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के विकसित करैत छै। आ हमरा विचारें जीवनक एकटा समग्र दृष्टिकोण अपनाबऽ चाही। गीता के धार्मिक पोथी जकां नञि पढ़ू, महाकाव्य जकाँ पढ़ैत–पढ़ैत अर्थ बोध गम्य हेत। ओना होना हिन्दी अनुवाद भैल छै। हं एकटा बात पर ध्यान राखब–कॉफी हाउसक राजनीति मे कहियो भाग नञि लेब।'

'मुदा अराजनैतिक दृष्टिकोण?'

'पहिने महिलाक गुलामीक विषय मे सोचू विचारू।'

–हम स्टाफ रूम सँ सोझे लाइब्रेरी मे गेलहुँ। डा० चटर्जीक स्पेशल नोट मे छल मोट–मोट पोथी। पहिने हम ओइ पोथी सबके संघैत रहलहुँ फेर चिक्कन कागज के हाथ सँ छू लहुँ। तकरबाद पढ़ब शुरू कयलहुज मैं कौन हूँ .... मैं सँ शुरू होम वला समस्या, चुनावक समस्या........।' आब हम दू दिन तीन दिन पर लगातार डा० चटर्जी लग जाइत छलहुँ। ओ अपन व्यस्त समय सँ एक घंटा, आधा घंटा जे निकालि पबैत छलाह से हमरा पढ़ाबऽ मे बीतबैत छलाह। एक दिन घटना मोन पड़ै'छ। सर नीत्शे के समझा रहल छलाह जे नीत्शेपर प्रभाव पड़ल छलै फ्रेंच दार्शनिक वर्गसांक। हम भाव–विभोर भऽ सुनि रहल छलहुँ। स्टाफ रूमक एक कोन मे रमेश बाबू साप्ताहिक परीक्षाक पेपर करेक्ट कऽ रहल छलाह 'कांट की कैटगरी' हमर पेपर लऽ डा० चटर्जीक मेज पर अयलाह।

'देखियौ की लिखलनि अछि 'कांट' पर.. डा० चटर्जी हंसैत कहलथिन–रमेश, हिनका 'कांट' पर नोट्स द दिऔ। आ ई जे पढ़ऽ चाहैत छथि से पढ़ऽ दिऔ।

यौ, कतेक विद्यार्थी फर्स्ट-क्लासक मोह छोड़ि ज्ञानक पिपासा रखै'छ?

'अच्छा' प्रिया ! कहू गुरूदक्षिणा मे की देब?'

'सर हम की दऽ सकै छी।'

-'बहुत किछ। नारी भेनाई कोनो अपराध नञि हँ, नारीत्वक नोर कें नियति मानब बहुत पैद्य अपराध छै। अपना नियति कें बदलि सकब तऽ ओ एकलव्य केर गुरू दक्षिणा हेत।' हम तऽ अवाक भऽ हुनका देखते रहि गेलहुँ। ओ गौरवपूर्ण उन्नत ललाट, घुंघरल कारी केश स्वच्छ पारदर्शी दृष्टि, ...

पुरूषक एहनो रूप होइत छै? हम उठि कऽ हुनक चरण-स्पर्श कयलहुँ-सर आइ सॅ अहॉ हमर गुरू भेलहुँ।

'नञि कोनो बाहरी व्यक्ति कें गुरू नञि मानि। जे क्यो किछु सिखाबय से कृतज्ञता सहित धन्यवाद दऽ आगॉ बढ़ऽ चाहि। आत्मे आत्माक गुरू भऽ सकै छै।'

विधाताक विधान एहन जे एक दिन स्टाफेरूम मे चक्कर आबि गेलैन्ह ओ खसि पड़लाह। हुनका तुरत पी० जी० अस्पताल मे लऽ गेलैन्ह। खूनक उल्टी भेलैन्ह। ब्रेन ट्यूमर छलैन्ह। हुनकर देल किताबक लिस्ट, ओ स्वच्छ हँसी आ ओहन आदेश।

औरत होएबाक नोर के नियति कहियो नञि स्वीकारब हम हुनक बात क स्मरण करैत छलहुँआ डा० चटर्जी दुनियाँ सॅ विदा भऽ गेलाह।

सूरत आखरी साँस लऽ रहल छल। मन मे भेल एखन क्यो एतऽ रहैत भनहि ओ अजनबी रहैत। सोझा मे बैसल चाह पीबैत। बातचित नइओ होइत। एक दोसर के उपस्थित रहबाक एहसास तऽ होइत।

समयक ऑचर सॅ हम अइ क्षण के एक टुकड़ा काटि कऽ राखि लेब चाहैत छी। जिनगी कतेक छोट छै आ से हम बेवकूफि मे दोसर कें खुश राखऽ मे बीता देलहुँ? ओना कनि-मनि तऽ सक्रिय छलहुँ हम मुदा कोन फर्क पड़ैत जॅ नञि किछ करित हुँ?

एतऽ समुद्र पर अचानक राति पसरि जाइत छै। आ कखनौ-कखनौ बुझाइत छै जे समुद्रक गर्भ सॅ आदिम अन्हरिया बहराइत होई आ सम्पूर्ण धरती के अपना बॉहि मे समेटऽ लेल छटपटाइत होइ। आकाश मे एखन तुरत निकलल शुक्र ताराक चमक मे हम मुग्ध भऽ रतुका अन्हरियाक तरलता मे ऊब-डूब होइत रहलहुँ।

आइ अइठामक आखरी इजोरिया राति अछि। बाल्कनि मे बैसल रजत रागिनी क स्वर मे सब किछु बिसरल छी। चान बढ़ैत-बढ़ैत अपन पूर्ण आकार

मे विहुँसै'छ। समुद्रक लहरि पर मंद बसात नक्षत्रक जगर-मगर प्रकाश आ प्रकृतिक शोभा श्री केहन विलक्षण दृश्य छैक। आ एहन मनोहारी वातावरण मे हमरा मन के अनाम व्यथा मथऽ लागल। आब हम अपना कें अपना प्रति सहज समर्पित के नाई सीख लेलहुँ अछि। ई आत्मकेन्द्रित भाव नञि। फ्रायड के बाद नारसिसिस्म या आत्मपूजा सन विशेषण बड्ड फैशनेबुल भऽ गेल छै। मुदा आत्मस्थ भेनाई तऽ वास्तव मे अपनाके जेना छी तेना स्वीकारब होइत छै। अपना प्रति आश्वस्त भेनाई ए ...... ई स्वीकृति वास्तव मे नव शक्ति दैत छै। ब्रेकफास्टक टेबुल पर बैसल हम फेर चिन्तन करऽ लगैत छी। काल्हि राति फेर व एह पुरनका सपना देखलहुँ। अई सपनाक दहशत सँ कहिया मुक्ति भेंटत? जहिया ई सपना देखैत छी भरि दिन उदासी मे बीतैत अछि। कियेक देखैत छी एहन सपना? हम बिसरि जाय चाहैत छी-मुदा बिसरब आसान छैक?

सदिकाल पुरूष सॅ एतेक डर? कखनौ क्यो एसगर मे? डा० चटर्जी सन व्यक्तियोक लेल मन मे एहने भय छल। ककरा कहबै मन क भय। एकटा दाई मां छलीह जे हमर अतीत जनैत छलीह। मात्र ओ साक्षी छलीह।

भेदभाव सॅ भरल नेनपन। खैर हमरा आब कोनो फर्क नञि। हमरा किछ नञि चाही एहि बड़का घराना सॅ। नञि बसऽ चाहैत छी बड़का गाड़ी मे। नञि चाही कीमती वस्त्र। भैया आ मां क विशेष स्नेह भाजन छल सरोज। ओ डाक्टर बनतै खूब पाइआ यश कमाओत। आ प्रिया!..... सामने वाली पड़ोसनीक कुतिया पर रिसर्च करत! कहैत छल सब हँसी मजाक मे मुदा की हमरा दुःख नञि होइत छल। हमरे संग एहन क्रूर मजाक कियेक? ई भाई बहिनक चुनाव की हम कयने छलहुँ? एक दिस तऽ बूझाइत अछि जे हम एकरा सब सॅ फरक छी हमर चेतनाक धरातल बदलि रहल अछि, दोसर दिस भय कातरता, दहशत सॅ चिचिआइत लड़की, टूटल बिखरल, मरनासन्न! कखनौक अयना मे अपन नग्न शरीर निहारैत छलहुँ कतहु किछ टूटल तऽ नञि? चिक्कन-चुनमुन मांसल शरीर पर कोनो खंरोचक निशान तऽ नञि? तइओ खंरोचक एहसास! हम भीतरे-भीतर कुहूकैत रहैत छी। छिः! घीन होइत अछि पुरूष जाति सॅ। घोर घृणा होइत अछि जे अबोध बच्चियो कें नञि छोड़ैत छै। आब ई बुझबा मे अबैत अछि जे सब समाज मे इनसेस्ट प्रेम पर एतेक भयानक टैबू कियेक छै। कियेक सहज प्रकृतिक मृत्यु-धर्म इससेस्ट प्रेम पर लागू होइत छै। नञि तऽ जन्मे सँ औरत'. ..... असहाय औरत। ने पिता छोड़ैत छै ने भाई। अपन नारी देह मे, स्वयं क्षत विक्षत भऽ जाइछ। ओ कहियो पर पुरूष कें प्यार नञि कऽ पबै'छ ने सृजनक सबसे सुन्दर रूप ककरो बीजक रक्षा अपना गर्भ मे कऽ पबै'छ। मानव जाति

लेल एकर प्रसार जरूरी छै। मुदा की समाज नारीक रक्षा कऽ पबैए? की कामुक पुरूषक हवस के शिकार होमऽ सॅ अबोध बच्ची बचैत छै? कत, कखन नञि हमरा पर आक्रमण भेल? केहन नेनपन छल। अपन भाई ए नञि बल्कि एक दिन तऽ एकटा नौकरो अपना कोर मे बैसाने छल। तखन हम बहुत छोट छलहँ मात्र पाँच वर्षक! तहिया तऽ बाबूजी जीविते छलाह आ दाईमां देख लेने छलै। बाधिन जकॉ दाई मां झपटि कऽ हमरा अपना कोरा मे लेने छल आ खूब गारि पढ़ने छलीह। हम किछ नॅञि बूझने छलिए। हं फ्राक मे लसलस किछ लागल छल जे दाई मां रगड़ि-रगड़ि के छोड़ने छलीह।....... तू हमर बेटा मंगल के उमरक छैँ...... बेटा जकां नञितऽ आइ हम तोहर गरदनि छोपि दितिऔ..भाग सरघुआ......, फेर दाई मां क आदेश 'ए बुच्ची इ बात कहियो ककरो लग नञि बाजब। भगवान औरत के जिनगी मे एतेक दुःख कियेक लिखैत छथिन। के जानय हुनकर माया।'

मौन! हरदम मौन!! आखिर कहिया धरि? कहियो कोनों पुरूषक हाथ कान्ह पर। सिनेमा हॉलक छुप्प अन्हरिया मे शरीर मे सैकड़ो कीड़ा क देह पर ससरबाक अनुभूति! क्रिसमस दिन हम छोटका भैया आ सरोज न्यू मार्केट मे गेल छलहुँ क्रिसमस के खेलौना आ टाफी किनऽ। तहिया हम बारह वर्षक छलहुँ। ठसाठस भीड़। देह पर देह। चलनाइ कठिन। कहुना डेग उठाबी कियेक तऽ पीरियड्स क समय छल आ हमरा पाछाँ-पाँछा अबैत ओ पुरूष जे पैंटक बटन खोलने छल। पौरूषक नग्न प्रदर्शन.....। आ हमरा हिम्मत नञि होइत छल जे भैयावा सरोज के कहिए। किये? किये हम एहन दब्बु छलहु?

-की दाई मांक कारण भय बला संस्कार ग्रसित कयल? की मांक उमेक्षा सॅ वा भऽ सकै'छ हमरा समाज मे हजारो लाखो महिला आ बच्ची सभक संग एहिना होइत होइ। आ सब मौन धारण करैत होइ। मां सॅ आदेश भेंटैत होइ चुप्प रहबाक। बड़की बहिन सिखबैत होइ कतौ नञि बाजऽ लेल। की इएह कारण छै जे बेटीक जन्म लेला पर मां दुखी होइत छै? औरत भेनाईए अभिशाप छैक। हम कहियो ककरो सॅ प्रेम नञि करब। ब्याह नञि करब। सेक्स सॅ घृणा होइछ। पुरूषा सॅ बदला लेबाक इएह उपाय हमरा सूझैत छल।

हम तऽ सोचने छलहुँ पुरूषक सम्पर्क सॅ दूर रहब, मुदा बचल रहलहुँ? एम० ए० क परीक्षा माथ पर छल आ लॉ के इंटरमीडिएट..... तखने ओ पुरूष हमरा जिनगी मे आयल। ओ बडड पैद्य घरक संभ्रात परिवारक एकलौता बेटा। जखन ओ कलास मे लेक्चर देबऽ लेल ठाढ़ होइत छलाह तऽ प्रत्येक विद्यार्थी मंत्र-मुग्ध भऽ सुनैत छल। हम अगिला बेंच पर बैसैत छलहुँ। बातक शुरूआत

भेल ऑखि सॅ। दू ऑखि चारि भेल। कल्पनाक सोलह पॉखिक रथ पर सवार भऽ मनोरथ दुनियॉ क सैर करऽ लगलहुँ। रंग-बिरंगक सपना देखऽ लगलहुँ। एक दिन ओ हमरा स्टाफ रूम मे बजौलनि। हुनका लग मे ठाढ़ होइते करेजक धड़कन बढ़ल जा रहल छल। ओ पूछलनि 'हमरा घर चलब?'

वशीभूत भेल जकॉ हम कहलिऐन्ह-हं।' ओ आगाँ-आगाँ हम पॉछाँ। बस स्टाप सॅ 2--बी० पर चढ़लहुँ। गरियाहाटक मोड़ से पहिने उतरलहुँ। ओ हमरा सॅ आठ दस डेगक दूरी बना कऽ चलैत छलाह सांझुक लुकझुक बेर छलै। जाड़क समय। बीच-बीच में पाछॉ घूमिकऽ हमरा दिस ताकि विहुँसैत छलाह। दू तल्ला मकानक आगाँ रूकलाह। फेर भीतर गेलाह। हमझिझकैत आगाँ बढ़ि रहल छलहुँ।

हुनकर पैरक आहट ऊपर सीढ़ि सॅ अबैत छल। फेर ताला खुजबाक आवाज सुनलहुँ। सीढ़ि पर चढ़ैत पीठ देखलिए। एक क्षण ठिठकि कऽ ठाढ़ रहलहु। हम ई की कऽ रहल छी? किछ नञि फुराएल आ भीतर गेलहुँ। ओ केवाड़ बन्न कऽ हमरा दिस घुरलाह। हमर ऑखि झुकल छल। सांसक गति तीव्र। ओ हमरा डॉर में हाथ घऽ अपना दिस घिचलनि हम लत्ती जकॉ झुकैब गेलहुँ जे होएबाक छलै भऽ गेलै। देह अपन धर्म निमाहलक। कान मे मधु मिश्री सन स्वर गेल 'हम अहॉ से प्रेम करैत छी। बस अहीं सॅ।'

ओइ दिन हमरा कनिको ग्लानि महसूस भेल ने जुगुप्सा। पुरूषक स्पर्श एतेक मादक होइत छै, एहन सुखद! एतेक मनलग्गू आकर्षक से आइ पहिल दिन महसूस भेल। हम बाइस वर्षक होइत-होइत पूरा औरत बनि गेल छलहुँ ओ बत्तीस वर्षक अनीझवी पुरूष छलाह। सप्ताह मे दू-तीन दिन ई खेल छमास घरि चलैत रहल। परीक्षा माथ पर छल। एक दिन ओ कहलनि-'परीक्षा लग आबि गेल आब अहॉ पढ़बा मे ध्यान दिअ।'

-चाहैत छी एकाग्रमन सॅ पढ़ि मुदा अहाँ बिना मोने नञि लगैए। फेर ओहने उन्माद ओहने आवेग। इम्हर किछ दिन सॅ ओ कॉलेज नञि आबि रहल छलाह। हमर मन एकदम बेचैन छल। की भेलै? बिमार नञि तऽ छथि? एक दिन हम स्टाफ रूम मे जा कऽ प्रोफेसर दास गुप्ता सॅ पूछलिऐन्ह-'सर! प्रो० मुकर्जी नञि आबि रहल छथि?'

-'ओ पन्द्रह दिनक छुट्टी लेने छथि,' ई सुनि हमरा रूकल नञि गेल। की भेलै? ओ फोन कऽ सकैत छलाह। संकोच भेल हेतैन्ह। ठीक छै हमहीं जाकऽ देखैत छिऐन्ह। ओ घर मे एसगरे रहैत छथि। हमर पैर हुनका घर दिस बढ़ल। घर मे ताला नञि लागल छलै।

ओ! तऽ घरे मे छथि। अवस्से बिमार हेताह। हम मने मन क्षुब्ध छलहुँ ओ हमरा आबहु आने बुझैत छथि। के हुनकर सेवा टहल कैत हैतेन्ह? घंटी बजेलहुँ। केबाड़ फूजल। करेज धक-धक कऽ रहल छल। आब ओ सोझा मे हेता देखते भरि पाँज धऽ चूमऽ लगताह। केवाड़ खूजल। उम्र मे हमरा सँ किछ पैद्य खूब सुन्दर महिला ठाढ़ छलीह। मांग मे सिन्दुर, लाल तांतक साड़ी, भरि हाथ सोना क चूड़ि, शाखा, नोवा। गला मे सोनाक सीताहार, कान मे हीरा जड़ल सतफूल।

हमरा पूछलनि-'अहाँ के?'

हम प्रोफेसर मुकर्जी सँ भेंट करऽ आयल छी। ओ छथि।'

आऊ भीतर आऊ। रूम क सजावट बदलल छलै। नव सोफा सेट, खिड़की पर नव पर्दा, ओ महिला हमरा बैसाक भीतर गेलनि। प्रो० अयलाह-आग्नेय दृष्टि सँ हमरा दिस तकलनि। आश्चर्य भेल। घबराइत बजलहुँ।

'हम नञि अबितहुँ मुदा नञि रहि भेल चिन्तित छलहुँ अहाँ बिमारने होई।'

ओ किछ सुनबा लेल तैयार नञि छलाह। धीरे सँ गुर्राक बजलाहऽ मूर्ख लड़की। हम कहिया कहलहुँ अहां सँ विवाह करब? दूनू मौज कयलहुँ खिस्सा खत्म। फेर कहियो आइठाम नञि आयब। हम विवाहित छी।'

ओह! एतेक अपमान। हमरा चक्कर आबि गेल। हुनक पत्नी चाय-नास्ताक ट्रे लऽ ठाढ़ छलीह। 'अरे, अहाँ हिनकर छात्रा छी-मूँह मीठ क के जाउ।'

'नञि, एखन हम बहुत जल्दी मे छी फेर कहियों।' हम तीर जकां बहरेलहुँ। सांझुक पाँच बजि रहल छलै। फरवरी मास। कतऽ जाउ? सामने सँ डबल डेकर बस आबि रहल छलै। मोन भेल एकरे चक्का तर कूदि जाइ। फेर कहलक-नञि मरब कियेक? नञि, हमरा की भेल? पढ़ल-लिखल सभ्य पुरूष धोखा देलक। हमरा संग ओ एना कियेक कचल? भारतीय वेदांत पढ़ाबऽ बला व्यक्ति एहन नीच! एतेक निर्मम!!

हम झोंक मे चलल जा रहल छलहुँ। होश नञि छल कम्हर जा रहल छी। बस एकहिटा बात दिमाग मे घुरिया रहल छल-हमरा किछ तऽ कहैत। हम तऽ किछ मांगने नञि छलिऐ शर्तहीन समपर्ण। तखन ओ ठगलक कियेक। आर क्लास मे छात्रा छलै। लड़की क कोनो कमी छलै। आखिर हमरे संग एहन ध ोखा कियेक?

लेक के कात मे ठेहुन पर माथ झुकौने कनि रहल छलहँ। बुझाएल क्यो छै माथ उठेलहुँ। देखलिए तीन चारि टा छोड़ा ठाढ़ छल। हड़बड़ाक उठलहुँ। सुनलिऐ एकटा छोड़ा बजैत छल-

'प्रेम कोरेछे, ताइ जोन्नो कान्ना।' (प्रेम कयने होएत तैँ कानि रहल अछि।)

दोसर टिपलकै-'अहा ! मोरी-मोरी।' (मुइलहुँ, मुइलहुँ।) तेसर बजलै-'की दीदी! आमादेर पछोन्दो होबे की? (की हम पसिन्न छी?)

हम ओतऽ सँ भगलहुँ। पॉछॉ सँ आवाज आयल-'एई रे पालिये छे बेचारी।' (अरे बचारी भगलै।)

हम बुझू दौड़ैत जा रहल छलहुँ............काफी दूर धरि। अचानक रूकलहुँ। बाट चलैत लोक सब आश्चर्यचकित भऽ हमरा देख रहल छल। हम विवेकानन्द पार्क लग सँ घर क बाट छएलहुँ। एक मासक बाद एम० ए० क परीक्षा अछि। आ हम एको लाइन पढ़ि ने पबैत छी। हमरा संग एतेक पैद्य धोखा? कियेक? हम की बिगाड़ने छलिए। पढ़ल लिखल दानव। हम कखनौ बाथरूम मे, कखनहुँ बरांडा मे हुचुक-हुचुक कनैत छलहुँ हमरा अपने नजरि मे अपन तस्वीर कॉचल टुकड़ा जकां छहों छित भऽ गेल। दरार कें जोड़ल जा सकै'छ, खुद्धा के भरल जा सकै'छ मुदा कांचक टुकड़ि के ने जोड़ल जा सकैछ ने पूर्ण प्रतिरूप देखल जा सकै'छ।

हं, हम प्यार कयने छलहुँ, पूरा ईमानदारी सँ अपना कें समप्रित कयने छलहुँ, बिना कोनो शर्त कें ककरो सँ बिना किछ पूछने। बहुत दिनक बाद बुझलिए जे बिना सोचने-विचारने बिना कोनो शर्तक सम्बंध भनहिं मानवीयताक द्योतक होइ मुदा ओ अहॉक व्यवहारिक दिवालियापन के परिचायको बुझल जाइछ। जेना-तेना परीक्षा देलहुँ तकर बाद यूनिवर्सिटी को कहियो पैर नञि देलहुँ। ने कलकत्ताक भीड़-भाड़ वला जन-समुदाय मे कहियो ओ नजरि आयल। ओ जीवित अछि की मुइल से हो नञि जनैत छिऐ मुदा ओकर दोगलापन कहियो नञि बिसरा सकै'छ। ओ हत्दयक अन्हार कोन मे एखनहुँ खटकैत अछि। ओ घटना हमरा आत्मबल के छहोंछित कऽ देलक विश्वास क्षत-विक्षत भऽ गेल। आब हमरा पुरूषक जरूरत महसूस भऽ रहल छल। हमरा सुरक्षा चाही। ई दुनियाँ दानव सँ भरल छै। जे हम आँखि सँ देखैत छिऐ सेह नञि छै वास्तव मे। ब्रैडले सत्ते कहने छै-'एपिरियन्स इज नॉट रियल्टी।' उपाधि रहित व्यक्ति की रहि जाइछ? निगुर्ण ब्रह्म। एकर पहिचान की छै? नेति-नेति। हं, हमरा जीवन मे प्रेमक भूमिका नेति-नेति रहल। किछ नञि...........अन्त मे किछ नञि। केवल शून्य।। सबटा फूसि .... धोखा......। प्रेम, समर्पण, पारंपरिकता की अई सब शब्द कें दोहरबैत दोहरबैत हम आत्मसम्मोहित नञि भऽ गेलहुँ ? औरत प्रेमक जाल मे कियेक फँसैत अछि। राति-राति भरि हम इएह सब सोचैत रहि जाइत छलहुँ। पीड़ा, भयानक यंत्रणा आ प्रचंड क्रोद्ध। मुदा आश्चर्य होइछ अपने पर हम ओकरा दोष नञि दैत छलिऐ अपने कें अपराधि

बुझैत छलहुँ। हमहीं दोषी छी अपने पर क्रोद्ध होइत छल। आ तैं अपने सॅ बदला लेबऽ चाहैत छलहुँ। अपन प्रस्फुटित होइत जीवन कें अन्हार कोन में सौ–सौ तेज धारवला अस्त्र शस्त्र नुकौने छलहुँ। आब हम ततेक जोर सॅ ठहाका लगबैत छलहुँ जे माँ, भैया कें टोकऽ पड़ैत छलैन्ह। हम अपन समस्त अपमान कें ठगयबाक यातना कें हँसी कहिलोर मे डूबा देबऽ चाहैत छलहुँ। सरोज विदेश जयबाक तैयारी कऽ रहल छल आ हमरा आगां भबिष्यक अन्हरिया छल।

प्रेम, सेक्स, विवाह ई समस्त शब्द हमरा युग–युग केर घसल पुरान सिक्का बुझाइत छल। शब्द नञि मासुक टुकड़ा, टपकैत लिघुर। अइ शब्दक पाछाँ पागलपन आ आदिकाल सॅ अबैत परम्पराक चेहरा औरतक नोर सॅ तरबतर छै। हम आब हरदम हँसैत रहबाक चेष्टा करैत छलहुॅ। खुश छी तकर एलान करैत छलहुँ।

ओ हमर उदासीक दौर छल। भीतर सॅ कुहूकैत बाहर सॅ हँसैत समय बीता रहल छलहुँ। हम औरत बनऽ नञि चाहैत छलहुँ मुदा बनि गेल छलहुँ अदद औरत! एतबा बुझि गेल छलहुँ जे कानला सॅ किछ नञि होमऽ बला छै। डिप्रेशन से डिप्रेशन आर बढ़ैत छै। बड़की भाभीक मृत्यु भऽ गेलैन्ह। हुनक मृत्युक छ मासक बाद नव भाभी आबि गेलीह। ई भाभी भैयाक अनुकूल व्यवहार करैत छलथिन। भैया आब पूर्ण सुखी स्वस्थ–प्रसन्न छलाह। घरक सम्पत्ति पर पूरा अधिकार छलैन्ह। आब ककरो किछ नञि भेंटऽ बला छै। सरोज के कम से कम विदेश जयबाक खर्च तऽ भेंटलै। मुदा हम तऽ जहिया मां के देखलिऐन्ह सियल साड़ी, तहिये मने मन संकल्प कयने छलहुँ जे आब घर सॅ अपना खर्च लेल एको पाइ नञि लेब।

एम० ए० क फीसो अपन संगी विभा सॅ लऽ कऽ भरने छलहुँ। तीन सौ टका आर उधार लेलहुँ। कछ किताब किनबाक छल। पढ़बाक प्रयास करैत छलहुँ मुदा मन एकाग्र नञि होइत छल। क्षत–विक्षत मन बेर–बेर पूछैत छल कियेक एना भेल? हमर कोन अपराध? ओ पढ़ल–लिखल सभ्य पुरूष एना ध ोखा कियेक देल। बात–बात में गीता आ उपनिषद्‌के श्लोक बॉचऽ बलाक एहन नीचताई हमरा मोन पड़ल ईशोपनिषद्‌क श्लोक–'हे प्राणी! तू अपने कर्म का स्मरण कर........ स्मरण कर।' ओह! की ई सभ पढ़ावहि लेल पढ़ैलैन्ह प्रोफेसर! जेना–तेना कऽ एम० ए० क परीक्षा खत्म भेल। हमरा फर्स्टक्लास नञि भेंटॅल–विभागाध्यक्ष नाराज भेलाह! हं, तर्कशास्त्र मे गोल्डमेडल भेंटल।

तर्क आ विश्लेषण। हम अपन जीवनक परिस्थितिक रेशा–रेशाक विश्लेषण करैत छलहुँ। विश्लेषण चीड़–फाड़। अजीब द्वन्द्व अपना होमऽ आ नञि होमक

बीच। ठोस हाड़–मासु वला जीवित शरीरक भीतर ई कोन अभावक कीड़ा कैंसर जकां तरे–तर शरीर के खोखला कयने जा रहल अछि। अई सॅ पूर्व कोनो पुरूष दिस नजरि उठैत नञि छल आ आब हिरणी जकॉ ऑखि नचैत रहै'छ। जेना शराब बिना शराबीक हाल होइत छै तहिना हमरो हाल छल। हमहीं उचित–अनुचित के द्वन्द्व में कियेक झुलैत रहू? ई दुनियाँ हमरा संग न्याय कयलक? जे हमरा संग भेल तकर औचित्य सिद्ध कयल जा सकै'छ? आ सदतिकाल अपना प्रति हताश भाव! एहना मे भविष्यक कोन रूप रेखा बनओल जा सकै'छ? आ हमरा लेल सबसे पहने आपना पैर पर ठाढ़ भेनाई अत्यन्त आवश्यक अछि। घर मे दूनू समय भोजन तऽ भेंट जाएत मुदा एकर अलावा आर किछ नहि। ओना अई बड़का घर मे दस बारह टा एखनो नौकर रहैत छै दाई, महराज, दरबान, ड्राइवर, मुशी, किछु विशिष्ट सदस्य लेल खीरा, ककड़ी, मौसंबी। ओना फल खयबा लेल आतुरता नञि छल मुदा मने–मन विद्रोह होइत छल। मां क एहन भेदभाव देख भूखो मरि जाइत छल। संतराक जूस मां बड़का भैया, सरोज आ छोट धि या–पुता के दैत छलथिन। जँ मौसम क पहिल दिन महँगा मटर अबैत छलै तऽ ओ बड़का भैया आ सरोजक थारी ए मे परसल जाइत छल। एक दिन तऽ हद भऽ गेलै। दाई मां हमरा थारी मे एकटा संदेश धऽ देलैन्ह। संदेश राखल छलै विशिष्ट लोक लेल। बस मां ई देखिते आगि बबूला भऽ गेलीह।

'चमेलिया मां! राति–दिन तोरा अपने बेटीक चिन्ता रहैत छऽ आर छै बाल–बच्चा। बूझल छौ जे आइ–काल्हि दूध कम लेल जाइत छै। संदेश विजय बाबू लेल राखल छलै।'

'हम विजय बाबू के पूछने छलिएन्ह ओ नञि लेलथिन।'

'तऽ सरोज के थारी मे धऽ दितिऐ। बेचारी दस दिन सॅ खाँसी से परेशान छै ताहि पर सॅ डाक्टरीक पढ़ाई।'

बहूरानी! आब हमरा सॅ नौकरी कयल नञि हेत। खाइत काल एना दुश्मन जकॉ जे मन मे अबैए बजने जाइत छी। कनि प्रियाक मूँह देखिऔ केहन कननमूॅह भऽ खाइत अछि।'

हं, हं बुझलिए आब पहिलुका बला बात नञि छै जे शाही खर्च हेतै।' ठीक छै। पहिलुका दिन नञि रहल तऽ आब हमरा सॅ नोकरियो नञि पाड़ लागत।'

हम डबडबाएल ऑखि सॅ छेनाक संदेश कहुना पानि संग घोंटलहुँ। ओकर बाद रोटी–दालि तरकारी भात के अलावा कोना विशिष्ट व्यंजन वा मधुर दही ठोर मे नञि सटेलहुँ। बड़का घरक बेटी ओइ घर मे कहियो ने बदामक बर्फी धूलक ने संदेश! हं, कहबा लेल हमहुँ बड़का घर क बेटी छलहुँ।

ओई घटनाक सप्ताह दिन बाद दाई मां क चिट्ठी पाबि बेटा मंगला एलै दाई मां के लऽ जाए। ओइ दिन संदेश बला बात पर दाई मां बरामदा पर बैसल मां के दू रंगा व्यवहार लेल खिधांसे करैत रहलनि। आब अइ बुढ़ारी मे दाई बहुत बदलि गेलीह अछि। पहिने बात बात पर कनैत छलीह आब कनैत नञि छथि ने ककरो सँ डरैत छथि बल्कि आब कोनो बात पर अड़ि जाइत छथि आब बहुत कठोर भऽ गेलीह अछि, बुझाइत अछि अन्याय देखैत-देखैत दाइ मांक एहन स्वभाव भऽ गेलैन्ह। दाई मां आब नीक जकाँ बूझि गेलीह जे हमर विवाह नञि हेतै। दहेज लेल टका चाही आ मां क हाथ छैन्ह खालि। झूठ शान शौकत लेल मां क जेवर बिका रहल छैन्ह। तैं दाई मां बूझि गेलीह जे ओ जे सपना देखैत छलीह जे हमर ब्याह धूमधाम सँ पैद्य खानदान मे होएत नाति के कोर मे खेलाकऽ मुइब से सौख पूरा नञि होमऽ बला छै। तैं ओ गाम चलि गेलीह।

हम बहुत काल धरि बरामदा मे ठाढ़ भेल कारी पिअर टैक्सी के जाइत देखैत रहलहुँ। गरमीक उमस बला सांझि छलै। एकटा थाकल गोरैया आबि बरामदाक रेलिंग पर बैसल। हम उदास आँखि सँ ओकरा दिस तकलहुँ। आइ हम दूनू चुप्प छलहुँ। गोरैया आँखि झपकबैत छल आ हम बेर-बेर आँखि पोछैत छलहुँ। हम नञि चाहैत छलहुँ जे क्यो हमर नोर देखए। आइए दुपहर मे हम मां आ भाभी के बतिआइत सुनने छलिऐन्ह-'भने' चमेलियाक मां गाम जा रहल अछि। दिन भरि हंगामा मचौने रहैत छल।'

'मां जी की कहिऐन्ह-ततेक खाना बना कऽ नीचाँ लऽ जाइत छल जे पाँच लोक खइतै। टोकला पर कहैत छल हमर घर क लोक आयल अछि खाय-पीऽ लेल नञि देबै?'

हं, अइ मंहगायी मे कहाँ से एतेक लोकक खर्च जुटतै। पींड छुटल।'

दाई माँ के जाइत काल हम अपना गला सँ खोलि कऽ चेन जबरदस्ती हाथ मे दऽ देने छलिऐ। नञि लैत छल तऽ कहलिऐ।

दाई मां बेटीक एकटा यादगार नञि राखब?'

– 'नञि बुच्ची, ई सिकड़ी अहीं राखू। बेर वक्त पर काज देत। मां बेटीके दैत छै बेटीक चीज लै छै नञि हमरा पाप लागत।'

ओ महामहिला सोनाक चेन नञि लेलक। किछ नञि लेलक विदा भऽ गेल। ओ ठीके कहने छल एक दिन हम ओ सोनाक चेन दू हजार टका मे बेच देलिऐ। हमरा विभाक कर्ज चुकएबाक छल आ आगाँक खर्च लेल टकाक काज छल। दाई मां सँ भेंट करऽ हम सब गेल छलहुँ भैयाक विवाहक समय। दोसर भाभी छलीह इलाहाबादक। फल-मिठाई लऽ कऽ मिर्जापुरक अहीर टोला मे

गेल छलहुँ। आंगन मे खाट पर बैसल छलीह-मोतियाबिंद के कारण सूझैत नञि छलैन्ह।

-'दाई मां! अहाँ नीकें छी?'

'अरे हमर बुच्चीक आयल अछि। ए मंगला मंगल, दुलहिन सब गोटे आ देख हमर बेटी आयल अछि.........।' आ तकर बाद सूखल झुलैत हाथ सँ हमर सौंसे दह हँसोथि करेज मे सटबैत बाजल छल 'ए बुच्ची देह तऽ एकदम सूखि गेल-कोन जरूरी छै एतेक दिन-राति पढ़ाई करऽ के। विजय बाबू हमर बुच्चीक आब जल्दी ब्याह कऽ दिऔ।'

थोड़े कालक बाद हम-सब घुरलहुँ। दाई मां अबैत काल अपना पोटरी सँ पाँच टका निकालिकऽ हमरा हाथ मे देलनि। मंगलाक बहू कहलक माई राति-दिन अहिंक चर्चा करैत रहैत छथि। अहां जे टका-पाई पठबैत छिऐ से सब जोगाकऽ रखने छथि जे बुच्चीक ब्याह हेतै' तऽ हम बनारसी बिहौति जोड़ा लऽ कऽ जायब।' सत्ते प्रेम मे लोक प्रतिदान नञि चाहैत छै। वास्तविक प्रेम कयनिहार मात्र समिधा बनि हवन कुंड मे स्वाहा होइछ। साल भरि के बाद मिर्चापुर सँ मंगल के लिखल चिठ्ठी एलै-'माई का स्वर्गवास हो गयां' हमरा घर मे एकर कोनो प्रतिक्रिया नञि भेल। मां क मुँह सँ बहरे लैनह-'बेचारी बड्ड नीक छल निः स्वार्थ भाव सँ प्रियाक पालन पोषण कयलक।' बस आर ककरो किछ कहबाक ने समय छलै ने इच्छा। हम घर मे बिना ककरो किछ कहने चलि गेलहुँ बालूघाट गंगा स्नान करऽ आब हम सत्ते अनाथ भऽ गेलहुँ।

हम एकटा नर्सरी स्कूल मे काज करऽ लागलहुँ। साढ़े तीन सौ रू० मास भेँटैत छल ताहि सँ हमर व्यक्तिगत खर्च निमहि जाइत छल। पढ़ेनाई हमरा वश क बात नञि छल पढ़ेनाई नीक नञि लगैत छल। खैर अहि बीच हम यादव पुर विश्व विद्यालय मे थीसिस लेल आवेदन दऽ देने छलिऐ। आर्थिक सहयोग तऽ नञि भेंटल मुदा परमीशन भेंट गेल।

हम सांझि मे एकटा टयूशन शुरू कयलहुँ। एकटा मारवाड़ी महिला कें अंग्रेजी पढ़बाक सौख भेलै। दू सौ टका मासिक पर। सांझि मे छ बजे से आठ बजे धरि सप्ताह मे पाँच दिन। एक मास बीतैत बीतैत असली बात बुझलिऐ जे ओकर पतिदेव राति मे अबेर कऽ घर अबैत छलथिन। बेचारी एसगर बोर होइत छल तैँ एकटा लोक व्यथा-कथा सुनऽ बला चाही तऽ हम छलहुँ कान। एक दिन संझि कऽ गेलहुँ तऽ ओ नञि छलीह हुनका पतिदेव के देख लिऐन्ह हम चोटे घुरि एलहुँ। तकरबाद फेर हम कहियो नञि गेलिऐ। अहिना जिनगी खेपने जाइत छलहुँ।

सरोज चलि गेल छल लंदन पढ़ऽ। ओतऽ नोकरियो कऽ रहल छल। ओ पत्र लिख कऽ पूछने छल टकाक वास्ते। हम मना कऽ देलिऐ। घर मे मांक बक-झक भैया-भाभीक उपेक्षा। जखन कखनौ दीदी सब अबैत छथि तऽ एकहीटा रटनी-एकर नैया कोना पार लगतै-'तुसब नञि मदति करबें तऽ केकरतै?' 'लॉ' क फाइनल उपर छल मुदा पढ़बा मे मोन नञि लगैत छल। परीक्षा नञि देलिऐ। बड़का भैया आर कुपित भेलाह।

हमरा मे एहन कोनो गुण नञि छल जाहि पर गर्व कयल जा सकए। क्यो हमरा सँ कियेक विवाह करबा लेल तैयार होइत? एतेक पढ़ाई के बाद लड़का भेंटनाई कठिन छलै। खैर एक दिन बिलाड़िक भागें सींक टूटल। रामकुमार हजाम विवाहक दलाल छल से एकटा कथा लऽ कऽ आयल छल। इएह हजाम भैयाक दोसर ब्याह करौने छलनि। ओ अबिते भैया के कहलकैन्ह -'बड्ड नामी परिवार छै अग्रवाल छथि हिनका परिवार के परिचय पूछऽ के काज नहि। अहां ऑखि मुनि कऽ सम्बन्ध कऽ सकैत छी। एकलौता बेटा छैन्ह। करोड़पति छथि। लड़का देखबा मे स्मार्ट, अमेरिका सँ बिजनेस मैनेजमेंट पढ़ि कऽ आयल अछि। आब अहॉ सब अपना मे विचारि लिअ।'

'कतेक खर्च करऽ पड़त ?'

- पहिनेतऽ हुनका सब के लड़की पसंद होइ तखन ने आगां क बात करब। हुनका घर मे तऽ लक्ष्मीक वास छैन्ह ओ चाहैत छथि पढ़ल-लिखल बेटा योग पुतोहु।

मां आ बड़का भैया दूनू गोटे एके बेर बजलाह।

-'रामकुमार अहाँ इ सम्बन्ध करा दिअ तऽ हम जनम भरि अहॉक गुण गबैत रहब।'

-'कनि एकबेर हमरा लड़की देखा दिअ।'

भाभी झट तैयार कऽ मां क रूम मे हमरा लऽ कऽ अएलीह । हजाम क दृष्टि हमरा पर पड़लै-बाजल ठीक छै-'हम कथा पटा देब मुदा हमर दलाली नञि मारब।'

ओ लाकनि हमरा देख अयलाह। नरेन्द्र हमरा सँ दू-चारिटा बात अंग्रेजी मे कयलनि आ है कहि देलथिन। क्यो हमर इच्छा, अनुमतिक जरूरत नञि बुझलकै। ओना सत्ते नरेन्द्र स्मार्ट युवक छलाह। नरेन्द्र के मां आ पापा हमरा हाथ पर पाँचटा गिन्नी धऽ सगुन कऽ चलि गेलाह। बड़का भैया तुरत न्यूमार्केट गेलाह। फल के एकाबन टा टोकरि पठौलनि-सब तरहक फल।

सबटा बात ततेक जल्दी सँ भेलै जे किछ सोचऽ-विचारऽ क मौका भेटबे

नञि कयलै। भोरे प्रस्ताव आयल छलै आ मात्र चारि घंटा मे भैया सब पता लगा लेलथिन। बड्ड प्रसन्न छलाह भैया, कराड़पति छथिन लड़काक पिता आ इएह एकमात्र वारिस! अमेरिका सँ पढ़ि कऽ आयल छथि। प्रिया क उम्र तेइस वर्ष आ लड़का क छब्बीजम। राति धरि घर पूरा भरि गेलै दीदी सब आबि गेल छलीह। हँसी-मजाक सँ आँगन-घर क वातावरण मे उल्लास स्पष्ट झलकैत छलै। हमहँ हँसैत छलहुँ। अपना सौभाग्य पर विश्वासे नञि भऽ रहल छल। हं, माथक धाोधरी मे एकटा लालबत्ती बेर-बेर जरैत छल। कहीं ओ अतीतक विषय मे ने पूछथि। हम तऽ कुमारि छी नञि, सोहागराति मे जँ पता चलि जाइ? की सब बात साफ-साफ कहि दिऐ। मुदा से सब सुनला पर जँ सम्बन्ध करबा सँ मना कऽ देताह तऽ? नञि एहन गलती नञि करब। विवाह भेलाक बाद आन क्यो शोषण नञि करत। तैं बहुत सोचि-विचारि कऽ चलऽ चाही। एखन स्वीकृति आ सुरक्षा दूनू भेंट रहल अछि। आब हम नेना नञि छी। बिना व्यवस्थाक स्वीकृतिकें हम किछ नञि कऽ सकैत छी। बिना कोनो प्रयास कें एखन परसल थारी मे छप्पन भोग उपलब्ध भऽ रहल अछि। कहाँ सड़कपर चप्पल घुसीटैत छलहुँ नौकरी लेल कहां एकेबेर करोड़पति क पत्नी.........।'

खूब धूमधाम सँ विवाह भेल। हमर ससुर के एकहि टा मांग छलैन्ह बरियातक स्वागत खूब नीक जकां होमए। भैया बरियातक स्वागत मे कोनो कमी नञि राखलथिन। तिलक के समय हमर ससुरजी एक लाख टका क थैली पहिने पठा देलथिन-हुनके टका हुनका देल गेलैन्ह। एहिना विदाई काल एकटा चॉदीके कटोरा मे सवालाख टका भैया के चुपचाप दऽ देलथिन भैया हुनकर पैर पकड़ि लेलथिन............।

''शाहजी, अपनेक एहि एहसान क तर मे दबि गेलहुँ एकरा हम कोना चुका सकब?'

ई अहाँ की बजै छी विजय बाबू? अहाँक इज्ञत आब हमरो इज्ञत अछि।

विदाईकाल हमरा कनिको करेज नञि फाटल। मन मे भेल अइ नरक सँ पिंड छूटल। मां के एतेक खुश कहियो नञि देखने छलिएन्ह। हमरा सासुर सँ आयल गहना-कपड़ा चीज वस्तु देख गदगद छलीह। बेटी मर्सिडीज गाड़ी मे विदा भऽ रहल छलैन्ह। ओ बजलीह-'सल्लो। ज्योतिषी सत्ते कहने छलै एकर भाग्य बहुत नीक छै राज करत।' हमरा दाई मां मोन पड़लीह। आइ दाई मां जीवित रहैत तऽ केहन खुश होइत। विवाहक जोड़ा..........।

ब्रेक फास्ट टेबुल पर हम बहुत देर धरि बैसले रहि गेलहुँ। प्रायः सभटा टेबुल खालि भऽ गेल। तेसर बेर जब वेट्रेस पूछलक-'मैडम, सम मोर कॉफी?'

'ओ नो थैक्स।'

वेट्रेस वर्त्तन बासन समटऽ लगलीह। ओकर गाल लालटेस छलै आ केश कारी घुघरल आँखि खूब पैध। बड्ड हँ समुख खूब सुन्दर मुँह मुदा मोट-मोट हाथक आंगुर परूषाह कड़ा काज करैत-करैत एहन भऽ गेल हेतै। आब हमरा अइठाम सँ उठि जयबाक चाहि ओ हाथ मे स्पंज नेने ढाढ़ि छल पोछा लागबऽ लेल। हम उठ लगलहुँ तऽ कहलक-'हैपी डे मैडम........।'

टिप लेल किछ सिक्का धऽ बढ़लहुँ। काउंटर पर बैसल औरत चिन्हल सन मुसकी सँ स्वागत कयलक। बिल पर साइन कऽ हाथ मे छाता लऽ सड़क दिस बढ़लहुँ। बिना कोनो उद्देश्य कें टहलब बड्ड नीक लगै'छ खास कऽ जँ मन मे कोनो कहानीक ताना-बाना बुनैत होइ।

हं विदा होइत काल गाड़ी मे बैसल-बैसल हम सोचैत छलहुँ आब हम बड़का घरक पुतौहु छी। सासु आदर पूर्वक गाड़ी सँ उतारलनि। हमरा देह पर छल पचास हजारक घाघरा आ दस लाखक हीराक सेट। इ ह सेट ससुर जी चुप चाप पठौने छलाह। आब भविष्य मे जे होमए एखन त हम या परिवारक लोक जेहन कल्पनो नञि कयने छल। तेहन सम्बंध भेल। एहि गुनधुन मे हम माथ झुकौने पीढ़ा पर बैसल छलहुँ ओतऽ मुदा मन कतहु आन ठाम छल। हँसी वा गीत-नाद किछ मन के छुबैत नञि छल। कपड़ा बदलि कऽ नरेन्द्र अयलाह तऽ हमरा ओहिना बैसल देख झुझलाक बजलाह-'मम्मी की हिनका एहिना मूरूत जकां बैसौने रहबैन्ह?

बड़की पीसी बजलथिन-'अरे मुन्ना ई आइ तोरा लग नञि जेथुन काल्हि सोहागराति हेतै।'

से कियेक? हुनका स्वर मे झुझलाहट....आवेग उत्कंठाक अलावा दर्प के बोध भेल।

'बेटा, ब्याहक राति फरक रहैत छै कनियाँ वर काल्हि देवी, देवता क आराधनाक बाद सोहागक थारी मे भोजन कऽ वर कनियाँ कोबर घर मे जाइत छै' मां बड्ड मोलायम स्वर मे बजलथिन।

'हम ई पूजा-पाठ के नञि मानेत छी सब पोंगापथी गप्प छै।'

हाल मे ससुर जीक संग आर दू चारि गोटे छलाह। नरेन्द्र दृढ़ता सँ ठाढ़ छलाह। मने-मन सोचलहुँ ई केहन लोक दथि कुल देवताक पूजा सँ पहिने... . बड़की पीसी किछ कहिथिन ताहि सँ पहिने मां हुनका रूम मे लऽ गेलथिन। लग मे बैसल चचेरी ननदि हँसी मे बजलीह-'यौ नरेन्द्र भैया, एको राति प्रतीक्षा नञि कऽ सकैत छी?'

ससुर जी लोक सभक संग नीचाँ चलि गेल छलाह। आ हम लाजे माथ झुकौने छलहुँ। ई केहन तमाशा शुरू कऽ देलनि ई हमरो बुझल अछि पहिल राति वर-कनियाँ संग नञि सूतैत छै। करेज धुक-धुक करैत छल कोनो अपशकुन ने भऽ जाए। नरेन्द्र ओहिना ठाढ़ छलाह तऽ सासुमां बड़की पीसी के हाथ। पकड़ि बाहर लऽ गेलथिन। बेटा के कहैत गेलथिन 'बौआ ठीक छै जे अहाँक उचित बुझाए सेइ सही।'

'पहिने हिनका कपड़ा बदलाव दिऔन्ह अइ कपड़ा मे कोना आराम करतीह।'

सासु धीरे सँ हमरा कान मे कहलनि 'चलू कपड़ा बदलि लिअ।' निन्न आ थकनि सँ सब औंघाएल छल बड़की पीसी सोफा पर बैसल छलीह तामस सँ मुँह लाल लगैत छलैन्ह। हमरा सासु के देखकऽ बजलथिन

'भाभी अइ घर क रीत नीत सब बदलि गेलै?'

हमरा कीकहैत छी 'आब बौआ नेना नञि छथि।'

-तखनहु.........।

हमर सासु रूकलैन्ह नञि एक तरहें हमरा घीचने बढ़ि गेलीह।

सुहागराति मे हम बर्फ बनल छलहुँ-छब्बीस वर्षक युवक नरेन्द्र देह के नोंचैत-खंसोटैत रहलाह मुदा हमरा कोनो उछाह नञि। देहक एकटा स्वाद होइत छैक............जेना झाग बला बीयर! हमरा उत्साह होइत कोना? हम तऽ डरें सूखल पात जकाँ थर-थर कँपैत छलहुँ। प्रत्येक पुरूष हमरा दंशित कयने छल। हम बेर बेर नरेन्द्र कें कहऽ चाहैत छलिए-'हम कुमारि नञि छी... हमर तन-मन टूटल अछि ... अहाँ हमर सहचर छी.... हम सब बात साफ-साफ कहि देबऽ चाहैत छी-सभटा ईमानदारी पूर्वक। नरेन्द्र अहाँ पढ़ल-लिखल छी अमेरिका सँ एम० बी० ए० कऽ के घुरलहुँ अछि, मुदा नञि ओ एतेक अवसर कियेक दितथि बीस मिनट मे अपन भूख शान्त कऽ करोट फेर सूति रहलाह। हम थाकल, क्षुब्ध पड़ल छलहुँ। औंघएल स्वर मे बजलाह-'बत्ती बन्द कऽ दियौ रौशनी मे आँखि.....। हम चुपचाप उठि कऽ बत्ती बंद कयलहुँ। बाथरूम मे जा कऽ बाथटब मे बैसलहुँ। मेंहदी लागल हाथ सँ आँखिक नोर पोछ लहुँ। फेर शावर खोलि देलिऐ बहुत काल धरि देह मलि-मालिकऽ नहाइत रहलहुँ। शीतल जल सँ तन-मन कें राहत भेंटल। ई हमर जिनगीक प्रथम-मिलन छल जीवन संगीक संग। दू दिनक बाद हम सब हनीमून मनाब गेलहुँ। दहेज मे आयल समान खोलि कऽ देखलनि। बजलनि। किछ नञि। अधिकतर समान बक्से मे रहलै। बक्सा बंद कऽ बॉक्स रूम मे राखि देलथिन। मां सँ वेशी गहना कपड़ा

सासुर क देल छल। कीमती साड़ी, पश्मीनाक कश्मीरि शाल। हनिमूनक बाक्सा सासुए पैक कयलनि। रंग-बिरंगक ब्रा आ पैंटी। एक सॅ एक सुन्दर मॅहगा नाइटी, दू टा सूट आ दू टा साड़ी। संभवतः बेटाक स्वभाव बुझल छैन्ह मां कें। नरेन्द्र दस दिन क हनीमून के समय मे मात्र दू-दिन बाहर घूमऽ गेलाह। नरेन्द्र कहियो हमर अतीत के विषय मे नञि जानऽ चाहलनि ने हमर पसन्द बूझऽ चाहलनि। भोजनक आंडरो दैत छलाह अपने इच्छा अनुसार। भोजन करैत काल पेट भरि गेला। पर पानि पीबि उठि जाइत छलाहटा इ हो नञि देखैत छलाह जे हम एखन एको टो रोटी नञि खयलहुँ अछि।

नरेन्द्रक वहशी भूख सॅ हम आंतकित छलहुँ दिनोदिन हुनकर सेक्सुअल भूख बढ़िते गेलैन्ह। रातिए मे नञि सांझि दिन-दुपहर आ भोर बेर-कुबेर कखनहुँ। कतेक बेर पार्टी मे जयबा लेल तैयार होइत छलहुँ कि घर घीच कऽ लऽ जाइत छलाह। 'प्रिया.........एखन अहॅ बहुत सुन्दर लागि रहल छी पार्टी मे जे देखत तकरा लेर चुबऽ लगतै तऽ अपन वस्तुक पहिने अपने कियेक ने स्वादि ली।'

- 'छिः नरेन्द्र एखन ई बेर छै?'

' अहॉक मने तऽ कखनहु बेर नञि होइ छै? आइ घरि कहिओ अहॅ के सेक्स के जरूरत भेल अछि?'

'नरेन्द्र हमरा एकर भूख नञि स्नेहक भूख अछि।'

'तऽ की बिना स्नेहकें हम अहांक पाछू पागल भेल छी?'

'मुदा स्नेह आ सेक्स मे फर्क होइत छै।'

'अहाँ अपन फिलॉसफी अपने लग राखू।'

'नरेन्द्र एक बेर हमर बात तऽ सुनू .... मुदा के सुनत फेर चारू हाथ-पैर कसल बहशी उन्माद........! नरेन्द्र मे गजब छलनि। इएह पैशन गदहा-जकॉ राति-दिन खटबैत छलनि। टका, आर टका, जाहि दिन कोना सफल डील होइत छलनि तहिया भोजन काल कोनो विशेष वस्तुक फरमाइश करैत छलाह वा ऑफिसे सँ फोन कऽ दैत छलाह-'भोजन बढ़िया बना कऽ राखब।' आब बढ़ियाँ भोजनक अर्थ बूझि गेल छलहुँ तैं सोझे रसोई घर मे जा कऽ महराज जी कें कहि दैत छलिऐन्ह बा मां के कहैत छलिऐन्ह-मां सुनि कऽ हर्ष सॅ विभोर भऽ जाइत छलीह।

मां-बेटा मे एकटा अजीब समानता छैन्ह। एके रंग संग्रही वृति आ भावनात्मक लगाव मे कमी। मम्मीक देखैत छलिऐन्ह दिन-राति शॉपिंग चूड़ी, मैचिंग चप्पल हुनका ड्रेसिंग रूम मे एक लाइन सॅ आलमारी छलैन्ह ओह मे

कम से कम एक हजार साड़ी ब्लाउज, पेटीकोट आ रंग-बिरंगक चूड़ी, चप्पल के कतार लागल ततबे मेकअप के समान। ओना ओ वेशी काल हल्का लिपिस्टिक लगबैत छलीह मुदा राखल छलै सब रंगक लिपिस्टिक, बिन्दी। हमरा एहन संग्रही वृति सॅ विरोध छल हम चीज वस्तु किनैत छलहुँ व्यवहारिक दृष्टिकोण सॅ। पहिने सासु टोकितो छलीह 'प्रिया नीक साड़ी पहिरू ई की गर सुन्न, हाथ सुन्न... श्रृंगार तऽ सोहागिन क....।

-मम्मी! हमरा जेवर पहिरनाई असुविधा जनक लगै'छ आ भरि दिन कपड़ा बदलैत रहब समय के दुरूपयोग नञि तऽ आर भी? हुनका हमर उतर नीक नञि लगलैन्हि-चेहराक भाव सँ बुझलहुँ।

मां-बेटाक विपरीत स्वभाव छलैन्हि पापाक लम्बा छरहरा शरीर, गौर वर्ण, खादीक कुरता आ धोती मे सौभ्य व्यक्तित्व। अति मिलनसार, मृदु भाषी कहियो जोर सँ बजैत नञि सुनने छलहुँ। तखन बेटा एहन प्रचंड।

नरेन्द्र के स्वर मे अनुरोध क बदला आदेशक गर्जना रहैत छलनि। हुनका सोझा सब जी हजुर क मुद्रा ठाढ़ रहैत छलनि। दूधक गिलास नेने नरेन्द्र के पाछू नेहोरा करैत छलीह - 'बौआ दूध पी लिअ।' भऽ सकै'छ ओ एखनहुँ एहिना नेहोरा करैत होयतीह। बचपन सँ आइ धरि हुनकर जूताक फीता बन्हैत छैन्ह नौकर। ऑफिस सँ घुर ला पर ओ सोझे अपना रूम मे जाइत छथि। जूता पहिरने बिछाबन पर ओंघरा जाइत छथि कोट एक दिस फेकल रहैत छै नौकर जूता खोलि, मोजा खोलैत छै फेर तौलिया पानि मे भिजाकऽ तरबा रगड़ि पावडर लगा दैत छैन्ह।

नरेन्द्र एखनहुँ बदलल नञि होएताह। ओ कहियो अपना हाथ मे ब्रीफकेश लऽ आफिस लेल विदा नञि होइत छलाह। रामू ब्रीफकेश नेने जाइत छलै गाड़ी मे धऽ दैत छलै। मां के घर मे हम ककरो नौकर सॅ जूता पहिरैत देखने छलिऐ ने खोलैत। हमरा तैं अजीब लगैत छल। नरेन्द्र केश कटाबऽ लेल सेलून मे नञि जाइत छलाह । सेलून बला अबैत छलनि पेडिक्योर आ मेनिक्युर करऽ। पता नञि दिन मे कतेक बेर सेंट लगबैत छलाह। कपड़ा क आर्डर होइत छल तऽ एक बेर मे कम से कम एक दर्जन। हुनकर सबटा हिसाब-किताब रहैत छलनि फिक्सड आ रिजिड। नाक क सोझ मे चल बला नरेन्द्र कें कखनौ बाम-दहिन देखबाक पलखति नञि। आब तऽ हम इ हो बुझि गेलिए जे ओ कखन कोना हाथ बढ़बैत अछि कतेक लग मे घिचै'छ आ कतेक काल हँफैत रहै'छ। धन कमयबाक तरीको ओकर अपने ढंगक छलै मेहनत नञि करैत छल। स्पेक्यूलेशन. ...... गजब छलै सत्ते कुशाग्र बुद्धि छै। माल स्टाक करब तखन वेशी सॅ वेशी

कीमत मे बेचब। कहियो पेट्रोलियमक कोनो वस्तु कहियो केमिकल, कहियो स्टील तऽ कहियो दालि। कोनो तरहक वस्तुक स्टाक कऽ सकैत छल जँ दलाल ओकरा सॅ वेशी पाइ न असुलै।

ओ हारनाइ जनिते नइ छल। जाहि दिन शेयर बाजार मे मंदी होइत छलै बस माइग्रेन के दौर शुरू भऽ जाइत छलै। घंटों माथ दबैंत रहैत छलिऐ तइओ आराम नञि। मम्मी जी दस बेर भोजन लेल आग्रह करथिन तऽ 'ओह! मम्मी हमरा तंग नञि करू एखन भोजन नञि कऽ सकब।'

'खा लिअ, बौआ! हमर बात राखऽ लेल एकोटा फुलका खा लिअ नञि तऽ हम राति भरि बेचैन रहब।'

शायद हमरा एसगर खाइत मम्मी के नीक नञि लगैत छलैन्ह मुदा ओ अपनो एसगरे खाइत छलीह। अजीब घर छै नास्ताक टेबुल के अलावा चारू सदस्य कहियो संग बैसकऽ भोजन नञि करैत छथि। पापा सांझि मे चाह पी कऽ बहराइत छथि तऽ राति कऽ घर अबैत छथि। पहिने हम बुझैत छलिऐ जे पापा क्लब जाइत छथि ताश खेलऽ। तैं एकदिन मम्मी के कहने छलिऐन्ह–मम्मी पापा रोज ताश खेलऽ बाहर जाइत छथिन त कियेक नञि एकदिन घरे पर ताश पार्टीक आयोजन कयल जाए? एतबा सुनिते मांक सांस तीव्र गति सँचलऽ लगलैन्हि ओईठाम सँ उठैत बजलीह–'अहीं पापा सॅ पूछि लेबैन्ह!'

सत्ते हम किछ नञि बूझने छलिऐ। मम्मीक अचानक एहन व्यवहार सॅ चिन्तित छलहुँ तऽ मोन पड़ल–सल्लोदीदी आ मां फुसुर-फुसुर बतिआइत छलीह–मां हुनका घर क वातावरण नीक नञि छै नरेन्द्र के पापा क एकटा बंगालिन सॅ सम्बंध छैन्ह।'

'ताहि सॅ की कोनो घर मे रखने छथिन।'

'मां, ओइ बंगालिन के एकटा बेटियो छै।'

'सल्लो दू बच्चाक मां भऽ गेलहुँ आ एखनहु ज्ञान नञि छौ। जैं किछ कमी छै तैं ने करोड़पति हमरा ओतऽ ब्याह करबा लेल तैयार भेल। आ लड़का मे कोनो कमी नञि छै एहन घर वर किन्नहु पार लगैत।'

हम सोचैत छलहुँ पाप जतऽ जाइत छथि आ आतेक राति क घुरैत छथि से की मम्मी के बूझल छनि? मुदा मां क चेहरा देखला सँ तऽ कनिको किछ नञि बुझना जाइछ एकदम सपाट कोनो व्यथाक लकीर नञि चेहरा पर। हँ, कहियोकाल नास्ताक टेबुल पर ऑखि लालटेस फूलल पल देखैत छिऐन्ह जेना राति मे कानल होथि। तखन पापा क स्वर आर मोलायम खुशामद करैत सुनैत छी आ मम्मी मात्र हं, नञि मे उतारा दैत छथिन। कहियोक हमहीं पूछैत

छिऐन्ह–मम्मी, मोन खराब अछि?

'नञि, बेटी, हम एकदम नीके छी।'

'अहॉक ऑखि सूजल अछि?'

ओ हड़बड़ाक कहैत छथि सर्दी मे हमरा एना भऽ जाइत अछि।'

'पापा माथ झुकौने चाहक कप मे चम्मच सॅ चीनी मिलबैत रहैत छथि आ नेरेन्द्र क हिंसक ऑखि पापाक चेहरा पर चिपकल रहै'छ।

लगै'छ टहलैत-टहलैत हम बहुत दूर आबि गेलहुँ अछि। एकदम खुजल आकाश आ चमकैत पहाड़। एक दिस उगैत सूर्य आ दूर क्षितिज पर दोसर दिस मेघ खंड। गर्मी महसूस होइछ कोट खोलिक हाथ मे राखि लेलहुँ। दुपट्टा सॅ मुँह-कान पोछलहुँ। आब कतेक चलब? घुरऽ चाही।

होटल पहुँचैत-पहुँचैत साढ़े बारह बाजि गेलै। भूख लागल छल कियेक ने भोजन कऽ ऊपर जाइ। मुदा एखन स्नानो नञि कयने छी। खैर, कोनो बात नञि बाद मे स्नान कऽ लेब।

भोजन करैत काल जर्मन दम्पति पर नजरि पड़ल। जोसेफ कखन पॉछा मे आबि कऽ ठाढ़ भेल बुझबे नञि के लिऐ।

–'मैडम।'

हम चौंकलहुँ।

–'अहाँ जर्मन जनैत छी?'

'नञि।'

'आ, ओ लोकनि अंग्रेजी नञि जनैत छथि नञि तऽ अहा सॅ अवश्य गप्प करितथि।'

हमरा खुशी होइत। नीक लोक बुझाइत छथि।

–'हँ, बड्ड नीक लोक छथि। प्रत्येक वर्ष पन्द्रह-बीस दिन एतऽ रहैत छथि।'

'कहिया सॅ आबि रहल छथि।'

'पछिला दस वर्ष्ज्ञ सॅ। मैडम अहाँ स्ट्राबेरी सूफले लेब? एकदम फूल-सन हल्लुक बनलैए, मुँह मे रखिते गलि जाएत।'

'जोसेफ बुझाइत अछि अहाँकें मीठ बहुत पसंद अछि।'

– 'मुदा हमरा बुढ़िया खाय ने दैत अछि।'

– 'से कियेक?'

'हमरा बाप कैँ डाइबिटीज छै ओकरा छै हमरो भजेतै।

'अहाँक बहुत मानैत छथि। अहाँ कें बाल-बच्चाक अछि की नञि?'

'इएह तऽ दुःख अछि। बच्चा नञि अछि हम सोफीक बिग बेबी छी।'

हम दूनू खूब हँसलहुँ। जर्मन दम्पत्ति हमरा विश कयलनि हम अंग्रेजी मे उतारा देलिएन्ह। आब हमरा दूनूक बीच जोसेफ दुभाषिया बनि गेल छल। हुनका हमर कुरताक कढ़ाई बड्ड नीक लगलैन्ह। फेर पुछलनि हम की लिख रहल छी कोन भाषा मे लिख रहल छी। सुफला आनऽ जोसेफ गेल त हमरा सभके हँसी लागल कियेक तऽ गप्पक पुल बनल छल।

अपना रूम मे जा कऽ परि रहलहुँ तुरत भोजन कऽ स्नान कोना करब। कखन आँखि मुना गेल नञि बुझलिऐ। आँखि खुजल तऽ चारि बाजि रहल छलै। उठिकऽ बालकनी मे अयलहुँ। दूर-दूर धरि समुद्रक अथाह पानि आ कछेड़ मे पाथर.......

कुर्सी घिच कऽ ओहिठाम बैसि गेलहुँ। एहिना हम बच्चा मे बालकनी मे बैसैत छलहुँ। ओत ऽत गोरैया रहैत छल कोन चिड़ैंक चूनल जाए ? आ चुनाव सॅ हमर चिड़ै भेंट जाएत? भऽ सकै'छ भेंट जाए' मुदा हम अपन भविष्यक चुनाव कऽ सकैत छी? .... व्यवस्था जतऽ सुरक्षा दैत छै ओतऽ दमघोंटु वातावरण। तथापि शुरू मे हम सहज रूपें सभटा स्वीकारने छलहुँ।

नरेन्द्र के पाछू लागल रहैत छलथिन मम्मी जी। अपन सुपुत्रक प्रत्येक श्वास गनैत रहैत छलीह आ चाहैत छलीह हमहूँ हुनके जकॉ नरेन्द्रक आगॉ-पाछॉ डोलैत रहि-बहुत दिन धरि हम ओहिना करैत छलहुँ। तऽ हमरा महसूस भेल जे नरेन्द्र हमरा अपन पत्नी सॅ वेशी सेक्रेटरी आ नौकरानी बुझैत छथि। नरेन्द्र कखनहुँ कहैत छलाह 'प्रिया अइ नम्बर सभ पर फोन मिलाउ तऽ कखनहु आर्डर दैत छलाह-'ई पार्टीक लिस्ट छै हिनका सभके समय पर कार्ड भेंट जाए चाही। आ सुनू काल्हि हमरा पार्टीक मेनूक लिस्ट बनाक ऽदऽ देब।'

हम घंटो मेनू लेल माथापच्ची करैत छलहुँ फेर कहियो कोनो कैटरर सॅ तऽ कहियो कोनो कैटरर सॅ बात करैत छलहुँ। सभटा एवन होइबाक चाही। हं लगातार पाँच वर्ष धरि हम एकदम जुटल रहैत छलहुँ तऽ पार्टी एवन होइतो छलै। मरि-मरि कऽ सभटा ओरियान करैत छलहुँ फूल सजेनाई हरदम मेज पर नव क्रॉकरी। एपल पाई सूफले कतऽ के नीक टार्ट बनबैत अछि से तकैत अपस्यॉत रहैत छलहुँ। सब खेप नव-नव डिश लेल तबाह रहैत छलहुँ। दिन पक्का सोलह घंटा मेहनत। प्रात भऽ सब बर्तन के साफ करबेनाई, लॉन साफ करेनाई खर्च क हिसाब किताब। हमरा सॅ वेशी मम्मीजी के पार्टी क उत्साह रहैत छलनि हँ, हुनकर बड्ड सहारा भेंटैत छल। मुदा पापा लेखे धन्न सन्न ओ चुपचाप कोनो कात मे ठाढ़ रहैत छलाह एकदम निरपेक्ष जेना ओइठाम रहितो

ओतऽ नञि होथि। वेशी काल तऽ गेस्टके अबिते नहुँ-नहु ओतऽ सॅ विदा भऽ जाइत छलाह। दोसर दिन फेर देखैत छलिऐन्ह मम्मी जीक मुरझाएल मुंह फूलल लाल ऑखि। सफाई दैत छलीह पार्टीक थकनि सॅ एना लगै'छ।

पार्टी क दिन मात्र घर क सजावट आ लॉन मे मेज सजौनाईए नञि अपनो सजऽ पड़ैत छल। आर्डर दैत छलाह-'प्रिया फिरोजी फ्रेंच शिफॉन पहिरब जे अइबेर हम पेरिस सॅ अनने छलहुँ ओकर संग फिरोजी सेट पहिरब। लोक देखै हमर श्रीमतीक शान-शौकतं' नीचाँ उतरैत-उतरैत फेर सवाल-'इ की अहॉ कार्टियरबला घड़ी नञि पहिरलहुज? अंचार बनाएब रंग-बिरंगक घड़ी रहैत एहन पहिर लेलहुँ! कतेक बेर कहलहु कनि नीक जकां मेकअप करू कनि स्टाइल सॅ रहू बस पोनीटेल कऽ लैत छी?

'हम मने-मन क्षुब्ध होइत छलहुँ।'

आ पार्टी मे बहुत गर्व सॅ नरेन्द्र बैंकक चेयर मैन सँ हमर परिचय मे कहैत छलाह-दर्शन मे पी० एच० डी० छथि। प्रिया इम्हर आउ ई छथि जस्टिस बनर्जी, मिस्टर कौल, ई छथि हमर पत्नी आ अहॉ कलक्टर कस्टम्स। प्रिया-ई छथि शंकर भाई पापाक खास दोस्त। आ हमर अखरल छल-शंकर भैयाक भेदैत नजरि बुझू जे साड़ी क भीतरी शरीर धरि पहुँचल होमय। एहिना ई फलां छथि ओ फलां छथि.......

ई सब शुरूह मे भेलै। सब दिन पार्टी हंगाम राति मे देह चूर-चूर लगैत छल। मन मे होइत छल की एहिना हमर जिनगी बीतत? मारवाड़ीक दू अढ़ाई सौ करोड़पति खान दान सब पार्टी मे वएह चेहरा हुनके बीच घूमनाई। कला-मंदिर जाइ तखनो वएह लोक। क्लब जाइ तऽ एकहिटा रटल रटाओल शब्द-अहॉ कोना छी?.... नीकें छी, कुशल-क्षेम......बहुत बढ़ियाँ........ फेर क्यो भेंटल त वएह शब्द दोहराउ। सब परिचित मुदा क्यो मित्र नञि बनल। नरेन्द्र के परिचितक परिधि छल गुलरके फल जाहि मे असंख्य बीज रहैत छै।

आब हम अइ सब सॅ ऊबऽ लागल छलहुँ। बात-बात मे चिड़चिड़ापन। दाई नौकर पर बजैत छलहुँ। ऊबि गेल छलहुँ बैंकाक सॅ मंगाएल पपीता, लीचू, कीवीआ आ अमरूद सॅ। बम्बई सॅ आयल अलफांसो आम आ स्ट्रोरीक सूफले सॅ। स्काईरूम सॅ अबैत छल एपल स्टूडल, चितरंजन मिष्ठान भंडार सॅ रसगुल्ला आ मोहन भोग, नूतन बाजार सॅ संदेश कौलेज स्ट्रीट सॅ कांचा गोला, शमकि केशरिया राबड़ी.... ऊँ हूँ आब नञि। जिनगी भरि खाउ आ खुआउए टेबुल सजाए घर सॅ लान धरि सजाउ, बर्त्तन बाहर कराउ फेर रखबाउ एकहिटा रूटिन बड्ड नीरस लगैत छल। ..... ई गृहस्थीक झमेला कहियो एकऽ वला नञि। की

एकरे संसार-सागर कहल जाइत छै? ई रिपीटेशन .... सबटा ओहने कहियो कोनो बदलाव नञि। विवाहक डेढ़ साल बाद संजुक जन्म भेलै। हमरा मांक स्थिति दिनो-दिन खराबे भेल गेलैन्ह। सास-ससुरक उदारता फेर देखलिए। अपने एक लाखक समान बंटलनि। ससुर जी लग फेर गाड़ी मे भैया मिमिआइत बजलाह-'शाह जी हम तऽ अपनेक एहसान कहियो नञि चुका सकब।' ससुरजी फेर दोहरा देलथिन 'विजय बाबू आब अहांक इज्ज़त हमरो इज्ज़त अछि।'

राति मे मम्मी जी चारिटा थारी मे फल आ मिठाई सजौलनि एकटा कीमती साड़ी आ ग्यारह सौ टाका एकटा लिफाफ मे धऽ पुरनका ड्राइवर राम सिंह के फुसफुसाक किछ कहलथिन। हम एतबे सुनलिए जे 'राम सिंह देखब नरेन्द्र बाबू नञि बुझथि।'

आइ पहिल बेर हम मम्मी जी सॅ पूछलिऐन्ह-'मम्मी जॅ ओ बुझिए जेथिन तऽ की हेतै? आ हुनका सॅ नुका कऽ कियेक पठबैत छिऐ?'

'हम की करू। बाप बेटाक लड़ाई मे हमहीं पिसाइत छी। नञि पठेबै तऽ ओ मुँह फुला लेता आ नरेन्द्र के कान मे ई खबरि जेतै तऽ घर मे महाभारत मचि जेतै।'

हम मम्मी जी क बुद्धिमत्ताक लोहा मानि लेलहुँ। अपना स्वत्व लेल हमर सासु कुटनीति सॅ काज लैत छथि। जे बात अपने नञि कहऽ चाहैत छथिन से बात नरेन्द्र सॅ कहबा दैत छथिन। तैं बेटो वश मे छैन्ह आ पति दूनू।

हम डेढ़ मास क बाद पहिलबेर संजुके लऽ कऽ नैहर गेल छलहुँ तऽ घुरती काल राम सिंह के कहने छलिऐ-राम सिंह! कनि कारनानी स्टेट्स चलब।' ओ कहलक..... मुदा छोटा साहब?

'ओ नञि बुझताह।'

हं, तऽ पापाक दोसर पत्नी के हम पहिल बेर देखलिएन्ह। मुन्ना के करेज सॅ सटा लेलैन्ह हुनकर ऑखि डबडबा गेलैन्ह। पचास वर्षक अई प्रौढ़ाक पैर छुवि प्रणाम कयलिऐन्ह मुदा फुराइत नञि छल की कहि हुनका सम्बोधित करिऐन्ह? फेर अनायास हमरा मुँह सँ 'छोटकी मां' बहराएल। ओ भरि पॉज घऽ अपना हाथक सोनाक मोटका कंगन निकालि कऽ पहिरा देलैन्ह'

'छोटकी मां! ई जरूरी छै?'

'हं, बहुत जरूरी छै पहिल बेर अहांक मूंह देखलहुँ अछि। ब्याह मे नञि जा सकलहुँ। नीना बड्ड कनैत छलीह मुदा समाज मे ककर-ककर मूँह बन्द कयल जा सकै'छ?'

'एखन कत छथि नीना?'

'अबिते हेतै। अहां के देख कऽ बड्ड खुश हेतै।'

'कतेक टा छथिन ?'

'उन्नीसम वर्ष छैक।'

मन भेल जे पूछिऐन्ह-'अहाँ अइ जीवन सॅ असंतुष्ट होउब! नीनाक भविष्य लऽ चिन्तित रहैत हेवई?' यद्यपि ओ पापाक नामक सिन्दुर लगबैत छथि। गला मे मंगलसूत्र पहिरने छथि। मुदा ओ मम्मी जी क स्थान नञि पाबि सकैत छथि। मोन पड़ल विवाहक समय मांक रोषपूर्ण स्वर- 'बौआ विजय, शाहजी के एकटा बात फरीछाक कहि दहुन जे बरियात मे अपन दोसर पत्नी के नञि आनथि। लोक दुर छी दुर छी करत ककर-ककर मूँह बन्न करबै दस लोक दस मुँह बाजत जे समधि रखैल रखने छथिं' डेराइत-डेराइत सल्लो दीदी पूछने छलथिन जे रखैल ककरा कहैत छै तऽ बड़की दीदी कहलथिन जकरा सॅ विवाह बिना कयने सम्बन्ध रहैत छै आ भरण-पोषण करैत छै तकरे उप पत्नी वा रक्षिता रखैल कहैत छै।' तऽ हम एहि सासुक शान्त-स्निग्ध चेहरा देख रहल छलहुँ। अहू उमर मे भव्य लगैत छथि सोना सन दमकैत रंग-रूप। के कहतै एहन पवित्र व्यक्तित्व क स्वामिनी के कलंकनि?

छोटी मां के मुँहे सुनलहुँ जे हुनकर पिता कलकत्ता हाईकोर्ट के प्रसिद्ध बैरिस्टर छलथिन। हमर ससुर तहिया बैरिस्टर शुभेन्दु सेन ओतऽ मवक्किल के रूप मे जाइत-अवैत छलाह। तखने दोस्ती भेलैन्ह। पापाक उम्र तखन लगभग चालिस वर्ष छलैन्ह। आ छोटी मां एक्कैस वर्षक नव युवती। लॉरेटो कॉलेज सँ अंग्रेजी मे बी० ए० आर्नस। पापा बैरिस्टर सेन के परिवारक सदस्य जकॉ निध ोख जाइत अबैत छलाह। बैरिस्टर साहेब कें एकटा बैटा छलनि जे बार एटलॉ करबा लेल लंदन गेल छलैनह से ओतहि बैसि गेलैन्ह। पापा संग मम्मी जी जाइत छलथिन। छोटी मां शुरूहे सँ हुनका दीदी कहैत छलथिन। पापा, मम्मी आ छोटी मां जकर नाम छलैन्ह तिलोत्तमा संग प्रेम प्रसंग बढ़बैत रहलाह। मम्मी जाबत बुझलथिन ताबत बात बहुत आगाँ बढ़ि चुकल छलै। छोटी मां क पापा क्रोद्ध मे हुनका घर से भगा देलथिन। पापा कालीघाट जा कऽ छोटी मां सॅ विवाह कऽ लेलैन्ह। कानून मानै या नञि मानै मुदा साक्षी छलैन्ह धर्म मां काली। बिना कोनो शर्तक पापा लेल मौन स्वीकृति छलैन्ह एकोन्मुखी अग्नि जकाँ अहर्निस जरैत रहब। हं, नैहर सॅ नाता टूटि गेल छलैन्ह सब दिन लेल नैहर सॅ क्यो अबैत छलैन्ह ने छोटी मां कहियो नैहर गेलीह। नीना अपन नानाक मुँहो नञि देखलैन्ह। बाबा हमरा माफ नञि कयलनि हम हुनका लेल कलंक छलहुँ। अइ घटनाक बाद पापा बैरिस्टर समाज मे कहियो माथ उठा क नञि चललाह

.... छोटी मां अपन अतीतक कथा सुना रहल छलीह। औरत क जिनगी विचित्र होइत छैक कनि खरोंचि दिऔ कि दुःख-दर्द, व्यथा-पीड़ा आ त्रासदीक क बहैत समुद्र देखब। नीना कें देखिते नैन जुड़ा गेल मन प्रसन्न भेल। उन्नीस वर्षक नवयुवती एकहरा देह नाम, कारी-कारी लम्बा केश, पैद्य-पैद्य आँखि ठोर लाल पापा सन पातर, घूरी सन नाक।

'नीना.....।' हम शोर पाड़लिऐन्ह।

'भाभी!' कहि ओ गर धऽ लपटि गेलीह। 'भाभी ब्याहक बाद अहाँ आर सुन्दर भऽ गेलहुँ।'

'ब्याह सॅ पहिने अहाॅ हमरा देखने छलहुँ?'

'हँ, ब्याहे दिन। हम सब सॅ नुका कऽ गेल छलहुँ। ककरो पता नञि लगलै ने पापा के ने मम्मी के, ने आर क्यो बुझि पाओल। हमरा आन्तरिक इच्छा छल भैया-भाभी केहन लगैत छथि से देखी।' हमर आँखि नोरा गेल। केहन निष्ठुर छै इ। दुनियाँ एहन मौसुम बच्चीक संग एतेक निष्ठुरता।

हम एकटक नीनाक मुँह देख रहल छलहुँ। एकटा अपूर्व चमक छलै नीनाक चेहरा मे। पैघ-पैघ आकर्षक आँखि, पातर-सुगबा नाक बंगालक नजाकत आ राजस्थानक कद-काठी। लॉरेटो मे बचपन सॅ एखनधरि अध्ययनरत अइ लड़की मे रचल-बसल छलै खुलापन। कनिको कुठा नञि। सहज-सरल ढंग सॅ बात करऽ बाली। आगां की करऽ चाही, की नञि से नीक जकाँ बुझैत छथि।

'भाभी, पापा चाहैत छथि हमर ब्याह आब भऽ जाए चाही। मुदा हम से नञि होमऽ देबै। हम पहिने अपना पैर पर ठाढ़ होएब।'

'पहिने अहाँ एम०ए० करऽ आवश्यक नञि छै। हम काल्हिए ग्रैंड होटल मे इंटरव्यू दऽ कऽ अएलहुँ अछि। बुझाइत अछि नौकरी भेंट जाएत।

'इ नौकरी पापा पसंद करता?'

'भाभी सब बात मे हुनकर इच्छा-अनिच्छाक ध्यान देब आवश्यक छैक? भाभी हम नीक जकां जनैत छी-जे हम पापाक नजायज संतान छी। मां भनहिं पापाक नामक लाल सिन्दुर लगाबथु मुदा ओइ लाल रंग मे करिखा लेभरल छै।'

'नीना मन मे एतेक कड़बाहट रखने अपने नुकसान हेत' ने।'

'नञि हम से नञि मानैत छी। जीवित रहबा लेल आ अपन स्वत्त्वक लड़ाई लड़बा लेल आवश्यक छै जे अपन अपमान आ वंचना के सदति काल याद राखी। हमरा नीक नञि लगै'छ जँ क्यो सिखबैत अछि जे चुप रहू।'

'ठीक छै। मुदा अइ सॅ अहा दुखी नञि रहैत छी?'

'हं दुखी छी तैँ चाहैत छी सुख अर्जित करऽ। स्वाब लम्बी महिला कैँ क्यो निरादर नञि कऽ पबैत छै। सच कहैत छी भाभी पापा जे मासे मास टका पठबैत छथि ताहि सॅ हमरा घृणा होइत अछि। पापा सन डेरबुक व्यक्ति सॅ हमरा घोर घृणा अछि।'

ताबत चाभीक गुच्छाक स्वर सुनलहुँ। छोटी मां ट्रे मे चाह-नास्ता लऽ कऽ आबि गेल छलीह। हुनकर पति-भक्ति, उदार-हृदय, सहज-समर्पण आ बहिर गाय जका स्थिति सॅ मूक समझौता हमरा मन मे कतेको प्रश्न चिन्ह..।

सीढ़ी पर उतरैत काल ओ नहु-नहु बेटी प्रिया अहाँ अयलहुँ से क्यो बूझए नञि खासकऽ अहांक मां आ दीदी। मुदा हम चाहैत छी जे फेर मौका पाबि अहाॅ अइठाम आउ।'

पता नञि छोटीमांक स्नेह-सिक्त व्यवहार मे कोन एहन जादू छलनि जे हम हुनका करेज मे मुँह सटा कानऽ लगलहुँ। हुनका करेज मे सटिते हमरा दाई मां मोन पड़ल। आ तकरबाद मोन बड्ड हल्लुक भऽ गेल।

पापा, आब हमरा प्रति कृतज्ञ रहै छथि। आ हमरो मन के शान्ति भेँटैत अछि छोटकी मांक घर गेला सॅ। आ नीना तऽ हमर अन्तरंग सखी, बहिन सब किछु छथि। हम सदतिकाल सोचैत रहैत छी नीनाक विषय मे। एहन होनहार लड़की छथि केहन हेतैन्ह हिनकर भविष्य? मां-बापक कलंक? बीच-बीच मे हम सँजुकें पठा दैत छलिऐ छोटकी मां लग। एक दिन की भेलै जे भोजनक मेज पर बैसल ओ बक बक कऽ रहल छलै-'हम नीना पीसी कें कहलिऐन्ह जे जाबत अहाँ हमरा संग लूडो नञि खेलब हम कहियो.....।'

हमर सासु गरजैत पूछलथिन-कोन नीना पीसी?

सँजु तऽ नेना अछि हम जाबत किछ कहितियै ताहि सॅ पहिने सॅजु बाजि देलकै।

'ओ जे हमर सभक दोसर घर अछि.. जत छोटकी दादी मां छथिन..हमरा खूब मानैत छथि....।'

हमर सासुक चेहरा क्रोद्ध आ अपमान सॅ लाल भऽ गेलैन्ह। आ नरेन्द्र त बुझू जे जेना फूस मे चिनगी सॅ धधकि उठैत छै तहिना छऽ छऽ कऽ लगलाह।

'संजु कें लऽ कऽ के छलै ओतऽ ? पापा अहाँ ??'

'व्यथा आ अपमान सॅ पापाक चेहरा स्याह भऽ गेलैन्ह। हमरा नञि रहि भेल तऽ कहलिऐ-'हम पठौने छलिए।'

'कियेक आ ककरा आर्डर सॅ?' नरेन्द्रके क्रोद्धक ज्वाला बढ़ले जा रहल छलै।

अपना घर मे अपने दादी आ पीसी लग जयबाक लेल संजु के आर्डर लेबऽ पड़तै?'

'की बकबक कऽ रहल छी। बिना सोचने-विचारने जे मन होइ ए से करैत छी आ बजैत छी।'

'हम गलत कतऽ छी? की चुटकी भरि सिन्दुर सँ क्यो पत्नीक हक पाबि लैत छै? आ बीस वर्ष धरि बिना सात फेरा लेने जे सम्बन्ध कें जीबैत छै से नकारल जेतै?'

'ओ रखैल छै......मिस्ट्रेस......हमर मां नञि।' घृणा सँ हमरा तन-मन मे आगि लागि गेल। आइ पहिल बेर देखलिऐन्ह सासुके निष्क्रिय चेहरा पर परमतृप्तिक भाव। पापा उठिकऽ चलि गेल छलाह।

सुनू प्रिया। 'आब कहियो संजू ओतऽ नञि जेतै'

ई नरेन्द्रक रोषपूर्ण फरमान छल।

'तऽ अहूँ सुनि लिअ, हम ओतऽ जेबै आ हमरा संग संजुओ जेतै ओ मात्र अहीं के बेटा नञि अछि ओकरा पर हमरो हक अछि। छीः अहाँ सभ के तऽ ने दया अछि ने ममता। इंसानियत ककरा कहैत छै से संवेदनहीन व्यक्ति कोना बुझतै? पापा ककरा भरोसे चलि फिर रहल छथि?'

'प्रिया! हम कहैत छी चुप्प रहू।'

'नञि, आब हम चुप्प नञि रहब। नीना हमर ननदि छथि, संजुक पीसी, अइ घरक बेटी।'

'तड़ाक! सँ एक थापड़ दहिना गाल पर पड़ल। हम हतप्रभ भेल चालीस वर्षक नबालिग पुरूष के देखते रहि गेलहुँ। एहिना, एक दिन एकटा पुरूष कहने छल, 'बेवकूफ लड़की के कहने छल हम अहाँ से ब्याह करब?'

हां, हं, एहिना...... की एहिना हमरा संग होइत रहत? हम नोराएल ऑखिए सासु दिस तकलहुँ ओ गुम्म भेल माटिक मूरूत जकाँ बैसल छलीह। शून्य, प्रतिक्रिया विहीन गोर चिक्कन चुनमुन..... नाक मे हीरा क लौंग चमकैत छलैन्ह। माथ पर लाल बिन्दी मांग मे सिन्दुर। सुहागिन.....पत्नी......जायज संतान! छीः औरत लेल ई समाज केहन निर्मम छै? आ एहि समाजक निर्माण करऽ बला पुरूष केहन कायर?

सत्ते नरेन्द्र संवेदन शून्य पुरूष अछि। ओ मात्र टका, नीक भोजन आ सेक्स जनै'छ। हमरा अपना चारूभर सभटा ओझराएल सन लगैत छल।...... गाल पर थापड़, सासुके चुप चाप तकैत रहब, पापाक उठि कऽ बाहर जायब आ सबसँ वेशी अखरैत छल अपन कर्पूर जकां विद्रोह मे धधकब आ तुरत नोर बहाकऽ

शान्त भऽ जायब। अपन अइ प्रवृति कें हम कखनहुँ दया, कखनहुँ उपेक्षा आ कखनहुँ किछ आर विशेषण दैत छलहुँ । अपन अइ खंडित व्यक्तित्वक परिसीमा सँ परिचित छलहुँ। नरेन्द्र के छोड़ि नञि सकैत छी। कारण-सुरक्षाक भाव? व्यवस्थाक स्वीकृति? अपने सँ प्रश्न पूछैत छलहुँ-'सच,सच कहू प्रिया! अई घुप्प अन्हार गुफा सँ कहिया बाहर निकलब? एकटा मन कहैत छल सब चुपचाप रहैत रहू। मुदा कतेक दिन की सब सहैत रहब-गारि-बात, मारिपीट आ अन्तहीन शोषण क समर्थन करैत घरक लोक के उपदीश सुनैत रहू?'

किछ नञि फुराएल तऽ आलमारी खोलि अपन दू-चारि टा साड़ी लेलहुँ आ पर्स मे एक हजार टका पैर मे चप्पल पहिर सीढ़ी सँ उतरलहुँ। हमर मन हमरे पर हँसैत छल-वाह! मिसेज प्रिया अग्रवाल, इ कोन फिल्मक दृश्य छैं?'
'हाथ दहिना गाल पर अनायास गेल अहिठाम थापड़ मारने छल नरेन्द्र।

तारा सिंह के कहलिए गाड़ी गेट पर आनऽ।

'मां के घर जयबाक अछि।'

नैहर पहुँचलहुँ। मां लग जा कऽ चुपचाप गद्दा, पर बैसलहुँ। मां कुशल-क्षेम पूछलैन्ह । भाभी पूछलैन्ह 'की लेब चाह की शर्बत?'

'हम, हम..... एतऽ रहऽ आयल छी।' बजैत-बजैत स्वर खड़खड़ा गेल। हं तऽ रह ने। नैहर मे लोक रहैत नञि छै। हम तऽ कतेक बेर कहलिऔं किछ दिन एतऽ रहऽ।'

नञि, मां! हम आब ओत नञि जयबैऽ। हम नरेन्द्र सँ तलाक लेबऽ चाहैत छी।'

'की बक-बक कऽ रहल छैं?'

मां जी, बुझाइत अछि प्रिया जी कें नरेन्द्र बाबू सँ झगड़ा भेलैन्ह अछि। आपस मे ककरा झगड़ा नञि होइत छै। सब ठीक भऽ जेतै। अहाँ चिन्ता नञि करू।' भाभी बजने छलीह।

'भाभी, हम सत्ते सीरियस छी। अहाँ मां के समझा दिऔ .... हमरा ओइ नरक मे कियेक पठौलैन्ह?

'हमरा ओ की बुझौतीह आ तू की कहबें? तोहर केहन स्वभाव छौ से हम नञि जनैत छिऔ। ब्याहक बाद तऽ आर बिगड़िए गेलौ बोली-वाणी।'

अच्छा, प्रिया जी एखन अहाँ चलू हमरा रूम मे आराम करू फेर गप्प-सप्प हेतै। हं एकटा बात कहैत छ जे आब अहाँ कें मुन्नाक ध्यान मे राखिकऽ किछ बात-व्यवहार करऽ चाही। दस वर्षक भऽ गेल, दस वर्षक बाद पुतौहु घर आयत।'

प्रिया! तू जनम लेने तहिए सॅ हमरा दुःख दैत रहलें। हमरा आर बेटा-पुतौहु अछि मुदा ककरो एहन कड़ा स्वभाव नञि छै। सरोज डाक्टरद छै। मुदा कहियो कमल बाबू कें शिकायतक मौका नञि दैत छैन्ह। सुन-हम अइ घर सॅ विदा कऽ देलिऔ आब तोहर घर छौ ओतऽ। एखन हिं तोहर सासुक फोन आयल छलौ। बेचारी कनैत-कनैत कहलनि।

'समधिन! आब हमर इज्ज़त अहींक हाथ मे अछि। अहाँ जनैते छिऐ-'नरेन्द्रक स्वभाव क्रोधी छै मुदा प्रियो चुप्प नञि रहैत छथि।'

'ओह! तऽ एतबे काल मे ओ अहाँ कं फोनोकऽ देलैन्ह?'

'तऽ बेचारी कोन अघलाह कयलनि बेचारी गाय छथि आनठाम कतहु ब्याह होइतौ तऽ पता चलितौ।'

'प्रिया छोड़ू इसभ बात। मियाँ-बीबी मे झगड़ा होइते रहैत छै। अहाँक भैया क बोली कड़ा नञि छैन्ह?'

हम उठिकऽ भाभी क संग हुनका रूम मे गेलहुँ। जाइत-जाइत सुनलहुँ मां बजैत छलीह-'प्रियाके समझा-बुझा कऽ पठा दिऔ काल्हि अहाँ सभक बेटीक ब्याह कोना हेत? कहै छै तलाक लऽ लेब एहनो बात क्यो बजैंछ कुल मयार्दा किछ नञि बुझैत छै।

हम भाभीक बिछावन पर बैसते छलहुँकी नरेन्द्र के फोन आयल-'हम आबि रहल छी।' दूनू भाभी मंद-मंद मुसुका रहल छलीह। छोटकी भाभी झट रसोई घर गेलीह। नरेन्द्र अयलाह। हमरा देखते 'अपन कान पकड़ैत छी....उठठू चलू। हम मंत्र-मुग्ध भेल नरेन्द्र संग विदा भेलहुँ।'

घर अयलहुँ। सासु सोफा पर बैसल छलीह संजु कोरा मे बैसल-छ लैन्ह। संजु के देख कऽ हमरा करेज फाटि गेल बुक्का फाड़ि कनलहुँ। हम एखन फेर अपनाके डरल सहमल, व्यवस्थाक क सुरक्षा तकैत नीरीह लड़की जकां देखलहुँ।

आब हमरा अपन निर्णय बचपना बुझाइत छल। पलंग पर पड़ल छलहुँ ऑखि सॅ नोर टघरैत छल। नरेन्द्र आबि कऽ भरि पॉज छऽ नोर पोछैत बजलाह-'प्रिया हम तऽ क्रोद्धी छिहे अहूँ के बजैत काल होश नञि रहैत अछि जे मन मे होइए बाजि दैत छी।' अपना दिस घुमबैत बजलाह हे, हमरा ऑखि मे देखिऔ हम अहाँके कतेक मानैत छी। अहाँ कँ हमर शपथ फेर कहियो एहन डेग नञि उठायब। हमर नोर देख ओ करेज सॅ सटा लेलैन्ह एना बताहि जकाँ कियेक कनैत छी। मारू अहूँ हमरा थापड़ मारू। फेर हमरा चूमऽ लगलाह-हम नञि जानि कोना सम्पूर्ण समर्पण-घबरा कऽ केवाड़ दिस तकलहुँ त हँसैत

बजलाह-घबराउ जुनि केवाड़ बन्द छै।'

ओइ दिन पापा कहने छलाह-'बेटी! प्रिया अहाँ पढ़ल-लिखल छी।'

'नरेन्द्रो तऽ पढ़ल-लिखल छथि पापा।' डिग्री सॅ की होइत छै जकर जेहन मानस भूमि तकर तेहन सोच। अहाँ संवेदनशील छी। तैं हम अहाँ कें कहि रहल छी। हमरा लेल अहॉ अपन जीवन के नरक नञि बनाउ। अहॉक दुर्गति हमरा नञि बर्दाश्त हेत। अपन अपराधक सजा हम अपने भोगब। हम जनैत छी नरेन्द्र हमरा कहियो माफ नञि करत! कनि रूकि कऽ फेर बजलाह इ हमर त्रिकोण अछि, अइ मे अहॉ नञि ओझराउ। आ संजुके ओतऽ नञि जाए दिऔ।'

हमरा मोन मे कतेको प्रश्न घुड़िआइत छल-बहुत किछ पापा के कहबाक छल बहुत प्रश्न क उत्तर सुनाबक छल।

बेर-बेर मन मे होइत छल पापा सॅ पूछिऐन्ह की छोटी मांक प्रति हुनकर कोनो दायित्व नञि छैन्ह? हिनका बाद छोटी मांक देखरेख के करतैन्ह? नीना हिनकर बेटी नञि छैन्ह.......ओ कतेक दिन धरि नजायज संतानक संताप सहैत रहतीह........?' मुदा हम किछ नञि पूछलिऐन्ह । पापा उठि कऽ चलि गेलाह। हुनकर झुकल कान्ह जेना आओर झुकि गेलैन्ह।

धीरे-धीरे दिन ढ़रल। गाछ बिरीछ केर नमरल छॉही अपन बेचैनी हवा मे मिझरा रहल छल। वातावरण मे नीरस शुष्क पारदर्शित ऊबाऊ लगैत छल। हम स्वयं सँ दूर अपन अस्तित्वक निषेधक तत्त्वक आगाँ नमस्तक छलहुँ।

निन्न टूटल। देखल प्रात प्रभा स्नात, चिड़ैं चुनमुनिक चुं-चु, डाइनिंग हाल मे बजैत सिम्फनीक मधुर स्वर संग नील आकाशक राग-रागिनी सुनलहुँ।

चाहक चुसकि लैत सोचैत छलहुँ की करू? मोन नञि पड़ल आइ कोन तारीख छैक। एतऽ अयला मात्र सात दिन भेल अछि मुदा बुझाइत अछि जेना महीनों सॅ एतऽ रहि रहल छी। समुद्रक लहरि आ दूर सॅ अबैत लाल मोटर बोट केर एकटा अद्भूत आनन्द कें महसूस करैत छी। हवा मे सुगंध छै जे श्वास-श्वास कें सुवासित कऽ रहल अछि। हमर अपन जिनगी? जिनगी मे गर्म चट्टानक ऊष्मा अछि जे समुद्रक नमकीन लहरि के चुमि-चुमि ताजगी दऽ रहल अछि। अपना कें सम्बोधित कऽ मन बजै'छ-प्रिया वर्तमान के भोगब सीखू समय अयला पर इएह स्वतः सृजनक कृति क रूम पे उभरत। वर्तमानक एहि वैभव के छोड़ब बुद्धिमानी नञि।

हमर एकटा अतीत अछि जे वर्तमानक संग घिसियाइत रहैत अछि। संजु वला घटनाक साल भरि बाद पापा क देहान्त भेलैन्ह। हमरा होइत क्यो जा कऽ छोटी मां के लऽ अबितैन्ह। पापाक अत्तिमबेर दर्शन भऽ जेतैन्ह छल। मुदा नञि

प्रतिष्ठित अग्रवाल हाउस मे ओ कदापि नञि आबि सकैत छथि-नरेन्द्र बाजल छलाह। निष्ठुर, संवेदनहीन आर नञि जानि की सभ मोने-मोन हम बाजल छलहुँ। फेर साहस कऽ नहु-नहु सासु के कहलिएन्ह-ओ आर जोर सॅ कानऽ लगलीह। पीसी सान्त्वना देत छलथिन 'भाभी, अपना कें सम्हारू। हिम्मत सॅ काज लिअ..... अहॉ तऽ सब दिन बर्दाश्त करैत रहलहुँ अछि।' हमरा ऑखिक सोझा छोटी मां चेहरा बेर-बेर अबैत छल हुनकाऽ तऽ क्यो दू टा बोल भरोस देबहु बला नञि छैन्ह के ककरा बर्दाश्त कएल से के कहि सकै'छ।

हं, बाबूघाट पर बहुत दूर एकटा औरत के नहाइत देखलिए। अरे ..... इ तऽ छोटी मां.... एसगरे.....चूड़ी फोड़ैत...... सिन्दुर मेटाएल एकदम एसगर...... फेर हुनका जाइत देखलिऐन्ह! मोन पड़ैत अछि ओ दृश्य तऽ एखनहु ऑखि नोरा जाइत अछि! हमरा सासु के द-दस टा औरत आगाज-पाछाँ छलैन्ह। मुदा हम ककरा दोष देबै? व्यक्ति के? समाज के? की परम्परा के? की छोटी मां स्वयं अइ सभक जिम्मेदार नञि छलीह हरदम निष्क्रिय मौन छलीह। हुनके खून छैन्ह नीना जे एलान करै'छ सुख नञि अछि तऽ अर्जित करब।'

पापाक गेलाक बाद घर मे चुप्पी पसरल रहैत छल आ नरेन्द्र आर पावर फुल भऽ गेलाह। पहिने कनिको लाज-धाख तऽ छलैन्ह पापाक। आब तऽ ओ स्वयं सम्पूर्ण परिवारक कर्ता-धर्ता छथि। विवाहक मात्र पांच वर्ष बीतल छल आ हमर सभक आपसी सम्बंध क्षत-विक्षत होमऽ लागल छल। कनि-मनि खरोंच तऽ बहुत पहिने लागल छल....सुहाबराति...... वा हनीमून के समय ऊँ हूँ संभवतः संजुक भेलाक बाद। नीक जकां मोन नञि पड़ि रहल सब दिन तऽ बक झक होइते रहैत छल दिनो-दिन दू हृदय मध्य दूरी बढ़िते रहल। शायद दूनूक भिन्नविचार के कारण। दूनू गोटेक स्वभाव एकदम भिन्न छल। एक दोसर के सहन करब कठिन छल। नरेन्द्र के संग हम पहिलबेर अमेरिका गेल छलहुँ त पन्द्रह दिन संग रहब कठिन भऽ गेल छल। न्यूयार्क मे हमर इच्छा छल आर्ट गैलरी देखबाक, राति मे ब्राडवे मे कोनो नाटक..... मि० नरेन्द्र अग्रवाल......... .? भोर सॅ शापिंग के चक्कर मे हम परेशान भऽ जाइत छलहुँ कहितो छलिऐ। नरेन्द्र एतेक वस्तुक कोन प्रयोजन ?......' 'अहॉके कोनो वस्तु नञि चाही ठीक छै। अहाँ जोगिन बनल रहू। मुदा हमरा किछ किनऽ काल टोकू जुनि।' शापिंग, शापिंग, शापिंग। भोर सँ सांझि घरि। शर्ट, पैंट्स, स्वेटर्स, जैकेट, टाई, परफ्यूम, साबुन, पेस्ट की कहॉ एक दू नञि सब दर्जनक हिसाब सॅ। आ राति मे भोजन लेल भारतीय वा चाइनीज रेस्टोरेंटक खोज। भोजनक बाद ब्लू फिल्म देखनाई! सेक्स के फूहड़ प्रदार्शन!! हम अकछि कऽ बजैत छलहुँ नरेन्द्र एक बेर देखलहुँ

दू बेर देखलहुँ की रोज-रोज.......।'

अरे, की बजैत छी एहन थ्रील देखबालेल फेर कहिया भेंटत? आ ओतऽ सॅ घुरला पर होटल मे वएह वहशी उत्तेजना हमर एक-एक अंग निस्पंद भऽ जाइत छल। महिलाक शरीरक फूहड़ प्रदर्शन सॅ कोनो महिला कोना उत्तेजित भऽ सकै'छ? शायद ककरो होइत होइ मुदा हमरा तऽ ओ देखि घृणा भेल। सत्ते पश्चिमी भोगवादी समाज मे औरत मात्र वस्तु बनि गेल छैक। ओ लाइव शो देखि कऽ हमरा मोन पड़ल छल सर्कस। ओना आबतऽ सबठां खुलापन बढ़ले जाइत छैक अपन-अपन रूचि। खैर हम जखन वाशिंटन जाए लागलहुँ तऽ हमर शर्त छल जे हम ऐतिहासिक स्थानके देखब।

'नरेन्द्र! अहॉ हमरा ईष्ट विलेजो नञि देखऽ देलहुँ।'

धुर, की देखितहुँ। आ इ अमेरिकन सबठां लाइन लगाकऽ ठाढ़ होइछ। हमरा सॅ लाइन मे ठाढ़ भेनाई नञि पार लागत।

तऽ सबसे पहिने हम सब वाशिंगटन के म्यूजियम मे गेलहुँ। स्पेश क्ररफ्टक विभाग मे एकटा विशाल पर्दा पर पूरा सौर मंडल जगमगाइत छलै आ एकटा छोट सन चमकैत बिन्दु छलै जत लिखल छलै-'पृथ्वी।' हमरा एकटा विचित्र सन वैश्विक अनुभूति भेल। हम बाजि उठलहुँ एहि असंख्य ग्रह-नक्षत्र मे एकटा छोट छीन पृथ्वी, ताहि पृथ्वी पर असंख्य मनुष मे एकटा हम तखन एतेक अहंकार! कनि सोचिऔ नरेन्द्र! बिना मतलब के कतेक अहंकार डेबने रहैत छी। हमर 'हम' की अछि? किछ नञि महा सागर मे जेना एक बुदा पानि मुदा नरेन्द्र छलाह कहां ओत? हम बेचैन भऽ चारू भर तकलहुँ कतऽ गेलाह। तऽ देखलिऐन्ह काफी क काउंटर पर ठाढ़ भऽ पोटाटो चिप्स खाइत छलाह। मन झूर झमान भऽ गेल। हम दूनू गोटे दू भिन्न दिशा मे सोचऽ वला मनुष छी। कखनहुँ संवाद संभव नञि। एकर बाद अइ यात्रा क्रम मे हम कतहु जयबाक जिद्दनञि कएलहुँ। अपना मन के बुझालेलहुँजे भऽ सकैंछ हम पहिलबेर आयल छी तँय सभटा एतेक आकर्षित कऽ रहल अछि। नरेन्द्र तऽ कतेक बेर आयल छथि दोसर बात जे ओ बिजनेस मैनेजमेंटक कोर्स व्हार्टन स्कूल आफ मैनेजमेंटस सॅ कयने छथि। आ अपन-अपन रूचिक बात छै। मुदा पढ़ल-लिखल व्यक्तिक रूचिकारिष्कृत परिमार्जित नञि भऽ सकै'छ? भऽ सकै'छ मुदा मिस्टर अग्रवाल के नञि भऽ सकै'छ। कखनौ मन कहैत छल-की हम हुनक रूचि नञि बदलि सकैत छी प्रयास करऽ चाही। कखनौ मन कहैत छल-सब प्रयास हमहीं करबै की हुनकर जिम्मेवारी नञि छैन्ह किछ?

जिम्मेवारी दूनू गोटेक अछि। गलत बात व्यवहार लेल दूनू गोटे सह

अपराधी होएब। हं, ई हमर दोष अछि जे हम गुलामी स्वीकारि ..... गुलाम बनल रहबाक अपन नियति मानि ली।

कोनो एकटा घटना होमए तऽ ओकर विश्लेषण कयल जाए। वैवाहिक जीवनक कोनो एकटा पक्ष कमजोर रहैत तऽ ओकरा पर ध्यान नञि दितिऐ मुदा जखन बात सम्पूर्ण अस्तित्वक होइ तऽ क्यो कोना अनठा देत?

महिलाक आदर करब तऽ नरेन्द्र सीखबे नञि कयलनि। घर मे पीसी अबैत छलथिन या सर कुटुम्बक भाभी बहिन ककरो टेउरैत नञि छलाह प्रणाम-पाति वा कुशल क्षेम किछ नञि बस अबैत जाइत काल 'हाय-हेलो।' आ जाबत पीसी किछ कहिथीन ताबत ओ आगाँ बढ़ि जाइत छलाह। एतेक धरि जे अपना मां के आदर पूर्वक कखनौ गप्प-सप्प करैत कहां देखैत छिऐन्ह ..... मां अहॉ किछ नञि बूझैत छिऐ फूहड़ जकां बजैत छी.... अहाँ के कोनो तौर तरीका नञि बूझऽ अबैत अछि।... ओह अहॉ के किछ नञि बनबऽ अबैत अछि वएह वदामक हलुआ की मालपुआ धुर.....जेमन मे अबैत छैन्ह बकऽ लगैत छथि। मां भोरे सॅ लागल छलथिन छेना फाड़ि कऽ मालपुआ बनौने छलीह बेटाक बात सुनि अपरतीप सन भेल हमरा कहलनि पहिने इएह मालपुआ क फरमाइश करैत छल आब नीके नञि लगैत छै अहीं मन पसंद वस्तु बना दिऔ।'

मम्मी 'अहॉक बनाएल एतेक स्वादिष्ट नास्ता नञि नीक लगैत छैन्ह तऽ हम की बना कऽ देबैन्ह जएता कल्ब मे, ओतहि खयता। हमरा सॅ नञि हेतै।'

नञि हेत? बस श्रृंगार-पटार करू रंडी जकॉ आ ऑफिस जाउ। कहैत कॉचक मेज पर जोर सॅ चम्मच पटकि उठिकऽ ठाढ़ भऽ गेल छलाह।

'रे' इ कोन बाजऽ के तरीका छै'? मां कहने छलथिन। हम बेमन सॅ पुआ टुंगैत रहलहुँ। दस वर्षक संजु एक बेर हमरा एकबेर पापा के टुकुर-टुकुर देखैत छल। पापा के गेलाक बाद बाजल-'दादी, बहुत नीक बनल अछि मालपुआ खूब टेस्टी। पापाक मूड खराब छलैन्ह तैं नीक नञि लगलैन्ह।'

बेचारा सँजु-मां-पापा क झगड़ा मे अनेरो पिसाइत छल। सम्बन्धक इतिहास होइत छैक मुदा घटना जे घटित होइत छैक तकर कोनो तारीख दर्ज नञि होइत छै। कहिया, कखन कोन घटना हमरा दूनू गोटे के फरक-फरक दिशा मे धकेलऽ लागल मोन नञि पड़ैत अछि। बस एतवे मोन पड़ैत अछि हथौड़ी सॅ क्यो धमाक-धमाक हमरा अस्तित्व के थुड़ि रहल छल। घुटन दिनो-दिन बढ़िते रहल। तखन हम किताब मे मन लगयबाक कोशिश करऽ लगलहुँ। अहू लेल नरेन्द्र कहने छलाह...... 'इन्टेलेक्चुअल शो ऑफ।' जम्हर देखू किताबे-किताब। बेकार पाइ बर्बाद करैत छी नेशनल लाइब्रेरी सॅ आनि के पढ़ू

'किताब नञि पढ़ूतऽ की करूॅ? कोना समय बिताऊ?' 'आर महिला कोना समय बीतबै छै?'

कहबाक मोन भेल मुदा चुप्पे रहलहुँ। हिनकर मित्र आ ओकर पत्नी ताशपार्टी छै। रंग-बिरंगक नास्ताक प्लेट, शिवासक बोतल, फूहड़ मजाक बचकानी चुटकुला मात्र सेक्स पर चर्चा। ओइ बैसक मे हम सामिल नञि भऽ पबैत छलहुँ।

नरेन्द्र अहू पर व्यंग्य करैत छलाह-'की ओकर सभक पत्नी पढ़ल-लिखल नञि छै ओ सभ तऽ बैसल रहैत छै। अहींक मानसिक स्तर उच्च अछि?'

'नरेन्द्र हम से कहाँ कहैत छी? छुट्टीक दिन दोसरो ढंग सँ बीता सकैत छी कतहु घूम जाइ वा घरे मे बैस कऽ संगीत सुनि......। '

'प्रिया, हम जे फिल्म अनैत छी से हो अहाँ के नीक नञि लगैत अछि।'

नरेन्द्र अहाँ कतेक दिन धरि ब्लू फिल्म देखैत रहब ? आब त संजुओ पैद्य भऽ रहल अछि।'

संजुक अलग रूम छै ओइ रूम मे अलग विडीओ छै।' हम जिनगी भरि देखैत रहब ब्लू फिल्म।' संजु ओ फिल्म अइठाम सॅ उठा कऽ लऽ जेतै तऽ?'

'अहॉ करैत रहू रखवारी।'

सत्ते हम उबिया गेल छलहुँ ओइ वातावरण मे ? बस दिन भरि किताब नेने बैसल रहैत छलहुँ पढ़ऽ सॅ बेशी सोचैते रहैत छलहुँ। सासु कहैतो छलीह-'प्रिया, केहन मुँह-कान बनौने रहैत छी। एखन नञि सजब-धजब तऽ की बुढ़ारी मे सजब?

मने नञि होइए मम्मी जी।

'एकटा बच्चा भऽ जाइत तऽ ओइ मे अहॉ बाझल रहित हुँ......।'

हम सोचऽ लगलहुँ की बच्चा भेला सॅ हमर खलिपन भरि जाएत-आ से कतेक दिन एक वर्ष, दू वर्ष अधिक सॅ अधिक पाँच वर्ष? मोन भेल सासु से पूछिऐन्ह मम्मी जी अहाँ कँ समय बीतेनाइ कठिन नञि लगै'छ ? कोन एहन काज करि जाहि मे व्यस्त रहि से नञि फुराइत छल। हं मन भेल पढ़ौनीक काज करि । नरेन्द्र सँ पूछलिऐन्ह। उतारा भेंटल-अहॉक दिमाग खराब भऽ गेल अछि ऽ आब अहाँ गुप्ता हाउसक बेटी नञि अग्रवाल हाउसक पुतौहु छी। संकेत छल कुमारि मे एकटा स्कूल मे पढ़बैत छलहुँ। सुनि कऽ काठ भऽ गेलहुँ।

फेर एहन संयोग जे नरेन्द्र स्वयं प्रोपोजल देलनि। सत्तर केर दशकं विदेशी मुद्राक अभाव, विदेश गमन पर पाबंदी। आ मि० अग्रवाल मित्र मंडली मे शान बधारैत छलाह साल मे दू-दू बेर विदेश जा कऽ। आब कछमछी छयने छैन्ह।

बजलाह 'प्रिया हम चाहैत छी अपनो एक्सपोर्टक धंधा शुरू करू। सार प्रमोद दिन-राति उठैत-बैसैत विलायतक डींग मारैत रहैत अछि।' प्रमोद नरेन्द्रक जिगरी दोस्त छलै। पच्चीस वर्षक दोस्ती मुदा तइओ ओकरा शिकायत छलै प्रमोद जी सँ। इम्हर पाँच वर्ष सॅं ओ जिनगीके पटरी पर आनलनि अछि। सोझ, सच्चरित्र लोक। बापक मुइलाक बाद भाई सब धन दाबि लेलथिन। बेचारा पत्नीक जेबर बेच कऽ सिल्कक कारोबार शुरू कयलनि। अपना करोड़ोक धंधा धैन्ह तइओ प्रमोदक उन्नति सॅं जरैत छथि। पार्टी मे प्रमोदके बजबैत छथिन मुदा ककरो सँ परिचय नञि करबैत छथिन।

एक दिन बजलाह आइ प्रमोद के बजा कऽ कहबै अपना कम्पनी मे हमरा डाइरेक्टर बना दे। प्रमोद जी बड्ड शालीनता सॅं ई बात टारि देलथिन। ओ जनैत छलथिन नरेन्द्र के लेबऽ आ देबऽ बला तराजू भिन्न-भिन्न छैक। प्रमोद जी कहलथिन।

'भाई! एकटा व्यापारी भारत सॅं हैंडीक्राफ्ट अयात करऽ चाहै'छ....जँ कोनो हैंडीक्राफ्टक वस्तु पढाओल जाए तऽ कारोबार शुरू भऽ सकैत छै।'

'अरे, तऽ ई कोन पैद्य समस्या छै कोनो मैनेजर.....' हं, मैनेजर राखि लिअ, आ एक वर्षक बाद अपन एक्सपोर्ट शुरू भऽ जाएत। मुदा एतेक छोट स्केलक काज तऽ अपने हाथे करऽ पड़त।'

'से तऽ छै मुदा हमरा ओतेक समय कहाँ रहैए?' हम किछ बजितहुँ ताहि सॅं पहिने प्रमोद भैया कहलथिन-'अहाँ कैँ समय नञि अछि तऽ भाभी जी के कहियोन्ह कारोबार सम्हारऽ लेल।'

'हूँ, प्रिया आ एक्सपोर्ट......। रसोई घर मे तऽ जाइते नञि छथि।' हमर मोन झुर-झुमान भऽ गेल।

'भाई, हमरा जे कहबाक छल कहि देलहुँ आब अहॉं दूनू गोटेक जे इच्छा होइ करू। कलात्मक रूचि बिना ई व्यापार नञि भऽ सकै'छ आ प्रिया भाभीक व्यक्तित्व मे कलात्मक रूझान छैन्ह।'

'आर्डर कतेक दिन मे भेटतै?'

'जहिया कहू। अगिले मास ओ एमस्टरडम सॅं आबऽ बला छै। भभी जी कें कोनो ऑफिस मे भरि दिन रहऽ पड़तैन्ह मात्र दू-तीन घंटा क बात छै। एहि व्यापारक बहाना सॅं जतेक बेर इच्छा होइ विदेश घूमि आयब।

जिनगी मे पहिलबेर आ शायद आखरीबेर सासु हमर पक्ष लेलैन्ह-'नरेन्द्र, प्रिया के इ व्यापार सम्हार दिऔ मन बाझल रहतैन्ह।'

हं, तऽ हम मोन लगाबऽ लेल काज शुरू कयलहुँ। जे बनि गेल हमर

जीवनी शक्ति। छोटे स्तर पर छलै कारोबार मुदा हम व्यापारक सम्पूर्ण संरचना कें बुझबाक प्रयास कयलहुँ। हैंडीक्राफ्टक पूरा इतिहास पढ़ि लेलहुँ। गाँव-गाँव जा कऽ देखलिऐ कोन वस्तु कोना बनैत छै। आब बुझलिऐ हमर देश केहन समृद्ध अछि!

.... पीतर आ ताम्बाक मूर्ति, हाथी दाँतक समान, लकड़ीक लुगदीक बनल वस्तु........। पहिल बेर हम नरेन्द्र संग विदेश गेलहुँ। फिलिप के ऑफिस में घुसऽ से पहिने नरेन्द्र कहलनि-'प्रिया, अहाँ चुप्पे रहब।' हम चुप्प छलहुँ। फिलिप जे समान बनयबाक-सप्लाईक बात कहैत छलथिन तुरत नरेन्द्र कहैत छलथिन-'नो प्रॉब्लम।' हम जनैत छलिए कोनो वस्तु बनयबाक मे कतेक समस्या उत्पन्न हेतै। मुदा हमरा मनाही छल तैं चुप्पे छलँहु।

अन्त मे बजलाह फिलिप-मिस्टर नो प्रॉब्लम! हमरा अछि एकटा समस्या। हम चाहैत छी 'जे प्रदर्शनी मे भारतक व्यापारी भारतीय शिल्प के विषय मे चर्चा करए।'

प्रदर्शनी मे कतेक दिन रहऽ पड़ैत ?'

-'सात-आठ दिन।'

'सात-आठ दिन? बट आइ एम ए बिजी पर्सन।'

-फिलिप बजलाह: 'देन डोंट डू दिस वर्ष। ओ. के.। कहि घड़ी देखऽ लगलाह फिलिप । बात टूटैत देख नरेन्द्र के चेहरा पर तनाव झलकैत छलैन्ह। हम डराइत-सकुचाइत बजलहुँ- 'मि. रॉथवेल! अहाँ हमरा पाँच मिनट समय दऽ सकैत छी?'

'हं, हं, कियेक नञि?'

'सुनू-हमरा हैंडीक्राफ्टक विषय मे किछु जानकारी अछि।

-अहाँ जाहि मूर्तिक विषय कहि रहल छी, तकर दू-चारि टा पीस त हूबहू बनि जायत मुदा हजारक संख्या मे असंभव छैक।'

'कियेक?'

'कारण स्पष्ट छैक हाथ सॅं बनाओल जेतैं प्रत्येक कारीगरक अलग-अलग ढंग होइत छैक। रंग मे फर्क भऽ सकैत छै तैँ।'

'मुदा हमर गांहक?'

'ई अहाँक काज अछि जे अपना गांहक के हैंडीक्राफ्टक अर्थ बुझाबी। हाथ सॅं बनैत छैक तैं मात्र वैरियेशन एकर सुन्दरता छै। मशीनक बनल वस्तु लेल अहाँ हमरा देश नञि आयब। मशीनक बनल वस्तु तऽ अहाँ कें ताईवान मे भेंट जायत।'

'अहाँ एकदम सत्य बाजि रहल छी।' फिलिप के चेहरा प्रसन्नता सँ खिलल छलै। नरेन्द्र कें कहलथिन बुझाइत अछि अहाँक पत्नी अहाँ सँ वेशी बुझैत छथि एहि विषय मे।'

ई सुनि नरेन्द्र के चेहरा फक भऽ गेलैन्ह। फिलिप एक लाख टकाक आर्डर देलनि। हम अति प्रसन्न छलहुँ। खुशी सँ धरती पर पैर नञि पड़ैत छल। होटल पहुँचिते नरेन्द्रके गर पकड़ि लपटैत बजलहुँ 'लेट्स सेलेब्रेट नरेन्द्र! चलू शैम्पन पीबऽ।'

'हूँ, एक लाखक आर्डर की भेंटलनि, रानी जी नाचऽ लगलीह। हम करोड़ो कमाइत छी तइओ एना नञि उधिएलहुँ कहियो।' हम गुम्म भऽ गेल छलहुँ। संभवत: आपसी सम्बन्ध मे ओहि दिन पहिलगांठ परि गेल छल, एमस्टरडमक रॉयल होटल, कमरा नम्बर तीन सौ चारि मे।

कमराक घंटी बाजल। चौंकलहुँ। 'कम-इन' कहैत केवाड़ खोललहुँ। रूम क्लीनिंग लेल होटलक नौकरानी आयल। 'गुड मार्निंग मैम; कहि सफाई मे जुटि गेल। घड़ी देखलहुँ दस बजैत छै यानि सात बजे सँ हम अहि बालकनि मे बैसल छी! नौकरानी सफाई कऽ चलि गेल। हम शीशा मे अपन मुँह देखलहुँ ओझराएल केश। उदास आँखि आ थाकल देहक पोर-पोर। विदेश मे अइठामक परिवेश वातावरण सँ अपना के कटल-छंटल अनुभव होइत छै तयँ लोक अपना के संदर्भ हीन बुझऽ लगै'छ । चाहैत छलहुँ अपन कथा लिखब मुदा सोचिते रहि गेलहुँ। एखन घरि एको पाँती नञि लिखलहुँ अछि। कतऽ सँ शुरू करि की लिखी से फुराइते ने अछि। आँखि गेल दूर लहराइत समुद्रदिस। नील झिलमिल लहरि टूटल चट्टान क टुकड़ा कछेड़ पर देखाइत अछि। अचानक हमरा सब किछ ऊबाऊ लागऽ लागल। काल्हिए फिलिप ओतऽ वालवाइक चलि जायब। हम आपरेटर सँ वालवाइकक नम्बर मांगलिऐ। एखन फिलिप ऑफिस मे हेतै।

'हं फिलिप, हम काल्हि आबि रहल छी लुफ्तांसाक फ्लाइट सँ बेलग्रेड होइत। कनफर्म्ड बुकिंग; नञि, ओ नञि भेंट जेतै। की बेलग्रेड सँ नञि भेंटतै? जँ नञि भेंटतै तऽ हम सूचित कऽ देब। अहाँ एयरपोर्ट पर नञि आयब हम एमस्टरडम उतरि ट्रेन सँ पहुचबा हं, बुझलहुँ, गलती भऽ गेल पहिने कनफर्म्ड कऽ लितहुँ तखन फोन करऽ चाही। कहि तऽ रहल छी सॉरी फिलिप। अहाँ सांझि मे फोन कऽ रहल छी। ठीक। जूडी के हमर स्नेह....... बाई।'

फोन रखलहुँ। अपन गलतीक एहसास भेल। दिमाग एहन सुस्त कोना भऽ गेल? अतीतक स्मरण की नरेन्द्रक व्यंग्यवाण सुनि! '............. प्रमोदे के कारण अहाँ कें फिलिप सँ परिचय भेल'। मोन भेल कहिऐ-परिचय तऽ अहूँ के भेल

छल तखन लोक के कियेक हमरा सँ दोस्ती भऽ जाइत छै आ अहाँ सँ छीह कटैत अछि? जोर सँ भूख लागल। काल्हि राति मे खाना नञि खयने छलहुँ। नहा कऽ जल्दी-जल्दी कैफे दिस बढ़लहुँ। एखन ने ब्रेक फास्ट के बेर छै ने लंचक। काफे प्राय: खालिए छल मात्र दू चारि गोटे काफीककप नेने अखबार पढ़ैत छल। सर्विस वाली लड़की खिड़की लग बैसल औंधा रहल छल। हमरा देखिते पूछलक: 'ह्वाट कैन यू आफर?

-ओनली चीज एण्ड ब्रेड

'मैडम इट्स यू लेट' कहि हसँऽ लागल। फेर पूछलक

-'कैन यू फिक्स ए सैंडविच?' हम कहलिऐ 'एस व्हाई नॉट?' नास्ता कऽ घूम बहरेलहुँ। फेर तुरंत वापस आबि गेलहुँ। मोन पड़ल जा बुकिंग क बारे मे नञि पूछलिऐ?

खैर, बुकिंग भेल। सांझि मे फिलिप फोन करबे करत। फिलिपे हॉफमैन सँ परिचय करौने छल। हाफमैन जर्मनी मे चमड़ाक व्यापारी छै। फिलिप कहने छल चमड़ाक व्यापार मे वेशी स्कोप छै।

फेर वएह सड़क गाछ बिरीछ। की करू? कत जाउ? मन कहलक चलैत रहू थाकि जायबतऽ बैस रहब। काज धंधा तऽ अछि नञि। कतेक दिनक बाद एहन चैन भेंटल अछि। ..... दूर क्षितिज दिस तकैत छी....... ओई पार हमर घर छल। हमर नेनपन, बाबूजी, मां, दाई मां, सरोज, बुल्ली, नीलू .... फेर ब्याह एकटा नव घर....... विदाई काल माँ कहने छलीह-बेटीक नैहर सँ डोली उठैत छै आ सासुर सँ अर्थी। तखन अइ घिसल-पिटल कहबी पर हँसी लागल छल। मुदा नैहर तऽ सत्ते छुटि गेल, आ सासुर तऽ कहियो अपन घर बनबे नञि कयल। घर छैन्ह नरेन्द्रक, सँजुक आ हमर सासुके। ओतुका व्यवस्था जाहि मे हम अपना के पूरा इमानदारी सँ झोंकलहु मुदा रहलहुँ मिसफिट। जहिया मां के घर मे कोनो परेशानी होइत छल तऽ मन के मना लैत छलहुँ कहियो हमरो अपन घर हेत। आ आब ओहू घर सँ हटा देल गेल तऽ आब कतऽ जाउ?

कतेक सहजभऽ नरेन्द्र कहि देलनि-'एत घुरिकऽ नञि आयब। यह, आइ मीन इट...... आइ एम सीरियस। हम कतेक परेशान छलहुँ जखन प्लेन दिल्ली उतरि रहल छल, विमानक भीतर एयर होस्टेस क स्वर गूंजि रहल छल 'लंदन सँ चलल प्लेन दिल्लीक इन्दिरा गांधी हवाई अड्डा पर उतरि रहल अछि। आशा अछि अहाँ लोकनिक यात्रा सुखद रहल होएत। लंदन सँ दिल्लीक दूरी हम आठ घंटा मे पूरा कयलहुँ। अहाँ सभके सूचित कऽ रहल छी बाहरक तापमान एखन 28 डिग्री सेलसियस छैक।'

हम दिल्ली एयरपोर्ट पर उतरि कऽ सोचलहुँ कतऽ जाउ? कलकत्ता..... नञि। नरेन्द्रक स्वर दसो दिन यात्रा मे माथ पर हथौड़ीक चोट जकां खटखट बुझाइत रहल–एत घुरिकऽ नञि आयब ....कहियो नञि। आ मां, मोन पड़ल कोना बजने छलीह आ हम फेर नरेन्द्र संग विदा भेल छलहुँ। हमर अपन क्यो नञि अछि? एतेक कारोबार पसरल अछि, एतेक बड़का आर्डर लऽ कऽ आयल छी। तखन तऽ चाहैते छथि झगड़ा बढ़ए मुदा अइ लडाई सँ फायदा? मुदा एतबा सच छै जे ओ हमरा घर मे घुस नञि देत। फेर मन कहलक–कानूनी सहायता सँ नरेन्द्र अग्रवाल कें चौबिस घंटा क भीतर जेल पठा सकैत छी। मुदा अइ सँ फायदा? फेर मोन पड़ल वीरेन ओ एक दिन कहने छल 'दीदी! अहींक भरोसे हमर सभक दू सौ लोकक भातक हंडी चूल्हा पर चढ़ैत छै। अहां आब एसगर नञि छी।' आ लंदन जाइतकाल नीना बाजल छलीह: 'भाभी! आब हम कारनानी स्टेट्स मे नञि रहैत छी। बालीगंज मे अपना फ्लैट मे रहैत छी। अहाँ मां के छोटी मां कहैत छिऐतऽ हम सब आन कोना भेलहुँ?' आ तखन हम सोचि रहल छी कतऽ जाउ? छोटी मां बहुत आहुति देलनि पापक नाम पर। हुनका मुइलाक बाद कहियो आँखिक नोर नञि सुखलैन्ह। वातावरण कें हल्लुक करबा लेल नीना बजैत छथि–'भाभी, ई भारतीय मानसून छै।'

–नीना! एहन कटुवचन जुनि बाजू छोटी मांक लेल।'

–अहीं कहू–मां कियेक अन्याय सहलनि। अपन हक पर अधिकार कियेक ने कयलनि।'

–ओह, नीना, अहाँ नञि बूझबै। अहाँ ने ब्याह कयलहुँ अछि ने प्रेमक जाल मे फँसलहुँ......... छोटी मां जे जेहन छलै सेह स्वीकारलनि।'

नीना कें पापा सँ घृणा छलै। आ नरेन्द्र कें मि0 कोबरा कहैत छथि बड़ी मां के देवी जी। ग्रैंड होटल मे ओ इंटीरियल पर्सनल मैनेजमेंट पोस्ट पर छलीह। सब संग हँसैत–बजैत खुशमिजाज। बस छोटी मां के नोर देखिकऽ उदास भऽ जाइत छलीह। कहैत छलीह–भभी! हमरा लोकनिके आर सभटा बात सिखाओल जाइत छै मुदा खुश रहनाइ सिखाओल नञि जाइछ। मम्मी ने कतहु जाइत अबैत छथि ने मनोरंजन क लेल हुनका समय छैन्ह। एकसंझा भोजन आ मात्र पूजा घर देखैत छिऐ। लड्डूगोपालक सोझामे ध्यान लगौने तऽ हमरा होइत अछि गुड्डा–गुड़िया राखल छै। शायद मां कें बेटा नञि भेलैन्ह तकर रिक्तस्थानक पूर्ति करैत छथिन बाल–गोपाल।'

हम सिनेह सँ भरि पाँज पकड़ि नीना के कहलिऐन्ह–नीना आब अहाँ बड्ड बक–बक करऽ लगलहुँ अछि आब अहाँ लेल हम वर ताकब। कहू केहन

लड़का चाही?

'की ब्याह कऽ अहाँ खुश छी? खुश छथि बड़ी मां, मम्मी..... भाभी अहाँ के तऽ मि० कोबरा भेंटलनि आब हमरा कोनो बानरक गरमे बान्ह्ऽ चाहैत छी?'

–मि० लॉयन या मि० टाइगर कियेक नञि?'

'घुर आइ काल्हि के लड़का?'

हम मने–मन प्रार्थना कयलहुँ भगवती! नीना के नीक सहचर भेंटए।' दुनियाँ मे सुहृदय, संवेदनशील पुरुषोछै। मुदा नीना अपना कें ततेक इंसक्युलेट कऽ लेने छथि जे बाहरी हवा क ताजगी लेल कतहु कनिको टा भूर नञि भेंटैत छे। नीना अपन साथी लग कहियो पापाक चर्चा नञि कयलनि। एतबे कहने छथि जे हम बहुत छोट छलहुँ तखने पिताक मृत्यु भऽ गेलैन्ह। नीनाके सँजु सँ कनि लगाव भऽ गेल छलै तऽ ओकरा अइठाम अयबालेल रोकिए देल गेलै। नरेन्द्र आ ओकर दादी नीक जकाँ सिखा–पढ़ा देलथिन जे ओ सभ नीक लोक नञि छै ने ओ जागह धिया–पुताक जाय जोग छै। तोहर मां तऽ राति–दिन पढ़ैते–लिखैत रहै छौ तयँ ओकरा व्यवहारिक ज्ञान नञि छै।

एयर इंडियाक फ्लाइट साढ़े तीन बजे दिल्ली एयरपोर्ट पर उतर छल। कलकत्ताक विमान साढ़े आठ बजे जायबला छलै। सुस्त–सूतल एयरपार्ट जागि रहल छल–चाय–कॉफी। हमरा दिस बला काउंटर खुजलै। श्रीनगर, बम्बई, जामनगर, आ हैदराबाद केर काउंटर खुजि रहल छल। देह झाड़ि उठलहुँ। बैसल–बैसल डॉर अकड़ि गेल छल। हम बगल मे बैसल महिला कें कहलिए–अहाँ कनिकाल हमर समान पर नजरि राखब? ओ बजलीह–'हं, हं कियेक नाञि।' यात्रा करैत–करैत अनुभव भेल अछि जे यात्रा में प्राय: महिला अपना के असुरक्षित महसूस करैत छथि आ सहयात्री लेल आत्मीयता कनि वेशिए रहैत छनि। बाथरूम सँ हम हाथ–मुँह धोऽ कऽ बहरेलहुँ। दू कप कॉफी अनलहुँ। एक कप कॉफी हुनका देलिऐन्ह।

कॉफी लैत बजलीह–'बहुत–बहुत धन्यवाद! बहिन, हम तऽ इ बच्चाक लऽ कऽ कतहु जा नञि पबैत छी। अहाँ कतऽ जा रहल छी?'

'कलकत्ता।'

'हमहूँ कलकत्ते जा रहल छी। न्यूयार्क सँ राति पैन–एम सँ उतरलहुँ अछि। छोट बच्चाक लऽ कऽ यात्रा करबा मे बड्ड असुविधा होइत छै। आब अहांक संग नीक लागत।'

हम हुनकर बात सुनि सोचऽ लगलहुँ–आब, ई महिला हमरा चैन सँ किछ सोचऽ विचारऽ नञि देत। इम्हर–अहर उम्हर तकलहुँ। ठाढ़ भऽ हुनका कहलिऐन्ह

हम कानिकाल आगाँवला कुर्सी पर पैर पसारि आराम करऽ जाइत छी। अहॉक कोनो हर्ज नञि ने।'

'नञि, नञि।'

हम अपन अटैची उठाकऽ आगाँवला कुसी पर जा कऽ पैर पसारि ऑखि मुनि लेलहुँ । मन मे फेर वएह प्रश्न घुड़िआए लागल........ कत जाउ?' हमरा एतेक स्पष्ट बुझल अछि जे नरेन्द्र हमरा सँ खुल्मखुल्ला लड़ाई करऽ चाहैत छथि। यद्यपि आब हमरा सेक्स भाव प्रायः खत्म भऽ चुकल अछि। मुदा हमर उद्दाम महत्वाकांक्षों कें नरेन्द्र बेर-बेर सेक्सुअल फ्रस्ट्रेशन क नाम दैत छथि। कतेक बेर मोन मे भेल अछि जे पूछिऐन्ह अहीं सन खेलाड़ी अहाँक कतेको मित्र छथि हुनक पत्नी कियेक न्यूरोटिक छैन्ह? नरेन्द्र क्रूर टेढ़यालि। ओ सोचैत छथि हम हक लेलड़ब। केहन हक आ कथित हक? जखन प्रीत प्रतीत नञि एको क्षण लेल मधुर सम्बन्ध नञि तखन की बाँचल अछि? आ धन-सम्पत्ति? नरेन्द्रक धन? खरीद बिक्री, टका, टकाक सूदि ब्याज दर ब्याज। एनफ! बहुत भेल, जें मोन होइन्ह करथु मुदा हमर पछोड़ छोड़थि। आ सँजु?' एकमात्र संजु हमर कमजोरि अछि बलिके बकरा जकॉ छटपटाइत छी। कानूनी दांव-पेंच के तौर पर सँजुक कस्टडी नरेन्द्रे के भेंटतैन्ह। हम सभ दिन आहुतिए दैत रहलह अछि। एहि जीवन यज्ञक मे इ हमर पूर्णाहुति होएत संजुँ अग्रवाल वंशक कुलदीपक। जहिया सॅ जनमल अछि। एखने सॅ बात-बात पर पापाक तरफदारी करैत अछि। बात-व्यवहार मे नरेन्द्रेवला ठसक। कहैत अछि-'मम्मी, देखबै हम बहुत बड़का इंडस्ट्री बनायब। इ एक्सपोर्टक काज तऽ सर्विस-ओरियेंटेड काज छैक के सार 'गोर चमड़ी वलाक तड़बा रगड़त। सँजु! अहॉ इ गाड़ि पढ़ब कतऽ सॅ सिखलहुँ?'

मम्मी! हम कोन गलत बात बजलहुँ? पापा कहिलनि जे इ श्वेत अंग्रेज हमरा देशक शोषण कयने अछि। तऽ ओकरा गाड़ि नञि पढ़बै तऽ स्तुती करबै?

अच्छा बहुत बुझनुक भऽ गेलहुँ। पापा ई नञि बतौलनि जे ओ स्वयं ककर-ककर शोषण करैत छथि?'

बेचारा मासूम नेना हमर बात सुनि टकटकी लगा हमरा देखैत रहल। स्त्रीगण शोषणक परम्परा कें कोना झेलैत छथि से संजु की जानऽ गेल!

राति भरि जागले छलहुँ से ऑखि बेर-बेर मुना जाइत छल। आवाज सुनि ऑखि खुजल। एयरहोस्टेस पूछलनि-'अहॉ चाय, कॉफी किछ लेब? अहॉ सूतल छलहुँ।'

-'चाह सर्ब करबा मे असुविधा तऽ नञि होएत?'

'नञि, नञि, हम तुरत अनैत छी।'

एयरहोस्टेस के देखि कऽ हमरा नीना मोन पड़लीह। नीना एयरहोस्टेस बनऽ चाहैत छलीह। मुदा छोटी मां के कनने खिझने ग्रैंड होटल मे नौकरी कयलनि। पिताक स्थान पर लिखने छलीह स्वर्गीय अग्रवाल। इ बात ओ निःसंकोच हमरा कहने छलीह।

एयरपोर्ट पर नीना छलीह।

'भाभी! मां बजौलेनि अछि घर चलू। नञि, नीना, हमरा सबके अपन अपन लड़ाई स्वंय लड़ऽ पड़त। दोसर बात इ जे अहाँ कें बूझल अछि मिस्टर कोबराक जहर........।'

हम टैक्सी लऽ सासुर एलहुँ। हमरा देखिकऽ सासु प्रसन्न छलीह । दाई-नौकर सब खुश भेल। 'बहू, अहाँक आइ अएबाक छल से सँजु बाबू कें बुझल नञि छलनि?' बुझल रहैत छैन्हि तऽ ओ भोरे सॅ हमरा कहऽ लगैत छथि-रामसिंह समय पर एयरपोर्ट चलि जाए मम्मी आबि रहल छथि।

ताबत नरेन्द्र ऊपर सॅ उतरलाह। करैत साँप जकाँ फुफकार छोड़ैत बजलाह-'अहाँ एतऽ एलहुँ कियेक? जाऊ एखन तुरत हमरा घर सॅ बाहर जाऊ।'

'सुनू, वेशी हल्ला नञि करू। इ घर हमरो अछि। तथापि हम दस दिनक भीतर अलग फ्लैट लऽ लेब। एखन दस दिन हम एतहि गेस्ट रूम मे रहब।' भीतरे-भीतर आगि धधकि रहल छल। नञि जानि कियेक इ पराया घर के ह बाँटऽ नञि चाहैत छलहुँ। ओना अइठामक धन-सम्पत्तिक लेल रति भरि मोह नञि अछि। आ नरेन्द्र तऽ कहिया सॅ हमरा सॅ दूर भऽ गेल छथि। मन मे इएह बात सब घुरिआइत छल कि नरेन्द्र बजलाह।

'हमर ऑफिस खालि कऽ दिअ।'

'आर किछ........'

'लॉकर के चाभी ककरा लग छै?' मां लग। 'मुदा ओइ मे तऽ हमर गहना अछि?'

बहुत गहना संयुक्त परिवारक छै। हीराक सेट आ चूड़ी कंगन सब मां के नाम सँ छै।

'आ हमर गहना............ ?'

'अहाँ नैहर सॅ अनने की छलहुँ? मात्र दस भरि सोना से लऽ लिअ।

'नरेन्द्र?'

हे वेशी बाजू जुनि। बकबास करबत अहॉक व्यापारो बन्द करबा देब। बस

एकटा चिट्ठी रिजर्व बैंक के लिख देबै।'

-'यू....... यू ब्लैकमेलर!' आ, अहाँ खिसियाल बिलाड़ि घुरखुर नोंचए।'

हमरा तऽ बुझू बकौर लागि गेल। हे भगवान क्यो एतेक नीचाँ खसत, हम कल्पनो ने कयने छलहुँ। इनारो मे नीचाँ जमीन रहैत छै........ आ नरेन्द्रक नीचताई अन्तहीन छै कतहुँ ठौर ठेकान नञि। हमरा किछु नञि फुराइत छल। गेस्टरूमक केवाड़ बन्द कऽ धड़ाम सँ पलंग पर खसलहुँ। नोर हिचकी...... आ सबसँ कष्टकर अनुभूति निहथ्था एसगर लड़बाक बोध। हम कोना निपटब एहन खूंखार जानवर सँ ? कहिया अन्त होएत समझौता करबाक।

मन मे नरेन्द्रक प्रति केहन प्रतिक्रिया छल क्रोद्ध! नञि क्रोद्ध नञि। अर्न्तमन मे आहत पशु क चित्कार छल। होइत छल जँ आब एको शब्द बजताह तऽ गरदनि दाबि देबैन्ह। आर किछ तऽ नञि कयलहुँ हं, अपन चप्पल खोलि ठेकनाक देह पर फेकलहुँ। मन कनि शान्त भेल। ग्लानि कनिको नञि भेल ने पश्चाताप। नरेन्द्रक प्रतिक्रिया आर तीव्र-'राक्षसी .... अपनाकें बड्ड बुद्धिमती बुझै'छ पढ़ल-लिखल हूँ...।' मेज पर राखल फूलदान उठाकऽ जोर सँ देवार पर पटकलनि......... 'जाउ जतऽ जयबाक मन होए जाउ मुदा अपन मुँह हमरा नञि देखाउ। हम एको क्षण अहाँ कें देखऽ नञि चाहैत छी। आ तमतमा कऽ घर सँ बहराइत हमरा मुँह पर पच्च सँ थुकलनि। हम भोकारिपारि कनैत रहलहुँ अपने हाथे अपन कपार पीटैत छलहुँ। शायद ओइ दिन फेर हमरा भीतर ओएह दस वर्षक बालिका अन्तिम बेर सुरक्षाक लेल संरक्षण मांगि रहल छल। नरेन्द्र वापस नञि घुरलाह। भरि घर शीशाक टुकड़ि पसरल छल। हम रूमाल सँ सबके बटोरि रहल छलहुँ आ मने-मन सोचि रहल छलहुँ हम इ शीशाक टुकड़ि कियेक समेट रहल छी? जखन ककरो हमर जरूरते नञि छै तऽ घर मे किछ पसरल रहओ ताहि सँ हमरा की?

ओ छमास पर सेक्रेटरी बदलैत रहैत छथि एक सँ बढ़ि कऽ एक सुन्दरी जे हिनकर भूख शान्त करैत छैन्हि। ई तमासा पापा छलथिन तखने सँ देख रह छी। पापाक गेलाक बाद तऽ रूप-सुन्दरी सब घरो पर आब लागल। खैर, जकरा सँ हमरा कनिको लगाव नञि से किछ करय। हं, एक बेर एकटा सेक्रेटरी छमासक बदला डेढ़ साल रहिगेल छलै। ओ वास्तव मे नरेन्द्र सँ प्रेम करैत छल। ओकरा गर्भ मे नरेन्द्रक सन्तान छलै तइओ इ राक्षस ओकरा हटा देने छलै। ओकरा कहने छलै-बिसरी जाउ हमरा सँ प्रेम भेल छल, शपथ खेने छलहुँ! बाजु कतेकटका जाही इ ऑफिस छोड़बा लेल?

ओ कहने छलै- 'टका? यू वास्टर्ड सन ऑफ विच। की अहाँ बुझैत छी

जे टका सँ कोनो औरत कें मुँह बन्द कऽ देबै? हम अहाँ कें बर्बाद कऽ चैन लेब।' बिजली जकाँ ओकर कड़कैत आवाज घर देवार के झकझोरि रहल छलै, आ नरेन्द्र मुसुकैत ओकरा पकड़ि कऽ घर सँ बाहर धकेलने छलै। ओ बताहि जकाँ केवाड़ पीटैत छल। हमर मन हहरि उठल मुदा हम ओकरा सँ नञि पूछलिए जे अइ पुरूषक विषय मे तो सब बात जनैत छलै बूझल छलौ'जे विवाहित भऽ रोज औरत बदलैत छै तखन कोन भ्रमवश एकरा पर विश्वास कयलें। मुदा बिना किछ पूछने ओकरा हम अपना रूम मे लऽ एलिऐ। बड़ी कालधरि ओ हमरा पकड़ि कनैत रहल फेर शान्त भऽ चलि गेल। ओकरा गेलाक बाद नरेन्द्र व्यंग्य सँ बजने छलाह-'बड्ड हमदर्दी भऽ गेल। सौतिन आनि दिअ?'

एकबेर जूरीक लग हम अइ घटनाक चर्चा कयने छलहुँ। नरेन्द्रक क्रूरताक प्रसंग मे। तऽ जूरी कहने छल-अपना स्वार्थ पर चोट पड़ने लगभग सब लोकक प्रतिक्रिया एहने हिंसक होइत छैक, कियेक तऽ हमर आजुक सम्पूर्ण सभ्यता हिंसा आ प्रमादे पर टिकल अछि। नञि, प्रिया एहन नञि छै जे मात्र महिलाक शोषण होइत छै पुरुषो क शोषण होइत छैक। व्यक्तिक अपन-अपन संवेदनशीलता छै एम्पैथी-दोसरक दु:ख दर्द के अनुभव करबाक क्षमता। तखन हम पूछने छलिए जूडी सँ खैर, इ कहू जे गलती हमर छल?

नञि प्रिया नञि। असल मे अहाँक आ नगेन्द्रक सम्बन्ध निगेटिव रूप लऽ लेने छल जत एक दोसर के मारऽ पर उताहुल छलहुँ हम अहाँ कें दोष नञि दऽ रहल छी-मुदा हमरा विचार सँ नीक होइत हटि जायब। एक दोसर पर निर्मम प्रहार करबा सँ।

कनैत-कनैत नञि जानि कखन सूति रहलहुँ। आँखि खुजल केवाड़ ढ़कढ़कयबाक आवाज सँ। केवाड़ खोललहुँ। सँजु हब्बोढ़कार कानि रहल छल। नरेन्द्र पसीना सँ लथ-पथ आतंकित छलाह। सँजु हमरा भरि पाँज पकड़ि एखनहु हुचुकि हुचुकि कानि रहल छल। सासु माथ पकड़ने नीचाँ मे बैसल छलीह। सब दाई नौकर, महराज.....

हम घबड़ाकऽ पूछलिए-'की भेलै?' क्यो किछ नञि बाजल। सँजु कहलक-'मां। पापा बुझलथिन अहाँ जहर खा कऽ सूतल छीं।'

'ओह।'

'मम्मी!' सँजु फेर कानऽ लागल। आया मम्मीजी के उठाकऽ सोफा पर बैसौलकिन। मिस्टर कोबरा ऊपर अपना रूम मे चलि गेल छलाह।

होस्टल आबि, भोजन कऽ सूति रहलहुँ। फिलिप के फोन सँ निन्न टूटल।

फिलिप कें कहि देलिऐ–हम काल्हि आबि रहल छी। बुकिंग पक्का भऽ गेल।

चाह पीबि पैकिंग मे जुटि गेलहुँ। नीचाँ जा कऽ बिल बनाबऽ कहलिऐ। अइ सात दिन मे एत सँ लगाव भऽ गेल छल। सभक चेहरा परिचित सन लगैत छल एकटा आत्मीय भावक अनुभूति होइत छल। राति मे भोजनकाल जोसेफ पूछने छल–'मैडम, अहाँ काल्हि जा रहल छी?'

'हँ!'

'मैडम हमर वेजिटेरियन प्लेट नञि नीक लागल?'

'जोसेफ–हमरा खूब नीक लागल आ सबसे बेशी नीक लागल तोहर आत्मीयता।'

'मैडम किताब पूरा भऽ गेल?'

नञि, जोसेफ एखन हम सोचिए रहल छी। जोसेफ गंभीरता सँ माथ डोलबैत कहलक फ्रांसक बड्ड पैघ लेखक ठहरल छलाह। मैडम की कहू ओ ततेक पीबैत छलाह। मैडम की कहू ओ जतबे पीबैत छलाह, ततबे लिखैतो छलाह। जखन ओ जाइत छलाह तऽ बड़का बक्सा कागज सँ भरल छलैन्ह।

'हुनकर नाम की छलैन्ह?'

'सॉरी, मैडम हम अपन मेहमानक नाम नञि बता सकैत छी। अच्छा, अहाॅ लेल मीठ की आनु?'

–'आइ मीठ की बनेलहुँ अछि?'

'पीचमल्वा.....मेडिटेरियन पीच के स्वाद अपूर्व होइत छैक.....इटली सँ मंगाओल गेल अछि। कान लग आबि फुसफुसाकऽ बाजल मैडम ई डिश हमरा एत खास मेहमान लेल छै।'

अच्छा! हमरा हॅसी लागल।

'लऽ जाऊ?'

'हँ–हँ।'

हम जोसेफ कें कहलिए हम अपन कोनो ने कोनो उपन्यास मे तोहर पीच मल्वाक चर्चा अवश्य करब। फेर ओकरा हाथ मे किछ डालर दऽ ओकरा सँ विदाई लेलहुँ। ऊपर जा कऽ सूति रहलहुँ भोरे चारिए बजे उठबाक छल। एक मन भेल जे एक बेर समुद्र देखि मुदा नञि गेलहुँ। निन्न टूटल आपरेटरक आवाज सँ–गुडमार्निंग, मैडम, इट इज टाइम टू वैक अप।'

हड़बड़ाकऽ उठलहुँ। एयरपोर्ट या स्टेशन जयबा लेल हमरा हरदम हड़बड़ी रहैत अछि। जँ समय सँ आधा घंटा पहिने पहुँच जाइ तऽ कोन हर्ज? पहिने पहुँचने तनाव नञि होइछ। डूयब्रवनिक एयरपोर्ट पर शायद हमहीं पहिल यात्री

छलहुँ। काउंटर खुजलो नञि छलै। हम कोना वला कुर्सी पर जा कऽ बैसलहुँ–प्लेन जखन उड़ि रहल छल। खिड़की लग हमर सीट छल। स्वच्छ नील आकाश, उज्जर–उज्जर ठाम–ठाम बादरि नीचाँ आल्प्स करे बर्फ सँ झॉपल पहाड़ि। भूरा चितकबरा चट्टान पर बर्फक तिरछाह रेखा बुझाइत छल।

असीम तनाव वला समय छल। लंदन सँ घुरिकऽ घर आयल छलहुँ मुदा छलहुँ बेघर। सँजु बेचारा निरीह नेना। कखनौ पापाक अगवाज सुनि दौड़ैत अछि तऽ कखनौ मम्मी के कोरा मे बैसिकऽ दुलार मलार करै'छ।

'मां अहाँ अहिठाम रहू ने? पापा क बातक दुःख नञि करू। ओ तऽ सबके डँटैत रहैत छथिन। काल्हि राति दादी बड्ड कनैत छलीह।

हम मने–मन सोचलहुँ–दादी एतेऽ बढ़ावा देलथिन आब कानऽ के अलावा की करतीह। पैंतालीस वर्षक एकलौता बेटा। आ हुनका जे संस्कार छैन्हि पुरुषक वर्चस्व वला ताहि हिसाबें बेटा क बात–व्यवहार अनुचित्त लगितो नञि छैन्ह। हमर संस्कार दोसर अछि हम सँजुक सहारा लऽ नञि जी सकब। ने जिनगीक सहारा बेटा भऽ सकै'छ ने पति ने प्रेम। हँ हिनक संग सहयोग सँ जीयब सहज भऽ सकै'छ। मन कें भरोस भेटैत छै जे अपन क्यो अछि हमरा संग। मुदा जॅ ओ संग नञि देमए उनटे एकतरफा कर्त्तव्यक निर्वाह करैत अपन आहुति दैत रहि तऽ एक संग रहब कठिन भऽ जाइत छै। तैं हम अपना मन के मना लेने छलहुँ एकलाचलो रे जे संघर्ष करबाक होएत से करब। हम अपना दृष्टिकोण सँ सही छी तऽ आनकऽ नजरि मे सही स्थापित करबा लेल कठिन तपस्याक कोन काज? बिल्कुल व्यर्थ। खास कऽ ई व्यर्थता क एहसास सँ तखन आर कचोट होत छैक जखन बुझना जाइछ जे हमर बात सामने वला सुनऽ चाहिते ने अछि। अपना मन के कतेक तरहे बुझबैत छलहुँ मुदा हमर मन छल जे बुझियौ कें अबुझ बनल छल। हमर बेटा? एकलौता बेटा...... नञि नरेन्द्र किन्नहु नञि छोड़त। ओ नरेन्द्रक मुठ्ठी मे छै कानूनो नरेन्द्रेक पक्ष मे छै। समाजो ओकरे संग देतै। प्रिया, अपना करेज पाथर पर राखू मुदा ओइ अबोध नेनाकें बेघर नञि होमऽ दिऔ। ओकरा अपना दादी सँ लगाव छै पापा, पापा दिन भरि रट लगौने रहै'छ एको दिन पापा बिना नञि रहि सकै'छ। हँ, हमरो सँ स्नेह छै–मुदा हमरा ओकरा जिनगी सँ चुपचाप हटऽ पड़ल। दादी आ पापा सँजु कें नीक जकाँ लालन–पालन कऽ लेथिन। प्रिया, स्वार्थी जुनि बनू ने अपना मातृत्व कें महिमा मंडित करबा लेल बेचैन होउ। जँ स्वार्थी छी तऽ से स्वीकारि लिअ। कम से कम अपना आत्मा सँ छल नञि करऽ चाही। सत्य तऽ ई छै जे अहाँ बेटा सँ वेशी अपना रोजगार कें चाहैत छी.....अहाँ के जँ स्नेह अछि तऽ अपना सँ।

मानलहुँ अपना आपके के नञि नेह करै'छ। इ हो बुझैत छी जे आइ धरि मात्र महिले अपन आहुति दैत रहल अछि। मुदा से कियेक? अदौ से इएह होइत रहलैए तैं? मुदा जे अहॉ से होइत रहलै अछि सेह एखनहु होमए ई कोनो तर्क छै? तऽ..... हमकी करू?..... हे भगवान अइठाम ई अलाय बलाय सोचैत सोचैत हम पागल भऽ जायब। आ एकटा न्यरोटिक, राति-दिन कनैत-खीझैत मां लग कोनो नेना कतेक काल रहैत। एखन अबोध छै दस वर्षक बाद बीस वर्षक युवा हमरा संग रहत किन्नहु नञि आ तखन हमर उम्र होएत पैंतालीस वर्ष! तऽ की पैंतालिसम वर्ष मे हम मृत्युक प्रतीक्षा करब? अपन समस्त स्वप्न कें आहूति दऽ दिअ?? भोर मे निन्न टूटल तऽ अपने सॅ पूछलहुँ-आब की करबाक चाही? आब कतेक दिन धरि कनैत रहू? आब कोनो ने कोनो रास्ता चुनऽ पड़त-अपन जंग अपने लड़ पड़ैत छै।

नरेन्द्र सबसे पहिने हमरा नैहर मे हमरा मां क सोझा मे हमरा विरूद्ध बात उठेलैन्ह-प्रियाक बड्ड गर्म मिजाज छैन्ह! मां, ओ चप्पल उठा कऽ हमरा देह पर फेकलनि। सँजु तऽ हिनका डरें थर-थर कँपैत रहै'छ अहाँ तऽ एतेक दिन सँ हमरा मां के जनैत छी-अहीं कहू हमर मां कहियो हिनका कथु लेल रोक-टोक कयलथिन? मुदा ई कहियो अपन घर-गृहस्थी बुझलनि? सोझे मे कहैत छी पूछियौन्ह-कहियो भोजन बनौलनि? अहीं कहूँ हिनका काज करबाक कोन जरूरत छै? ई कियेक भोर सॅ सांझि धरि खटैत रहैत छथि? ई हो नञि जे कलकत्ते मे रहैत छथि आइ दिल्ली काल्हि मद्रास। घर घुरलनि कि फेर लंदन तऽ अमेरिका। हिनका ऑफिस सॅ सेक्रेटरी फोन कऽ आया कें कहैत छै-'मेम साहब के बक्सा सैंत कऽ राखि देबै' ओ रतुका प्लेन सँ हांगकांग जयतीह।'

कहू तऽ आया बक्सा सैंत सकै'छ मम्मी कें हिनकर बक्सा सैंत कऽ राखऽ पड़ैत छैन्ह! की कहू ई अपन आलमीरा क चाभी धरि आया के सौंप कऽ चलि जाइत छथि। ऑफिस सॅ हड़बड़ाइत औतीह आ विदा होमऽ लगतीह' हमर मां दूध क गिलास लऽ हुनका पाछू लागल रहैत छथि-प्रिया दूध पी लिअ।' बड़का भैया हं मे हं मिलबैत बजलाह।

नरेन्द्रबाबू अहॉक कहब उचित अछि-सरासर प्रियाक गलती छै। अहू घर मे पुतौहु छै एकरा जकॉ करतै क्यो तऽ एको दिनबास नञि हेतै।'

सेह, बुझियौ अहां सब। विजय बाबू की सब कहू ई हमरा राक्षस, कसाई आ जानवर कहैत छथि।' आब मां कें रहल नञि गेलैन्ह। गुम्हरैत बजलीह।

'प्रिया तोहर ई हिम्मत! छी: छी: तू जन्म लैते कियेक ने मुइलें।' नरेन्द्र, हम गलत के गलते बुझैत छिऐ अपन बेटी अछि तैं की हम एकर पक्ष कखनहुँ

ने लेलिऐ से अहॉकें बूझल अछि।'

मां, से तऽ हम बूझैत छी मुदा 'ई प्रिया तऽ सबटा दोष हमरे दैत छथि। जनै' छी ई हमरा कहलनि अछि जे चौबिस घंटाक अन्दर ई हमरा जेल मे बंद करबा सकैत छथि।

'कोन आधार पर?' बड़का भैया गरजैत बजलाह।

पर स्त्रीगमन.....मानसिक अत्याचार.....शोषण..... प्रिया एखन चुप्प कियेक छी बाजू ने की हम झूठ बजैत छी? कोन-कोन उपाधि सॅ हमरा विभूषित करैत रहैत छी। हं, ई हमरे गलती अछि जे हम हिनका प्रेम मे पागल भऽ जे कहैत छलीह से करैत छलहुँ हिनका इशारा पर नचैत रहलहुँ। ई एक्सपोर्टक व्यापार करऽ चाहलनि हम यथासंभव सहयोग देलिएन्ह। हमरो भेल जे बैसल मन नञि लगैत छैन्ह हैंडी क्राफ्टक काज छै मन लगतैन्ह किछु टको भऽ जैतेन्ह 'हमरा ई कहाँ बूझल छल जे हिनकर महत्वाकांक्षाक सीढ़ि कहियो खत्म नञि हेतैन्ह। हिनकर लक्ष्य भारत सरकार सँ प्रथम पुरस्कार प्राप्त.......

-नरेन्द्र ई सत्य छै जे हमरा पुरस्कार भेंटल मुदा हम कखनहुँ चर्चा कयलहुँ की एकर प्रचार कयलहुँ? 'प्रिया, हमरा कहऽ दिअ-हम विवाहक बाद- पन्द्रह वर्ष धरि चुप रहलहुँ आब हम चुप नञि रहब। हम पलंग पर पड़ल-पड़ल करैट फेरैत रहैत छी आ ई आबि कऽ कारपेट पर सूति रहैत छथि। बत्ती ऑफ कऽ कहतीह 'हम बहुत थाकल छी आब सूतब'। हरदम इएह सुनैत छी-'...हम व्यस्त छी विदेश सॅ ग्राहक आयल अछि।' आ नञि तऽ फाइलक गठठर लऽ औती घर ऑफिस बनि जाइछ।'

- 'एकर कोनो मध्यम मार्ग ताकल जाए।' बड़की दीदी बजलीह।

-'पूछिऔ अपना बहिन सँ। काज दिनो-दिनो बढ़ले जाइत छैन्ह।.....हिनका हमरा सॅ कम्पटिशन छैन्ह........टका अहींटा नञि कमा स कैत छी हमहूँ कमा कऽ देखा सकै छी। एतेक अहंकार?'

'हम की बाजू नरेन्द्रक बाबू! ई बेटी तऽ हमर सभक नाक कटा देलक। समाज मे कतहु मुँह देखाबऽ योग नञि रहलहुज। आर बेटी अछि क्यो एना-तमाशा नञि कएलक। हमरा तऽ आब चिन्ता होइछ हमर पोती सभक विवाह कोना होयत जकर पीसी एहन छै?'

भैया तऽ आर मक्खन बाजी शुरू कयलनि। समय पर उधारी टका भेटैत छैन्ह नरेन्द्र सँ। मां अन्तिम निर्णय सुनौलनि-प्रिया, हमर बात एखनहुँ मान सोझे चलि जो नरेन्द्र बाबूक संग।'

'प्रिया, मां ठीके कहैत छथि जे भेलै आब घर-गृहस्थी पर ध्यान दे। एहन

घर-वर बड्ड भाग्य सँ भेटैत छै।' बड़की दीदी कहलनि। बड़का भैया डपटैत बजलाह-'अगर एखन नरेन्द्र बाबूक संग नञि गेलें तऽ तोरा लेल अइ घरक दरवाजा बन्द भऽ जयतौ।'

छोटकी भाभी बजलीह-सरोज जी डाक्टर छथिन तइओ घरक खाना अपने बनबैत छथि। अहाँ आबहु चेत जाउ, लोक कहैए ताहि पर ध्यान दिऔ। सत्ते कहैत छी नरेन्द्र बाबू सन पति अग्रवाल हाउस सन सासुर भेंटत ने देवी सन सासु।'

ओह! सब एकतरफा न्याय कऽ रहल अछि एखन धरि सभक बात सुनि आँखि सँ टप-टप नोरे चुबैत छल। आब नञि रहि भेल हम अपन फैसला सुना देलिऐ-ठीक छै सभक नजरि मे हमहीं दोषी छी। तऽ हमरा नञि चाही एहन घर ने एहन वर ने देवी तुल्य सासु ने अग्रवाल हाउस! हमर अपन खून, अपना कोखिके बेटा कानूनन नरेन्द्रे के हेतैन्ह। आब सब सम्हारथु नरेन्द्र।' मां अहू उम्र मे कड़कैत बजलीह-'प्रिया चुंप रहबें की लगाबिऔ-थापड़?'

हम ओइठाम सँ चुपचाप उठलहुँ। बाथरूम मे जा कऽ हाथ मुँह धो नीचा उतरलहुँ। अपना गाड़ी पर बैसक विदा भेलहुँ। गाड़ी स्टार्ट भेला पर ओ सब बुझलनि। बहादूर गाड़ीक पाछू दौड़ल-गाड़ी रोकू प्रिया बौआ, मां जीक आर्डर छैन्ह.......।'

सब स्वाहा भऽ गेल। किछु नञि बाँचल। ने अपन खून अपन होइत छै ने पानि। तखन अपन ककरा कहल जाए? छोटी मांक कोर मे बैसल कनैत रहलहुँ। पारंपरिक संस्कार आ स्वभाव बाली छोटी मां हमरा घर वापस पठा देलनि। हम दिन भरि पलंग पर पड़ल-पड़ल अपन अतीत आ वर्तमान देखैत रहलहुँ। घर क मुँह पर आबि सासु बजलीह-'कनियाँ भरि दिन उपासले रहब? आउ कनि खा लिअ।'

ओह! आब सासुमां के हमर ध्यान अयलैन्ह! ठीक बेटे बला स्वभाव। मां बेटा दूनू के पर-पीड़न में आनन्द भेंटैत छैन्ह। आजीवन अपने वेदनाक प्रतिमूर्ति बनि बेटाक सहानुभूति बटोरि पापा के बात कहलथिन। एकदम संवेदन शून्य छथि। मुदा बेटा लेल तऽ बड्ड संवेदनशील छथि। खैर हमरा अइ सब सँ आब कोन मतलब? एखन तऽ हमर अपने आस्तित्व पर संकट अछि। एखन चोटाह सांप जकाँ पूफकार छोड़ैत नरेन्द्र पहुँचताह। भोजन करऽ गेलहुँ। मुदा दू कौर कहुना खा कऽ उठि गेलहु।

बेचारा संजु मां-बापक लड़ाई मे पिसा रहल अछि। हाथ धो कऽ अयलहु तऽ सासु बजलीह।

'प्रिया! घर नञि उजारू। एहन काज सँ कोन फायदा। नरेन्द्र नञि चाहैत छै तऽ व्यापार छोड़ि दिअ। बात आगाँ' नञि बढ़ाऊ।'

सँजुक सोझा मे मां क ई सब बाजब हमरा नञि नीक लागल। बजैत-बजैत चुप भऽ गेलहुँ जे घर तऽ उजड़ि गेलै। अहाँक बेटा के हमर कोनो जरूरत नञि छैन्हि छ मास पर सेक्रेटरी बदलैत छथि। सब सुख भोगैत छथि। देखाबऽ लेल हम पत्नी छिऐन्ह। मुदा कहलिऐन्ह नञि किछ। बुझल अछि मां अपना बेटाक कोनो गलती नञि स्वीकारती ठीक छै। हमहीं बदमाश छी।

नरेन्द्र पहुँचलाह तऽ हम कहलिऐन्ह

'हमरा किछ कहबाक अछि।'

'अहाँ के हमरा सँ एना लड़ब-झगड़ब......

-हम लड़ैत छी.....

'शांति पूर्वक बाजू। हम कोनो समझौताक बात नञि कहि रहल छी।'

'तऽ की कहऽ चाहैत छी?'

काउंटर चैलेंज। हं, अहां एकरा धमकी कहि सकैत छी। अहां हमरा कहने छलहुँ ने जे बिजनेश बंद करबा सकैत छी?'

'हं, कहू तऽ कऽ के देखा दी।'

'व्यापार हमर अन्तिम सहारा अछि।'

आ अहि व्यापारक बलें अहाँ कूदैत छी। अहाँ ई जुनि बसरू जे अहाँ सफल उद्योगपतिक पत्नी छी।' 'देखू अहाँ फेर हमरा धमकी दऽ रहल छी।'

'ई धमकी नञि, आई मीन इट........ ,

तऽ की बाजू ने।

हम इनकम टैक्स, सेल्स टैक्स, एक्साइज संग सभटा घुरी फंदी क भंडा फोड़ब देखब अहाँ कोना बचैत छी?

'ओह! तऽ अहाँ अतेक धरि सोचि लेन छी तऽ आब इ सब करबा सँ पूर्वहि अहाँक गरदनि दबा दी सेह नीक।'

हं, इहो सौख पूरा लिअ। हम थाना मे एफ०आई०आर० कऽ के आयल छी। हम मुइलहुँ त अइ संसार मे एक व्यक्ति एहन छै जे हमर मौत के बदला अहाँ सँ अवश्य लेत।

पिशाच जकाँ विकृत हँसी हँसल नरेन्द्र। फेर व्हिस्कीक छूंट पिबैत बजलाह 'अच्छा, ई इशारा सँजु दिस तऽ नञि। हम बेर-बेर कहि चुकल छी हमरा कुल-दीपक दिस कखनौ वक्र दृष्टि सँ नञि देखू अन्यथा.....।'

'सूनू नरेन्द्र हम सँजु बिना रहब जीयब। अई झागड़ा मे हम बेटाक बलि

नञि चढ़ायाब। हम नीना क बात कऽ रहल छी।'

नीना? नीना क नाम सुनिते भौंचक रहि गेलाह। आब गुम्म कियेक भऽ गेलहुँ। अहाँ बड़का व्यवसायी छी हमर व्यवसाय तऽ बड्ड छोट अछि मुदा हमरा जे अपन स्टाफक लॉयलटी भेंटल अछि से अहाकें नञि अछि। आ हमर गांहक सात समुद्र पार रहैत अछि जे हमरा सँ चमड़ाक बैग किनैत अछि। हम सती सावित्री छी-कि चरित्र हीन ताहि सँ ओकरा कोनो मतलब नञि छै'

तैँ एतेक हिम्मत!

बौखलाउ जुनि। हमर बात पर ध्यान दिऔ। हमरा बस दू मासक समय दिअ, हम ऑफिस, घर, जेवर कपड़ा आ सँजु के छोड़ि देब।' एतबा कहि हम सीढ़ी सँ उतरलहुँ। हाल मे सासु बैसल छलीह। हमरा तमतमाकऽ उतरैत देखि पूछलनि 'की-भेल प्रिया?' 'नञि किछ नञि हम अपना रूम मे जा रहल छी।' केवाड़ बन्द कऽ लेलहुँ। करेज फाटि गेल। आँचर से मुँह बन्न कयने छलहुँ तथापि हिचकी बहरा रहल छल। हमरा संग सब दिन एना कियेक होइत अछि नेनपन सँ एखन धरि कहियो चैन सँ समय नञि बीतल। एना कियेक? हमर कोन अपराध ??

दोसर दिन भोरे उठि सबसे पहिने मकानक दलाल के फोन कयलहुँ....'दो कमरे का छोटा सा फ्लैट चाहिए, कम से कम सलामी। दलाल बेर-बेर पूछैत छल मिसेज अग्रवाल फ्लैट ककरा लेल चाही। अन्त मे कहऽ पड़ल हमरा अपने लेल।

'अपना लेल?'

'हां, आब वेशी पूछताछ नञि करू।'

नञि, आब किछु नञि पूछब। बस हमरा दस-दिनुका समय दिअ पता लगा कऽ सूचित करब। ओना एकटा फ्लैट कारनानी स्टेट्स मे खाली छै, आ आब ओइ बिल्डिंग के रेपुटेशन नीक भऽ गेलैए पहिलुका बला बात नञि छै।'

'अहाँ पूरा पता लगाकऽ बताऊँ।'

ऑफिस जा कऽ हम सैम्पल सँ भरल बक्सा वरेन के धरा देलिए।

'आर्डर नीक भेंटल अछि....समय पर माल सप्लाइ कऽ दिऐ तऽ कोनो परेशानी नञि हेतै।'

'कतेक के आर्डर छै दीदी। ई पार्टी तऽ एखन धरि बहुत कम आर्डर देलक अछि।'

हुनका हमर माल पसंद छैन्ह तैं जतबा बना सकब ततेक ओ लऽ लेता।'

एकर बाद हम बैंक मे फोन कऽ ए०जी०एम० सँ समय लेलहुँ। हम जनैत

छी-नरेन्द्र सँ डेढ़ लड़ाई मे नञि सकब तैं सोझ बाट पकड़लहुँ। यूनियन बैंक पूरा सहयोगक वचन देलक। जँ एल०सी०पर माल जेतै तखन कोनो दिक्कत नञि हेतै। यूनियन बैंक सँ हम सोझे इलाहाबाद बैंक गेलहुँ। चेयरमैन सँ पार्टी मे परिचय भेल छल। कार्ड देखिते भीतर बजौलक।

'हम यूनियन बैंक सँ एकाउन्ट शिफ्ट करऽ चाहैत छी। अहाँ सँ सहयोग भेंट सकै'छ?'

'पूर्ण सहयोग भेंटत। चेयरमैन फेर सब स्टेप्स एक-एक कऽ बुझौलनि। तकर बाद पूछलनि की हम जानि सकैत छी अहाँ बैंक कियेक बदलि रहल छी?' बैंकर सँ कोनो बात नुका लेब गलत बुझाएल तैं साफ-साफ कहलिऐ-'व्यक्तिगत कारण छै। हम पति, पत्नी फरक भऽ रहल छी आ फरक भेला पर पति हमरा लेल गारंटी नञि देब चाहता।'

'अहाँ अपन व्यक्तिगत गारंटी की दऽ सकै'छ?'

'किछ नञि। मात्र इएह जे हम ग्राहक दस लाख के रिवाइविंग एल०सी० खोलबाक लेल तैयार छथि।' चेयरमैन कनिकाल गुम्म रहल फेर पूछलक-अहांक भाई वा दोस्त?'

'नञि, हम ककरो सँ मदद नञि चाहैत छी आ हम तऽ एल०सी०क संग माल पठा रहल छिऐ।'

'वेश, मुदा जँ कहियो ओवर ड्राफ्टिंगक जरूरत पड़ए तऽ?'

'नञि से जरूरत नञि हेत।'

'तखन कोनो समस्या नञि।'

दस दिन के भीतर कारनामी स्टेट्स मे फ्लैट भेंटल कहियो एहिठाम छोटी मां रहैत छलीह। आब इएह हमर घर आ आफिस। छोटी मां अहि मे रहैत छलीह, मुदा आइ जे एत रहऽ आयल अछि से अग्रवाल हाउसक पुतौहु नञि मात्र 'प्रिया' नामक महिला अछि। लोक बुझि नञि पबैछ कहिया, कखन जिनगी क गति विस्फोटक भऽ जेतै। आ कखन अतीत के फेकि कऽ ठाढ़ भऽ जायत।' ओई दिन नरेन्द्र सँ हमर आखरी बातचित भेल छल। अन्तिम राति छल ओइ बड़का घर मे। भोर होइते हम अपन बक्सा लऽ सीढ़ि सँ उतरैत छलहुँ। हमरा बक्सा लऽ उतरैत देखि सासु माथ पकड़िकऽ पाथरक मूरत जकाँ गुम्म बैसल छलीह। नरेन्द्र निरपेक्ष भाव सँ नास्ता कऽ रहल छलाह। सँजु स्कूल गेल छल। हम जानि बुझिक अहि समय मे विदा भऽ रहल छलहुँ। सँजु स्कूल सँ अयला पर की सोचत? फेर मन कहलक प्रिया कानूनन सँजु पर अहाँक कोनो हक नञि अछि। तखन करोड़ोक रोज सौदा करऽ बला ओकर बाप की बेवकूफ

छै ओ सँजु के मां क बदला टका सॅ स्नेह करब सिखा देतै आ मां क जे तस्वीर ओकर मन मे छै तकरा छहों छित्त कर खत्म कऽ देतै। आ सेह भेलै। हम अयलहुँ कारन नी स्टेट्सक फ्लैट मे तऽ हमरा सॅ भेंट करऽ अयलीह सबसे पहिने नीना आ छोटी मां। छोटी मां हमरा अपना करेज मे साटि कानऽ लगलीह। हमर दुःख-दर्द आ एकाकीपीन के अनुभव इएह कऽ सकै छथि। नीना-हाथ बढ़ा कहलनि की हम अहॉक काज मे किछ मदति कऽ सकैछी अहॉ हमरा अपन छोट बहिन,दोस्त वा बेटी किछ मानि आदेश दऽ सकैछी। हम अपन जी, जान लगा देब मुदा अहॉके प्राण, प्रतिष्ठा पर खरोंच नञि लागऽ देब।'

फेर संजु आयल कनैत। हमर बेटा!

'मम्मी, घर चलू ने...।'

'नञि बौआ हम ओतऽ नञि जाएब।'

'मम्मी हम की करू?'

'जे दादी कहथि से करब आ बेटा पापाक वात मानब।' हमरा अपना खून मे फेंटल पानिक एहसास भेल। सँजुक कोन दोष! जहिया सॅ जनमल स्वार्थे देखैत रहल अछि। अइ नेना कें पैद्य लोक कोन मूल्यक बोध करौल कै। जेहन वातावरण मे रहै'छ ओहने बनत। आ बच्चा कें हमरा इमोशनल ब्लैकमेल करब बड्ड अनुचित बुझनाजाइछ। मातृत्वकें देखाबटी महिमा मंडित करबाक कखनौ-इच्छा नञि भेल। चारि वर्षक बाद सँजु अठारह वर्षक बालिग पुरुष भऽ जायत।

हां, ओहि दिन सांझि मे हम नरेन्द्रक के फोन के लिए कियेक तऽ ओई करोड़पति कें हमरा हिसाब देबाक छल जे हम की सभ अपना संग एतऽ अनलहुँ अछि-'नरेन्द्र! हम सभटा ओतहि छोड़ि के आयल छी। मात्र बीस पल्ला साड़ी आ अपन किताब एतऽ आनलहुँ अछि।'

बहुत बढ़ियाँ धन्यवाद!'

'हं, सँजु के कहियो-कहियो एतऽ आबऽ देबै, कहीं एहन ने होमय जे ओकरा देखबा लेल हमरा कोर्ट जाए पड़ए।'

'बड्ड तैश मे बात कऽ रहल छी?'

'नरेन्द्र! मनुषक भाषा मे बाजू। अपन घर कोन महिला छोड़ चाहै'छ? आ, अहाँ तऽ हमर बेटो के राखि लेलहुँ?'

'उचित कयलहुँ अछि। अपना कें सम्हारि लिअ सेह बहुत। अपन ठेकान नञि बेटा कें पालन-पोषण करतीह! विलायत आ अमेरिका बेटा के लऽ कऽ जायब? हाट फ्यूचर कैन यू गिव हिम? टेल मी?'

हम व्यर्थ बुझैत छी किछ कहब दंभी व्यक्ति कँ नरेन्द्र आर किछ बकैत

छल हम रिसीवर राखि देलिए।

-प्लेन एमस्टरडाम के एयरपोर्ट पर उतरि रहल छल। हम अपन ब्रीफकेश बन्द कयलहुँ। हैंड पर्स मे टिकट, पासपोर्ट, ट्रैवेलर्स चेक सब कँ चेक कयलहुँ।

एयरपोर्ट पर फिलिप ठाढ़ छल। लम्बा सुदर्शन आकर्षक व्यक्तित्व उम्रक प्रभाव सॅ खिचड़ी पाकल दाढ़ी खूब फबैत छै। फिलिप हमर दहिन गाल चूमैत पूछलक मित्र, आब स्वास्थ केहन अछि?

'एकदम नीक।'

'हॅ देखऽ सॅ एकदम फ्रेश लगितो छी।'

ओकरा ऑखि मे बहुत जिज्ञासा छलै। मुदा संकोच संभ्रान्त संस्कार क ब्रिटिश मैनरिज्मा हरदम हँसैत छथि फिलिप पर। जूडी अमेरिकन छथि। गाड़ी स्टार्ट करैत फिलिप पूछलक की प्रोग्राम अछि? आब उतर देबहि पड़त। 'फिलिप हम लिखऽ चाहैत छी।' - 'कि?'

'अपन स्मृति। ओ सम्पूर्ण अतीत जकरा ठीक सॅ एखन सोचि नञि पयलहुँ अछि।'

'मुदा ककरा लेल?'

से नञि सोचलहुँ अछि।

जूड़ी घरे पर छलीह गाड़ी सॅ उतरिते लपटि गेलीह।

फिलिप कहलकैन्ह-'प्रिया एत एकान्त मे किछ लिखऽ चाहैत छथि।'

'वाह।' कहि जूड़ी हमरा दिस तकलैन्ह। हम हुनकर हाथ नहुए दाबि कहलिऐन्ह हं, जूड़ी हमरा अहॉक सान्निधयक, अहां दूनू गोटेक आवश्यकता अछि। हमर मनः स्थिति अहीं दूनू गोटे नीक जकां बुझि सकैत छी।

'ओ. के. डियर! चलू हाथ-मुँह धो फ्रेश भऽ भोजन करू। फिलिप चलि गेल। लगे मे ऑफिस छै। छह बेडरूम बला मकान छै, पाँच टा गाड़ी, एकटा बेटी छै जे लंदन मे पढ़ैत छै। एत रहै'छ बस मियाँ-बीबी। फिलिप के तरह-तरह के गाड़ीक सौरव छै। आ जूड़ी सॅ गप्प करबाक। हम फूसि नञि कहैत छी.. .. बड्ड भेटक दृष्टि छै ओकर आर-पार धरि सब देख सकै'छ। हम किचेन क पर्दा निहारि रहल छलहुँ। जूडि कोना बूझि गेल। 'प्रिया, ए प्रिया कोन दुनियाँ क सैर कऽ रहल छी?'

-कतहु नञि। अपने अड़तालीस वर्षक लेखा-जोखा कऽ रहल छलहुँ।

'जतेक सोचब ततेक सिलसिला टूटत।' 'सत्ते कहैत छी जुड़ी। क्रम भंग भऽ जाइछ। अपन सम्पूर्ण तस्वीर नञि बना पबैत छी। कखनहुँ माथ गायब तऽ कखनहुँ हाथ-पैर, अंग-प्रत्यंग छिड़ियाएल लगै'छ अजीब हैल्यूसिनेशन।'

'मन मे जखन जे घटना मोन पड़ए तुरत से लिख लेल करू।'

'मुदा एना लिखने आत्मकथा कोना हेतै।' प्रिया हम वा अहाँ साधारण मनुष छी। सजि धजि कऽ क्रमानुसार विशिष्ट व्यक्तिक जीवन वृतान्त लिखाइत छै।'

वाह जूडी अहा सरिपहुँ जीनिइस छी। हमर सब समस्याक समाधान अहाँ लग रहैछ।'

–'सब समस्याक नञि। कतेक बेर तऽ अहाँ आ फिलिप कोनो समस्या मे तेहन ओझराएल रहैत छी जे हमरा ओइठाम सॅ उठऽ पड़ैत अछि। अच्छा चलू आब अहाँ अपन रूम देख लिअ।'

'वाह रूम बहुत मेहनत सॅ सजौने छी मन गदगद भऽ गेल। एहन नीक दोस्त भाग्य सॅ भेंटैत छै। ओतऽ' कलकत्ता में एक–एक कऽ सब दोस्त घूटल जा रहल अछि। लगैछ जेना अपन शहर नञि होमए। ओत क्यो अपन नञि रहल। मात्र घर आ फैक्ट्री अछि। साल मे छमास तऽ बाहरे रहैत छी। कहियो कतहु तऽ कहियो कतहु। हँ, दिल्ली या बम्बई जाइत छी तऽ क्यो पुरान परिचित भेंट जाइत अछि.......।'

–'ए प्रिया नीचाँ आयब?'

'फिलिप जूड़ि के मना कयलो पर हमरा शोर पाड़लक, ई ओकर आदति छै। ओ जाबत सबटा बात फरिछा कऽ बूझि नञि लेत ताबत सांस नञि लेबऽ देत। हमर जीवनक कोनो बात तऽ एकरा दूनू बेकती सॅ नुकायल नञि छै।'

कलम राखि नीचॉ गेलहुँ। एखन धरि मात्र किछ प्वाइंट्स आ तारीख नोट कयलहुँ अछि। जूड़ी पूछलक 'किछ लिखलहुँ की नञि।'

–'नाम मात्र।'

'अहाँ नी के छी ने कहैत हमर बॉही पकड़ि फिलिप सोफा पर बैसौलक।'

'किछ नञि। फिलिप हम अपना विषय मे लिखऽ चाहैत छी आत्मकथा तऽ नञि ओकरा आत्म विश्लेषण कहल जा सकै'छ।

'आ जूडी अहाँ........?'

हम जा रहल छी किचेन मे करीब आधा घंटा हमरा लागत खाना बनाबऽ मे।

'हं, तऽ प्रिया.....?' की हँ, तऽ?

'मतलब अहाँ कथा–पिहानी लिखब!'

'हँ, सेह सोचि रहल छी।'

'कतेक दूर धरि सोचलहुँ अछि?'

'की कहू।'

'की कहू नञि, लिखब शुरू करू।'

'हं, मुदा अजीब सन ब्लॉकेड लगै'छ एहन कोनो खास तऽ नञि अछि जहि सॅ हमरा जीवनीक प्रति ककरो रूचि होई?'

'ई, तऽ अहाँक जर्नल अछि ने?'

'हँ।' फिलिप सॅ गप्प करैत छलहुँ आ अर्न्तमन मे एकटा कथा जन्म लऽ रहल छल। गप्प करैत करैत फिलिप एकाएक गुम्म भऽ गेल। फेर हमरा आगाँ हाथ हिला कऽ पूछल 'प्रिया अहाँ कतऽ छी?' हम वापस अयलहुँ।

फिलिप कहने छलाह–'प्रिया, कखनौ कऽ अहाँ कें बूझब कठिन भऽ जाइछ।

'तऽ छोड़ि दिऔ ने प्रियाक बूझब' इ जूड़ी बजलीह। सत्ते जूडी फिलिप पर खिसियाल छलीह–'अहाँ फेर प्रिया के बिमार पाड़ि देबै, अपना ढंग सॅ रहऽ दिऔ।'

हम उठि कऽ अपना रूम मे आबि गेलहुँ। किछ नञि फुराइत छल। बिछावन पर पड़ि रहलहुँ ऑखि मुना गेल।

भोर मे ऑखि खुजल। खूब सूतलहुँ तथापि तन्द्रा मे बेचैन छलहुँ। पर्दा हटाकऽ खिड़की खोल लहुँ शीतल ताजा हवा नीक लागल। घड़ी देखलहुँ पांच बजै छै। आकाश ललछौंह छै एखन सूरज नञि उगैत। आकाश मे मेघ लागल छै। सामने लैम्पपोस्ट पर रौबिन चिड़ै बैसल छै। एत गोरैया नञि छै।

जूड़ी क्लास लेबऽ रोज पचास मील गाड़ी चलाकऽ जाइत छै। फिलिप अपन बी.एम.डब्लू या पोर्शे मे हजार मीलक यात्रा करै'छ। मुदा जखन दूनू–गोटे रहै'छ तखन ने देश पराया लगै'छ ने ई घर। जूड़ीक व्यवहार बड्ड नीक छैक स्वभाव अति मधुर। लगै'छ जूडीक जन्मे सॅ प्रज्ञा जागृत छै बिना किछु कहने सब बात बुझि जाइछ।

लगै'छ जूडी जागि गेलीह नीचाँ कीचेन सॅ बर्तन क आवाज आबि रहल छै। ऊपर तकलक जूडी हमरा पर नजरि पड़िते विहुँसैत पूछलक–'हाय, प्रिया राति मे निन्न भेल?'

'हँ, आ नञि।'

से की?

असल मे हम सूतैते छी कम। मोन नञि पड़ैत अछि जेना लोक राति भरि चैन सॅ सूतैत छै तेना हम कहियो सूतल होइ! मानसिक त्रासदी मे क्यो कोना सूतत? तिल–तिल कऽ मरैत लोकक लेल आनन्द कहाँ? 'आ जूडी अहाँक

बूझल अछि तऽ एहन क्रूर भऽ कोना पूछैत छी?'

प्रिया, क्रूर हम नञि। क्रूर अछि अहाँक अर्न्तमन मे बैसल हजारो सालक परम्परा सँ ग्रसित रूग्न सोच जे अहाँ कें कहियौ चैन सँ रहऽ नञि दैत अछि। अपन उपलब्धि सॅ खुश नञि होमऽ दै'छ। अहाँ स्वयं अपना प्रति आक्रमक छी। तैं सलीब पर लटकल अपने तरहथ्थी पर कील ठोकैत रहैत छी! की भेंटैत अछि आत्मपीड़न सॅ।

'आत्मपीड़न?' हमर स्वर आहत छल।

गलत नञि कहि रहल छी। सोलह आना सच आत्मपीड़न। अहीं कहू की अहाँ के बुझि पड़ै'छ जे अहाँक जिनगी मे एकदम सन्नाटा अछि एकदम नीरस। हमरा लोकनिक कोनो महत्व नञि हमर प्रेम देखाबटी अछि? नीना आ छोटी मां क अहाँ लेल कोनो महत्व नञि? प्रिया, अहॉ फिक्स इमजेक शिकार छी। पति, पत्नी, बच्चा...... पारम्परिक परिवार......'।

'सॉरी जूड़ी हमरा बात सॅ अहाँ कैँ तकलीफ भेल।' तकलीफक बाते छै। अहाँ अपनो कनैत छी आ दोसरो के कनबैत रहैत छी। अहाँ सँ तऽ वेशी बुझनुक नीना अछि। नीना के लेल आगि होइ वा पानि सब कें जिनगीक धर्म मानैत अछि। ओकरा। जिनगीक मे एकटा लय छै गति छै ओकरा कखनौ एकाकीपन चूभैत नञि छै। जिनगी समस्त तूफान कें हँसि कऽ स्वागत करै'छ आ निर्भय, निःशंक भऽ जिनगी जीबैत अछि।

'गुडमार्निंग लेडिज! की हम भीतर आबि सकैत छी?' फिलिप रसोई घरक, चौकठी लग हँसैत बाजल। फेर जिज्ञास कयल-'की जूडीक सैशन भोरे-भोर शुरू भऽ गैलेन्ह?'

अरे नञि, फिलिप! ई प्रियाक दिमाग खराब भऽ गेलैए राति-दिन अपने तन-मन पर चाबुक सॅ प्रहार करैत रहै'छ। ओना एखन गप्प करू ने तऽ बुझाएत तेहन-सन जेना एहन संतुलित क्यो भइए ने सकै'छ।

'की डाक्टर के देखिते रोगी शान्त....।' हम बजलहुँ। अरे चुप्प रहू बेवकूफ महिला! हम अहाँक दोस्त छी कोनो साइकियाट्रिस्ट नञि। हम जूड़ी लग जा कऽ ओकर हाथ चूमि लेलिऐ। 'प्लीज, जूड़ी हँसी दिअ। हम अहॉक भावना बूझैत छी।'

'सुनू प्रिया......।'

अरे रे जूडी, अहाँक क्लास ग्यारह बजे सॅ शुरू होएत। एखन तऽ भोरका छः बाजि रहल छै....

-जुडि भभाकऽ हँसल-हम एकरा जतबे प्यार करैत छी ऐ इ ततबे..

ततबे की? हम जूडी दिस तकैत पूछलिऐ।

'किछ नञि। आब हम चललहुँ स्नान करऽ अहाँ फिलिप संग माथापच्ची करू।' हम फिलिप के कान्हा पर हाथ धऽ घूमि कऽ जुड़ी दिस तकलहुँ जूडी खिड़की लग ढाढ़ि छलीह। हम पूछलिऐन्ह। 'जूड़ी अहाँ स्नान करऽ गेलहुँ नञि?'

अहाँ कें दुखी छोड़ि कऽ हम कतहुँ नञि जायब, चलू ऊपर कनिकाल गप्प-सप्प करब।

फिलिप नौ बजे जयबा लेल कहने छलाह।

जूडी कहलनि नञि हम सब संगे बहराएब। ग्यारह बजे अहाँ आ फिलिप लंच पर आबि जायब आ हम अपना क्लास मे रहब। प्रिया, आइ एम सॉरी हम जानऽ चाहैत छी जे अहाँक सम्बन्ध एहन ऊबाऊ कोना भऽ गेल?

स्मरण करैत अतीतक घाव सॅ पीबऽ बहऽ लगै'छ श्रम सॅ बहार होइते एकटा निःशब्द दहशत घेर लै'छ। निरन्तर दुःखक सुरंग मे डूबि जयबाक भय। कठोर सत्यक सामना करबाक भय। स्वयं के भय। कठोर सत्यक सामना करबाक भय। स्वयं के प्रति संशय। अतीतक एहन कोनो हिस्सा नञि अभरैत छल जतऽ चोट, दर्द टीस नञि होमए। थूरल-थकुचल बचपन जे झट सॅ किशोरी बना देलक फेर संघर्ष करैत औरत जे व्यवस्था सॅ समझौता करब कहियो सीखऽ नञि चाहलक। ईमानदारी सॅ तेहन ग्रसित मानसिकता अछि जे कोनो सम्बंध मे बनाबटीपन या कृत्रिमता नञि स्वीकारि पबै'छ।

सूनू, जिनगी के फेर सॅ शुरू करबाक लेल जीवित रहबाक लेल असीम साहस आ धैर्य चाही। हम पश्चिमी महिला की कम संघर्ष कयलहुँ अछि? जखन हमर घर उजड़ल, बच्चा संग छोड़लक, साठि वर्षक पुरुष पाईक बल पर बीस वर्षक लड़की संग भोग करऽ लागल तखन हमहुँ सभ तिलमिला उठल छलहुँ। पुरूषक भोगवादी प्रवृति चरम पर छलै आ भोग्या छलीह हमर बहिन-बेटी। सामंतवादक नंगा नाच देखने छी। आइ तऽ कम से कम हम एतबा जनैत छी जे इलोना एक व्यक्ति जकाँ सोचैत अछि अपन निर्णय अपने लैत अछि अपना शर्त पर जीबैत अछि।

'अहॉ ठीके कहैत छी।'

जूड़ी उसाँस लैत बजलीह-'प्रिया, आब अहाँ तैयार भऽ जाउ। हमरो क्लास लेब जयबाक अछि।'

'जूडी अहाँ तऽ साइकियाट्रिस्ट छी ने?'

ऊँ हूँ सबटा भूमिका पाछाँ हम एकटा संवेदनशील महिला छीं महिलाक

दुःख दर्दक अनुभव करैत छी। प्रिया, मात्र अहींक शोषण नञि भेल अछि। प्रत्येक महिलाक अपन-अपन दर्दक तहखाना छैक।'

'जूडी, नरेन्द्रक संग जीवन-यापन करबाक लेल हम प्रत्येक क्षण समझौता करबाक प्रयास कयलहुँ मुदा सबटा असफल भेल। हम नीक जकाँ बुझि गेलिऐ नरेन्द्रक परिवेशक जे ढ़ॉचा छै ताहि मे कनिको फेर बदल असम्भव! हँ ओ चाहैत छल हम ओकरे अनुकूल भऽ जाइ ओकरे परिवेश मे दूध पानि जकॉ हमर व्यक्तित्व घुलि जाए। मुदा हम ओइ ढंग सॅ ने सोचि सकलहुँ न ओइ अनुरूप हमर व्यक्तित्व बदलल। ई ककर दोष? तैं हम मात्र अपने के दोषी बुझैत छी। नैहर मे मां, भाभी, दीदी सब बजैत छलीह मां जतबे प्रियाक विवाहक लेल चिन्तित छल प्रियाक ततबे नीक घर-वर भेंटलै। की ठाठ छै प्रियाक कतबो टका गनने दोसर बेटी कें एहन हैसियत बला घर-वर भेंटलै। कहै छै ने जे गुड़क मारि धोकड़े भोगैत छै सेह। हम केहन अभाव क अनुभव कऽ रहल छी से के बुझि सकै'छ हम अपना कें एकदम एसगर पबैत छी क्यों हमर अपन नञि ने मां, ने भाई-भाभी, ने दीदी एतऽ अपन पति छथि से हो अपन नञि। कखनौक मन मे होइत जखन हमरा सुख-दुःख मे संग देनहार क्यो नञि अछि तखन केहन रिश्ता-नाता? हमहीं कियेक ककरो लेल सोचू? विपत्तिकाल जॅ घर-परिवार समाज क्यो पूछनिहार नञि तऽ ककर लेहाज करू कोन समाजक भय? समाज नाम क भीड़ कॅं हम कहियो जानि पयलहुँ ने किछ बुझलहुँ। मनुष के जीवऽ लेल बहुत कम लोकक आवश्यकता होइत छैक से एतेक टा संसार मे हमरा अपन क्यो नञि भेंटै'छ? जे सबसॅ निकट अछि जकरा सॅ अपनापन बोध होइत से तऽ बुझाइत जे हम आ नरेन्द्र उत्तरी आ दक्षिणी ध्रुव छी। दूनू क बात व्यवहार सोच सब मे आकाश-पतालक भिन्नता। मोन पड़ै'छ कॉलेजक दिन! ओ किताब-पोथी जाहि मे मानवीय मूल्य क विषय मे पढ़ने छलहुँ। सत्ते बहुत घुटन महसूस होइछ। व्यवस्थाक विपरीत चलऽ बला पुरुष के क्रान्तिकारी कहल जाइछ आ महिला के हेय दृष्टि सॅ देखल जाइछ। महिला कें कतहु ठौर नञि। तथापि हमरा नोर बहाबऽ बाली महिला नञि सोहाइत अछि। निष्क्रियता सॅ नीक संघर्ष करब।

'कोनो महिलाकॅं अपन लड़ाई अपने लड़ऽ पड़ैत छै। जॅ महिला व्यवस्थाक प्रतिकूल पैर बढ़बैत अछि तऽ ओकरा कीमत ओकरा चुकाबऽ पड़ैत छै। हम जनैत छी जे भारतीय हमरा सभ पर हँसैत अछि ओ सभ बुझैत अछि जे पश्चिमी महिला बड्ड स्वच्छंद जीवन बीतबैत अछि कोनो रोक-टोक नञि जकरा संग मोन होमए राति बिताबी एतबे नञि हमरा लो कनि के घर उजाड़ऽ बाली बुझल

जाइछ।'

हम स्वयं एहन बात नञि सोचैत छी।'

मात्र अहॉ या किछ आंगुर पर गनऽ जोग लोक नञि सोचैत होइ मुदा भारतीय दृष्टिकोण इएह छैक। मुदा एकटा बात याद राखू इतिहास, समाजशास्त्र मानव शास्त्र वा मनोविज्ञान सभटा पुरूषक लिखल छैक इ मात्र पूरबे नञि पश्चिमो मे। आज सच त इएह छैक जे कोनो पुरूष परिवर्तन नञि चाहैत छै 'युग-युग सँ जे सुविधा प्राप्त छैन्ह से कियेक छोड़ऽ चाहता।'

'जूडी से तऽ अहॉ सत्ते कहैत छी। व्यवस्थाक बाहर पैर रखने हमरा बहुत कठोर सजा भेंटल। अपना मन के हम टुकड़ा-टुकड़ा कऽ बॉटि लेलहुँ अछि।' आब हम आत्मनिर्भर छी। अपना काज मे खूब मोन लगैए व्यस्त रहैत छी। हं, अतीत कें बिसरऽ चाहैत छी से नञि भऽ पबैए।'

'ओना प्रिया हम एकटा बात कहऽ चाहैत छी जे दुनियॉ मे सब पुरूष ने नरेन्द्रे सन छै ने डा बनर्जी सन। नीको लोक छै दुनियॉ मेँ।'

हं, जूड़ी, हम मानैत छी जे नीको लेक छै दुनियॉ मे। तऽ की महिलाक जिनगी क लक्ष्य सही सहचरक तलाश करब छैक? आइ धरिके अनुभवक आधार पर हम कहि सकैत छी जे पुरूषके सत्ताक लोभ रहैत छै। सत्य कहैत छी जूड़ी-एहन प्रेम हमरा लेल बड्ड कठिन अछि। समर्पणक ई परम्परा....ई तऽ दूनू दिस से होमऽ चाही?'

.....'हूँ, पुरुष कहै'छ जे ओकर समर्पण देवत्वक प्रति रहै'छ तै ओ स्वयं भगवानबनऽ चाहै'छ। आ ओकर' अपेक्षा रहैत छै जे महिला पुरूष के अपना सॅ वेशी महत मानि समर्पित भऽ अपन आहुति दै।'

मुदा से कियेक? अपना सॅ वेशी महत महत मानबाक कोनो तर्क छै? एतबे नञि जॅ आहूति देबऽ बला आहूतिक कीमत बूझै तऽ ओकरा कहल जाइछ जे निःस्वार्थ, शर्तहीन स्नेहक कीमत नञि होइत छै ! हमरा तऽ अपना जीवन मे निःस्वार्थ स्नेह मात्र दाई मां सॅ भेंटल। अन्यथा सब ठाम प्रतिस्पर्धा प्रतियोगिता, प्रथम पंक्ति मे बनल रहबाक कोशिक देखलहुँ। जूड़ी, पुरुष हरदम जीतऽ कियेक चाहै'छ?

प्रिया, तकर मुख्य कारण छै जे ओ नीक जकाँ जनै'छ जे ओ दिनोदिन हारि रहल अछि। मालिक बनल रहबाक वा सत्ता के पकड़ने रहबाक एकटा भिन्न प्रकारक पीड़ा होइत छै। मुदा ओ किछ कऽ नञि पबै'छ। कोनो विकल्प नञि भेंटैत छै।

'मतलब स्त्री-पुरूषक सम्बन्धक अर्थ मालिक आ गुलाम! भोक्ता आ

भोज्या!! कहिया धरि, प्रिया कहिया धरि इ द्वन्द्व चलैत रहतै?'

'प्रिया! अहाँ कें अधलाह नञि लागय तऽ एकटा बात कहऽ चाहैत छी। हम आ फिलीप दूनू गोटे अइ विषय पर बहस कयलहुँ अछि आ हमरा ग्रुप थेरेपी मे अइ पर प्रायः चर्चा चलैत रहैत छै।'

एखन सभ्यताक संक्रमण काल छैक। तैं अहाँ एतेक कष्ट झेललहुँ। मुदा अइ कष्ट सँ अहाँक भ्रम टूटल। अहाँ बनल बनायल रूढ़िग्रस्त व्यवस्थाक प्रतिकार कऽ पारस्परिकता क सम्बन्ध स्थापित कयलहुँ। मुदा नरेन्द्र! ओकर चेतना त मालिकाना अहम तर दबले जा रहल छै। धन आ सत्ताक मद ओकरा केहन अहंकारी आ पागल बना देलकैए। ओ बूझैत छै टका क बल पर सब हासिल कऽ लेत। मुदा अहिं सोचि कऽ देखिऔ ओ की हासिल कऽ लेलक? ककरा सहानुभूति छै ओकरा सँ? के स्नेह करैत छै ओकरा सँ? ओकरा मुठ्ठी मे बन्द भेल सँजु खुजल हवा मे साँस लेबऽ लेलि आकुलाइत नञि छै? आ कोन जीवन मूल्य देलकै अछि नरेनद्र सँजु कें?

हँ, जूडी! हम अइ बात सँ सहमत छी–मुदा कखनौ कऽ होइत अछि जे एकरा पाछाँ हमहूँ अपराधी छी। संजूक प्रति नरेन्द्र जकाँ तऽ नञि मुदा ओहि परम्पराक हिस्सेदार बुझैत छी अपना कें। तखन होइ ए जे सँजु कें हम अपना संग कियेक ने राखलिऐ?'

तऽ की ओ अहाँक संग रहैत? मानलहुँ दू–चारि वर्ष, रहि जाइत मुदा फेर ओ नरेन्द्र लग जाइत।

'नञि जानि ओ रहैत, की नञि। मुदा हमरा कचोट अछि जे हम मां क भूमिका नञि निभााहलहुँ। ओना तऽ एक तरहें अपन कोनो भूमिका क निर्वाह नहिए कयलहुँ अछि। भऽ सकै'छ सँजुओ हमरे गलत बूझए ओकरो मन मे इ बात उठि सकैत छै जे हम अपना महत्वाकांक्षाक कारण ओकर अवहेलना के लिऐ?'

'अहाँ जहिया इ व्यवसाय शुरू कयलहुँ तहिया ओ कतेक वर्षक छल?'

'बारह वर्षक।'

'तऽ अहीं कहू बारह वर्षक लड़का के मां क जरूरत रहैत छै की पिताक?'

'पिताक । शायद मां आ पिता दूनूक।

बालवाइक सँ करीब–करीब चालीस मील दूर जंगलक बीचो–बीच एकटा खूब सुन्दर रेस्टोरेंट छलै। फिलिपक कोशे अपना गति सँ चलि रहल छलै। हम नहुए नहुए अपन सीट के कनि नीचाँ कऽ चित्त भऽ पड़ि रहलहुँ। ऊपर आकाश

दिस तकैत छलहुँ पाँछा छुटैत गाछ बिरीछक कतार देखैत छलहुँ फेर कखनौ आँखि मुनि लैत छलहुँ। कखनौ–कखनौ मित्रक संग कतेक सुख भेंटैत छै? फिलिप आ जूडी केहन मन क मीत अछि। दूनू मे के वेशी अपनत्व दै'छ कहब कठिन। आइ धरि ने फिलिप पूछलनि जे जूडी संग की बतिआइत छलहुँ ने जूडी कहियो पूछलनि जे फिलिप संग की बात भेल। तनाव ग्रस्त मे हम एतऽ आबि गेलहुँ से नीके भेल।

'प्रिया, अहाँक व्यापार केहन चलि रहल अछि? शिकागोक प्रदर्शनी केहन रहल? किछ आर्डर भेंटल?' फिलिपक स्वर सुनि हम मुनाइत आँखि खोललहुँ।'

'नीक जकाँ चलि रहल अछि फिलिप। प्रत्येक व्यापारक अपन व्यवस्था होइत छै, अहाँ व्यापार शुरू किये कयलहुँ? अहाँक टकाक कोनो कमी नञि छल?'

'जँ सच कहि तऽ टकाक अभाव छल। अमीरीक आवरण तर गरीब मनक ओछपनि झेलैत झेलैत हम थाकि गेल छलहुँ। कनि–कनिटा वस्तुलेल पाइ मांगऽ पड़ैत छल नरेन्द्र सँ। एतबे नञि कथि मे कतेक पाइ खर्च भेलै से हिसाबो देबऽ पड़ैत छल। रोज अहिलेल बकझक होइत छल।'

से की?

'नरेन्द्र सँ खर्च लेल टका मांगऽ मे एक तऽ हमर स्वाभिमान आहत होइत छल दोसर ओकर बाद व्यंग्यवाण सँ मानसिक तनाव बढ़ैत छल। टका दैत काल नरेन्द्र कहैत छलाह खूब पाइ उड़ाऊ, खर्च करऽ मे खूब मन लगैए आ जँ हिसाब मांगब तऽ रानी जी कहतीह हमरा सँ दू–चारि टकाक हिसाब नञि लिखल पार लगै'छ। आखिर एतेक टका जाइ छै कतऽ पांच हजार टका हाथ खर्च लेल दैत छी।' आ दोसर दिस घर खर्चा सँ बांचल लाखो टका मम्मीक लगमे जमा रहैत छलनि जकर कोनो हिसाब किताब नञि।'

हम कतेक बेर कहनहु छलिए – 'नरेन्द्र ओहि पाँच हजार टका मे सँजुक पढ़ाई–लिखाई कपड़ा लत्ता सब होइत छै। 'तऽ कहैत छल 'नरेन्द्र हमरा हिसाब चाही।'

'नरेन्द्र! हिसाब नौकर सँ मांगल जाइत छै हम अहांक पत्नी छी।'

ताहि लँ की मम्मी तऽ आलू–परबल किनैत छथि से हिसाब लिखकऽ रखैत छथि। की ओ घर क सदस्या नञि छथि?'

एहन मनुष्य सँ के मुँह लगाबय हमतऽ कहियो नञि देखलिऐ जे मम्मी आलू परबल के हिसाब लिखने होइतीह। बाबूजी सँ मम्मी कहियो टका मँगैत नञि छलथिन जे अपना मन सँ दैत छलथिन ताहि सँ खर्च करैत छलीह। हम

कहियो हुनका पाई मंगैत नञि सुनलिऐन्ह। नरेन्द्र तऽ कहियो समय पर पाई दैते नञि छथि। संजुक स्कूल सॅ रिमाइंडर अबैत छलै तऽ मम्मी जी अपन टका सॅ कहैत छलीह फीस दऽ देब। ओ सत्ते व्यवहारिक छथि बेर-कुबेर लेल अपन टका राखने रहैत छथि।

तखन फिलिप बजलाह: कोनो व्यक्तिक किछतऽ अपन कौशलिया (नीजि पाई) रहैए चाहि। पॉकेटमनी पर दोसर के कोन अधिकार ओ तऽ खर्चे करबा लेल देल जाइत छै। जकर जेहन औकादि से ततेक टका बाल बच्चा आ पत्नीकें दैत छै। की कहू, फिलिप! हमरा घरक बात अनोखे छै। जहिया नरेन्द्र कहैत छलथिन आइ घर पर भोजन नञि करब ताहि दिन मम्मी रसोइ घर मे जा कऽ कहैत छलथिन महराज जी आइ छोटे बाबू खाना नञि खेथिन तैं हमरा तीनू गोटे (मम्मी हम आ संजु) लेल भरबा परबल बना लेब। अ। गनिकऽ छटा परोर दैत छलथिन। भनसिया आ नौकर दाई लेल आलू आ साग-पात। जँ कहियो कोनो काज लेल हम रुपया लैत छलिऐन्ह तऽ एकटा पुर्जा लिखकऽ थमा दैत छलीह प्रिया, अहाँक नाम पर एतेक टका अछि। कहबाक लेल तऽ हम बड़का घर क पुतौहु छलहुँ मुदा हमरा कोनो हक नञि छल। आ अइ बड़का घरक नौकर जाकर जँ ककरो कोनो आफत होउ तऽ ककरो लग मुँह नञि खोलैत बस आबि कऽ हमरे कहैत छल बहुरानी! हमरा सौ टका चाही बेटा बीमार अछि इलाज बिना मरि जायत। ककरो घर दहा-भासिया जाय वा आगि लागि जाइ तऽ कहैत छल बहुरानी! अहीं कें कहि सकैछी कहुना उबारि दिअ। छोटे बाबू या मां जी कें कहने कोनो फायदा नञि। बड़ा बाबू छलाह तऽ बेर-कुबेर बुझैत छलथिन। हम दऽ दैत छलिऐ। आ अइ सौ-दू सौ टका क हिसाब हमरा लग नञि रहैत छल। मां जी ककरो जँ सौ टका देतो छलथिन त प्रत्येक मास बीस-बीस टका काटि लैत छलथिन दरमाहा सॅ। हमरा सॅ एहन हिसाब किताब असंभव छल। दर्जी कपड़ा सीबि कऽ अनैत छलै आ जँ कहै 'मां जी सिलाई दू सौ साठि टका भेल' तऽ ओकरा अढ़ाई सौ दऽ कहैत छलथिन बस भऽ गेल आब एको टका नञि।' हमर मन विचलित भऽ उठैत छल बेचारा दू-तीन हजारक कपड़ा सीब कऽ दऽ गेल आ अहाँ ओकर मेहनतक दस टका पचा लेलिए ताहि सॅ कतेक बचत भऽ जायत। हँ, एकटा हमर अपन व्यक्तिगत खर्च छल किताब कीनब जे नरेन्द्र के एकदम फिजूल खर्ची बुझाइत छलैन्ह।'

'प्रिया नरेन्द्र तऽ एम.बी.एम. कयने छथि ने। से हो अमेरिका सॅ पढ़ि कऽ आयल छथि। तखन किताबक प्रति एतेक उदासीनता।'

हं, फिलिप ओ अमेरिका सॅ पढ़ि कऽ आयल छथि। तइओ हुनक कहब

छैन्ह 'प्रिया अहाँ लाइब्रेरी मे जा कऽ कियेक ने पढ़ैत छी। मैगजीनक खर्च तऽ बुझबा मे अबै'छ मुदा ई हजारो टका क किताब? की कहू एकबेर पुस्तक-मेला सॅ किछ किताब किन कऽ अनने छलहुँ किताबक ढ़ेर देखि मन पुलकित छल होइत छल कखन खोलिकऽ पढ़ि। तखने नरेन्द्र अयलाह। किताब देखिते बजलाह-प्रिया अहूँ धन्य छी कोन जरूरी छल एतेक किताब किनबाक? हमरा जनैत ई देखाबऽ लेल किनलहुँ अछि आधो किताब पढ़ब नञि। टका फूकबाक धुन अछि फूकि लिअ।'

'हमरा तत्काल किछ नञि फूरल गुम्मे रहि गेलहुँ। घर क पुरान ठाकुरा पच्चीस वर्ष सॅ काज करैत छल आब रिटायर्ड भऽ घर जा रहल छलै। हमरा लग आबि अपन दुखरा सुनाबऽ लागल-बहुरानी। अहीं घरक लक्ष्मी छी। छोटे बाबू त हजार टका हाथ पर घऽ देलनि बस भऽ गेलै। आइ जॅ बड़ा बाबू जीवित रहितथि तऽ.....।'

'........ठाकरा जी, मोन छोट जुनि करू। छोटे बाबू अहॉक बहुत चाहैत छथि अहाँ हुनका अपना कारे मे खेलौने छिऐन्ह।'

'नञि, बहुरानी नञि! आब हुनका किछ याद नञि छैन्ह। सभटा बिसरी गेलाह।'

हम आलमीरा खोली दू हजार टका आ नरेन्द्रक पुरान दू टा सफारी सूट अपन पुरान साड़ी आ सँजुक पुरान कपड़ा ठाकरा जी के देलिऐन्ह।'

भगवान अहॉ के भरल-पुरल राखथि। बहुरानी अहाँ लक्ष्मी छी लक्ष्मी। ओ हमरा आशीष दैत गेठरी बन्हैत छल तखने नरेन्द्र आबि गेलाह। हमर करेजक धुकधुकी बढ़ि गेल आ ठाकरा जी खुशी सॅ बजैत जाइत छल छोटे बाबू देखियौ बहुरानीक करेज केहन पैद्य छैन्ह देखू हमरा दू हजार टका देलनि अछि ई कपड़ा सब। भगवान सदा सुहागिन राखथिन।' ठाकरा जी के जाइते बम गोला फाटल प्रिया, अहाँक कहिया बुद्धि विवेक हेत? अहाँ ककरा सॅ पूछि कऽ दू हजार टका आ हमर सूट देलिए? की सभक मालकिन अहीं छी?' 'प्रिया, बुझि-सुझि कऽ कोनो काज करबाक चाही!' सासु बजलनि। मने-मन बजलहुँ हँ, मम्मी जी अहाँ जकाँ नौकर-चाकर के कलपैत देखबाक सामर्थ रहैत तऽ नञि दितिऐ ककरो टका-पाई वा कपड़ा लत्ता। अहीं जकाँ एक के दू टका हिसाब मे लिखितहुँ तऽ हमरो बक्सा मे कपड़ा, टका भरल रहैत।

आब सासु चुप्प छलीह। हुनको बदला बेटा गरजैत छलैन्ह 'लुटा दिऔ सभटा, खोलि लिअ सदाव्रत।' मम्मी आब अहीं कें सँजुक पढ़ाई-लिखाई, कपड़ा लत्ता लेल टका देब। प्रिया के मात्र हाथ-खर्चा लेल देबैन्ह।

सुनिकऽ स्तब्ध रहि गेलहुँ। फेर नञि रहल गेल तऽ बजलहुँ 'नरेन्द्र। हम की नेना छी? हमरा बूझऽ नञि अबैए? की हमर कोनो उसूल नञि अछि कोनो सिद्धान्त नञि, कोनो मानवीय भावना नञि? अहाँ बजैत छी कियेक तऽ अहाँ कमाइत छी, घर क मुखिया छी?'

'हं, हं, हम कमाइत छी? कमाकऽ पाइ आनु तऽ बुझब।'

आब ओतऽ ठाढ़ रहब कठिन भऽ गेल हम अपना रूम मे आबि कानऽ लगलहुँ। एतेक अपमान घर क नौकर-चाकर सभक सोझा मे! मालकियत के एतेक अहंकार!! काल्हि पार्टी मे शंकर भैयाक सोझा मे गप्प हँकैत छलाह-पापा की छोड़ि कऽ गेलाह आइ दस करोड़ अछि हमरा हाथ मे। जे मन होए खाइ पहिरि। मन भेल कहिऐ जा कऽ नरेन्द्र जहिया अहाँ मरब तहिया संजु के कहि देबै ओ अहॉ लेल टकाक चिता सजाबए।

घुटन बढ़ले जा रहल छल। मानसून सॅ पहिने जेना समस्त वातावरण मे उमस रहैत छै, अबैत-जाइत श्वास आकाश दिस टकटकी लगौने रहैत छै, कखन मेघ लगतै बुन्न टपकैत जे लोक क तन-मन शीतल हेतै-तहिना श्वास प्रश्वास शीतलता लेल व्याकुल छल।.......... बात-बात मे ऑंखि सॅ नोर ढ़रकैत छल व्यथा के मरहम लगएबा लेल मुदा आइ ऑंखि मे जल नञि मात्र उमस सूखा गेल नीर नयनक।..... नव टटका घाव छल मन-प्राण पर जाहि पर खूनक पपड़ी जमि गेल छलै दर्द सॅ स्याह भऽ गेल छल। सम्पूर्ण अस्तित्व मे टीसक अनुभव भऽ रहल छल। मन कुहरि छल टका-टका-टका जन्म सॅ एखन धरि वैभव बीच रहलहुँ मुदा हाथ पर कहियो टका नञि जेना छप्पन भोग परसल होमए मुदा मुँह मे एक कौर नञि जाए! ई पारिवारिक ढाँचा ऐतिहासिक छैक। आत्मग्रस्तताक सीमा पार ......ई लोकनि केहन ग्रस्त छथि टका सॅ? सासुके आलमीरा मे लाखोक समान छै मुदा.....। कम से कम मां स्वभाव सॅ भावुकतऽ छलीह। सन्तुलनक अभाव छलैन्ह मुदा मन होइत छलैन्ह तऽ सबटा उठा कऽ दऽ दैत छलथिन। हं, हुनका एतबे दुख छलैन्ह जे ओ आदरणीयॉ देवी नञि बनलीह ने घर मे ने समाज मे। नञि जानि कियेक ओई दिन मां के प्रति सहानुभूति भेल छल हुनक पीड़ाक बुझबाक प्रयत्न कयने छलहुँ। हमर सासु तऽ लोकक नजरि मे देवी छथि-आत्मदाह आ वेदनाक प्रतिमूर्ति। ककरो कोनो सहायता नञि करैत छथि तथापि प्रशंसा होइत छैन्ह। बजतीह किछ करतीह किछ कथनी आ करनी मे कोनो तालमेल नञि। ई पापा कें हरदम महसूस करौलथिन जे ओ अपराधी छथि। बेटो के सह देलथिन बाप क प्रति घृणाभाव कें। पापाक सोझा मे तेहन दयनीय मनोभाव देखबैत छलथिन जे ओ सतत् क्षति

पूर्तिक लेल प्रयत्न करैत रहलथिन। छोटी मां के काली मंदिर मे कालीजी क समझ पापा सिन्दुर लगौने छलथिन। तऽ की ओ विवाह नञि भेलै? धूर हमहू हदे छी की सोचऽ बैसैत छी आ कतऽ चलि जाइत छी। मन मे अबैत भाव आ विचार के छॉटनाई संभवो नञि छै।

गाड़ी रूकल। देखलहुँ छोट सन एकटा रेस्टोरेंट सामने अछि। खूब पैद्य-पैघ बर्च आ पाइनक पेड़.......किछ आर गाड़ी लागल छलै। रेस्टोरेंट मे गेलहुँ कोना मे बैसैत फिलिप सॅ पूछलिऐ-'अहाँ किछ पूछने छलहुँ?'

'हं, एक घंटा पहिने अहाँ तऽ कल्पना लोक मे रहैत छी। फेर हमर माथ छुबैत बजलाह प्रिया रिलैक्स......आइ से रिलैक्स।' नञि कहू ने की व्यापारक सम्बन्ध मे पूछने छलहुँ?'

'कहैत छी ने हम किछ तेहन नञि पूछने छलहुँ। हे, देखिऔ केहन नीक रौद छै। खाना खा कऽ चलब टहलऽ। की लेब? नीक बवारियन वाइन मंगाउ? अहाँ के मीठ स्वाद बला डसर्ट बाइन नीक लगैत अछि।'

'एखन मोन नञि होइए।'

बहुत अपनत्व सॅ देखैत बाजल-प्रिया अहॉ बहुत बहादुर महिला छी, एना जुनि करू टूटि जायब। आब तऽ अहॉ आत्मनिर्भर छी। अतीत के बिसरी जाउ। याद कयने कोनो लाभ नञि'

'से तऽ सत्ते कोनो फायदा नञि छै। हम चाहैतो नञि छी बीतल बात मोन पारऽ जूड़ी ठीक कहने छलीह। शायद बीमारीक वजह सॅ वा व्यस्तातक कारण पछिला पन्द्रह वर्ष मे कहियो किछ सोचबाक पलखति नञि भेंटल।'

हम सब ग्रेप-जूस पी रहल छलहुँ जाहि मे छोट-छोट मिंट के पात आ संतराक छिलका क कतरन छलै। स्टुआर्ड आर्डर लिखैत छल-फिलिप के हमर स्वादक वस्तु बुझल छैन्ह। डेनमार्क मे आलूके ततेक तरह क व्यंजन भेंटैत छै जे कि कहू। मक्खन, आलू, चीज आ चीनी सॅ छौंकल ऊपर सॅ नमक आ मरीच निबू संग मे वाइन .... हम कोकाकोला लेलहुँ, खाना खा कऽ खूब टहललहुँ। फिलिप पूछलक-'हाफमैनक आर्डर कतेक के छैक?'

'करीब-करीब दू तिहाई।'

'हैंडबैग, की आर किछ?'

'सब मिलल-जुलल।'

'प्राफिट?'

'मार्जिन तऽ बहुत कम दैत छै। मुदा ओकर तीनटा बात बहुत नीक बुझाइत अछि। समय पर एल.सी. खोलि दैत अछि। क्वालिटी कनिको गड़बड़ भेला पर

मीन मेष निकालैत अछि मुदा क्लेम नञि करैत अछि आ तेसर बात इ जे रेगुलर आर्डर दैत अछि।'

'बड्ड तेज अछि हाफमैन। एहन खरीददार बड्ड कम भेंटत। हमरा तऽ जूडीक जिद्द के कारण एतेक नीक सप्लायर कें छोड़ऽ पड़ल। जूडीक कहब छै जे हमरा सभकें आर स्प्लायर भेंट जायत प्रियो के गाहक भेंटतै मुदा दोस्ती? ओकरा' नजरी मे दोस्तीक महत्वपूर्ण स्थान छैक।'

आ अहॉक नजरि मे?'

सच तऽ ई छै जे जखन कलकत्ता या दिल्ली सॅ समय पर माल नञि भेंटैत अछि तऽ अहॉ सॅ समय पर माल नञि भेंटैत अछि तऽ अहाँ सन नीक सप्लायर कें हाफमैन सॅ जोड़बाक पछतावा होइत अछि।

'फिलिप एक तरहें ई नीके भेलै जे अहॉ ओइ समय नव-नव काज शुरू कचने छलहुँ तैं एल.सी.नञि खोलि पयलहुँ आ नरेन्द्र अहॉक संग हमरा काज करऽ दैत नञि। आब इ चमड़ाक व्यापार शुरू कऽ हमरा ई तऽ होइत अछि जे हम स्वयं काज शुरू कयलहुँ।'

'से नीके कहैत छी प्रिया! हमरा क्रेडिट पर माल लेबाक छल आ अहॉ क्रेडिट पर नञि दऽ सकैत छलहुँ। तखन बैंक सॅ रुपया लेबाक लेल हाफमैन सन पैघ व्यापारीक जरूरत छलै।'

हं, मोन पड़ल, नरेन्द्र अहाँकें धमकी देने छल। अहाँक बैंकक गारंटी वापस लऽ लेने छल। ओकर छह सात दिनक बादे तऽ हम सब कलकत्ता पहुँचल छलहुँ आ अहाँक माल तैयारो नञि भेल छल ने सप्लायर के देबऽ लेल टका छल।'

'तऽ अहीं एक लाख टका एडवांस देने छलहुँ आ हम अहाँ के सबटा बात साफ-साफ कहि देने छलहुँ।'

'हँ, तखन हमरा लाखे टका संग मे छल आर रहैत तऽ वेशी दितहुँ। ओहि दिन हम कहने छलहु फरक व्यवसाय शुरू करऽ लेल। मुदा प्रिया सत्य कहैत छी दैट वास्टर्ड। हम पुरूष होइतो ओकरा बुझि नञि पबैत छी।'

एकदम सही कहलहुँ! फिलिप हमरो कतेक बेर मोन भेल नरेन्द्रकें गरियाबक! की कहू फिलिप ओइ बेर लंदन सॅ घुरलाक बाद हम ओइ घर मे एक छत के नीचा रहैतो ककरो संग नञि छलहुँ। अन्त मे हमरा कठोर कदम उठाबऽ पड़ल।'

'से की?'

'ओ हमरा ब्लैकमेल करऽ चाहलक तखन हमरा धमकी देब पड़ल।' एक

बेर ओ चुप्प भेल। मुदा जखन ओ देखलक जे ओकरा बिना सहयोगक हमर काज सुचारू ढंग सॅ चलि रहल अछि तखन आर खुंखार भऽ गेल। ओ अहंकारी पुरुष बर्दाश्त नञि कऽ पबैत छल जे पत्नी ओकरा बिना आगॉ बढ़ि रहल छै। ओह! फिलिप अहाँ तऽ कल्पनो नञि कऽ सकब ओकर नीचताई के विषय मे।' एतबा बजैत-बजैत प्रभाक स्वर थरथराए लगलैन्ह। ऑखि ऊपर उठलैन्ह गाछक फुनगी पर होइत आकाश दिस तकैत रहलीह। पैरक नीचॉ सूखल पातक खर-खर स्वर। मन मे एहन हाहाकार जे चाहैत छलीह फिलिप के करेज मे सटि खूब कानि। बहुत दिन सॅ ऑखि नोर सूखल छैन्ह फेर तुरत दोसर मन बरजैत कहलकैन्ह की जिनगी मे एकटा पुरुषक सम्बल एहन जरूरी छै? फेर मोन पड़लैन्ह जूडी कहैत छथि मात्र महिले पुरुष सॅ सम्बल नञि चाहै'छ पुरुषो स्त्रीक सम्बल लेल आकुल-व्याकुल रहै'छ। हं, याचक बनिकऽ सम्बल कथमपि नञि स्वीकारि!'

हमरा नरेन्द्रक परिवार सॅ भनहिं किछ नञि प्राप्त होमए मुदा एकटा अदद वस्तु भेंटल अकारण आक्रमकता, निर्ममता मे डूबल व्यंग्य वाण जे शूल जकॉ गरल रहै'छ। ई इक्कैसम शताब्दीक समाज छैक की अठारहवीं शताब्दी से बुझब अइठाम कठिन। हम जखन कखनौ कोनो पार्टी मे जाइत छलहुँ तऽ सोझे-सोझे मुँह पर चाबुक मारैत शब्द उछलैत छल-'आइ काल्हि अहॉकें एसगरे देखैत छी नरेन्द्र जी अहॉक संग नञि रहैत छथि?'

'नञि रहैत छथि।'

'कियेक?'

आब अइ कियेक के उत्तर की देल जाए? हम असमंजस मे रहैत छी लोक कनखी मारि एक दोसरा के किछ संकेत कऽ जहरीला हँसी हँसऽ लगै'छ। हम साहस कऽ बजैत छी इ हम्मर व्यक्तिगत सवाल अछि..बात पूरा होमऽ से पहिने व्यंग्यवाण पीठ पर भोंका जाइछ-अरे हमर सभक घरबला की व्यापार नञि करैत छथि? प्रिया जी अहॉ किछ वेशीए व्यस्त रहऽ लगलहुँ अछि मिसेज वर्मा अहीं कहू ने हम फूसि बजैत छी?

'हे हम की बाजू मियां-बीबी क झगड़ा जे बाजए से लबड़ा।'

एना पल्ला झाड़ने समाज मे काज नञि चलैत छै की मिसेज आहूजा? हं, हमरा विचार सँ तऽ महिला के समझौत कऽ लेबऽ चाही.....ई अनगिन व्यंग्यवाण आ आगाँ-पाछाँ बामा, दहिना गरल ऑखि सॅ लहुलुहान भेल मन-प्राण समस्त शरीर मे झुनझुनी-की बाजू कतेक प्रश्नक उत्तर दिऐ? संग कियेक ने रहैत छी?....कोन बातक झगड़ा.....? आब की एसगरे रहब.....? आ

अइ सभक मूक गवाह हमर सासु! हुनका लेल छन्न-सन क्यो हमरा किछ कहए हम कतबो आहत होउ ओ मूक मौन रहतीह, निरूत्तर पत्थरक मूर्ति जकाँ। हुनक एहन सर्द उपेक्षा क लेल कोनो आखर नञि भेंटैत अछि। जखन ओ पुतौहु लेल एहन संवेदनहीन छथि तखन छोटी मां लेल सहानुभूति क प्रश्ने व्यर्थ ओ तऽहिनकर सौतिन छथिन! उनटे हुनका होइत छैन्ह जे हम परम्पराक अनुसार कियेक ने व्यवहार करैत छी? जेना घरक पुतौहु रहैत छै तेना कियेक ने रहैत छी? से हो मुँह खोलि कऽ नञि बजतीह आ हुनक ई चुप्पी सौ-सौ बिच्छुक डंक मारै'छ हमरा मन पर। आ हम मुखौटा। लगा नञि सकैत छी जे हुनका हं मे हं मिलाउ। एहन ओ कऽ सकै'छ जकरा पीठ मे रीढ़ नञि होई मरुदंडहीन मनुष मुँहदेख बजै'छ ओ जकरा कोनो क्षुद्र स्वार्थक पूर्ति करबाक होइ वा बहुत एहन जाहिल महिलाक सम्पर्क सॅ वेशी एक्सपोजर के कारण, खैर जे होइ हमरा क्रोध होइछ पुरुष पर। खास कऽ ओहन पुरुष पर जे शक्तिशाली आ सामर्थ्यवान बुझै'छ अपना कें। शुरू मे हम सभटा बर्दाश्त करैत छलहुँ होइत छल एना कयने ओ सुधरी जयताह। तैं अपमान, वंचना सब चुपचाप बिना कोनो प्रतिरोध कयने सहैत छलहुँ। आब तऽ एहन बात सब लिखबाक मोनो ने होइत अछि। ने हाथक कलम ओहन लिखबाक लेल तैयार होइछ। जीवन के जीवंत बनाबऽ लेल हम सबसे पहिने नरेन्द्र संग जोड़ल गेठबन्हनक गेंठ खोलनाई शुरू कयलहुँ। जतऽ जतऽ ओ हमरा संग जाइत छलाह ओतऽ हम अपना कें लूल्ह-नांगर महसूस करैत छलहुँ। पार्क स्ट्रीटक मोड़ पर एक दिन देखने छलिऐ लूल्ह-नांगर कें भीख मंगैत लागल जेना हमहूँ ओहने अपंग छी आ समाज सॅ स्वीकृतिक भीख मांगि रहल छी। हम कतेक आ कतऽ धरि। जे नितांत एकांत क्षण मे जखन नरेन्द्र लग मे रहैत छलाह अन्तरंग गप्प-सप्प वा कोनो क्रिया कलाप मे हुनक वर्यस्व-भाव आ व्यवस्थाक विषाक्त लहरि तनाव बढ़ा दैत छल। एकर परिणाम भेल जे हम नरेन्द्र सॅ दूर रहबाक चेष्टा करऽ लागलहुँ तथापि भयभीत क्षुब्ध छलहुँ। हरदम मन मे होइत छल जे नरेन्द्र नराज ने भऽ जाए। हमर सफलता सॅ जरैत रहैत छल तैं अपन सफलता पर खुशी सॅ वेशी ओकर प्रतिक्रिया डर होइत छल। सब दिन एके रंगक रूटिन छल। भोरे आठ बजे घर सॅ बहराइत छलहुँ दिनभरि काज मे व्यस्त रहैत छलहुँ घर आबितऽ घर गृहस्थीक काज मे ओझरा जाइ फेर पढ़ब-लिखब आधा-आधा राति धरि जागले रहि। आँखि मे नन्नि नञि ढ़ेरो संशय कोनो राति चैन सॅ दूइओ तीन घंटा सूतल नञि होएब।

'की अहाॅ के समाज सॅ डर होइत छल?'

नञि, फिलिप समाज सँ नञि डर होइत छल फिलिपक सर्कल सॅ। नञि

जानि कियेक ओकर सभक सामना नञि कऽ पबैत छी। ओकरा सभक सोझा मे हम अपने कें अपराधी बुझऽ लगैत छलहुँ।

'फालतुडर! अरे, अहाँ व्यापार करैत छलहुँ कोनो अपराध नञि तखन डर कथिन?'

'ई बात सही छै मुदा ई बुझऽ मे हमर आधा जिनगी बीत गेल। नञि जानि ई केहन राजसिंहासन छलै जकर पाया पकड़ने-पकड़ने तरहत्थ लहूलुहान कऽ लेलहुँ।'

'प्रिया सम्मान ककरो क्यो दैत नञि छै ओ लोक के स्वयं अर्जित करऽ पड़ैत छै।'

अच्छा, फिलिप अहीं कहू हम की सभ अर्जित करितहुँ, की एहन कतहु देखलिऐ ए जे अपने घर मे आन जकाॅ लोक रहए हम एना छलहुँ जेना ककरो कोनो मतलब नञि। एकदम उपेक्षित ककरो हमर कोना परवाह नञि। हमरा अपन पीठ अपने ठोकऽ नञि अबैत अछि ने हम अपना पीठ पर अपन त्यागक ब्यौरा साटिकऽ घूमि सकैत छलहुँ। तखन फैसला हमरा पक्ष मे होइत कोना? हँ, ई संघर्ष सॅ एतबा सीख भेंटल जे जिनगी मे जँ एकटा गलत समझौता करै'छ तऽ सौटा गलत समझौता करऽ पड़ैत छै। अहाँ जँ एक व्यक्तिक पैर तर तरहत्थ रखबै तऽ आबऽ बला प्रत्येक व्यक्ति अहाँक तरहत्थ के पैर पोछना बूझत।

'हं, ई एकदम शोधल बात बजलहुँ।' आब हम चुप्प मने-मन सोचैत छलहुँ। केहन छल हमर अतीत? कखनौ क्षोभ, कखनौ असहय व्यथा झेलैत रहलहुँ तऽ जिनगी विधेयक बनैत कोना। सही आ गलत की होइत छै इ मात्र नैतिक विवादक विषय नञि तैं हम हरदम जिनगीक गुणवत्ता पर विचारैत रहलहुँ। ई केहन जीवन हम जीवि रहल छी? भविष्यक भयावह छवि के कोना सुधारू जे व्यवस्थाक ठेकेदारक नजरि बदलए। एकरा हमर जिद बुझिवा बेवकूफी। असंभव करे कल्पना करब आ व्यवस्थाक चुनौती देब नीक बुझाइत छल। चट्टान सॅ टकराइत विघ्न-बाधा सॅ जुझैत निरन्तर प्रयासरत छलहुँ। मुदा हमर समस्त प्रयास विफल भऽ रहल छल। असल मे संघर्ष करबा लेल जे हथियार छल से एकदम भोथ छल मुदा से बुझबा मे बड्ड समय गवां चुक्लहुँ। आब हमर मन हमरे सॅ पूछैत छल-कहू प्रिया, ककरो अहाँक जरूरत छै? तऽ विवेक उत्तर दैत छल-'ककरो नञि।' आ हमर अहम? ठोस एकटन लोहाक सख्त वजनदार ईगो कहैत छल नञि हम हार नञि मानब पैद्य से पैघ कीमत चुकाएब आर आहुति देब। देखै छी कोना क्यो उपेक्षा करै'छ? हमर जरूरत छै परिवार के समाज के हम नींव के पत्थर बनब। ई केहन अन्तर्द्वन्द्व मे हम पिसा

रहल छी मन क दू हिस्सा एकटा पूर्ण स्वतंत्र सजग सतर्क दोसर डेग-डेग पर भय भीत। चारूभर बुझाइत छल जे सभक आँखि मे प्रश्न प्रति प्रश्न छै व्यंग्य छै। सभके ई डरजे एहन महिलाक असर कहीं हमरो बेटी, पुतौहु पर पड़ि ने जाए। लोक हमरा सँ एकटा दूरी बनाबऽ लागल। एहन खुल्लम खुल्ला अपमान! बिना कोनो अपराध कयनहुँ लोकक लांछना!! नरेन्द्र क पत्नीक चालिचलन नीक नञि छै। आब हमरा धैर्य संग छोड़ऽ लागल एहन बहिष्कृत जिनगी? हमर अपन परिवारक सदस्य, कुटुम्ब, अड़ोसी-पड़ोसी सभक चेहरा पर एकटा अजीब भाव भंगिया! अई सभक बहुत प्रभाव पड़ैत छलै सँजु पर 'बेचारा ककर तरफदारी करत मां क की पापाक। आ हमरा होइत छल जे लोकक हमरा प्रति एहन धारण कोना बनलै? हम तऽ घर के जोड़ने रखबाक प्रयास मे रहलहुँ तोड़लिऐ कोना? आ नरेन्द्र के हमर सफलता पर प्रसन्नता होमऽ चाही शिकायत छै तकर साफ मतलब छै जे ओ हीन ग्रंथि सँ ग्रसित छथि। हम न्यूरोटिक भेल जा रहल छलहुँ। हम जनैत छी जे पागल के इलाज भऽ सकै'छ मुदा जे स्वयं अपन न्यूरोटिस बुझैछ, जे बेर-बेर हिस्टिरिक दौरा पड़ला पर हिंसक आक्रोशक कारण अपने देह के थकुचए बकए हे भगवती हमरा लऽ चलू तकर कोन इलाज? एक दिन हमर काज-व्यवसाय मे हमर क्षमता बुद्धिमताक प्रशंसा होइछ दोसर दिन परम्पराक ठेकेदार के बहुत-बहुत शिकायत छैन्ह।

तखन विचारलहुँ जे जँ हम सफल व्यवसायी छी टका कमाइत छी तऽ अपन व्यक्तिगत समस्याक समाधान कियेक नञि कऽ सकै छी। एतेक पढ़ला लिखलाक बादो एना कियेक मनोविज्ञान बुझितो आक्रमक औदास्य आ डिप्रेशनक घुन जकाँ तरे-तर खा रहल अछि? महीना मे दू-तीन बेर दौरा पड़ैत अछि। ट्रिगर पाइन्ट तऽ नरेन्द्र अछि आ ओकर द्वेषभाव क्यो आमंत्रित कयने छलै पूरा परिवार के मुदा आब नरेन्द्र हमरा कतौ नञि लऽ जाइत छथि। क्यो पूछितो छैन्ह तऽ कहि दैत छथिन-ओ बड्ड व्यस्त छथि। जेकरा जे मोन होइत छै अनुमान लगबैत अछि। हम सोचैत छी दोसर औरत के घर आनऽ बला ई पुरुष हमरा पर हाथ उठबैत अछि, लोक क सोझा मे अपमानित करैत अछि तइओ ओ हमर पति अछि? इ हमरे गलती अछि जे हमर संवेदना गहींर अछि वा हमर मूल्यबोध भिन्न अछि। दिन-प्रतिदिन त्रासदी मन क भीतर अपन पैशाचिक पंजा गड़ौने बिना नञि रहै'छ क्षत-विक्षत हृदय कहै'छ बस काज मे व्यस्त रहू सभटा बिसरल रहत। ई काजे व्सवसाय तऽ ग्रह अछि एकरे कारण एतेक अपमान होइछ...मुदा ई छोड़ि देब से हो असंभव! छोड़बाक प्रश्ने नञि उठै'छ?

'प्रिया! बुझाइत फेर अहाँ कतहु भसिया गेलहुँ।'

'सॉरी फिलिप! बात ई छै जे......।'

'आखिर अहाँ एतेक की सोचौत रहैत छी?' फिलिप कखनौ कऽ होइत अछि जे एहि व्यवसाय लऽ कऽ हमर दूनू गोटे मे दूरी बढ़ल?'

'प्रिया! असल बात ई छै जे नरेन्द्र सन पुरुष महिलाक महत्वाकांक्षा कें सहन नञि कऽ पबै'छ। भनहिं ओ आन सफल महिला दिस आकर्षित होउ मुदा अपना पत्नी कें दबाऽ कऽ रखबामे ओकर अहं संतुष्ट होइत छै हे, देखू अहाँ मे कतबो प्रतिभा होमए रहब हमरे अधिकार मे।' अच्छा अहाँक कहियो जूडीक प्रति एहन भाव रहल अछि?'

प्रिया हम सत्य कहैत पता नञि जूडी अहाँ के कहियो कहलक की नञि। एलोना घर सँ गेल तहिया सँ हम दूनू गोटे पति-पत्नी सँ वेशी दोस्त जकाँ रहैत छी। हमरा दूनू गोटे के एक दोसरा क प्रति परस्पर स्नेह सद्भाव अछि। हमरा ओ सम्मान दैत छथि आ हम हुनका सम्मान दैत छिऐन्ह स्वत: कोनो दबाव नञि। हुनकर काजक महत्व दैत छिऐन्ह ओ हमरा काजक महत्व दैत छथि। मुदा नरेन्द्र मे परस्पर प्रेम क भाव नञि छै ओ अपना के अहाँक मालिक बुझैत छथि। वास्तव मे अहाँक देश मे पति क वर्चस्व रहलैए तैं जँ पत्नी चेतन शील रहैत छै तऽ वैवाहिक व्सवस्था दम तोड़ऽ लगैत छै।'

हम एकदम चुप्प भऽ गेलहुँ। फिलिप इमानदारी पूर्वक उत्तर देने छलाह हम हुनक बात सँ सहमत छी। भोजन परसल गेल मेज पर। दूनू गोटे चुपचाप खाइत रहलहुँ। मुदा हमर मन चुप्प नञि छल दिमाग मे चलैत टेप-रेकार्डर के बन्द करब अपना वश के बात नञि।

हम नरेन्द्र के अधीन भऽ जे काज करैत छलहुँ से हुनका नीक लगैत छलैन्ह। मुदा जहिया सँ हम अपन स्वतंत्र निर्णय लेब लगलहुँ तहिया सँ हम फुटलो आँखि नञि सोहाइत छलिऐन्ह। बात-बीत मे टीका-टिप्पणी। जहिया हमरा घर सँ बाहर जएबाक रहैत छल अरबैध कऽ तहिये घर मे पार्टी क आयोजन होइत छल। हमरा सम्पर्क मे जे अबैत छल तकरा ओ देखऽ नञि चाहैत छलाह। आइ घरि कहियो हमरा व्यवसाय के विषय मे कोनो उत्सुकता देखौलनि ने किछ पूछलनि। जहिया पहिल बेर हाफमैन सँ हमरा आर्डर भेंटल छल हम बहुत प्रसन्न छलहुँ। हुलसैत कहने छलिऐ 'नरेन्द्र आब तऽ अहाँ ई स्वीकारब जे हम स्वयं अपना स्तर पर नीक व्यवसाय कऽ सकैत छी?'

'तऽ की अहाँ स्वयं कयलहुँ अछि? हाफमैन सँ परिचय तऽ ओ अहाँक मित्र की नाम छै.....फिलिप हां फिलिप करौने छल।' 'अहाँ की बुझैत छिऐ जे मात्र परिचय सँ काज भऽ जाइत छै?' हं, होइते छै।'

एहन विबाह बोल सुनि हम गुम्म भऽ गेलहुँ। अइ व्यक्ति संग गप्प करब असंभव। हमरा दूनू गोटेक बीच एकटा विचित्र जंग चलि रहल छल। हम ई नञि कहैत छी जे हमरा मे कोनो कमी नञि अछि हम तऽ शुरूहे सँ मुँहदुब्बर अन्तर्मुखी लड़की छलहुँ। कहियो बहादुरीक मुखौटा लगएबहु ने कयलहुँ। सभा-सोसायटी, पार्टी/भीड़भाड़ मे एकदम असगर भऽ जाइत छी आ तखन हमर आँखि ताकऽ लगैत छल नरेन्द्र कें। जेना भीड़ मे नेना मां के तकै'छ। आ अई समस्त प्रक्रियाक प्रमुख कारण हमरा दृष्टिकोण सँ अत्यअधिक संवेदनशीलता वा आत्मविश्वासक कमी। हम नरेन्द्र कें कतेक बेर कहने छलिऐन्ह ई पैद्य लोकक सोशल सर्कल, ब्याह क भोजभात, कॉकटेल पार्टी मे हम सहज भऽ नञि रहि पबैत छी बहुत असहाय अनुभव होइछा एकतऽ घंटो पहिने तैयार होमऽ मे लगै'छ फेर डर कोनो ने कोनो कमी बताकऽ नरेन्द्र भरि बाट बजताह. ....अहाँ के कोनो लूरि नञि अछि....केहन साड़ी पहिरलहुँ आ अहॉक लग मैचिंग जेवर नञि अछि....कार्टियार बला घड़ी क अंचार बनैत......? अपना देहो पर धयान नञि रहै'छ कतेक मोट भेल जा रहल छी।

आँखि डबडबा जाइत छल.....नरेन्द्र अहॉक ई भाषण सुनैत सुनैत हम हीनभाव सँ ग्रसित छी आब अपनो नजरि मे.... हम स्वीकारैत छी जे हम अहॉक लायक नञि छी। हम देखैत छी जे पार्टी मे अहाँक आगाँ-पाछाँ, बाम दहिन एक सँ एक रूपसी डोलैत रहै'छ ओइ रूपसी मे ककरो कोनो विषयक अध्ययन-मनन मे रूचि नञि, अपन कोनो व्यक्तित्व नञि। ओई सर्कल मे पाँचो मिनट क्यो कोनो विषय पर गम्भीरता पूर्वक बाजि नञि सकै'छ तथापि सब मगन रहै'छ हमहीं ओतऽ असहज भऽ जाइत छी। तइओ कोशिश करैत छी व्यवहारिक बनबाक, अहाँक अनुकूल बनबाक कोशिश करैत छी अपन व्यथित अतीत के बिसरबाक। मन होइत छल जे अहाँ के अपन मित्र बनाबी मन क बात कही - सुनी मुदा ने अहॉ कखनौ शान्तिपूर्वक हमरा लग बैसलहुँ ने कहियो पूछलहुँ कियेक उदास छी? की हम अहॉक पाछू दौड़ैत-दौड़ैत अपन अतीत सुनाबितहुँ? दोसर बात ई जे जाबत अहॉ चैन सँ नञि सूनब ताबत अधखरू बात पर उखड़ि जायब अंट-संट बाजऽ लागब हमर कुंठित व्यक्तित्व के एकटा आर विशेषण दऽ देब। कियेक त अहॉक तर्क मे दू आ दू मात्र चारि होइछ। अहॉ कहब प्रिया दू आर दू कहियो पाचँ नञि भऽ सकैछ? असंभव छै- प्रिया। 'प्लीज बी लॉजिकल ....' इएह तऽ अहाँ कहैत रहलहुँ अछि। तैं नेकहलहुँ अतीत क व्यथा कथा ने कहब। एतेक वर्षक बाद आब हम अपन अतीत के बूझऽ लगलहुँ अछि। मात्र बुझिए सकैत छी ओकरा बदलल नञि जा सकैत छ।

वेटर फिलिप के प्लेट उठा रहल छलै। हम जल्दी-जल्दी खालि कयलहुँ। फिलिप बात ई छै जे हमरा अर्न्तमन मे जबरदस्त विरोधाभास शुरू भऽ गेल अछि। हम नरेन्द्र कें कहने छलिऐन्ह-हमारा कनि समय दिअ । जिनगीक एक विशेष। स्थिति सँ जूझि रहल छी। सन्तुलन बनयबाक प्रयास कऽ रहल छी। हमरा घर मे अबिते स्वंय महसूस होइछ जे हम सासुक नजरि मे नीक पुतौहु नञि छी ने अहॉ लेल नीक पत्नी ने सॅजुक नीक मां। मुदा हम की करू समय के अभाव तैं कोनो भूमिका मे सफल नञि भेलहुँ।

'अच्छा ई कहूँ जे अपना व्यवसाय तऽ अहॉक बहुत यश प्रतिष्ठा देलक' से नञि महसूस करैत छी?

फिलिप! होइछ अनुभूति। मुदा समस्त सफलताक बादों ह्दय स्थल मे जे घाव अछि। तकर टीस बेचैन कऽ दैत अछि। एकटा एहन समय छल जहिया घर-बाहर सभठां लोक-हमरा सूली पर चढ़यबाक लेल सदिकाल आतुर छल। समाजक ठेकेदार कें शायद मन होइत छलनि जे एक औरत एना विरोध - भेलो पर व्यवसाय कऽ रहल अछि विदेश-धरि एसगरे जाइछ तऽ एकरा देखा देखी दोसरो घरक बेटी - पुतौहु के हिम्मत बढ़तै, ओ आत्मनिर्भर होएबाक प्रयास करत।'

'फिलिप बजलाह हे, कनि रूकब हमरा पिआस लागल अछि।'

हं, हं कियेक नञि? गाड़ी सँ उतरि हमहूँ डॉर सोझ कयलहुँ।

पाइन आ बर्च के बड़की-बड़की टा गाछ। पैरक नीचा सूखल पात। कनि ठंढ़ दुपहरक मीठका रौद। फिलिप नहुँए सँ हमरा कन्हा पर अपन - कोट धऽ दैत छथि एक दोस्तक गर्म संवेदनाक अनुभूति ....निःस्वार्थ स्नेह ....एहन दोस्त भाग्य सँ भेंटैत छैक।

'शायद एहन दोस्तक स्नेह-सदभाव नञि भेंटैत तऽ शायद हम किछ नञि सकितहुँ अथबल भऽ बड़का घर मे नोर चुबैत बैसल रहितहुँ। मुदा आब दोस्तक प्रोत्साहन सँ लगैछ जीनाई सीख लेलहुँ। अइ धरती पर हमरा हिस्साक हवा, पानी आ रौद सब प्राप्त अछि। अपन एक गति अछि लय अछि जे हमरा आगॉ बढ़ा रहल अछि।

प्रिया, पहुँचऽ कतऽ चाहैत छी?' 'फिलिप! सदिखन लोक चलैछ कतहुॅ पहुँचबा लेल नञि! ओहुना चलैत रहब बिना उद्देश्य के ताहु मे एकटा आनन्द छै।'

'ओह प्रिया! अहॉ तऽ दार्शनिक छी हम नञि तैं अहाँक एहन भाषा बुझब हमरा लेल कठिन अछि।'

'ऊँहूँ दर्शन नञि। असल मे अइ त रहक अहाँ के अनुभव नञि भेल अछि तऽ बुझबै कोना? जखन मन क बात दबबैत-दबबैत ऑखिक नोर सूखा जाइत छै तखन....'

– 'की तखन की होइत छै?'

बुझाइत छै जे करेज पर राखल पाथरक बोझ सँ साँस बन्द होमऽ लगैल होए।

आ अतीत हुलकी मारऽ लगैत छै.........।

'पहिने दर्शन आब कविता! प्रिया अहाँ के बूझल अछि हमरा साहित्य सँ कहियो नाता नञि रहल.......'

'हम भभाक हँसैत छी। की सत्ते फिलिप-अहाँ किछ नञि बुझलहुँ! एतेक काल सँ हम व्यर्थे बक-बक कयलहुँ।'

प्रिया, अधलॉह नञि मानब मुदा एकटा सच छै जे अहाँ एखनहुँ अपन अतीत। रूढ़िवादी समाज आ घर परिवार सँ मुक्त नञि भेलहुँ अछि।'

हं, जूडी कहैत छथि जे एकर कारण छै- ज हम अपराधबोध सँ ग्रसित छी। की अहाँ ककरो हत्या कयलहुँ अछि की चोरी डकैती?'

-'किछ नञि मुदा अपना पैर ठाढ़ एक आत्म निर्भर महिला केँ स्वीकारऽ मे समाज के समय-लगतै। खैर, अब चलू घर। चारि बाजी रहल छै जुड़ी आबि गेल होएतीह।'

गाड़ी पर बैसलहुँ। फिलिप चुप छल। हमरा चुप्प नञि रहि भेल मन क बात बाजिए देलिए-फिलिप! मुइल सम्बन्ध केँ उघऽ मे जतबा शक्ति लगैत छै तकर चौथाई शक्ति मे व्यापार चमकऽ लगैत छै। अपना पर क्रोद्ध होइत अछि जे नरेन्द्र के बुझऽ समझऽ मे एतेक समय कियेक नष्ट कयलहुँ।'

'होइत छै एहन। अहाँक की बुझाइए जे हमरा मन मे कोनो द्वन्द नञि अछि?'

आब हम चुपचाप सौन्दर्य निहारि रहल छी खाली-खाली सड़क साफ आकाश मन हल्लुक लगै'छ ठीक कहैछ फिलिप आ जूडी सबके कोनो ने कोनो समस्या रहैत छै।

-फिलिप कतेक दिन धरि आपसी तनाव झेलने अछि।

समय एकरंग सब दिन नञि रहै छै।

फिलिप बड़ी काल सँ गुम्म छलाह। एकाएक पूछलनि

-'अहाँ एतेक भावुक कियेक भऽ जाइत छी' व्यस्त रहबा लेल ढ़ेरो काज अछि?'

की कहू फिलिप हम तऽ अतीत बिसरी गेल छलहुँ आ वर्तमान मे आन कहिया अपन बनि गेल से बुझबो नञि के लिए। हम बेटी ककर छी सेह नञि बुझैत छलहुँ मां के बदला दाई मां हमरा पोसलनि अपना सासु के बदला छोटी मां सम्हारलनि। छोटी मां अपन गहना बेच कऽ टका देलनी जाही सँ हम दमदम बाला फैकट्री लगाबऽ लेल। काज मे हमरा सब दिन मोन लागल। आ आब तऽ हमर द्वन्द्व खत्म भऽ गेल। ओकर बाद तऽ कोनो परेशानी नञि भेल? कोनो प्रकारक दुःख?'

हं, एकबेर जहिया सँजुक विवाह छलै ओ बाप सँ लड़िकऽ आयल छल हमरा बजाबऽ।'

अहाँ गेल छलिऐ विवाह मे?'

'नञि'

'से कियेक?'

'जाहि घर मे छोटी मां आ नीना नञि जा सकै छ ओतऽ हमरा जयबाक प्रश्ने नञि उठै 'छ'। 'तखन तऽ सत्ते अहाँ के बहुत दुःख भेल होएत आ सँजुओ के खराब लागबे कएलै ओ फेर कहियो घुरिकऽ आयल नञि।'

'मुदा हमरा अपना ईमानदारी पर संतोष भेल।'

-'तऽ अहाँ पहिल बेर कहिया पुतौहुक मुँह देखलहुँ?'

-निधि (हमर पुतौहु) एक दिन चोरा क आयल छलीए बेटा के लऽ कऽ। हम निधि के ओ कंगन देलिऐन्ह जे - छोटी मां हमरा देने छलीह। सँजु सँ वेशी इमानदार छथि निधि संवेदनशील - बुद्धिमती । मुदा फिलिप सच कहैत छी आब हमरा लेल ई समस्त संसार अपने बुझाइछ पहिने जे अपन कहऽ बला रिश्ता-नाता क संकीर्ण घेरा छल जकरा हम शाश्वत बुझौत छलिऐ से सम्मोहन आब टूटि गेल।'

'तऽ की आर बात क दुःख अछि?' नञि, आब कनिको दुःख नञि होइछ। हं, शुरू मे दुःख होइत छल जहिया सीमित परिधि सँ - बहरएबाक प्रयास करैत छलहुँ। फिलिप दू-तिहाई जिनगी खत्म भऽ गेल व्यर्थक विवाद मे। देखल स्वप्न टूटि गेल छल चाहैत छलहुँ नया सपना देखि, शरीर चाहैत छल स्नेहक स्पर्श। नरेन्द्रक नञि...... एक पुरूषक जे हमरा बूझए हमर दोस्त बनए।'

'बुझाइछ जे कॉलेजक समय जे अहाँक अफेयर छल तकरे याद अबैत होएत।'

'नञि, फिलिप ! ककरो याद स्पष्ट वा आवेगमय नञि छल तखन एसगर नीक नञि लगैत छल। जखन हम छोटी मां आ नीना भोजन करऽ बैसैत छलहुँ

तऽ होइत छल जे कोनो पुरूष उपस्थित रहैत....... पापा रहितथि वा नीना क विवाह ककरो सॅ भेल रहितै? होइत छल जेना हम तीनू महिला समाज सॅ कटल छी। फेर तकर बाद?'

'बाद मे बुझना गेल जे आत्मनिर्भर महिलाक लेल पारम्परिक बन्हन तोड़ब कठिन नञि।' गाड़ी धर के सोझा पहुँच गेल छल। गैरेज खोलि फिलिप गाड़ी रखलनि। दरवाजा क ताला खोलैत पूछलनि 'कतऽ बैसब?'

-'उपर टेरेस पर ।'

'ठीक छै। अहाँ चलू हम कॉफी लऽ कऽ अबैत छी।'

शीतल बसात, सांझुक लुक झुक बेरआ अतीतक अतल - तल मे गोंता लगबैत हमर मन।

-'कॉफी लिअ।' आ इतमिनान सँ कहू- की कहऽ चाहैत छलहुँ।'

इएह जे पुरूष कमाइत अछि आ अपन आश्रितक पालन पोषण करैत अछि तऽ ओकर पौरूष मानैत छै लोक समाज। मुदा जॅ महिला कमाइत छै तऽ परम्परावादी समाज ओकरा हेय-दृष्टि सॅ देखैत छै।' मुदा इ संसार मात्र परम्परावादी लोके धरि सीमित नञि छै। आ हम इहो बुझैत छी जे हम औरत भऽ जे समाजक उपकार कऽ सकैत छी से नरेन्द्रर पुरूष भऽ नञि कऽ सकै छ।' पुरूष भूमि, आकाश, हवा, जल आ अग्नि अछि महिला बीया जे धरतिक तरमे रहैछ समय पर अंकुरिकऽ शाखा-प्रशाखा मे पसरैत छै।

पुरुष वा महिला प्रत्येक व्यक्ति एक इकाई होइछ मुदा वास्तव मे जैविक ईकाइ ओ होइछ जे पुरूष प्रधान समाजक वर्यस्व के तोड़ि समतामूलक नव-निर्माण मे योगदान दैछ।

'से तऽ छैक। प्रिया अहॉक बहुतो एहन पुरूष भेंटत जे लिंगभेद के मेटएबालेल सतत् प्रयत्नशील रहैंछ। तखन एकटा बात छै जे पुरूष वा महिला एसगर रहने अपूर्ण रहैछातैँ एक-दोसराक जरूरत दूनू के छै परस्पर प्रेम रहने स्व कैँ रिजेकशन नञि होइ छै बल्कि एहि स्वीकृति सॅ पुरूष वा महिला अधि क संवर्धित होइछ अपना आगाँक पीढ़ी लेल किछु देबाक साम्थर्य रखै'छ। अपन सृजनात्मक उर्जा सॅ समाजक कुरीति के दूर करै'छ। 'हँ, से बुझैत छिऐ फिलिप!'

तखन कियेक बेर-बेर व्यथाक समुंद्र मे डूबैत छी?'

से की हरदम हम व्यथित रहैत छी? आब ओ समय बीत गेल, बीतल हमर अभिशापित अतीत बीतल। आब तऽ हमर मन हरियर पात, फरल फुलाएल ड़ारि जकॉ तरोताजा रहैछ आ हृदय करूणाक ओस सॅ भीजल-सरस सजल। सच

कहैत छी फिलिप एहन दूनू तरहक स्वभाव सॅ हमरा होइछ जे एहन-उतार चढ़ाव सॅ हमर व्यक्तित्व असंतुलित तऽ नञि अछि। एक बेर हम ई बात जूडि सॅ पूछने छलिऐ - 'कहू साफ-साफ की हमर व्यक्तिव अहाँ कैँ असंतुलित बुझाइत अहि?

हमरा कोनो मानसिक रोग तऽ नञि भऽ गेल?'

जूडी कहने छलीह-डोंट बी सिली प्रिया। अहाँ-एकदम सहज स्वभाविक रूप में छी? औरत-माने पाथर नञि ने औरत कोनो बालूक समतल मैदान जे सब ऋतु मे एके रंग रहतै! मनुष के नीक अधलाह बात व्यवहारक प्रभाव पड़ैत छै ओ कखनहुँ हँसैत अछि तऽ कखनहुँ कनैत अछि। एहन कोनो औरतेक संग नञि होइत छै पुरुषो के नीक-अधलाह बातक प्रभाव पड़ैत छै। जॅ एहन नञि होइतै' तऽ ओ शराब नञि पीबैत! ने ओ रोज नव-नव महिलाक संग संभोग कऽ पौरुष क दंभ भरैत। ने बात-बात पर लाठी आ बंदूक लऽ मरऽ मारऽ पर उताहुल होइत। कोनो पुरुष देवता नञि मनुषे होइछ।

अच्छा आब हमरा एकटा प्रश्नक उत्तर 'दिअ अहॉक जीवन मे सुख-शान्तिक क्षण कतबा छल आ आब सबसॅ वेशी संतुष्टि कथि मे भेंटैत अछि?'

'बात ई छै जे एखनहुँ अतीत मोन पड़ैत अछि मुदा ओकरा हम बिसरौने रहैत छी तथापि ओकर प्रभाव वर्तमान पर झलकै'छ। हं तखन आब अपन काज जाहि मे सृजन आ अभिव्यक्तिक सुख भेंटैत अछि इएह हमर सबसँ पैघ आलंबन अछि, मुठ्ठी भरि बीया छींटने छलहुँ से फरऽ फुलाए लागल अछि। फिलिप महिला बिना लगाव, नेह-छोह के जीविए नञि सकै'छ। हमरा मां के लगाव छलैन्ह बेटा सॅ दाई मां के छलै हमरा, सॅ ओना हम ओकर के छलिऐ? आ हमर आत्मीयताक परिधि हुनका सबसँ- विस्तृत अछि तैं हम एकरा अपन उपलब्धि बुझैत छी। आर किछु नञि। हम विशिष्टताक बोझ तर अपना के दाबल राखियो ने सकैत छै। एकदम सहज भऽ समय बीताबऽ चाहैत छी। दोसर गप्प ई जे हमरा अगिला पीढ़ी हमरा सँ वेशी बुझनुक, व्यवहारिक सशक्त आ ईमान्दार अछि। नीना के हम जखन देखैत छिऐ तखन अनुभव होइत अछि जे हम जे नञि कऽ सकलहुँ से ई कऽ सकैत छथि। हमरा होइत अछि जे काज हम शुरू कयलहु तकरा नीना आगॉ बढ़ाबथि। हमरा हुनका विवाहक चिन्ता नञि अछि ओ अपना योग सहचर ताकि लेतीह जँ मनक अनुकूल नञि भेंटतैन्ह तऽ अपन उपलब्धि के व्यर्थ नञि बुझतीह।'

'अहॉक एतेक विश्वास अछि नीना पर?' हँ, अपना सॅ वेशी विश्वास अछि। हम शताब्दीक अस्त होइत परिणाम छी। नीना आ नीधि सन असंख्य

लड़की, औरत हमर सभक कल्पनाकें साकार करऽ बाली भविष्यक ज्योति अछि। एखनधरि समाजक परिपाटि रहलैए जे प्रत्येक घर मे बेटीक मां अपना के विवश बुझैत रहल अछि हीनभाव सॅ मुक्त नञि भऽ समाज परिवार स्वजन-परिजन सब टोका टाकी करैत-करैत बेगुनाह लड़की के गुनाहक सजा दैत छै। आ हमर मां क तेहन सोच छलै जे हमरा जन्म भेला पर ने अपना कें कहियो माफ कएलनि ने हमरा। हमर सासु पति के परमेश्वर बुझैत छलीह आ छोटीमां के महापापी। अहीं कहू फिलिप अपराधी पापा छलथिनकी छोटी मां? आ एहन वातावरण मे रहि नरेन्द्र सीखलनि औरत सॅ घृणा करब। हुनका नजरिये औरत के कोनो महत्व नञि ओ मात्र भोग्या छै।'

प्रिया हमरा दृष्टिकोण सॅ मनुष आखिर मनुषे होइछ, समस्त भूमिका सॅ हटि कऽ ओकर प्रेम के उपेक्षा कयने हमरा मनुषक कोटि मे रहबाक हक नञि बनै'छ। प्रेम हमहूँ कयलहुँ अछि बहुतो सॅ प्रेम भेल ककरो एक क्षण तऽ ककरो वेशी काल ककरो सॅ मात्र स्वप्न मे। अन्त मे इएह निष्कर्ष भेल जे स्थायी प्रेम क समतल जमीन पर ठाढ़ रहब कठिने नहि असंभव छैक?'

'फिलिप। एहन कियेक ?'

प्रिया हमरा जनैत शाश्वत प्रेम, स्थायी रिश्ता वा सम्बन्ध ई मिथक के अनावृत कयल जाए तऽ जीवन मे की बॉचल रहतै? विश्लेषण करब तऽ अहॉक स्वभाव अछि बिना चिड़-फाड़ कयने अहाँ रहब नञि मुदा हमर आग्रह अछि ने अइ बात पर ध्यान दिऔ।'

'एहन सत्य सॅ जीवन नीरस नञि भऽ जेतै।'

'अहीं कहू अहाँ कें महसूस होइत अछि जे अहॉक भ्रम नञि टूटैत से नीक? पुरुष मात्र सॅ अहॉक विश्वास उठल की नञि?'

हं, से तऽ सही कहलहुँ। मुदा फिलिप स्त्री पुरुषक सम्बन्धक जे परम्परा छै ताहि परम्परा सॅ विश्वास उठबाक मतलब ई नञि जे हमरा जिनगी सॅ विश्वास उठि गेल। जेना जेना हम अपना काज मे स्थापित होइत गेलहुँ तेना प्रेमक जरूरत कोना पुरुषक आवश्यकता क चाह खत्म होइत गेल। पहिने अपनत्व नञि भेंटला पर हम अपने के चीड़ फाड़ कऽ तकैत छलहुँ जे हमर गलती की अछि। आब से नञि होइए मन मे। आब सोचैत छी जे क्यो हमरा मोजर देबए वा नञि लोकक मर्जी। क्यो अइ सच के नकारि नञि सकै'छ जे ई सीमित दुनियॉ मे हमर सच अन्तिम सच नञि अछि। हमर स्वक परिधि वृहद् सॅ वृहत्तर दिस अग्रसर भऽ रहल अछि। हम अइ दुनियाँ मे असुरक्षित नञि छी। हमर अपन व्यवसाय अछि। अइ व्यवसाय के माध्यम सॅ हमरा नित नव-नव

लोक सॅ भेंट होइछ। हं, एक दिन मने-मन निश्चय कएलहुँ जे आब आर नञि। पाथर पर माथ पटकने कोनो लाभ नञि। हमरा चारूभर मनुष नञि चट्टान अछि जे या तऽ जड़वत अछि वा पहाड़ जकॉ गुरगुराइत नीचॉ लुढ़कै'छ ओकर अपने ततेक शोरगुल छै जे हमर सिसकी सुनल नञि जा सकै'छ। हं, ताहि दिन सॅ हम सबकिछ बिसरी जएबाक प्रयास कयलहुँ। अतीत के खाधिखुनि धऽ देलिए तरमे। अनावश्यक चुनौती कें 'महत्व नञि दैत छी। आब जीयब जीवंत भऽ जी कऽ देखेबै दुनियाँ कें। अपन अस्तित्वक एहसास बड्ड सुखद लगैछ। भविष्यक आधार भूमि हमर इएह वर्तमान बनत।'

फिलिप पूछलनि 'आर काफी?'

'नञि जॅ आब पीयब कॉफी तऽ निन्न नञि हेत।'

अन्हार पसरल जाइत छलै वातावरण एकदम शान्त। हृदयक धड़कन जाबत संग दै'छ ई दुनियाँ तखने धरि। ई अन्हरिया राति, धुंध मे मिझराएल पीयर इजोत बल्बके, नहँ-नहुँ अबैत आहट आ बगल मे बैसल फिलिप। की फिलिप सत्ते हमर मित्र अछि? मन कहै'छ। हं, हं।' बालवाइक छोट-छीन छै मुदा भव्य शहर अछि एकदम अलग व्यवस्था छै एतऽ।

जूडी ऑफिस सॅ एलैन्ह। दूनू हाथ मे भोजनक वस्तु क थैला छलैन्ह।

'अबिते आश्चर्य सॅ बजलीह-एँ, अहॉ दूनू गोटे एना गुमसुम कियेक बैसल छी'? झगड़ा भऽ गेल की?'

'नञि, झगड़ा त नञि भेल अछि हम प्रियाक जिनगीक धुनकें पकड़ऽ के प्रयास कऽ रहल छलहुँ।'

'फिलिप अहॉ अपन सिम्फनिऐक धुन सुनैत रहू।' 'ओ. के., हम आब चललहुँ।'

आब फिलिप घंटो गाना सुनैत रहताह। हमहुँ सभ अपना-अपना रूम मे गेलहुँ। हम तीन घंटा सॅ बतिइआइत छलहुँ मुदा बात खत्म भेल? कहियो खत्म हेएत ई बात? नरन्द्र केहन क्षुद्र लड़ाई लड़ने छल। पुरुष की एके रंग होइत छै? पलंग पर सूतल-सूतल इएह सब सोचैत छलहुँ। हमरा राति मे जल्दी निन्न होइते ने अछि।'

अन्त-अन्त धरि नरेन्द्र हमरा संग न्याय नञि कयलनि। हुनके कारण समाज हमरा जलील कयलक। करौ ओकर समाज छै के कतेक टा? मात्र दू सौ अढ़ाई सौ मातवर घरानाक समाज? ओइ घराना सॅ कै गुणा वेशी छैक मानव समाज। आ जहिया सॅ हमर डेग बढ़ल अइ वृहत्तर समाज दिस तहिया सॅ हम रूकलहुँ एको क्षण? हम जतेक अपना व्यवसाय मे सफल होइत रहलहुँ ततेक कचोटैत

छल नरेन्द्रक क्षुद्र लोभ-लाभ द्वेष भाव। व्यापारक दुनियाँ मे काज क हमर आत्म-विश्वास बढ़ैत छल। हम स्वतंत्र भऽ व्यापार मे दस टा संभावना मे एकटा चुनैत छलहुँ। स्वतंत्र व्यक्तिक हैसियत सॅ अपन चुनाव पर डटल रहऽ मे कोनो कठिनाई महसूस नञि होइत छल। आ नरेन्द्रक प्रेम ओ तऽ हमरा जीवनक अंकुरैत संभावना के देखिए कऽ सहमि जाइत छल। हुनका संग मे दस करोड़ टका छलैन्ह मुदाओ हमर दस लाख टका बर्दास्त नञि कऽ पबैत छलाह। हरदम हुनका मुँह सँ बहराइत छलैन्ह ऊँह, एतेक महत्वाकांक्षा। ई औरत हमरा तबाह कऽ देलक। एखनो संतोष नञि होइ छै। ओ अपना के मालिक बुझैत छलाह। बढ़ैत गाछ के जड़िए सॅ काटि कऽ ओकरा बौना बनाबऽ मे आनन्द भेंटैत छलैन्ह। हमर विकास कोना सहन होइतैन्ह? एकटा गुलामक नजरि मालिकक कुर्सी पर रहतै? क्रोद्धे ऑखि कोना लाल भऽ गेल छलैन्ह जखन ओ हमरा पहिल बेर आफिस मे कुर्सी पर बैसल देखने छलाह। व्यंग्यवाण छोड़ने छलाह ओह, हो, सीगल एक्सपोर्टक मैनेजिंग डाइरेक्टर?

आब अहाँ कें हमरा सॅ टका-पाई लेबाक कोन जरूरी? हमर आनल वस्तु कियेक नीक लागत आब तऽ श्रीमती जी अपने पाइ कमाइत छथि....

'नरेन्द्र हम पाइ लेल काज नञि करैत छी।'

तऽ काज करैत छी कथि लेल? भोर सॅ सांझि घरि एक पैर पर घिरनी जकॉ नचैत कियेक रहैत

नरेन्द्र! हम अपन आइडेंटिटी, व्यक्तित्वक विकास.... दिन-राति पोथा पढ़ि-पढ़ि कऽ पगला गेलहुँ अहाँ, अपना के महान, जीनियस बुझैत छी? अहाँ के होइत अछि मैडम क्यूरी, वा फ्लोरेंस नाइटेंगल बनि जाएब? घर-गृहस्थी क लुरिए नञि चललीह महान बनऽ। एहन कोनो रंग रूप भगवान देनहुँ ने छथि।'

हम अपना के ने जीनियस बुझैत छी ने महान बनऽ चाहैत छी। मुदा की साधारण औरत के अपना ढ़ंग सॅ जीवऽ के अधिकार नञि छै? काज कयने हमर आत्मविश्वास बढ़ैत अछि। नञि जानि कियेक अहॉ सदिकाल हमर आत्मबल कें थूरैत रहैत छी? मोनतऽ भेल कहिऐ-नरेन्द्र अहीं कोन महान पुरुष छी? पापा क कमाएल धन मे दू-चारि करोड़ आर जोड़लहुँ। हम ककरो देल पूँजी सँ व्यवसाय शुरू नञि कएलहुँ। गली-गली घूमि कऽ काजक शुरूआत कएलहुँ। अहाँ के तऽ एयरकंडीशन मर्सीडिज मे बैसल-बैसल पसेना चूबैत अछि अहॉ कोना बुझबै जे सैम्पलक बक्सा हाथ मे उठौने कतेक बौआइत छी, कारखाना मे मजदूरक संग खटैत छी।' मुँह टेढ़ कऽ नरेन्द्र फेर बजलाह-बहुत अहंकार अछि अपना पर?.......

हं, नरेन्द्र अहाँक मापदंड दोहरा अछि जे अहाँक लेल आत्मसम्मान से हमरा लेल अहंकार!

'की अहाँ नञि चाहैत छी घर, परिवार, पाई समाज मे रूतबा.........? तखन हम किछ चाहैत छी तऽ अहॉ एतेक बौखलाइ छी कियेक? बजैत काल हमर स्वर स्वतः ऊँच भऽ गेल। नरेन्द्रक कोना सहन करताह तैं व्यंग्यवाण छोड़लनि-चिचियाउ नञि ई हमर आफिस अछि। हमहीं बेवकूफ छी। कोना एहन महिलाक मुँह लगलहुँ जकरा पाई क अलावा किछ सुझिते नञि छै?'

'पाईक भूख हमरा? परसल थारी लग बैसल भूखल व्यक्ति केहन जीवन जीयत? पाई-पाई के हिसाब। ई करू ई नञि करू एक, एक क्षण हुकूमत! हँ गहना छल आंजुर मे अँटए नञि ततेक हीरा। मुदा कतेक सफाई सॅ अहाँ कहने छलहुँ सभटा मां के नाम छैन्ह एहि मे से किछ संयुक्त परिवारक थाती छै। ई गहना अग्रवाल हाउसक पुतौहु पहिर सकै'छ घर सॅ जाय बाली औरत नञि।'

'हं, हं अहाँक रंग-ढंग देखिए कऽ हम अहाँक एकाउन्ट सँ सब जेवर निकालि लेने छलहुँ।

'हमर अनुमति बिना!'

'नञि से कोना होइतै हे देखिओई कागज अहॉक हस्ताक्षर!' एतेक पैद्य विश्वास घात। मने मन सोचलहुॅ हमरा कहियो अविश्वास नञि भेल। जखन जाहि कागज पर कहैत छलाह हस्ताक्षर कऽ दैत छलिऐ। खैर आब ई सोचने विचारने की....।

ई नीक जकॉ बुझि गेलहुँ अइ व्यक्ति सॅ अरारी ठानने परिणाम घातक होएत। पहिनहि बहुत किछ गंवा चुकलहुँ। आब जे समय शेष अछि से एकरा सॅ झगड़ा मे व्यर्थ किएक बीताबी। किछ टका-पाई भेंटत से अपना पेट भरऽ योग अपने अर्जित करैते छी। जखन कोनो सम्बन्धे नञि रहल तखन विषधर सॅ दूर रहनहिं कुशल! तखन सँजुक लेल हृदयक हाहाकार विचलित करैत छल। मुदा हम इ हो जनैत छी जे नरेन्द्रक आतंक सॅ संजु के बकार नञि फुटैत छै ने पगडंडी पर चलैत हमर लहुलूहान पैर क पाछाँ ओकर कोमल पैर बढ़ि सकैछ ओ तऽ राजमार्ग पर चलबाक अभ्यासी अछि। जँ ओ हमरा संग रहबो करैत तऽ कहिया ने चलि जाइत पिता लग। बिरासत मे मात्र सम्पत्तिए नञि भेंटैत छै स्वभावो भेंटैत छै। भूआ क बच्चा बिना रोऑ क भऽ सकै'छ?

काल्हि हम भारत घुरि रहल छी। की करू की नञि से नञि फुराइत अछि। जूड़ी ट्रे मे गरम मफिन आ ब्लैक कॉफी ने ने अयलीह।

'गुड मार्निग प्रिया!'

गुड मार्निंग स्वीट हार्ट! ब्रेक फास्ट ऊपर आन क कोन काज छल हम आबि जैतहुँ नीचॉ।

'तऽ हम दूनू गोटे रजाई मे घुसियाक कोना कॉफी पीबतहुँ।'

वेश, त हम ब्रश कयने अबैत छी।

'ओह! तखन तऽ कॉफी सेरा जेतै। अच्छा फिलिप के कहैत छिऐन्ह गरम काफी कनिकाल मे दऽ जयता।'

'नञि, हम अपने लऽ आयब ओइ बेचारा के परेशान नञि करऔ।'

ओ. के.।

जूडी हमरा रजाई मे घुसियाकऽ हाथ मे काफी नेने किछ सोचैत छलीह। 'हम तुरत अबैत छी।'

हम नित्यक्रिया बिना कयने किछ नञि खा सकै छी। मुदा इ बात कहबै तऽ जूड़ी हमर मानस के अनुकूलन पर भाषण शुरू कऽ देतीह।

'कॉफी लऽ ऽ अयलहुँ तऽ देखलिऐ जूडी हमरा नीचाँ सॅ ऊपर घरि निहारि रहल छलीह।'

'अहॉ तऽ एकदम यंग लगैत छी।'

'जूडी, हमरा तऽ बुढ़ापा नीक लगैत अछि।'

अइ पागलपन के कोनो जवाब छै। लेकिन सत्य कहैत छी अहॉ एखनहुँ चालीस सॅ ऊपर के नञि लगैत छी।

जूडी हम चालीस सॅ वेशी उम्र क लगैत छी वा नञि ताहि सॅ कोनो फर्क नञि। मुदा आब हमर केश पकैत अछि ठेहुन मे दर्द होइत रहै'छ एतबे नञि आब सैम्पलक भारी बक्सा उठा कऽ एक एयरपोर्ट सॅ दोसर एयरपोर्ट धरि पहुँचऽ मे बहुत थाकि जाइत छी। इमिग्रेशन आ कस्टमक कागज बिना चश्मा लगौने पढ़ि नञि पबैत छी। आब सबसे वेशी नीनाक ऑखि मे हेलैत स्वप्न, काजक प्रति ललक आ आगाँ बढ़बाक संकल्प बेर बेर कहैछ जे भाभी हम बिना अधिक लागत के माल उत्पादन मे बीस प्रतिशत बढ़ा सकैत छी से सुनि होइछ जे आब हम व्यर्थ दौड़ धूप करैत छी। सरिपहुँ नीना लौह महिला अछि। तैं आब हम विश्राम चाहैत छी। अइ व्यापारक दुनियॉ सॅ बाहर होइबाक इच्छा अछि।

'व्यापारक दुनियॉ सॅ बाहर भऽ की करऽ चाहैत छी?'

'किछ नञि मात्र अपन अनुभव। पचासवर्षक एक महिलाक महिला होएबाक अनुभव।'

'तखन एकटा किताब लिखू। प्रॉमिस?'

'प्रॉमिस।'

पतझड़ क मौसम। अक्टूबर मे कलकत्ताक वातावरण सम पर रहैत छैक पाबनि–तिहार शुरू भऽ जाइत छै। हम अपन किताब क भूमिका लिखब शुरू कयलहुँ। सैंतीस वर्षक नीना हाफमैनक बेटा सॅ विवाह कऽ रहल छथि। अपन देश छोड़ि रहल छथि। हमरा पूछलनि: 'भाभी मां जर्मनी मे नञि रहि सकै'छ?'

'नीना, छोटी मां पैंसठ वर्षक उम्र मे जर्मनी मे कोना रहतीह?'

भाभी! मां क उदास देखि हमरा अपराबोध होइत अछि। शायद मां के ई विवाह पसंद नञि छै तऽ हम नञि करब विवाह।' हमरा ऑखि मे साकार होइछ छोटी मांक झुर्रि भरल मुँह, कँपैत हाथ उज्जर साड़ी मे लपटल मझोला कद। फेर मोन पड़ै'छ बाल गोपाल कें भोग लगबैत छोटी मां क ध्यानमग्न चेहरा।

'नीना, मन छोट नञि करू। सभक बेटी सासुर जाइत छै–मां उदास होइतो बेटीक विदाक परम सुख पबैछ।

'भाभी हम सच कहि रहल छी एंडरू चाहै'छ मां हमरा सभक संग रहए। की ओ मां के बेटा नञि छै'? 'नीना–अहॉ निश्चिन्त रहू एत हम छी ने।'

'अहाँ एसगरे व्यवसाय सम्हारि लेबै?'

'जतबा दिन चलतै चलेबै।'

'भाभी तैं हमरा होइछ जे हम गलत कऽ रहल छी।' नीना प्लीज! अहॉ अपना कें अपराधी जुनि बूझू। जे भऽ रहल छै से नीके भऽ रहल शुभ–शुभ विवाह भऽ जाय।' 'नञि भाभी, जे भऽ रहल छै से मां क दृष्टिए नीक नञि भऽ रहल छै हुनकर इच्छा छनि भारतीय लड़का सॅ विवाह होइतै।'

नीना आब ई चर्चा करब व्यर्थ छै।

भाभी हमरा अपराध बोध भऽ रहल अछि........।

हम मने–मन सोचलहुँ नीना क स्थान पर जँ छोटी मांक बेटा रहितैन्ह तऽ ओकरा अपराध बोध होइतै?

आ जँ से होइतै तऽ अपन जर्मन पत्नी के लऽ कऽ कलकत्ते मे रहैत वा मां के ओतऽ लऽ जाइत जे नीना नञि कऽ पबैत छथि दोसर पुरुष एहनो कऽ सकै'छ जे एकटा पत्नी जर्मन, जर्मनी मे रहितै दोसर भारतीय मां लग। तइओ ओ अपना के अपराधी नञि बुझैत। मन मे होयबो करितै अपराध बोध तऽ नीना जकाँ ईमानदारी पूर्वक हमरा लग स्वीकारैत नञि। हमरा तऽ डर होइछ जे एहि अपराध बोध सॅ नीना डिप्रेस ने भऽ जाए।

औरत कतऽ नञि कनै'छ? कखन नञि कनै'छ? सड़क पर झाड़ू लगबैत काल, खेत मे काज करैत, एयरपोर्ट पर बाथरूम साफ करैत, लोकक घर मे

चौका बर्तन साफ करैत वा समस्त ऐश्वर्य सुख-सुविधाक रहैत हमरा सासु जकॉ एसगर सूतल करौट बदलैत। हाड़-मासुक बनल महिला-अपना ढंग अपना शर्त पर जीवन व्यतीत करऽ लेल छटपटाइत रहै'छ। हमर तऽ ऑखिक नोरे सूखा गेल। हृदय आ मन मे नून जकॉ जमल जा रहल अछि नूनक पहाड़ जमले जा रहल अछि। बाहर सॅ लोक के बुझाइत छै जे हम बहुत मजबूत छी, हिम्मतबाली। बुझए लोक। आब तऽ के की बुझै'छ तकर कोनो मायने नञि। ओह बड्ड पिआस लागल अछि। निन्न टूटल केहन अजीब-अजीब सपना देखऽ लगलहुँ अछि। सत्ते कंठ सूखि रहल अछि। थर्मस सॅ पानि ढ़ारि पूरा गिलास पीब गेलहुँ। एखन कतऽ छी हम? ओह, हं कलकत्ता मे छोटी मां क बगल मे अपना फ्लैट मे।

नीना जर्मनी सॅ आयल छलीह। मासदिन एतऽ रहि कऽ घुरलीह। कोर मे दस मासक खूब सुन्दर नेना छैन्ह। जर्मन आ भारतीय मिक्चर गोर रंग भूरा केश आ भूरा ऑखि। छोटी मां के कतहु ने कतहु मन मे कचोट छैन्ह किछ बजैत नञि छथिन मुदा मुँह सँ हरदम बहराइत छैन्ह जे हमर बेटी तऽ प्रिया छथि।

नीना के दुःख होइत छैन्ह। मां एना कियेक बजै'छ?

हम तऽ जेहन चाहत छलहुँ तेहन घर-वर भेंटल! हम बहुत सुखी छी।

'नीना अहॉ खुश छी से सुनि बहुत प्रसन्नता भेल भाभी अहॉ कें एसगर रहबा मे मन ऊबै'छ नञि?'

नञि नीना एकान्त तऽ प्रिय अछि। ओना एकबेर ई एसगर सॅ दोसराइत होइबाक भूल कऽ चुकल छी। बड्ड भयंकर परिणाम भोगलहुँ समझौता कऽ के। आइ हम कहऽ लेल एसगर छी मुदा हमरा आस-पास दू चारिटा एहन लोक अछि जकरा पर हम ऑखि मुनि भरोसकऽ सकै छी। आ ई भरोस, आस्था जीवन लेल अनिवार्य छै।

एहन कोन नायिका हेतै जे अभिमानिनी होइ, स्वतंत्र विचार वाली होइ तइओ संयमित रहै, सुरूचि होइ, मौलिक चिन्तन वाली होइ आ पुरुषक केहनो दुर्व्यवहार के हँसैत सहन करए ओकरा करेज मे सटल रहए? की एहन क्यो भऽ सकै'छ? हँ, कथा, उपन्यासक नायिका एहन भऽ सकै'छ कियेक तऽ पुरूष रचनाकार एहने नायिकाक कल्पना करै'छ।...... परिस्थितिक दास के नञि होइछ? मुदा अमानवीय करण केर चरम विन्दु पर अपना के साबुत बचाकऽ राखब सभक वश के बात नञि। हमरा लेल तऽ असंभव। हमरा तऽ जे क्यो आहत कएल तकरा हम कखनहुँ बिसरि नञि पबैत छी। हं, ओइ स्मृति दंश के प्रति आब मन मे उपेक्षा क भाव रहै'छ। आ सत्य कहैत छी पुरूषक कोनो

भूमिका क आब जीवन मे महत्व नञि बुझना जाइछ। क्यो की देत? एकरा हमर अहंकार नञि बुझू यर्थाथ कहि रहल छी आइ हम हाथ खोलि खर्च करैत छी मुदा क्यो रोक-टोक कयनिहार नञि ने ककरो हिसाब देबऽ पड़ै'छ।....

नीना विवाह कएल......हमर अधूरा स्वप्न ओकरे मे पूर्ण होमए। संवेदना, मित्रता, नेह ई सब परस्पर होइत छैक मालिक आ गुलाम बुझतै तऽ स्नेह नञि भऽ सकै छै। नरेन्द्र करोड़पति छल मुदा हमरा सॅ एक-एक पाइक हिसाब लैत छल। पेट भरबा लेल दू टा रोटी चाही ताहि लेल ओतेक अपमान! जे भेल से नीके भेल। जँ नरेन्द्र सॅ मन नञि टूटैत त एतेक प्रगति कऽ सकितहुँ ?

मोम के गुड़िया जकॉ पिघलैत रहितहुँ। घुर, इ हो कोनो जिनगी भेलै? हजारों साल सॅ पुरुषके अपन पत्नी के फ्रेम' क कल्पना एकहि बिन्दु पर अटकल छै जे पिजराक सुग्गा जकॉ जे रटबए सेह दोहरबै। आ हमरा सभके देखू आधुनिकाक भूमिकाक नित नव-नव भूमिका जुड़ल जा रहल अछि आ सफलतापूर्वक नित नव प्रतिमान गढ़ि रहल छी। प्रत्येक क्षेत्र मे पुरुष से बीस साबित भऽ रहल छी उन्नीस नञि। तखन एकटा बात एकदम सही छै जे किछु पाबऽ लेल किछ छोड़ऽ पड़ैत छै। हमरे देखू जे संजु क मन मे होइत हेतै जे हम मां क भूमिका नीक जकॉ नञि निमाहलहुँ। आब नञि निमाहि पयलहुँ तऽ की करू? हमर मां हमरा जन्म देलनि की ओ अपन भूमिकाक निर्वाह कयलनि? नञि ने। आ ने हुनका तकर कचोट भेलैन्ह।.... सँजू के तइओ हम बारह वर्ष धरि मातृत्वक भूमिकाक निर्वाह कयलहुँ तखन नरेन्द्र लग छोड़लिए। सॅजु उगैत गाछ छल संभावना रहित ठूंठ नञि। कानूनो तऽ नरेन्द्रक पक्ष लितै। आ किएक हम ओइ नादान बच्चाक जीवन बर्बाद करितिऐ? हमरा सॅ वेशी सामर्थयवान नरेन्द्र छल। भऽ सकै'छ नरेन्द्र कें क्यो दोसर औरत खुश राखि सकितै' मुदा हमरा तऽ ओकरा संग रहब कठिन छल। हम अपन स्वप्न कें अपने हाथे चकनाचूर नञि कऽ सकै छी। तखन ऑखिक नोर! नञि जानि ई नोर क परम्परा कहिया खत्म हेतै? प्रशान्त महासागर क पानि की कम नूनछराह छै जे सागर के सागर बनल रहबाक लेल महिलाक नोर क जरूरत रहै छै?

नीना चलि गेलीह। हमरा काज मे ओ सहारा दैत छलीह। तथापि अहू उम्र मे हमरा ऑखि मे सपना शेष अछि टटका फूलक रस मे डूबल मधुसन मीठ, ओस मे भीजल गुलाब क सुगंध मे साराबोर गमकैत, भोर का आकाश सन स्वच्छ। ई हमर जिनगीक सपना हमर अपन अछि एकदम निजि अपन। मात्र रोमान्सेक सपना नञि संयोगै'छ नयन आ ने स्नेहक जुनून सॅ जिनगीक सब कोन भरि जाइत छै। इम्हर दू वर्ष सॅ हम स्वयं गाड़ी चलबैत छी आ मोन होइए जे

एसगरे सम्पूर्ण भारतक भ्रमण करि। मन होइछ कोनो आदिम शहरक एसगरे यात्रा करि। आदिम शहरक गुफा मे अंकित महिलाक मूर्ति सॅं पूछिऐ की अहूँ ओ व्यथा सहलहुँ अछि जे हम भोगलहुँ? हृदयक जड़ता कम भेल अछि। कुंठाक बर्फ पिघलल आब ई जिनगी बहुत सुन्दर लगै'छ ऐनमेन कविता सन।

हं, आब हम जीवंत जीवन जीबैत छी। बेर-बेर प्रसन्नता क पुलक सॅं रोऑ-रोऑ आनन्दित रहै'छ। एतेक हल्लुक पारदर्शी जीवन व्यतीत करबाक बहुतो तरीका छैक। हम ओ तरीका अपनाएबाक प्रयास कयलहुँ मुदा कतहु समझौता नञि कयलहुँ। समझौता नञि कऽ सकलहुँ बस! ई जरूरी छै जे लोक अपन प्रत्येक असमर्थताक विश्लेषण करए? तर्क दऽ अपन औचित्य स्थापित कऽ अनका गलत साबित करए? ई सभ बिना कहने सुनने पृथ्वी अपन धुरी पर घूमैत रहत। सूर्य क उदय अस्त होएत। चन्द्रमाक बढ़ैत-बढ़ैत पूर्णिमाक इजोरिया राति हेतै आ घटैत-घटैत अमावस्याक अन्हरिया राति। मौसम बदलैते रहतै, नदी बहैत रहतै ककरो हमर विश्लेषणक अपेक्षा ने छै ने रहतै। तखन एकटा बात महत्वपूर्ण छै जे हम आइ धरि ई नञि बुझि। पयलहुँ जे हम के छी? की चाहैत छी? हँ, शिकायत रहल जे ई प्राप्त नञि भेल ओ प्राप्त नञि भेल। अन्त:करण सॅं सदति इएह आवाज अबैत रहल। क्षण मे प्रसन्न क्षणे मे व्यथित। की इ सब एहिना चलैत रहऽ दिऐ सहज गति सॅं? हम छी एहने एखन कोनो आदर्श लऽ डेग उठा कऽ बढ़ब फेर कखनौ निराश भऽ पाछु घुरब।

हम समस्त अतीत बिसरी गेलहुँ अछि। पाछु सॅं कोनो शोर पाड़ैत स्वर सुनि कान मुनि लैत छी। जिनगीक संघर्ष मे सक्रिय छी। भऽ सकै'छ एहने मे कहियो चुपचाप मृत्यु आबि हमर के बार खटखटाबए। तखन हम तुरत ओकर आहट पर प्रस्तुत हेबै। आ अपन छोट छीन जिनगीक विषय मे ओकरा संग बतियाब।

- इति समाप्त -